BED-10

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सामाजिक अध्ययन शिक्षण
Teaching of Social Studies

BED-10

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सामाजिक अध्ययन शिक्षण
Teaching of Social Studies

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच

कुलपति

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

संयोजक एवं सदस्य

संयोजक

डॉ. दामीना चौधरी

सह आचार्य, शिक्षा

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय. कोटा (राज.)

सदस्य

1. प्रो. पी. के. साहू
   शिक्षा विभाग
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय (उप्र.)
2. प्रो. आर. पी. श्रीवास्तव (से.नि.)
   जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3. प्रो. आर. जे. सिंह
   लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ प्र.)
4. प्रो. डी. एन. सनसनवाल
   देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
5. प्रो. एस. बी. मेनन
   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
6. प्रो. स्नेह. एम. जोशी
   एम. एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा
7. प्रो. सोहनवीर सिंह चौधरी
   इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
8. डॉ. एम. एल. गुप्ता
   सह आचार्य शिक्षा (से. नि.)
   वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
9. डॉ. अनिल शुक्ला
   लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उप्र.)

संपादन एवं पाठ लेखन

संपादक

1. डॉ अनिल शुक्ला
सह आचार्या, शिक्षा
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

पाठ लेखक

1. डॉ. शशि चित्तौड़ा
   व्याख्याता
   लो.ति.शि.प्र.म. डबोक, उदयपुर
2. डॉ. रमा श्रीवास्तव
   व्याख्याता
   लो.ति.शि.प्र.म. डबोक, उदयपुर
3. डॉ. सुभाष मिश्रा
   व्याख्याता
   यूनिटी डिग्री कॉलेज लखनऊ
4. श्री जितेन्द्र तिवारी
   प्राचार्य
   म.प्र.शि.प्र., महाविद्यालय
   कोटा (राजस्थान)
5. सुश्री अंजू सिंह
   व्याख्याता
   म.प्र.शि.प्र. महाविद्यालय
   कोटा (राजस्थान)

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. (डॉ.) एम. के. घडोलिया
निदेशक (अकादमिक)
संकाय विभाग

योगेन्द्र गोयल
प्रभारी
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : जून 2011 ISBN No. : 13/978–81–8496–299–4

इस सामग्री के किसी भी अंश को व. म. खु. वि. कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यंत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व. म. खु. वि. कोटा (राज.) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

BED–10

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

अनुक्रमणिका

इकाई व इकाई का नाम		पृष्ठ संख्या
इकाई 1–	सामाजिक अध्ययन : विषय वस्तु एवं संरचना, इतिहास एवं भविष्य का परिप्रेक्ष्य	07–17
इकाई 2–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण के भविष्योन्मुखी उद्देश्य	18–36
इकाई 3–	विद्यालयी पाठ्यचर्या के विभिन्न स्तरों में सामाजिक अध्ययन का एक विषय के रुप में स्थान एवं अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध पाठ्यचर्या के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत उपागम	37–64
इकाई 4–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सप्रत्ययों का संज्ञानात्मक मानचित्र एवं पाठ्यक्रमीय तत्वों का बोध	65–78
इकाई 5–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम, विषयवस्तु आधारित विधियों के उदाहरण एवं शिक्षण से सम्बन्धित विशिष्ट कौशल	79–97
इकाई 6–	संचार माध्यमों का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में एकीकरण एवं अनुप्रयोग	98–115
इकाई 7–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण में नियोजन : सत्रीय इकाई एवं दैनिक पाठ योजना	116–130
इकाई 8–	विशिष्ट उदाहरणों सहित छात्र का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन निदानात्मक परीक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, मल्टीपल प्रश्न–प्रश्नों का निर्माण प्रश्न बैंक का विकास खुली पुस्तक परीक्षा के लिये विषय वस्तु विशिष्ट प्रश्न बनाना	131–149
इकाई 9–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अनुदेशात्मक सामग्री का विकास : पाठ्यपुस्तक का निर्माण एव मूल्यांकन	150–163
इकाई 10–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण से संदर्भित विशिष्ट शिक्षण सहायक सामग्री उसका निर्माण एवं मूल्यांकन	164–178
इकाई 11–	सामाजिक अध्ययन के अध्यापक की विशेषताएं, समस्याएं एव समाधान	179–191
इकाई 12–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण में प्रयुक्त संसाधन : कक्षा कक्ष प्रयोगशाला संग्रहालय, सामुदायिक वातावरण, पुस्तकालय आदि	192–205
इकाई 13–	सामाजिक अध्ययन शिक्षण में नवाचार और भविष्य	206–220

इकाई–1

सामाजिक अध्ययन: विषयवस्तु, संरचना, इतिहास एवं भविष्य का परिप्रेक्ष्य

Structure of Content Area, History, Basic Conceptual schemes and Futures Perspectives

संरचना

1.0 उद्देश्य तथा लक्ष्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 सामाजिक अध्ययन विषय का दर्शन

1.3 सामाजिक अध्ययन : अर्थ एवं परिभाषा

1.4 सामाजिक अध्ययन: विषयवस्तु एवं संरचना

1.4.1 सामाजिक अध्ययन की विषय–वस्तु

1.4.2 सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र

1.5 सामाजिक अध्ययन शिक्षण का इतिहास

1.6 सामाजिक अध्ययन की मूलभूत अवधारणा

1.7 सामाजिक अध्ययन भविष्य के परिप्रेक्ष्य में

1.8 अभ्यास प्रश्न

1.9 सारांश

1.0 उद्देश्य एवं लक्ष्य (Aims and Objectives)

सामाजिक अध्ययन विषय का दर्शन जान सकेंगे।

सामाजिक अध्ययन विषय की विषयवस्तु एवं संरचना को समझ सकेंगे।

सामाजिक अध्यययन विषय के इतिहास के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

सामाजिक अध्यनन की मूलभूत अवधारणाएं जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

मनुष्य एवं समाज का घनिष्ठ एवं अनिवार्य सम्बन्ध है। इस अनिवार्य एवं परस्पर आश्रित सम्बन्ध के फलस्वरूप ही मनुष्य को सामाजिक प्राणी की संज्ञा से विभुषित किया गया है। सफल सामाजिक जीवन के लिए मनुष्य को विभिन्न संस्थाओं से समन्वय करना पडता है और इन संस्थाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था विद्यालय है। एक सफल सामाजिक जीवन के लिये मनुष्य को समाज की विभिन्न संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करने पड़ते है। व्यक्ति एवं समाज की यह आदान–प्रदान की प्रकिया आदिम काल से ही चली आ रही है। इन संस्थाओं मे

सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था विद्यालय है। इस महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के द्वारा ही व्यक्ति समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये तैयार होता है।

यह सत्य है कि विद्यालय सामाजिक परिर्वतन की प्रक्रिया में सीधे भाग नही लेते हैं, किन्तु इनका प्रमुख कार्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो इस प्रकिया में कुशलतापूर्वक भाग ले सकें। विद्यालय में ही बालकों के व्यक्तित्व, चरित्र की सुदृढ़ नींव तैयार की जाती है जिससे वे लोकतंत्र व स्वतंन्त्रता के प्रति उचित दृष्टिकोण को प्राप्त कर आदर्श लोकतांत्रिक नागरिक के रूप में समाज में व्यवस्थित हो सके व समाज को सही दिशा प्रदान कर सकें।

1.2 सामाजिक अध्ययन विषय का दर्शन

समाज व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों की बनावट है। व्यक्ति के सम्बन्धों का निर्माण उसके व्यवहार द्वारा होता है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि ने व्यक्ति के व्यवहार को मशीनीकृत कर दिया है। उसका मन जडी भूत और उसकी मानवीय संवेदनाएं तिरोहित हो रही है। समाजशस्त्रियों ने मानव मस्तिष्क के इस जटिल परिवर्तन का वैज्ञानिक अध्ययन कर यह उदघाटित किया है कि बालक की मानवीय संवेदनाओं को सामाजिक मूल्य का प्रशिक्षण अनुभवों के उस सम्मुच्चय द्वारा प्रदान किया जाता है, जिन्हें शिक्षा जगत में समाज विज्ञानों के द्वारा जाना जाता है। अर्थात साहित्य कला, इतिहास आदि कला वर्ग के विषयों में मनुष्य और समाज के बीच होने वाले अनुकूलन को ही दर्शाया जाता है। बालक वहीं से संस्कार ग्रहण कर अपने व्यवहार को सामाजिक पर्यावरण के अनुकूल ढालता है।

तकनीकी के विकास के परिणामस्वरूप बालक इन समाज विज्ञानों को स्पर्श नहीं कर रहा। पहले पाश्चात्य देशों में यह समस्या मुखर हुई है। वहां परिवार संस्था के बिखरने से समाज का ताना–बाना टूट रहा है, भारत भी पश्चिम के विकासवादी मानकों का अनुगामी रहा है। इसीलिए स्वतंत्रता की अर्धसदी के उपरान्त ही भारतीय जीवन मूल्यों में उथल–पुथल मची है। परिवार का ढांचा बिखरने लगा है। आगे आने वाला समय इन समस्याओं को और जटिल बनायेगा। इस पर दृष्टिपात करते हुए ऐसे प्रयास प्रारंभ किये जाने होंगे कि बालक का अबोध मस्तिष्क सामाजिक अनुभवों से रीता न रहे। इस प्रयास का परिणाम सारे सामाजिक विज्ञानों का एकीकृत स्वरूप समाज अध्ययन है।

1.3 सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and definition of Social Studies)

अमेरिका के दार्शनिक 'जाँन डीवी' ने विचारों के ज्ञान के समन्वयन पर बल दिया है। उनके अनुसार ज्ञान एक समग्र अखण्ड इकाई है परन्तु शिक्षाविदों ने इसे अनेक विषयों में बनावटी तौर पर बाँट दिया है। जैसे इतिहास,भूगोल, अर्थशास्त्र या नागरिक शास्त्र आदि। परन्तु ज्ञान का यह विभाजन केवल सुविधा की दृष्टि से किया जाता है। वास्ताविकता यह है कि ज्ञान एक वृक्ष के समान है जिसकी शाखाएं पृथक–पृथक हैं किन्तु वृक्ष एक ही है। डीवी ने इस बात पर बल दिया है कि सामाजिक प्रकिया अविभाज्य है और उसके समझने के लिए सभी सामाजिक विज्ञानों का समन्वित ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। समाज के प्रत्येक स्तर को ऊँचा करने तथा इन्हें आर्थिक विकास की ओर अग्रसर करने के लिये नित नये विकास साधनों का

समझना आवश्यक है। इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये स्कूल स्तर पर एक ऐसे विषय की आवश्यकता अनुभव की गई, जिसमें मानवीय विषयों का संश्लेषण संभव हो और यह विषय सामाजिक अध्ययन (Social Studies) के नाम से विकसित हुआ।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ (Meaning of Social Studies)

सामाजिक अध्ययन का शाब्दिक अर्थ है – "मानवीय परिप्रेक्ष्य में समाज का अध्ययन। यह एक ऐसा विषय है जिसमें मानवीय सम्बन्धों की विभिन्न दृष्टिकोणों से चर्चा होती है।

प्राचीन काल में समाज की संरचना सरल थी व मानव समाज की कठिनाइयाँ भी सरल होती थी। व्यक्ति को सामाजिक समायोजन में विशेष कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ता था। परन्तु आज कम्प्यूटर तकनीक के युग में जहाँ मनुष्य के पास सुख सुविधाओं का असीम भण्डार है, वहीं इसी तकनीकी प्रगति ने मानव समाज के सम्मुख अनेक समस्याएं भी उपस्थित कर दी है।

इन समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने व इनके उचित समाधान के लिये सहयोग देने का प्रशिक्षण व्यक्ति को बचपन से ही प्राप्त करना चाहिए। तभी वह समाज का उपयोगी सदस्य सिद्ध हो सकता है। यही कारण है कि स्कूली–विषयों में 'सामाजिक अध्ययन' को सम्मिलित किया गया है। यह न केवल पूर्णत:एक नवीन क्षेत्र है वरन् शिक्षा जगत में एक नवीन दृष्टिकोण भी है। इस विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट करते हुए शैक्षिक अनुसंधान में कहा गया है– "किसी के लिये यह निश्चित करना उचित नहीं है कि सामाजिक अध्ययन इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र का एक गणितीय योग मात्र है। निश्चय ही यह इन विषयों से पर्याप्त सामग्री प्राप्त करता है, परन्तु उसी सामग्री को ग्रहण करता है जो मानव समाज के वर्तमान तथा दैनिक जीवन के सम्बन्धों को स्पष्ट करती है। यह सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए कि इसका स्वरूप परम्परागत विषय जैसा नही है वरन् एक अध्ययन क्षेत्र सा है।"

सामाजिक अध्ययन की परिभाषा

मुफात एम.पी.

"सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवकों को आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता देता है। ऐसा करने के लिए वह अपनी विषय–वस्तु को समाज–विज्ञानों तथा समसामयिक जीवन से प्राप्त करता है।

(Mofatt M.P 1950)

The Social studies may be considered in term of knowledge drawn from the social science and contemporary life for institutional purposes in aiding youth to understand the growth of modern civilization.

जोरोलीमिक के अमुसार 'सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है।"

(Social study is the study of human relations)

जेम्स हामिंग के अनुसार "सामाजिक अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक सम्बन्धों तथा अंतर्सम्बन्धों का अध्ययन है।"

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'टीचिंग सोशल स्टडीज' में सामाजिक अध्ययन के विषय में कहा गया है– ''सामाजिक अध्ययन व्यक्तियों तथा सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के प्रति उनकी पारस्परिक क्रिया से सम्बधित है।''

Acc. to Teaching of Social Studies Journal published by NCERT "Social studies is concerned with people and their interaction with social and physical environments."

शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोष के अनुसार 'सामाजिक अध्ययन वह अध्ययन है जो मानव जीवन के रहन सहन के ढंगों, मूलभूत आवश्यकताओं, क्रियाओं जिनमें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संलग्न रहता है तथा संस्थाओं जिनका उसने विकास किया है, का ज्ञान प्रदान करता है।''

(ई0 बी0 वेस्ले : टीचिंग सोशल स्टिडीज इन एलीमेंटरी स्कूल)

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि –

- सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा उनके समुदायों का अध्ययन है।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिये नवीन आधार एवं दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- सामाजिक अध्ययन उत्तम नागरिकता के विकास में सहायता प्रदान करके लोकतंत्र को सफल एवं सुरक्षित बनाने में सहायक है।
- समाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक एवं समग्र दृष्टिकोण का प्रतिपादन करता है।
- हमारे दैनिक जीवन पर विश्व की घटनाओं के प्रभाव का अध्ययन करता है।
- सामाजिक अध्ययन में विषयों का केवल योग ही निहित नहीं है वरन् यह एक एकीकृत आयाम है।
- यह आधुनिक विश्व एवं सभ्यता को सरल एवं स्पष्ट बनाने में सहायता प्रदान करता है। साथ ही यह छात्रों की सामयिक समस्याओं को समझने में सहायता देता है।
- यह सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन है।
- यह मानवीय सम्बन्धों के अध्ययन पर बल देता है ।

निम्न प्रश्नों का उत्तर संक्षप में दें–

1. सामाजिक अध्ययन का क्या अर्थ है?
2. सामाजिक अध्ययन को परिभाषित कीजिये?
3. सामाजिक अध्ययन की प्रमुख विशेषताएं स्पष्ट कीजिये?

1.4 सामाजिक अध्ययन :–विषय वस्तु एवं संरचना

इतिहास 1 .4 सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु :

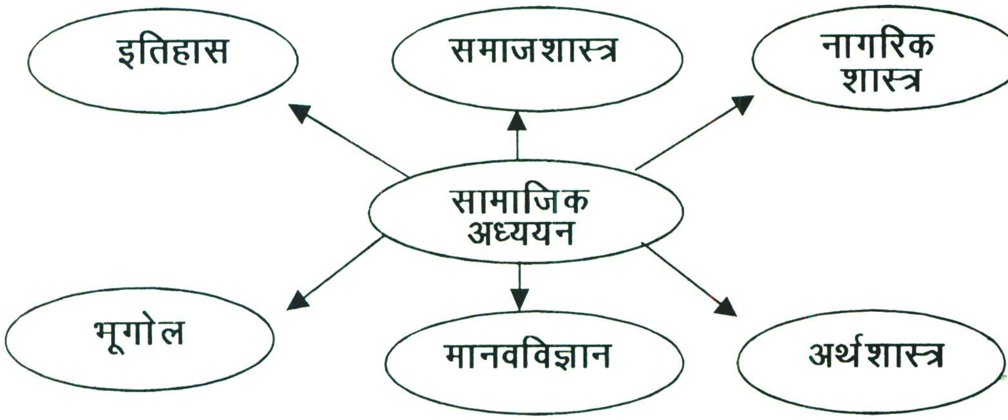

सामाजिक अध्ययन एक विशाल किंतु विशिष्ट शब्द है। जिसकी प्रकृति विशाल है, यही कारण है कि सामाजिक अध्ययन को स्कूल पाठ्यक्रम में काफी महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। यह सामान्य शिक्षा का एक अभिन्न अंग है किंतु अभी तक अध्यापक इन्हें पढ़ाते समय इतिहास तथा भुगोल को भिन्न–भिन्न विषय के रूप में पढ़ाते है। उन्हे कभी भी सामाजिक तथा भौगौलिक परिस्थितियों से जोड़कर नहीं पढ़ाते। इसी प्रकार एक धारण यह भी है कि सामाजिक अध्ययन का एक मात्र अर्थ सामाजिक समस्याओं तथा सामाजिक एवं सामयिक घटनाओं का अध्ययन है जो कि सत्य नहीं है।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ है, समाज का, समाज के लिए समाज के द्वारा अध्ययन अर्थात् समाज सम्बधी सभी संस्थाओं व संगठनों का अध्ययन जिससे समाज की प्रगति होती है। सामाजिक अध्ययन शब्द से तात्पर्य है प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक रूप से जीवन में प्रयुक्त कराना। हम कह सकते है कि सामाजिक अध्ययन मानव को सभी दृष्टिकोणों से सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह मानव जीवन के इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य का अध्ययन करता है। इसमें सभी विषय राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास भूगोल के आधारभूत सिद्धांतो का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार यह एक अंत: अनुशासित विषय है, जिसकी सामग्री मानव ज्ञान एवं अनुभवों पर आधारित है ।

1.4.2 सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र –

सामाजिक अध्ययन के विस्तृत स्वरूप को निम्नवत् समझा जा सकता है –

(1.) मनुष्य प्राकृतिक प्राणी होने के साथ–साथ सामाजिक प्रणी भी है। इसका विकास समाज में होता है और आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में होती है। इसलिए सामाजिक वातावरण का ज्ञान उसके लिये आवश्यक होता है। इससे वो सामाजिक गुणों व आदर्शों को भी समझता है।

(2.) सामाजिक अध्ययन में इतिहास, नागरिकशास्त्र और भूगोल का अध्ययन किया जाता है इसलिए इसका क्षेत्र इन सभी विषयों तक व्याप्त है। इसमें मानव समाज की वे सभी क्रियाऐं आती है जो मानव सभ्यता की आदि अवस्था से लेकर आज तक की है।

(3.) सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र व्यक्ति परिवार तक सीमित न होकर इसके अंतर्गत राज्य और राष्ट्र भी आ जाते है जिनका सामाजिक विकास में पर्याप्त योगदान है।

(4.) आज विश्व बंधुत्व, विश्व नागरिकता की भावना को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यही कारण है कि आज सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक व्याप्त हो गया है।

अमेरिकन इतिहास संघ (American Historical Association) की रिर्पाट में स्पष्ट रूप से सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र पर प्रकाश डाला गया है –

"विद्यालय के पाठ्यकम में अन्य विषयों की अपेक्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान समाज विज्ञान के विषयों को देना चाहिये क्योंकि इनका प्रत्यक्ष रूप से मानव–जीवन, उसकी संस्थाओं, उसके विचार तथा उसकी आकांक्षाओं पर प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही राष्ट्रो की नीति निर्धारण में भी पूर्ण सहायता मिलती है। समाज विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक है कि वह मानव इतिहास के प्रारम्म से लेकर आज तक के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है। इसके अंतर्गत प्रारंभिक मनुष्यों के रीति–रिवाजो से लेकर वर्तमान समय तक की सभ्यता/संस्कृति आती है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से भी मानव से सम्बधित शास्त्र है।"

1.5 सामाजिक अध्ययन शिक्षण का इतिहास (History of Social Studies)

सामाजिक अध्ययन को एक विषय के रूप में आरंभ करने का श्रेय "संयुक्त राज्य अमेरिका" को जाता है। आरंभ में "सामाजिक अध्ययन" विषयों के उस समूह के लिये नाम दिया गया जिसमें इतिहास, अर्थशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र सम्मिलित थे। यह नामकरण सन् 1892 ई० में किया गया। बाद में इस समूह में समाजशास्त्र को सम्मिलित किया गया। परंतु सामाजिक अध्ययन के इस स्वरूप को सरकार की ओर से 1916 ई० तक मान्यता प्राप्त नहीं हुई ।

1916 में **"कमेटी ऑन दी सोशल स्टडीज ऑफ दी नेशनल एजुकेशन एसोसियेशन्स". 'कमीशन ऑन रिऑरगनाइजेशन' ऑफ सेकेण्डरी एजूकेशन"** के प्रतिवेदन में इस विषय को मान्यता प्रदान की गई और इस विषय को एक स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया गया। सन् 1921 में इस विषय के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन करने के लिये अमेरिका में **"राष्ट्रीय परिषद"** का निर्माण किया गया। इस परिषद ने विभिन्न विषयों के सम्मिलित रूप की सम्भावनाओं पर गहन अध्ययन किया। सन् 1934 में 'सोशल स्टीडीज' पर एक कमीशन की नियुक्ति की गई। इस कमीशन ने इसके विकास के लिये सुझाव दिये। इसके उपरांत इस क्षेत्र में बहुत से अनुसंधान कार्य किये, जिनके फलस्वरूप सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप का विकास हुआ।

भारत में सामाजिक अध्ययन का विकास एवं योजनाएं –

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे देश के नेताओं एवम विद्वान वर्ग के व्यक्तियों में एक ऐसे समाज के निमार्ण की योजना तैयार की जिसमें एक ओर हमारी सांस्कृतिक परम्परायें

सुरक्षित रह सकें व दूसरी और प्रत्येक व्यक्ति में नवीन युग की चुनौतियों एवं आवश्कताओं के अनुरूप समाज को परिवर्तित एवं विकसित करने की क्षमता उत्पन्न हो सकें। इस योजना को साकार बनाने के लिये दायित्व शिक्षण सस्थाओं पर डालना स्वाभाविक था क्यों कि राष्ट्र और समाज का भविष्य शिक्षण संस्थाओं मे ही निर्मित होता है। भारत की राष्ट्रीयता के प्रति निष्ठा विकसित करने के लिये उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं को सुरक्षित रखना आवश्यक था। भारत को एक सफल लोकतंत्र बनाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति मे लोकतांत्रिक दृष्टिकोण तथा उत्तम नागरिकता के गुणों विकास करना आवश्यक था। भारत की एकता एवम अखण्डता को सुरक्षित करने के लिये उन सामाजिक एवं धार्मिक विशेषताओं को पहचानना एवं प्रसारित करना आवश्यक था जो भारत की अनेकता को एकता के सूत्र में बाँधें हुये हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने तथा उन्हें धार्मिक विकास की ओर अग्रसर करने के लिए नये–नये विकास साधनों को समझना आवश्यक था। इन सभी आवश्कताओं को पूरा करने के लिए स्कूल स्तर पर एक ऐसे विषय की आवश्यता थी जिसमे मानवीय विषयों का संश्लेषण सम्भव हो और यह विषय सामाजिक अध्ययन के नाम से विकसित हुआ। भारत में माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदलीयर आयोग 1952 ई0) को इस विषय के प्रतिपादन का श्रेय है। इस आयोग ने सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप पर बल दिया। इसके इस स्वरूप के सम्बन्ध में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है "इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि को एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में देखना चाहिये। इस एकीकृत स्वरूप की विषय सामग्री ऐसी हो जो छात्रों को सामाजिक पर्यावरण में व्यवस्थित करा सके।"

आयोग ने लिखा है कि सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार, समुदाय राज्य राष्ट्र के पर्यावरणों को स्थान प्राप्त हों, जिससे छात्र उन सामाजिक शक्तियों एवं आन्दोलनों के विषय में जान सकें जिनमें वे रहते है। आयोग के इस सुझाव पर सामजिक अध्ययन को भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आरम्भ में इसको इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र के गणितीय योगमान के रूप मे ग्रहण किया गया। परन्तु अब इसके एकीकृत स्वरूप को ग्रहण करने के लिये केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें महत्वपूर्ण कदम उठा रही है

स्वमूल्यांकन प्रश्न–

1. अमेरिका में 'सामाजिक अध्ययन शिक्षण किस प्रकार आरंभ हुआ?
2 भारत में सामाजिक अध्ययन शिक्षण की आवश्यकता क्यों अनुभव की गयी?
3 भारत में सामाजिक अध्ययन' के विकास पर एक निबन्ध लिखें।

1.6 सामाजिक अध्ययन की मूलभूत अवधारण (Basic concept of Social Studies)

सामाजिक अध्ययनः–

प्रायः देखा जाता है कि न केवल विद्‌यार्थी अपितु अध्यापक भी सामाजिक अध्ययन व सामाजिक विज्ञान को एक ही विषय समझते है तथा सामाजिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान शब्दों को प्रायः बदलकर प्रयोग करते है।

बाइनिंग तथा बाइनिंग के अनुसार :–

"समाज के मानव का जीवन और क्रियाएं भिन्न भिन्न सामाजिक विज्ञानों को विषयवस्तु प्रदान करती है। इन्हें इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजविज्ञान, मानव विज्ञान न्यायशास्त्र और दर्शन शास्त्र विषयों में संगठित किया गया हैं। दूसरी ओर सामाजिक अध्ययन वह अध्ययन है जिसकी विषयवस्तु प्रत्यक्ष रूप से समाज के संगठन और विकास के साथ सम्बंधित है। इसलिये सामाजिक अध्ययन का पाठ्‌यक्रम मानव और उसके दूसरे लोगो से, संस्थाओं से से, धरती से, वस्तुओं और सेवाओं से और सामाजिक तथा भौतिक वातावरण से सम्बंधित है।

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अंतर –

सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1.सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर उच्च होता है। इसका क्षेत्र व्यापक तथा सार्थक होता है ।	1.सामाजिक अध्ययन मे निहित विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर सामाजिक विज्ञानों की अपेक्षा सीमित होता है।
2. सामाजिक विज्ञान उच्च कक्षाओं में सम्मिलित करते है।	2.सामाजिक अध्ययन माध्यमिक विद्‌यालयो व कक्षाओं के लिये है।
3. सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है। शोध कार्य भी किय जाते है।	3. सामाजिक अध्ययन माध्यमिक विद्‌यालयों व कक्षाओं के लिये है।
4. सामाजिक विज्ञान सैद्धांतिक अधिक है। अवधारणाओं पर आधारित है।	4. सामाजिक अध्ययन अधिक व्यावहारिक तथा सूचनात्मक है।
5. सामाजिक विज्ञान का मुख्य तत्व सार्थकता एवं सामाजिक उपयोगिता है।	5. सामाजिक अध्ययन का मुख्य तत्व अनुदेशानात्मक उपयोगिता है।

1.7 सामाजिक अध्ययन भविष्य के परिप्रेक्ष्य में (Social Studies in Futuristic Perspectives)

आज के भौतिकी एवं वैज्ञानिक युग में सामाजिक अध्ययन का विद्यालयी पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है। इस विषय का महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है कि इसके अध्ययन से छात्र–छात्राएं सचेत एवं जागरूक नागरिक बनते हैं जिसकी आवश्यकता प्रत्येक राष्ट्र को होती है। एक अच्छे नागरिक के निर्माण की आधारशीला विद्यालय में सामाजिक अध्ययन के माध्यम से ही रखी जाती है।

इस विषय के अध्ययन से विद्यार्थियों में सदाचार, मनुष्यता तथा देश भक्ति के भाव जाग्रत होते हैं जिससे राष्ट्रकी प्रगति निश्चित रूप से होती है। क्योंकि आज का छात्र कल का होने वाला देश का नागरिक या कर्णधार होता है। जो राष्ट्र के निर्माण में भविष्य में, सम्पूर्ण योगदान देने में समर्थ होता है।

21वीं शताब्दी में सामाजिक अध्ययन विषय का महत्व निम्नवत् है :–

1. सामूहिक जीवन के महत्व का ज्ञान (Knowledge of Importance of community life)

सामाजिक अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियो को इस बात का ज्ञान हो जाता है कि मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नति तथा पूर्ण सामाज की उन्नति में बड़ा घनिष्ठ सम्बंध है और किस प्रकार व्यक्ति और समाज के हित में कोई भी विरोध नहीं है। वे अपने कर्तव्य की सीमा से बंधे हुए होते है। इसलिए समाज में किसी प्रकार से संघर्ष का भय नहीं रहता।

2. जनसाधारण के लिए उपयोगिता (Utility for population)

इस विषय की शिक्षा जनसाधारण के लिये उपयोगी है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति नागरिक होता है। उसे सामाजिक तथा राजनैतिक अधिकार मिले होते है। जिनका सही या गलत उपयोग उस व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर होता है।

3. आदर्श नेतृव विकसित करने की आवश्यकता (Necessity for Ideal Leadership Development)

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा से ही विद्यार्थी राष्ट्र निर्माता, देश भक्त तथा समाज सुधारक भी बनते है।

4. प्रजातंत्र में सामाजिक शास्त्र के अध्ययन का महत्व (Importance of the study of social studies in devocracy)

आज का युग प्रजातांत्रिक है। जनता की मान्यता है कि वर्तमान सरकार का निर्माण कुछ लोगों पर निर्भर नही है वरन् सम्पूर्ण जनता पर निर्भर है।

5. व्यावहारिक उपयोगिता (Behavioural Utility)

सामाजिक अध्ययन छात्र छात्राओं को इस योग्य बनाता है कि वे परिवार और समाज के महत्व को समझें व उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का ठीक प्रकार से निर्वाह करें।

6. आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट करने वाला विषय (Subject which specifies modern tradition)

सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जिसके द्वारा आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट किया जाता है । इसकी पुष्टि में हम **एम0 पी0 मुफात** के शब्दों का उल्लेख कर सकते है, **"सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है, जो युवकों को आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता देता है। ऐसा करने के लिये वह अपनी विषय वस्तु को समाज–विज्ञानों तथा समसामयिक जीवन से प्राप्त करता है।"**

7. शिक्षा का आधुनिक दृष्टिकोण : (Modern point of view of education)

सामाजिक अध्ययन शिक्षा के प्रति अपनाये जाने वाले आधुनिक दृष्टिकोण का एक पक्ष है।

फोरेस्टर के अनुसार - "**सामाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओ को संग्रहित या एकत्रित करने की अपेक्षा मानदण्डो, वृत्तियों, आदर्शो तथा रूचियों का निर्माण करता है।**"

8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (To develop Scientitic attitude)

इस विषय में विद्यार्थी को नागरिक की समाज सम्बंधी क्रियाओं का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन करने का अवसर मिलता है। विद्यार्थी नागरिक की समस्या पर विचार है, उन समस्याओं के हल के विषय में विचार करता है। विज्ञान के विद्यार्थी की भांति इस विषय के विद्यार्थी को भी समस्याओं के परिणामें को निकालने के लिये वैज्ञानिक दृष्टिकाण बनाना पड़ता है।

9. अंतर्राष्ट्रीय सूझ–बूझ उत्पन्न करना (To develop international Understanding)

वर्तमान में विश्व एक ज्वालामुखी पर्वत के ऊपर स्थित है जो किसी भी समय फट सकता है। विश्व के अनेक हिस्सों मे दो देशों में युद्ध भड़क सकता है। इसके अतिरिक्त समाज के विकसित देश अविकसित देशो का शोषण कर रहें। आज विश्व में शस्त्र स्पर्धा बढ़ गई है। इसलिये आवश्यकता है कि एक अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित की जाये। देश, धर्म, जाति के आधार पर पनपने वाली संकीर्णताओं को समाप्त किया जाये। अत: इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सामाजिक अध्ययन से अधिक अन्य कोई विषय अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता है।

फलस्वरूप भविष्य में भी इस विषय का अध्ययन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना वर्तमान में है, या भूतकाल में रहा है।

(1.) सामाजिक अध्ययन से आप क्या समझते हैं?

(2.) सामाजिक विज्ञान से आप क्या समझते है?

(3.) निम्न प्रश्न के उत्तर विस्तार से दें।

(4.) सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अंतर स्पष्ट करें ।

1.8 अभ्यास प्रश्न

(1) सामाजिक अध्ययन का क्या महत्व है?

(2) सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषा बतायें ।

(3) सामाजिक अध्ययन विषय की, भविष्य के परिप्रेक्ष्य में, महत्ता पर प्रकाश डलिये ।

(4) सामाजिक अध्ययन का विषय क्षेत्र क्या है?

(5) सामाजिक अध्ययन विषय का स्कूल पाठ्यकम में क्या महत्व है?

1.9 सारांश

वस्तुतः सामाजिक विज्ञान मानवीय संबंधों का अध्ययन है जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक भौगोलिक आर्थिक, राजनैतिक, एवं सामाजिक सरोकारों का अध्ययन किया जाता है। इसका क्षेत्र वहां तक फैला है जहां तक मानवीय सम्बन्धों का जाल। सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में इतिहास. भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं नागरिक शास्त्र आदि विषयों की विषयवस्तु शामिल होती है। आज के वैज्ञानिक युग में सामाजिक अध्ययन न केवल महत्वपूर्ण अपितु और भी प्रासंगिक हो गया है।

1.10 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

(1.) **शर्मा. आर0 ए0** (2004), सामाजिक विज्ञान शिक्षण, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

(2.) **शर्मा. बी0 के0** (2004), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

(3.) **मेहता, डी0 डी0** (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

(4.) **कोचर. एस0 के0** (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यु दिल्ली : स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड।

(5.) **इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0** (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, न्यु दिल्ली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस

इकाई 2

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के भविष्योन्मुखी उद्देश्य

Objectives of Teaching Social Studies with Futuristic Vision

संरचना (Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)
2.1 परिचय (Introduction)
2.2 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य/उद्देश्य एवं प्राप्य उद्देश्यों का समप्रत्यय
2.3 लक्ष्यों/उद्देश्यों एवं प्राप्य उद्देश्यों में संबंध
2.4 लक्ष्यों/उद्देश्यों एवं प्राप्य उदेश्यों में अन्तर
2.5 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के सामान्य उद्देश्य
2.6 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य
2.6.1 विशिष्ट उद्देश्यों का अर्थ एवं महत्व
2.6.2 विशिष्ट उद्देश्यों का वर्गीकरण
2.6.3 शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य
2.7 सामाजिक अध्ययन को भविष्योन्मुखी उद्देश्य
2.8 अभ्यास प्रश्न
2.9 संदर्भ ग्रंथ

2.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई को पढ़ने के बाद सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित निम्नलिखित बिन्दुओं को समझ सकेगें :–

1. लक्ष्य एवं उद्देश्यों से अभिप्राय
2. उद्देश्यों के निर्धारण के आधार
3. विद्‌यालयी पाठ्‌यकम में सामाजिक अध्ययन की स्थिति
4. सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य
5. माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण
6. मूल्यांकन

2.1 परिचय (Introduction)

शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की उपलब्धि में “सामाजिक अध्ययन में सम्मिलित” सामाजिक विज्ञानों यथा इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र की सामग्री का विशेष महत्व है। इसीलिए देश की नवीन भावी शिक्षा योजना की प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय

पाठ्यक्रम एक रूपरेखा में कहा गया है। बच्चों की सामान्य शिक्षा में इन विषयो का बहुत गहरा संबंध है। अन्तस्थ या आधारिक पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि भारतीय पहचान को सुदृढ बनाने के लिए छात्रों में राष्ट्रीय विचारों एवं मूल्यों का समावेश किया जाए। आधारिक पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन शिक्षण द्वारा ही ये अपेक्षाएं पूरी की जा सकती है। अत: भारत की वर्तमान परिस्थितियों में इन अपेक्षाओं के संदर्भ में विशेषत: माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का विवेचन किया जाना युक्ति संगत है ।

2.2 सामान्य उद्देश्य एवं प्राप्य उद्देश्यों का संप्रत्यय

प्राय: लक्ष्य एवं उद्देश्यों को समानार्थक मान लिया जाता है जिसके कारण इनके निर्धारण में स्पष्टता नहीं आ पाती।

कार्टर वी गुड के शब्दों में लक्ष्य पूर्व निर्धारित साक्ष्य होता है। जो किसी कार्य अथवा क्रिया का मार्गदर्शन करता है।

डा. बी.एस.ब्लूम ने कहा है, शैक्षिक उद्देश्य मात्र वे लक्ष्य नहीं है जिनकी सम्प्राप्ति हेतु पाठ्यचर्या की संरचना की जाती है तथा शिक्षण या अनुदेशन निर्दिष्ट हेता है। अपितु वे मूल्यांकन प्रविधि के निर्माण व प्रयोग हेतु विस्तृत विशिष्टीकरण के आधार भी होते हैं।

Educational objective are not only goals through which curriculam is designed and through which Institutions are guided but thry are also the bases that provide the detailed specifications for construction and use of evaluative techniques.

इस प्रकार किसी विषय के लक्ष्य व्यापक, सामान्य, अप्रत्यक्ष, दीर्घ अवधि में प्राप्य तथा आदर्शमूलक होते हैं जबकि उद्देश्य विशिष्ट विषय से प्रत्यक्षत: संबंधित अत्यअवधि में प्राप्य तथा व्यावहारिक होते है। लक्ष्य प्राय: पाठ्यक्रम के सभी विषयों से संबंधित होते हैं जबकि उद्देश्य विषय विशेष से प्रत्यक्ष रूप से संबधित होते है। शिक्षण उद्देश्य क्रमश: विद्यार्थियों को शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर करते है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य दोनों ही निर्धारित किए जाने अपेक्षित है। क्योंकि इसके अभाव में शिक्षण निरर्थक एवं प्रभावहीन सिद्ध होता है।

2.3 शिक्षा के लक्ष्यों/उद्देश्यों तथा शिक्षण प्राप्य उद्देश्यों में संबंध

i) शिक्षा के लक्ष्यों/ उद्देश्यों का संबंध शिक्षा क्रम के सभी विषयों तथा सह शैक्षिक क्रियाओं से होता है। जबकि शिक्षण प्राप्त उद्देश्यों का संबंध सीधी विषय शिक्षण से है।

ii) लक्ष्यों/उद्देश्यों का क्षेत्र व्यापक / दीर्घकालिक होता है तथा प्राप्य उद्देश्यों का क्षेत्र संबंधित विषय तक ही सीमित/अल्पकालिक होता है ।

iii) शिक्षा के लक्ष्यों/उद्देश्यों को प्राप्त करने में लम्बा समय लगता जबकि शिक्षण प्राप्य उद्देश्य पाठ अथवा इकाई की समाप्ति पर प्राप्त किए जा सकते है।

iv) लक्ष्यों/उद्देश्यों को परिभाषित करना कठिन होता है, लेकिन प्राप्य शिक्षण उद्देश्यों का क्षेत्र सीमित होने के कारण उन्हें स्पष्टतः परिभाषित किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है की शिक्षण प्राप्त उद्देश्य धीरे–2 विद्यार्थियों को शिक्षा के लक्ष्यों या उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में आगे की ओर प्रेरित करते रहते है।

निम्नांकित रेखाचित्रानुसार लक्ष्यों और उद्देश्यों के संबंधों को समझा जा सकता है–

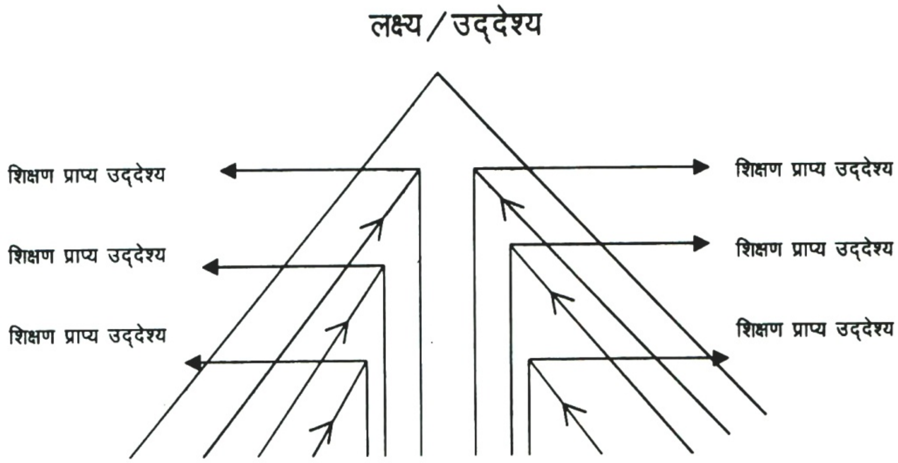

2.4 लक्ष्यों/उद्देश्यों एवं प्राप्य उद्देश्यों में अन्तर

लक्ष्य /उद्देश्य(Aims)	**प्राप्य उद्दयेश(Objectives)**
1. लक्ष्य /उद्देश्य व्यापक होते है क्योंकि इनका संबंध शिक्षा क्रम के समस्त विषयों से होता है	प्राप्य उद्देश्य सीमित होते है क्योंकि इनका संबंध विषय के शिक्षण से होता है।
2. लक्ष्य /उद्देश्य एक सामान्य कथन है	प्राप्य उद्देश्य एक निश्चित एवं विशिष्ट कथन है।
3. लक्ष्य /उद्देश्य कक्षान्तर्गत शिक्षण को परोक्ष रूप से प्रभावित करते है	प्राप्य उद्देश्य कक्षान्तर्गत शिक्षण के प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है।
4. लक्ष्य /उद्देश्य दीर्घकालिक है क्योंकि ये लम्बे समय के बाद प्राप्त होते है।	ये अल्पकालिक है क्योंकि इन्हें प्राप्त करने में कम समय लगता है।
5. इनको परभाषित करना प्रायः कठिन होता है।	इनको परिभाषित करना अपेक्षाकृत सरल होता है।
6. लक्ष्य /उद्देश्य शिक्षा को निर्धारित दिशाएं प्रदान करते है क्योंकि शिक्षा इनके अभाव में वांछित दिशा में उन्नति नहीं कर सकती है।	प्राप्त उद्देश्य वह बिन्दु है जो निर्धारित दिशा में सम्भव उपलब्धि को व्यक्त करता है।
7. लक्ष्य/उद्देश्य कक्षागत शिक्षक की रणनीतियां (व्यूह रचना) के निर्धारण मे	प्राप्य उद्देश्य कक्षागत शिक्षक की व्यूह रचना निर्धारण में सहायक होते है।

सहायक नहीं होते है।	
8. लक्ष्य /उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय कार्यक्रम समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	प्राप्य उद्देश्य की प्राप्ति का दायित्व शिक्षा तथा पाठ विशेष की विषयवस्तु पर होता है।
9. लक्ष्य /उद्देश्य अनिर्दिष्ट होता है।	प्राप्य उद्दयेश विशिष्ट होता है।
10. लक्ष्य /उद्देश्य की प्रकृति दार्शनिक होती है।	प्राप्य उद्देश्य व्यावहारिक होते है। अतः इनकी प्राप्ति संभव है।
11. लक्ष्य /उद्देश्यों मे आदर्शवादिता होती है। अतः इसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना संभव नहीं है। इसकी प्रप्ति हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है।	प्राप्य उद्देश्य व्यावहारिक होते है। अतः इनकी प्राप्ति संभव है। अर्थात् ये प्राप्यनीय है।
12. लक्ष्यों /उद्देश्यों की प्राप्ति निश्चित नहीं है।	प्राप्य उद्देश्य/लक्ष्यों से विकसित एवं उत्पन्न होते है। अतः प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति का एक चरण होता है।
13. लक्ष्य /उद्देश्य सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को प्रदान की जाने वाली वांछित दिशाएं है। अतः शिक्षा के लक्ष्यों को विषयक के अनुकूल परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।	प्राप्य उद्देश्य विषयों के अनुकूल परिवर्तित होते रहते है।
14. लक्ष्य /उद्देश्य शिक्षार्थियों को स्पष्ट दिशा–निर्देश नहीं देते है।	प्राप्य उद्देश्य छात्रों को स्पष्ट दिशा निर्देश देते हैं।

2.5 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य (General Objectives of Teaching Social Studies)

किसी भी विषय के अध्ययन से पूर्व इसके उद्देश्यों को निर्धारित करना भी जरूरी है। उद्देश्यों को निर्धारित किए बिना इसकी प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार के कार्यक्रम का बनाना संभव नहीं है। अत: पढाने की सामग्री का चुनाव करने तथा विधियों का निर्णय करने से पूर्व उद्देश्यों को निश्चित करना अत्यावश्यक है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण के निम्नलिखित सामान्य उद्देश्य है ।

1. **सामाजिक कुशलता (Social Efficiency)–** विद्यार्थियों में भावी जीवन की तैयारी हेतु सामाजिक कुशलता का गुण विकसित किया जाना नितान्त वांछनीय है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण की दिशा में अत्यन्त प्रभावी सिद्ध हो सकता है। इसके द्वारा वह अपने सामाजिक पर्यावरण को समझ कर उससे अपना सामंजस्य कुशलता के माध्यम से करना सीखता है। **10+12** पाठ्यक्रम के अनुसार ये दो वर्ष (कक्षा 10 व 11) व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्व के होते है।

अत: यह आवश्यक है कि विद्यार्थी को अपनी समस्याओं को समझने की मनोवैज्ञानिक अन्तदृष्टि व ज्ञान का विकास किया जाना चाहिए जिससे कि वह स्वयं के तथा समाज के दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार को समझ सके।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी इस उद्देश्य को इन शब्दों में व्यक्त किया है– विद्यार्थियों को (सामाजिक अध्ययन शिक्षण) द्वारा न केवल ज्ञान अर्जित करने अपितु उन अभिवृतियों एवं मूल्यों के विकास करने में सक्षम बनाना चाहिए जो सामूहिक जीवन तथा नागरिक कार्यकुशलता के लिए अत्यावश्यक है। (In the words of Secondary Education Comission "By teaching of social studies students should not only receive knowledge but should be able to develop the attitudes and values, which are necessary for community life and skilled citizen)

शिक्षा की चुनौति– एक नीति परिप्रेक्ष्य में सामाजिक कार्यकुशलता संबंधी उद्देश्यों के विषय में कहा है– व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक कल्याण, कार्य कुशलता एवं सृजनात्मकता पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

(Acc. to policy prespective objectives are those which emphasis on individuals, socioeconomic welfare, work–skill and creativity)

2. **लोकतांत्रिक नागरिकता –** देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से अपना योगदान करने हेतु इस गुण की विशेष आवश्यकता है । जिसके बिना शिक्षार्थी सामाजिक सांमजस्य नहीं कर सकेगा।

सामाजिक कुशलता एवं लोकतांत्रिक नागरिकता भारत के लिए शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्य है। हमारा देश धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य है। अत: शिक्षा द्वारा भावी नागरिकों अर्थात विद्यार्थियों में ऐसे नागरिक एवं चारित्रिक गुणों, अभिवृत्तियों एवं आदतों का विकास करना वांछनीय है जो उन्हें लोकतांत्रिक नागरिक के दायित्वों का सामाजिक कुशलता से वहन करने सहायक हो। इस हेतु माध्यमिक शिक्षा आयोग ने निम्नांकित बिन्दुओं पर बल दिया है–

1. लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर स्वतंत्र निर्णय लेना।

2. एक लोकतांत्रिक नागरिक को निष्पक्ष व निडर होकर अपने देश व समाज के हित में कार्य करना चाहिए।

3. लोकतंत्र प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता एवं सम्मान पर आधारित है अत: शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

4. प्रत्येक व्यक्ति में स्पष्ट विचार एवं नवीन विचारों को ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए, साथ ही अपने विचारों को स्पष्टत: मौखिक एवं लिखित रूप में इस प्रकार व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए कि वह स्वस्थ जनमत का निर्माण कर सकें।

5. लोकतांत्रिक नागरिक में अनुशासन सहकारिता, सामाजिक चेतना तथा सहनशीलता के गुणों की अपेक्षा है ताकि वह सामुदायिक जीवन में कुशलता से सक्रिय भाग ले सके।

6. नागरिकों में संवैधानिक मूल्य जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय के प्रति निष्ठा होनी चाहिए।

7. उसमें राष्ट्रीय एकता तथा अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव की भावना विकसित होनी चाहिए।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने दस वर्षीय विद्यालयी शिक्षाक्रम में कहा है– नागरिक शास्त्र का लाभ मात्र ज्ञानवृद्धि ही नहीं होना चाहिए बल्कि नागरिक जीवन हेतु प्रशिक्षण देना होना चाहिए।

3. राष्ट्रीय भावात्मक एकता (National Emotional Integration)– सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावात्मक एकता की भावना का विकास करना है। भाषा, जाति, धर्म, सम्प्रदाय राजनीतिक विचारधारा, क्षेत्र आदि की विभिन्नताओं के कारण उत्पन्न मतभेद, आज देश को विघटन की ओर अग्रसर कर रहे तथा आतंकवादी प्रवृति के कारण हिंसक रूप धारण किए हुए है । अत: आवश्यकता इस बात की है कि "विद्यार्थियों में विभिन्नता में एकता **(Utillity and Integrity)** का महत्व समझा कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता की भावना का विकास करना है। उन्हें संकीर्ण निष्ठाओं **(Narrow loyalties)** से उपर उठकर राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा की दृष्टि से राष्ट्र के प्रति निष्ठा विकसित करना सिखाना है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने राष्ट्रीय भावना अथवा देशभक्ति का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है दूसरा महत्वपूर्ण लक्ष्य जो माध्यमिक विद्यालय द्वारा विकसित किया जाना चाहिए वह है सच्ची देशभक्ति। सच्ची देशभक्ति के तीन तत्व होते है:–

(i) अपने देश की सामाजिक व सांस्कृतिक उपलब्धियों की हृदय से श्लाघा करना।

(ii) अपनी दुर्बलताओं को स्पष्टत: स्वीकार करने की तत्परता तथा

(iii) इनका निवारण करने तथा देश की सेवा करने हेतु अपनी योग्यतानुसार राष्ट्रीय व्यापक हितों को दृष्टिगत रखते हुए अपने व्यक्तिगत हितो को गौण समझकर उनका समायोजन करने का संकल्प करना।

उपरोक्त उद्धरण में आयोग ने शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में विकसित की जाने वाली राष्ट्रीय अथवा देश भक्ति की भावना के विभिन्न तत्वों पर विशेष बल दिया है। अत: केवल राष्ट्रीय भावना एवं देश प्रेम ही पयाप्त नहीं है इसे इस भावना से पुष्ट किया जाना अपेक्षित है कि हम सब एक विश्व के सदस्य हैं और हमें इस रूप में अपने दायित्व का मानसिक एवं भावात्मक रूप से निर्वाह करने हेतु तत्पर रहना चाहिए।

4. अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव (International Understanding)– सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में संकीर्ण राष्ट्रीय भावना से उपर उठरकर अन्तर्राष्ट्रीय सदभावना का विकास करना है। इतिहास तथा भूगोल के शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में विश्व के देशों की अन्तर्निभरता पर बल देते हुए एक विश्व (One world) तथा विश्व नागरिकता (World citizenship) की भावना विकसित करना है। उनमें "जीओ और जीने दो" (Live and Let live) सह अस्तित्व (co–existence) तथा मानवतावादी भावना का विकास करना है।

नवीन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (1991) में अन्तर्राष्ट्रीय सदभावना के विकास में सामाजिक अध्ययन की विशिष्ट भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा है "छात्रों को भारत की तथा सम्पूर्ण विश्व की सांस्कृतिक देन का सम्मान करना सिखाया जाए।

कोठारी आयोग ने इस सम्बन्ध में कहा है–"अच्छी नागरिकता और भावात्मक एकीकरण के विकास के लिए सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अत्यावश्यक है। विद्यालय की पूरी अवधि में सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्चा द्वारा राष्ट्रीय एकता पर बल दिया जाता है लेकिन इस विषय में छात्र की आयु व समझ शक्ति पर उचित ध्यान रखना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर यथा संभव विश्व इतिहास के संदर्भ में भारत का इतिहास पढाया जाना चाहिए। भूगोल के शिक्षण में विभाजन पहलू के स्थान पर एकता लाने वाली बातों पर बल दिया जाना चाहिए और एक विश्व की नई अवधारण की ओर अधिक ध्यान आकर्षित करना चाहिए। उच्च कक्षाओं में नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम में संयुक्त राष्ट्र और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों का चित्रण और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शक्ति की रक्षा में उनके महान प्रयासों का निष्पक्ष वर्णन होना चाहिए।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक अध्ययन–शिक्षण द्वारा राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव का विकास किया जाना अत्यन्त वांछनीय है।

5. समसामयिक समस्याओं का अवबोध (Understanding of Current Problems)– दस वर्षीय विद्यालय पाठ्यकम में समसामयिक समस्याओं के अवबोध के विकास को महत्व देते हुए कहा है– "समसामयिक आर्थिक समस्याओं जैसे निर्धनता, महंगाई, कृषि उत्पादन में कमी आदि पर विचार –विमर्श किया जाना चाहिए। विश्व शान्ति व सहयोग के विषय में संयुक्त राष्ट्र संघ की महत्वपूर्ण भूमिका का अवबोध कराया जाना चाहिए।

नवीन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में कहा गया है– माध्यमिक स्तर पर समाज विज्ञान विषय में इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र को इस दृष्टि से समेकित करने की जरूरत है कि समकालीन भारत के बारे में छात्रों की समझ और गहरी हो सकेगी। समसामयिक घटनाओं की जानकारी के लिए समाचार पत्रों की कतरनों का उपयोग किया जाए।"

"(To understand the involvement of Indian cultures culture and to preserve the cultural Heritage) "

6. भारत की समन्वित संस्कृति को समझना तथा सांस्कृतिक धरोहर को संभालना– राष्ट्रीय भावात्मक एकता की भावना के विकास हेतु विद्यार्थियों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण द्वारा देश में धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त आदि की भिन्नता होते हुए उनकी जीवन शैली में एक प्रकार की एकता परिलक्षित होती है जिसे भारत की समन्वित संस्कृति कह सकते है, इस बात का अवबोध विकसित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही देश की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उपलब्ध भ्वन, अवशेष, मुद्राऍ, साहित्यिक व ऐतिहासिक ग्रन्थ, धार्मिक स्थल आदि के प्रति आदर व गौरव की भावना तथा उनकी सुरक्षा का दायित्व भाव विद्यार्थियों में जागृत किया जाना चाहिए। नवीन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में इस शिक्षण उद्देश्य को राष्ट्रीय महत्व का माना गया है।

7. पर्यावरण की रक्षा तथा प्राकृतिक स्रोतों व उर्जा को सुरक्षित रखना (To protect environment natural souces and energy)– राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में इसे राष्ट्रीय मूल्य मानकर शैक्षणिक उद्देश्य के रूप में प्रकट किया गया है। पर्यावरण शिक्षा (environment study) का महत्व आज के औद्योगिक व शहरीकरण के युग में बढ गया है। वायु, जल, भोज्य–पदार्थ ध्वनि आदि के क्षेत्र में विशेषत: प्रदूषण मानव जीवन के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। सामाजिक अध्ययन पर्यावरण का ही अध्ययन है। अत: इसके शिक्षण उद्देश्यों में पर्यावरण प्रदूषण के कारणों व उनके निवारण का अवबोध विकसित करना भी महत्वपूर्ण है।

8. वैज्ञानिक पद्धति तथा तकनीकी विकास का अवबोध (Understanding of Scientific progress and technological development)– विज्ञान एवं तकनीकी के युग में इनकी प्रगति एवं विकास से अनभिज्ञ रहना आधुनिक समाज में अज्ञानता का सूचक है। इस क्षेत्र में भारत ने काफी प्रगति की है। जिसका जनजीवन पर क्रान्तिकारी प्रभाव पड रहा है। विकसित देशों की भांति भारत की भी आकांक्षा है कि वह वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति कर अन्य देशों से पीछे न रहे। आज के विद्यार्थी 21 वीं शताब्दी के विकसित समाज के भावी नागरिक है जिन्हें इस प्रगति में अपना योगदान करने हेतु आवश्यक ज्ञान एवं कौशलों से सक्षम बनाना है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण इस दिशा में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकता है। राजस्थान में माध्यमिक कक्षाओं हेतु निर्धारित सामाजिक ज्ञान की पाठ्यपुस्तक में “वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास” प्रकरण इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु रखा गया है। नवीन राष्ट्रीय संविधान में इस उदेश्य को राष्ट्रीय महत्व का माना गया है।

9. **देश के संविधान के प्रति सम्मान तथा नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागृति (To promote awareness to towards Human Rights and Duties and respect of Constitution of the country)**– इस उद्देश्य को भी राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में महत्व दिया गया है। यद्यपि यह उद्देश्य उपर्युक्त उद्देश्यों में सन्निहित है तथापित इसका पृथक उल्लेख इसे और महत्व देना है। संविधान तथा नागरिक कर्तव्यों व अधिकारों के प्रति निष्ठा राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित होने में सहायक होती है।

10. भौतिक व सामाजिक पर्यावरण व ज्ञान (Knowledge of physical and social environment)– यह सामाजिक अध्ययन शिक्षण का ज्ञानात्मक उद्देश्य है। इतिहास भूगोल, नागरिक शास्त्र की पाठ्यवस्तु का चयन सामाजिक अध्ययन शिक्षण में पर्यावरण का ज्ञान प्रदान करता है। इस ज्ञान के आधार पर ही विद्यार्थी इस पर्यावरण से अपना समायोजन करने तथा उसमें सुधार करने हेतु अपना योगदान करने की क्षमता विकसित कर पाता है। इसलिए नवीन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में कहा गया है– सामाजिक अध्ययन द्वारा भौतिक व सामाजिक पर्यावरण का इन्हें ज्ञान दिया जाना चाहिए। समग्र व दूरी के संबंध में और वह भी दोनों तरह का अपने आस पास का भी और दूर का भी।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. मध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों की सूची बनाइए।

आर.सी.ए.एडवीन (R.C.A.Edwin) ने यू.एस.ए. में सामाजिक अध्ययन पढाने के 16 सामान्य उद्देश्यों की सूची चार प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत इस प्रकार दी है:–

1. ज्ञान तथा सूझ–बूझ प्रदान करना (To impart a knowledge and understanding)

(i) बालक को उसके प्राकृतिक वातावरण से परिचित कराना ताकि वह अपने आपको अपने भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के अनुसार ढाल सके।

(ii) परिवार, समाज, राज्य तथा राष्ट्र संबंधी सामाजिक बातों और समस्याओं को समझना।

(iii) अपने इर्द गिर्द के संसार का परिचय प्राप्त करके अपनी रूचियों के क्षेत्र को विस्तृत करना

(iv) सामाजिक विरासत (Social Heritage) के मूल्य को समझना।

(v) उसे आदिकाल से लेकर वर्तमान युग तक की सामाजिक प्रगति, संस्कृति तथा परम्पराओं से परिचत कराना।

(vi) बालक को मनुष्य तथा उसके रहन–सहन के ढंग, उसकी महत्वपूर्ण सफलताओं, संस्थाओं और समस्याओं से अवगत कराना।

(vii) बालक की यह समझने में सहायता करना कि संसार के विभिन्न भागों में भौगोलिक परिस्थितियों ने सामाजिक प्रगति को कैसे और कहां तक प्रभावित किया।

(viii) बालकों की व्यावसायिक क्रियाओं तथा संभावनाओं के समझने तथा जानने में सहायता करना।

2. वांछनीय अभिवृतियों के विकास कार्य (To develop Desirable attitudes)

(ix) बालकों को इस योग्य बनाना कि वे सामाजिक व नागरिक उत्तरदायित्व निभाते हुए हर कार्य में भाग ले सके।

(x) प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों तथा मूल्यों के अनुसार कार्य करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(xi) व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, नागरिकता तथा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना, निश्चल बुद्धि उचित मूल्यांकन तथा तर्क संगत निर्णय जैसे अभिवृतियों का विकास।

3. अच्छे व्यवहार की ट्रेनिंग देना (To give training in desirable patterns)

(xii) देशभक्ति, साहस, सहयोग तथा सहनशीलता की आदत डालना।

(xiii) बालकों को अन्य लोगों के दृष्टिकोणों को समझने में सहायता देना।

4. मूलभूत कौशलों की उत्पत्ति तथा सुधार (To initate and improve basic skills)

(xiv) बालकों में ऐसे कौशलों का विकास करना जो सामाजिक जीवन में प्रभावपूर्ण योगदान के लिए आवश्यक है।

(xv) उनमें तर्कपूर्ण व वैज्ञानिक चिन्तन का विकास करना तथा समझ की क्षमता विकसित करना।

(xvi) सामाजिक अध्ययन के निम्न कौशलों का विकास–

(अ) मुद्रित, चित्रित तथा चार्टों की सामग्री की व्याख्या करना।

(ब) लोगों, घटनाओं तथा संस्थाओं को समय, स्थान तथा महत्व के दृष्टिकोण से देखना।

(स) सामाजिक तथा आर्थिक महत्व के शब्दों का ठीक–ठीक प्रयोग।

(द) महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विधियों की तुलना, समीक्षा, व्याख्या तथा आलोचना आदि करना।

इस प्रकार उपरोक्त लक्ष्यों तथा उद्देश्यों से स्पष्ट हो जाता है कि यदि इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर सामाजिक अध्ययन को पढाया जाय तो नागरिकों का व्यक्तिगत जीवन अच्छा होगा और एक आदर्श समाज तथा पूर्ण राज्य का निर्माण होगा।

2.6 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives of Teching Social Studies)

2.6.1 विशिष्ट उद्देश्यों का अर्थ एवं महत्व (Meaning and importantance of specific objectives)

शिक्षण अथवा सीखने के उद्देश्य बहुत निश्चित, स्पष्ट तथा विशिष्ट होते है। इसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है। यह छात्र तथा शिक्षक को मूर्त सहायता तथा दिशा प्रदान करते हैं तो हम शिक्षण द्वारा छात्रों को प्रदान करते हैं। यह संकुचित व निश्चित होते है। इस कारण इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। यह व्यवहार में परिवर्तन लाने का माध्यम है।

आर.एच.डेविस के अनुसार (Acc. to R.H. Davis), शिक्षण अथवा सीखने के उद्देश्य उस व्यवहार का वर्णन है जिसकी अपेक्षा छात्र से शिक्षण के पश्चात की जाती है। शिक्षण की सम्पूर्ण प्रकिया में शिक्षक का कार्य पाठ नियोजन है, जिसे पाठ की तैयारी अथवा शिक्षण की पूर्व क्रिया अवस्था भी कहा जाता है। पाठ की तैयारी में प्रत्येक शिक्षक का दक्ष होना आवश्यक है। चूंकि इसी के द्वारा अध्यापक अपने उद्देश्य या लक्ष्य तक पहुंचता है। शिक्षण के उद्देश्यों द्वारा ही पाठ्यवस्तु का निर्धारण करना होता है।

डा. शैलेन्द्र भूषण व डा. अनिल कुमार के शब्दों में (Acc. to Dr. Bhushan and Dr. Anil kumar), अधिगम के अनुभवों को सुगम बनाने एवं मूल्यांकन को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण के उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखना अत्यन्त आवश्यक है। उद्येशों को व्यावहारिक रूप मे लिखना अत्यन्त आवश्यक है। उद्देश्यों का व्यावहारिक रूप शिक्षण की प्रक्रिया को क्रमबद्ध एवं सुसंगठित बनाता है। वह शिक्षक को शिक्षण युक्तियों, व्यूह रचना तथा श्रव्य दृश्य सहायक सामग्री के चयन में सहायता पहुंचाता है।

2.6.2 विशिष्ट उद्देश्यों का वर्गीकरण (Classification of specific objectives)

प्रो. बी.एस. ब्लूम ने अपनी पुस्तक "शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण" (B.S.BloomTaxonomy of Educational objectives) में सीखने के उद्देश्यों को तीन भागों में बाँटा है: –

विशिष्ट उद्देश्य

(Specific Objectives)

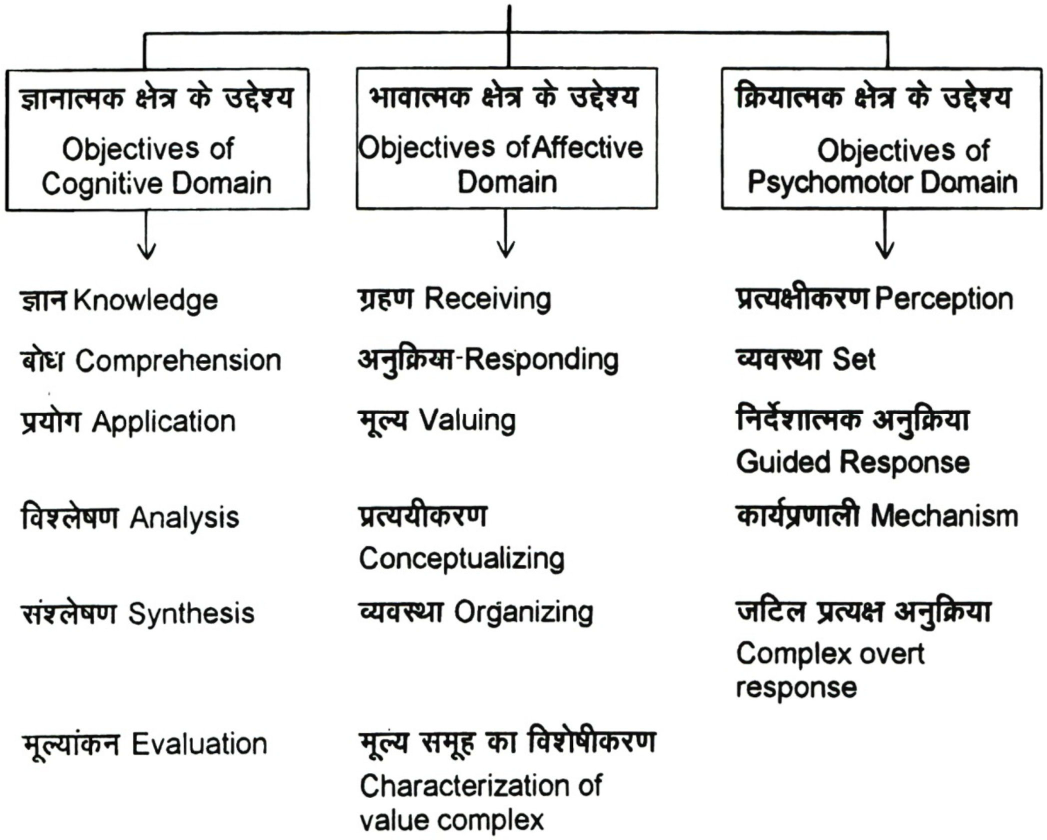

ज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्य (Objectives of Cognitive Domain)

ज्ञानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत वे सभी उद्देश्य सम्मिलित होते हैं जिनका संबंध प्रत्यास्मरण, पहचान तथा बौद्धिक योग्यताओं और कौशलों के विकास से है। इसमें सीखे हुए तथ्यों को याद रखना, बौद्धिक समस्याओं को हल करना व विश्लेषण करना आदि उद्देश्य आते है। ज्ञानात्मक पक्ष का संबंध ज्ञान, सूचना तथा तथ्यों के बोध से है। नारमन ई. ग्रीनलैण्ड ने अपनी पुस्तक कक्षा शिक्षण के लिए व्यावहारिक उद्देश्यों के वर्णन में ज्ञानात्मक पक्ष के विभिन्न स्तर के उद्देश्यों की कार्य क्रियाओं का ब्यौरा निम्न प्रकार दिया है:–

उद्देश्य (Objective)	बल (Emphasis)	कार्य (Action)	क्रियाएं (Verbs)
ज्ञान Knowledge	प्रत्यास्मरण Recall पहचान Recognition	परिभाषा देता है कहता है पहचानता है सुनता है नाम बताता है सूची देता है	दोहराता है
बोध Comprehension अवबोध Understanding	सम्बन्ध, उदाहरण, विभेदीकरण, व्याख्या, वर्गीकरण, मिलान, सामान्यीकरण	व्याख्या करता है सारांश देता है अन्तर बताता है उदाहरण देता है अनुमान लगता है	पुनः लिखता है सामान्यीकरण करता है बदलता है
प्रयोग Application	तर्क, निर्माण, उप–कल्पना, स्थापना, निष्कर्ष, भविष्यवाणी	पता लगाता है भविष्यवाणी करता है दिखाता है गणना करता है	प्रयोग करता है तैयार करता है प्रदर्शित करता है परिवर्तित करता है
विश्लेषण Analysis	विभाजन	अन्तर बताता है उदाहरण देता है संकेत करता है पृथक करता है	सम्बन्ध स्थापित करता है पहचानता है विभेदीकरण करता है
संश्लेषण Synthesis	एकीकरण	मिलाता है श्रेणीबद्ध करता है सृजन करता है प्रारूप तैयार करता है	संकलित करता है वर्णन करता है संगठित करता है पुनः लिखता है
मूल्यांकन Evaluation	जाँच	अवगत कराता है तुलना करता है उचित ठहराता है व्याख्या करता है	परिणाम निकालता है आलोचना करता है सारांश देता है समर्थन करता है

भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्य (Objectives of Affective Domain)

व्यक्ति एक भावात्मक प्राणी है और उसके व्यक्तित्व के उपर सर्वाधिक प्रभाव उसकी भावनाओं का पडता है । इसमे हम ये उद्देश्य निहित करते है जो कि रूचि, अभिवृति,

सौन्दर्यानुभूति, समायोजन तथा मूल्यों में परिवर्तन तथा विकास के विषय से सम्बन्ध रखते है । भावात्मक उद्देश्यों को कार्य क्रियाओं के संदर्भ में निम्न प्रकार प्रस्तुत करते हैं:–

उद्देश्य (Objective)	**कार्य (Action)**	**क्रियाएं (Verbs)**
ग्रहण करना Receiving	बताता है पहचानता है पूछता है वर्णन करता है	उत्तर देता है चयन करता है प्रयोग करता है
अनुक्रिया Responding	उत्तर देता है सहायता करता है सूचित करता है सहयोग देता है	संकलन करता है प्रस्तुत करता है लिखता है चुनता है
मूल्य Valuing	अध्ययन करता है प्रस्तावित करता है आमन्त्रित करता है अन्तर बताता है	पूरा करता है मिलाता है भाग लेता हैं प्रदर्शित करता है
प्रत्ययीकरण Conceptualizing	विश्लेषण करता है सम्बन्ध स्थापित करता है विभेदीकरण करता है	प्रदर्शित करता है संकेत करता है तुलना करता है
व्यवस्था Organizing	क्रमिक रूप देता है परिवर्तित करता है पहचानता है संगठित करता है	वर्णन करता है आदेश देता हे समायोजन करता है संशोधन करता है
मूल्य समूह का विशेषीकरण Characterization of value complex	कार्य करता है हल करता है दोहराता है सुनता है	प्रदर्शित करता है अभ्यास करता है प्रस्तावित करता है

क्रियात्मक क्षेत्र के उद्देश्य (Objectives of Psychomotor Domain)

इस उद्देश्य के अन्तर्गत शारीरिक क्रियाओं के प्रशिक्षण को सम्मिलित किया जाता है। यह शिक्षा का प्रयोगात्मक पक्ष है। शिक्षा के अतिरिक्त इसका प्रयोग व्यावसायिक तथा प्रौद्योगिक प्रशिक्षण में भी किया जा सकता है। इस पक्ष के विकास में ई.जे. सिम्पसन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्य की कार्य क्रियाओं को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं:–

उद्देश्य (Objective)	कार्य (Action)	Kriyaye (verbs)
प्रत्यक्षीकरण Perception	निर्माण करता है	चित्र बनाता है
व्यवस्था Set	प्रारूप तैयार करता है	बनाता है
निर्देशात्मक अनुक्रिया Guided Response	पहचानता है	स्थापित करता है
कार्य प्रणाली Mechanism	मरम्मत करता है	अभ्यास करता है
जटिल प्रत्यक अनुक्रिया Complex overt responce	जोड़ता है	सृजन करता है

2.6.3 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य (Objectives of teching social studies)

ज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्य – हम इन उद्देश्यों को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं

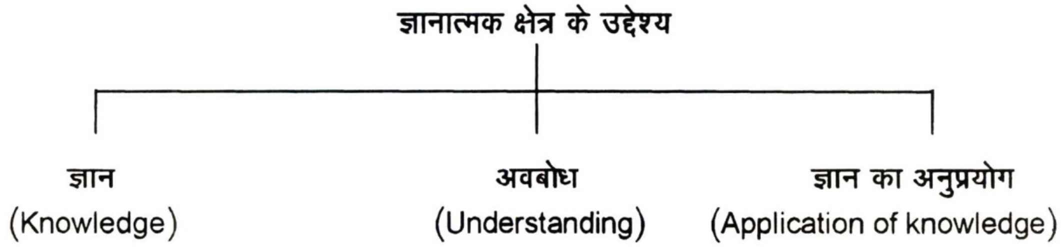

(अ) **ज्ञान (Knowledge)–** इसके अन्तर्गत हम सामाजिक अध्ययन के पदों, प्रत्ययों, तथ्यों, घटनाओं, सिद्धान्तों एवं प्रकियाओं का ज्ञान प्राप्त करते है।

(i) प्रत्यास्मरण कर सके

(ii) पहचान कर सके

(iii) विश्लेषण कर सके

(iv) क्रमिक महत्व समझ सके

(v) व्याख्या कर सके

(vi) निष्कर्ष निकाल सके ।

(व) अवबोध (Understanding)– छात्र सामाजिक अध्ययन विषयक तथ्यों, सिद्धान्तों, धारणाओं गतिविधियों संबंधित गहनताओं में परस्पर

(i) विभेद कर सकेगा

(ii) वर्गीकरण कर सकेगा

(iii) तुलना कर सकेगा

(iv) विषमताओं को समझना

(v) सम्बन्धों को स्पष्ट करेगा

(vi) अशुद्धियों को पहचान सकेगा

(vii) उदाहरण दे सकेगा

(स) ज्ञान का अनुप्रयोग (Application of knowledge)– छात्र सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों, सिद्धान्तों व गतिविधियों का–

(i) विश्लेषण कर सकेगा

(ii) सामान्यीकरण कर सकेगा

(iii) निष्कर्ष निकाल सकेगा

(iv) सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा

(v) प्राकल्पनाओं का परीक्षण कर सकेगा

(vi) नये सिद्धान्तों का निरूपण कर सकेगा

(vii) उपयुक्त सामग्री का चयन कर सकेगा।

(viii) भविष्यवाणी कर सकेगा

(ix) अपने ज्ञान को नवीन परिस्थितियों में प्रयोग कर सकेगा।

भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्य (Objectives of Affective Domaimn)– इसमें हम निम्न उद्देश्य सम्मिलित करते है।

(i) अभिरूचियों का विकास **(Development of Interest**)

(ii) अभिवृतियो का विकास (**Development of Attitudes**)

(i) अभिरूचियों का विकास (Devlopment of Interest)

- छात्र सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं में रूचि लेंगे।
- सामाजिक व राजनैतिक ज्ञान से संबधित विषयों पर निबन्ध लिख सकेंगे।
- छात्र सामाजिक व राजनैतिक व्यक्तियों व संस्थाओं को जान सकेंगे।
- विषय के विविध ग्रन्थों की मौलिक रचनाओं में रूचि लेंगे।

(ii) अभिवृतियों का विकास (Development of Attitudes)

- छात्रों में समूह के साथ उचित व्यवहार करना आयेगा।
- उनमें अच्छी बातों को ग्रहण करने व उचित व्यवहार करने में भावना आ सकेगी।
- वह अच्छी बातों को अपने जीवन में निरूपण कर सकेंगे।
- छात्र दूसरों के प्रति सम्मान भाव रखेंगे।

- छात्र दूसरों की बातों को समझेंगे व उनमे सौन्दर्यानुभूति की क्षमता आ सकेगी ।
- छात्र स्वस्थ राष्ट्रीयता की भावना रखेंगे।
- मानवता के प्रति लगाव रख सकेंगे।

क्रियात्मक क्षेत्र के उद्देश्य (Objectives of Psycho motor Domain)

(i) क्रियात्मक कौशलों का विकास (Development of psychomotor skills)

(ii) आदतें (**Habits**)

(i) क्रियात्मक कौशलों का विकास (Devlelopment of psychomotor skills)

- छात्र कार्टून, चित्र, समय चार्ट आदि को बनाना व प्रयोग करना जानते है।
- उनमे दूसरे से अपने विचारों का आदान–प्रदान करने की क्षमता है।
- वह प्रश्न पूछना, कहानी कहना, सभा में बोलना आदि को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करने में दक्ष है।
- वे तथ्यों तथा प्रदत्तों के आधार पर निर्णयों व निष्कर्षों पर पहुंचने में सक्षम है।
- छात्रों में सामाजिक कौशल विद्यमान है।

(ii) आदतें (Habits)

- छात्रों में सफाई, समय की पाबन्दी तथा सेवा की स्वस्थ आदत है।
- वे दूसरों की सेवा के बदले उनका धन्यवाद करते हैं।
- वह सडक पर बाई ओर चलते है।
- वह लाइन में खडे होते है।
- असहाय लोगों की वे सहायता करते है।

2.7 भविष्योन्मुखी उद्देश्य

1. देश में परिवर्तित परिस्थितियों में शिक्षा के उद्देश्यों से सामंन्जस्य (Consonance with the goals of Education in the changed conditions of the country)

भारतीय संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्यों व आकांक्षाओं के संदर्भ में माध्यमिक शिक्षाआयोग कोठारी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति सम्बन्धी अभिलेख, शिक्षा की चुनौती एक नीति परिप्रेक्ष्य तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा नवीन दस वर्षीय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों में 21 वीं शताब्दी को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक परिवर्तन किए हैं।

शिक्षा की चुनौती– एक नीति परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के निम्नांकित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं जिनमे सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों में सामंजस्य होना चाहिए–

(अ) शिक्षा पद्धति की भूमिका विकास की समस्याओं के समाधान हेतु ज्ञान एवं कौशलों को प्रदान करने में तथा विद्यार्थियों को भौतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अवबोध विकसित करने मे होनी चाहिए।

(ब) व्यक्ति के सामाजिक– आर्थिक कल्याण, क्षमता व सृजनात्मकता पर बल दिया जाए जिसमें निम्नांकित का समावेश किया जाए–

(i) व्यक्तित्व का भौतिक बौद्धिक एवं सौन्दर्य बोधात्मक विकास।

(ii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा लोकतांत्रिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास

(iii) नवाचार एवं नवीन परिस्थितियों का सामना करने हेतु आत्मविश्वास का विकास

(iv) भौतिक सामाजिक, तकनीकी, आर्थिक व सांस्कृतिक पर्यावरण की चेतना उत्पन्न करना।

(v) श्रम के महत्व एंव कठोर परिश्रम के प्रति स्वस्थ अभिवृति का पोषण

(vi) धर्मनिरपेक्षता व सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा

(vii) देश की एकता, सम्मान व विकास के प्रति समर्पण भावना तथा

(viii) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास।

(स) शिक्षा की भूमिका व्यक्ति को सामाजिक संगठन से समन्वित करने में महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

उपरोक्त रूप से परिभाषित शिक्षा के नवीन लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से सामाजिक अध्ययन शिक्षण का सामन्जस्य किया जाना अपेक्षित है।

2. **विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन की स्थिति (Place of Social Studies in the School Curriculum)–** किसी विषय के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का निर्धारण विद्यालयी पाठ्यक्रम में उस विषय की स्थिति एवं महत्व पर निर्भर होता है। नवीन प्रस्तावित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को आधारिक या अन्तस्थ पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य विषय के रूप में रखकर उसे विशेष महत्व दिया गया है। अत: उद्देश्यों के निर्धारण में इस महत्व का औचित्य बनाए रखना वांछनीय है।

3. **सामाजिक अध्ययन में समाविष्ट सामाजिक विज्ञानों की प्रकृति एवं उनका रूप (Nature and Integrated from of Social Sciences included in Social Studies)–** यद्यपि सामाजिक अध्ययन में समाविष्ट सामाजिक विज्ञानों की संख्या एवं पाठ्यवस्तु परिवर्तनशील रही है तथापि नवीन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन मे समाविष्ट विषयों में इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र एवं वर्तमान भारत का सम–सामयिक समस्याओं का चयन किया गया है। इन विषयों की प्रकृति एवं समन्वित रूप को शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के निर्धारण का आधार बनाया जाना चाहिए।

4. **वांछित व्यवहारगत परिवर्तन (Desired Behavioural Changes)–** सामाजिक अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों के निर्धारण का आधार विद्यार्थी में वे वांछित व्यवहारगत परिवर्तन होने चाहिए जो इस विषय के शिक्षण अधिगम के पश्चात अपेक्षित हो। इस प्रकार के विशिष्ट उद्देश्य न केवल किसी कक्षा विशेष के लिए निर्धारित सामाजिक अध्ययन की समान पाठ्यवस्तु के संदर्भ में निर्धारित किए जाए, अपितु प्रत्येक इकाई व पाठ के संदर्भ में भी निर्धारित किए जाने अभीष्ट होंगे। यह आधार सामाजिक अध्ययन शिक्षण को उद्देश्यनिष्ठ बनाने में सहायक होगा। डा. ब्लूम (Dr. Bloom) ने विद्यार्थी को ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक व्यवहार पक्षों के वांछित परिवर्तन का नवीन सम्प्रत्यय दिया है।

5. **शिक्षण अधिगम स्थितियों एवं मूल्यांकन के संदर्भ में नमनीयता (Flexibility in the Context of Teching Learning Situation and Evaluation)–** सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों में पर्याप्त नमनीयता अर्थात परिवर्तनशीलता का समावेश किया जाना चाहिए।

विद्यालय के भौतिक संसाधनो एवं शिक्षक की योग्यता व क्षमता के कारण शिक्षण अधिगम की स्थितियों एवं मूल्यांकन को प्रकट शिक्षण उद्देश्यों की कमियों को दूर करने हेतु उनमें आवश्यक परिवर्तन, संशोधन एवं परिवर्धन किए जाने चाहिए। देश काल की स्थिति के अनुरूप भी ऐसे परिवर्तन वांछनीय है। अत: उद्देश्य निर्धारण का आधार नमनीयता हो न कि कठोरता।

सारांशत सामाजिक अध्ययन प्रगतिशील विश्व की चुनौतियों को स्वीकार कर विकास की नई दिशा बालकों को प्रदान कर सकता है । इसके उद्देश्य एवं लक्ष्य का निर्धारण करते समय हमें व्यापक दृष्टिकोण के साथ देशकाल परिस्थिति और वातावरण को ध्यान में रखना होगा तभी हम अपने लक्ष्य को सफल हो सकते है।

2.8 अभ्यास प्रश्न

1. किसी भी विषय का अध्ययन आरम्भ करने से पूर्व उसके उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को निर्धारित करना क्यों आवश्यक है?

   (Why is determination of aims and objectives essential before undertaking the study of a particular subject?)
2. लक्ष्य तथा उद्देश्यों मे आप क्या भिन्नता समझते हैं?

   (How do you distinguish the aims and objectives?)
3. सामाजिक अध्ययन शिक्षण छात्रों में सफलतापूर्वक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का प्रसार कर सकता है। इस कथन का विवेचन विशेष रूप से भारत की वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में कीजिए।

   (The teaching of social studies can successfully promote national and International understanding among students. Discuss this statement with special reference to the present Indian conditions.)
4. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के महत्वपूर्ण उद्देश्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

   (Discuss briefly the important objectivies of teaching social studies)
5. प्रजातंत्रीय भारत में सामाजिक अध्ययन के अध्यापन के विशिष्ट उद्देश्यों की चर्चा कीजिए।

   (Discuss the specific objectives of teaching social studies in Democratic India.)
6. आपकी रूचि की किसी कक्षा में आप द्वारा चुनी हुई किसी इकाई को पढाने से ज्ञान कौशल तथा अभिवृतियों के किन विकास की संभावना हो सकती है उनकी सूची बनाओ।

   (Make a list of specific understandings skills knowledge and attitude which might be the possible outcomes of unit of your own choice in a class, you are interested in.)
7. स्वतंत्र भारत में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए? उन्हें हम किस प्रकार कक्षा अध्यापन द्वारा प्राप्त कर सकते हैं?

(What should be the objectives of Social Studies in India? How can we achieve them through class teaching?)

सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

(1.) **प्रो. त्यागी, डा. बिजेन्द सिह त्यागी**, सिंह ओंकार “सामाजिक अध्ययन शिक्षण” अरिंहत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर डा. (श्रीमती) शशि चित्तौडा वरिष्ठ सहायक

(2.) **शर्मा बी.एन. माहेश्वरी बी.के.(2005)** सामाजिक अध्ययन शिक्षण, आर.एल.बुक डिपो, मेरठ

(3.) **शर्मा बी.के. (2004)**, सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन

(4.) **कोचर एस.के. (2003)**, दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यू दिल्ली: स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड।

इकाई 3

विद्यालयी पाठ्यचर्या के विभिन्न स्तरों में सामाजिक अध्ययन का एक विषय के रूप में स्थान एवं अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध पाठ्यचर्या के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत उपागम। (Place of social study as a subject in school curriculum at various levels and its co–relation with other subjects curriculum integrated and specified approachs.)

संरचना (Structure)

3.1 उद्देश्य

3.2 परिचय

3.3 आधारिक या अन्तस्थ पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय के रूप में सामाजिक अध्ययन का स्थान

3.4 विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिए जाने के औचित्य संबंधी कारण के आधार।

3.5 विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिए जाने का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

3.6 सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की संरचना।

3.7 विभिन्न स्तरों के लिये सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की रूपरेखा।

- 3.7.1 माध्यमिक स्तर
- 3.7.2 उच्चतर माध्यमिक स्तर
- 3.7.3 सामाजिक अध्ययन के विषयों का कक्षानुसार पाठ्यक्रम।

3.8 सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध

3.9 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के निर्माण के सिद्धान्त एवं उपागम

- 3.9.1 पाठ्यक्रम के सम्प्रत्यय।
- 3.9.2 पाठ्यक्रम के प्रकार
- 3.9.3 सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम।
- 3.9.4 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक आधार।
- 3.9.5 पाठ्यक्रम संगठन के सिद्धान्त
- 3.9.6 पाठ्यक्रम संगठन के उपागम

3.10 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा सारांश

3.11 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के उपरान्त आप जान सकेंगे कि

1. सामाजिक अध्ययन का एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में क्या स्थान है?
2. सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयो से क्या सम्बन्ध है?
3. पाठ्यचर्या के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत उपागम कौन कौन से हैं।

3.2 परिचय (Introduction)

आज विश्व के अधिकांश देशों तथा भारत के प्राय: सभी राज्यों में सामाजिक अध्ययन को एक अनिवार्य विद्यालयी विषय के रूप में महत्व दिया जा रहा है। भारत की भावी 10+2 शिक्षा योजना के अन्तर्गत इसे आधारिक पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाए जाने की आवश्यकता 1975 में ही प्रकट की गई जबकि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने दस वर्षीय विद्यालय पाठ्यक्रम–एक रूपरेखा प्रकाशित किया था। अब पुन: शैक्षिक प्रशासकों, नियोजकों, जनप्रतिनिधियों आदि ने भारत सरकार द्वारा प्रकाशित शिक्षा की चुनौती (Challenge of Education– A Policy perspective) एक नीति परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में देश व्यापी विचार विमर्श के पश्चात् राष्ट्रीय भावी शिक्षा योजना में सामाजिक अध्ययन विषय के महत्व पर मतैक्य प्रकट किया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने पुन: 20 जनवरी 1986 को प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एक रूपरेखा (National Curriculum for Primary and Secondary Education–A Framework) में कहा है "बच्चों की सामान्य शिक्षा में इन विषयों (सामाजिक विज्ञान) का बहुत गहरा महत्व है।" इस रूपरेखा में इस विषय को प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन तथा उच्च प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं में सामाजिक ज्ञान के नाम से आधारिक पाठयक्रम का अनिवार्य अंग माना है।

3.3 आधारिक या अन्तस्थ पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय के रूप में सामाजिक अध्ययन का स्थान (Place of Social Studies in the core curriculum as a compulsory subject)

1. **अधिगमकर्ता का समाजीकरण (Socialization of learner) –** अधिगम वातावरण के प्रति उपयुक्त प्रतिक्रिया अपनाने की प्रक्रिया है तथा 'समाजीकरण' सामाजिक मानदण्डों, मूल्यों व समाज सम्मत व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया है। शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी या अधिगमकर्ता का समाजीकरण करना है। इस दृष्टि से समाजीकरण के लक्ष्य की पूर्ति में जितना योगदान सामाजिक अध्ययन का होता है उतना अन्य किसी विषय का नहीं क्योंकि हेमिंग के अनुसार, सामाजिक अध्ययन वस्तुत प्रकृति से समन्वित तथा समन्वयी (Cordinated and coordinating) होने के कारण, सम्मिलित रूप से आत्मचेतना समाज चेतना, पर्यावरण की

चेतना तथा स्वयं से बढकर किसी कार्य मे सहभागी होने की चेतना होती है। यह चेतना सामाजीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है अत: शिक्षा के इस मूल लक्ष्य की पूर्ति हेतु सामाजिक अध्ययन का विद्यालय के आधारिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य स्थान होना वांछनीय है।

2. **सफल जीवन हेतु आवश्यक ज्ञान (Necessary Knowledge for successful life) –** प्रत्येक विद्यार्थी को सफल जीवन यापन हेतु सामाजिक विज्ञानों का आवश्यक न्यूनतम व्यावहारिक ज्ञान होना अपेक्षित है। अधिकांश छात्रों के लिए प्राथमिक या उच्च प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर तक ही शिक्षा अन्तिम होती है, जिसके बाद ये विद्यालय छोडकर जीविकोपार्जन में लग जाते है। सामाजिक विज्ञानों का क्षेत्र 'ज्ञान के विस्फोट' के कारण निरन्तर बढता जा रहा है जिनका अध्ययन प्रत्येक शिक्षा स्तर पर सीमित उपलब्ध समय में किया जाना संभव नहीं होता। अत: प्रत्येक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थी को इन सामाजिक विज्ञानों का व्यावहारिक आवश्यक ज्ञान देने हेतु पाठ्यक्रम में 'सामाजिक अध्ययन' को अनिवार्य विषय का स्थान दिया गया है। 'अमीरचन्द जैन' के शब्दों में सामाजिक ज्ञान की सामाजिक विज्ञानो के नवीनतम और व्यावहारिक तथ्यों को स्पष्ट करता हुआ अच्छे जीवन यापन की योग्यता उत्पन्न करता है।

3. **देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति निष्ठा एवं सामाजिक परिवर्तन हेतु प्रेरण विकसित करना (Dedication towards cultural heritage and to develop motivation for social change)** – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने 1988 में 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा' में सामाजिक अध्ययन के संदर्भ में कहा है "सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण बालकों में भारत की सांस्कृतिक धरोहर की श्लाघा हेतु सहायक होना चाहिए तथा उन्हें सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में अवांछनीय व पुरातन बातों को समझकर उनके निराकरण हेतु भी प्रेरित करना चाहिए।" कोठारी आयोग ने कहा है -"यदि बिना किसी हिंसात्मक क्रान्ति के बडे पैमाने पर यह परिवर्तन करना है तो केवल एक ही साधन है जिसका प्रयोग किया जा सकता है ओर वह है 'शिक्षा'। सामाजिक अध्ययन को पाठ्यक्रम का आधारिक (Core) विषय बनाकर इसी उद्देश्य की पूर्ति का प्रयास किया गया है

4. **समसामयिक समस्याओं का ज्ञान (Knowledge of current problems) –** नवीन पाठ्यक्रम में इसी तथ्य को प्रकट किया गया है– "सामाजिक विज्ञान विषय में इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र या समसामयिक समस्याओं को समेकित करना है। इन विषयों को इस दृष्टि से सम्मलित करने की जरूरत है कि समकालीन भारत के बारे में छात्रों की समझ गहरी हो सकेगी।" सामाजिक अध्ययन विषय ही इस आवश्यकता की पूर्ति करता है अत: इसे पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना गया है।

5. **विश्वशान्ति एवं सदभाव का विकास (To develop world peace and good feeling)–** छात्रों में न केवल राष्ट्रीय भावात्मक एकता का ही विकास करना है अपितु उनमें विश्व शान्ति एवं सदभाव भी विकसित करना है। आज विश्व अणु आयुषों की प्रतिस्पर्धा में तीसरे विश्व युद्ध की ओर उन्मुख हो विनाश के कगार पर खडा है तथा विकसित राष्ट्रों द्वारा विकासशील राष्ट्रों का शोषण व उत्पीडन हो रहा है। ऐसी स्थिति में भावी नागरिकों में विश्व शान्ति व सदभाव की भावना उत्पन्न करना अपरिहार्य है। विद्यालय स्तर पर यह कार्य सामाजिक अध्ययन द्वारा ही संभव किया जा सकता है।

उपरोक्त कारणों से विद्यालयी शिक्षा के आधारिक पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिया जाना सर्वथा उचित है।

3.4 पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन के आधार (Bases of Social studies in curriculum)

3.5 विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिए जाने का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical perspective of given place of Social Studies in School Curriculum)

विदेश एवं देश के पाठ्यक्रमों में सामाजिक अध्ययन के समावेश संबंधी ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया जा रहा है –

विदेश में

संयुक्त राज्य अमेरिका – सामाजिक अध्ययन का सम्प्रत्यय सर्वप्रथम अमेरिका में विकसित हुआ। वहां 1892 में इस शब्द का प्रयोग किया गया किन्तु 1916 में इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया जिसके अन्तर्गत जनतांत्रिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं को सम्मिलित किया गया। 1930–40 की अवधि में इतिहास के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पक्षों पर बल दिया गया तथा छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं तथा समसामयिक घटनाओं को सम्मिलित किया गया। 1950 से 1960 तक सामाजिक ज्ञान के पाठ्यक्रम को विकसित किया जाता रहा तथा इसके बाद ही उसका अध्ययन आरम्भ हुआ, जिसमें ज्ञान के साथ कौशल को महत्व दिया गया।

इंग्लैण्ड – 1944 से पूर्व इंग्लैंड में स्थानीय पर्यावरण संबंधी शिक्षण तो होता था किन्तु सामाजिक ज्ञान का नहीं। 1944 के शिक्षा नियम द्वारा विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन का समेकित पाठ्यक्रम प्रचलित हुआ। किन्तु 1950 तक इसकी उपेक्षा की जाने लगी। केवल प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर तक ही इसका शिक्षण समेकित रहा। उच्च कक्षाओं में पृथक विषयों का अध्ययन किया जाने लगा ।

अन्य देशों में– साम्यवादी देशों (रूस, पौलेण्ड, हंगरी आदि) में क्षेत्रीय आधार पर पाठ्यक्रम बनाया जाता है। किन्तु साम्यवादी पार्टी द्वारा उनमें एकरूपता की दृष्टि से देश की साम्यवादी सरकार के निष्ठा का समावेश किया जाता है व कम्यून्स (Communes) का सदस्य बनकर छात्रों को साम्यवादी समाज का अध्ययन कराया जाता है।

अन्य यूरोपीय देशो की स्थिति इंग्लैण्ड जैसी है। इन देशों में सामाजिक अध्ययन को पाठ्यक्रम का अंग बनाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रमों में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिये जाने का उपक्रम माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953) की तत्तसम्बन्धी अभिशंषा के बाद ही हुआ है। इस आयोग के सभी विद्यार्थियों के लिए आधारिक विषयों के रूप में सामाजिक अध्ययन को पाठ्यक्रम क्रम में स्थान दिया। अखिल भारतीय स्तर पर तत्कालीन माध्यमिक शिक्षा की अखिल भारत परिषद् तथा अब राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने सामाजिक अध्ययन विषय का पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें व शिक्षक निर्देशिकाएं तैयार कर शब्दों का मार्गदर्शन किया।

3.6 सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की संरचना -

सामजिक अध्ययन के विषय क्षेत्र के अध्ययन के पश्चात् प्रश्न उठता है कि सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में किन किन प्रकरणों को स्थान मिलना चाहिये? इसकी पाठ्यसामग्री

निर्धारित करने से पूर्व यह देखना आवश्यक हो जाता है कि इसके लिये कितना समय उपलब्ध हैं?

'मुदालियर कमीशन' ने पूर्व माध्यमिक स्तर के लिये इस विषय को रखा है। इसके अनुसार सामाजिक अध्ययन को तीन वर्ष का समय प्रदान किया गया है जिसमें छात्रों को सामजिक अध्ययन का प्रारंभिक ज्ञान दिया जाये।

विभिन्न कक्षाओं के लिये सामजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित प्रकरणों को स्थान प्रदान कर सकते है–

(1.) **हमारा देश–** (1) भारत के प्राकृतिक विभाग (2) भारत के विभिन्न भागों में लोंगों का जीवन (3) विभिन्न राज्यों में लोगों का जीवन, प्रत्येक राज्य की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, मुख्य नदियाँ, झीलें, जलवायु, वनस्पति, भोजन, वस्त्र, मकान, फसले, पेशे, भाषा, त्यौहार, धार्मिक एवं ऐतिहासिक, स्थान, उद्योग आदि (4.) भारत का इतिहास

(2.) **प्राकृतिक साधनों का उपयोग–** (1) खनिज पदार्थ (2) भूमि (3) प्राकृतिक वनस्पति (4) पशु सम्पत्ति

(3.) **आर्थिक विकास के लिये नियोजन–** (1) पंचवर्षीय योजनाएं (2) कृषि–विकास (3) औद्योगिक विकास (4) कुटीर एवं लघुस्तरीय उद्योग (5) भारत के कुछ बड़े नगर एवं उनकी समस्याएं।

(4.) **शासन–** (1) संविधान एवं मूलाधिकार (2) नागरिक के कर्तव्य (3) संघीय शासन व्यवस्था (4) राज्यों की शासन–व्यवस्था (5) स्थानीय शासन–व्यवस्था।

(5.) **यातायात तथा संचार के साधन–** (1) भारत में यातायात (2) भारत में संचार–व्यवस्था

(6.) **भारत की समस्याएं–** (1) राष्ट्रीय एकता (2) सामाजिक परिवर्तन (3) साम्प्रदायिकता (4) लोकतंत्र में जीवन।

(7.) **सभ्यता का विकास–** (1) आदि कालीन मानव समाज (2) नदी–तीर की सभ्यताएं (3) प्राचीन विश्व की कुछ सभ्यताएं (4) विश्व के प्रमुख धर्म (5) मध्यकालीन विश्व (6) धर्म सुधार आंदोलन तथा पुनर्जागरण (7) औद्योगिक क्रांति (8) विश्व की कुछ महत्वपूर्ण क्रांतियाँ।

(8.) **विश्व शक्ति एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग–** (1) विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (2) अंतर्राष्ट्रीय संगठन–राष्ट्रसंघ एवं संयुक्त राष्ट्र संघ।

(9.) विश्व के प्राकृतिक विभाग एवं उनमें मानव–जीवन।

(10.) **भारत तथा विश्व के महान पुरूष एवं नारियाँ:–** (1) अकबर, महाराणा प्रताप, चाँदबीबी, शिवाजी, बाजीराव प्रथम, रणजीत सिंह, राजाराममोहन राय (2) महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुज, निजामुद्दीन औलिया, कबीर, गुरूनानक, चैतन्य, दयानंद, विवेकानंद, जोरास्टर, सुकरात, ईसामसीह, मुहम्मद साहब, अब्राहम लिंकन, टॉलस्टॉय आदि।

(11.) **क्रियाएं:–** इसके अतंर्गत रचनात्मक, निरीक्षणात्मक, विवेचनात्मक, सौन्दर्यात्मक, प्रयोगात्मक, अभिनयात्मक आदि क्रियाओं को स्थान दिया गया।

(12.) **सामायिक घटनाएं –** इनके अंतर्गत राजनीति, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं को स्थान दिया जाता है।

3.7 विभिन्न स्तरों के लिये सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की रूपरेखा

3.7.1 माध्यमिक स्तर – इस स्तर के अतंर्गत कक्षा 6, से 8 आते है –

निम्नलिखित प्रकरणों को इन कक्षाओं के अंतर्गत बाँटा जा सकता है–

(1.) **स्थानीय समाज का सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण** –

यह सर्वेक्षण छात्रों द्वारा स्वयं किया जाना चाहिये। इसके अंतर्गत उन्हें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये—

a) परिवार का सामाजिक एवं आर्थिक इकाई के रूप में अध्ययन

b) जलवायु

c) व्यवसाय तथा उद्योग

d) कृषि

e) वाणिज्य तथा वाणिज्य से सम्बंधित व्यवसाय

f) यातायात

g) जनसंख्या का विवरण

(2.) जिले के इतिहास का अध्ययन

(3.) स्थानीय शासन–व्यवस्था

(4.) सामुदायिक स्वास्थ्य–विज्ञान।

(5.) **भोजन–** (1) भोजन के उत्पादन के विभिन्न स्तर (2) स्थानीय फसलों का विवेचना (3) लोगों के रहन सहन के उदाहरण (4) आधुनिक खाद्य–समस्या (5) उन वैज्ञानिकों एवं कृषि शास्त्रियों के विषय में अवगत कराया जाये जिन्होंने विभिन्न प्रकार की खाद्य वस्तुओं के पौधों के विषय में अनुसंधान कार्य किया है जैसे – सर वेंकटरामन, जार्ज वाशिंगटन, कार्बर सामाजिक जीवन, भारतीयों का वर्तमान सामाजिक जीवन, सामाजिक दृष्टिकोण से पिछड़ी जातियों का उत्थान, भारतीय संस्कृति की विशेषताएं, भारतीय इतिहास के विभिन्न कालो की संस्कृति, गुप्तकालीन संस्कृति, राजपूतकालीन सभ्यता, मुस्लिम संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति पर उनका प्रभाव पाश्चात्य सभ्यता आदि।

(6.) **वस्त्र –** राष्ट्रीय पोषाक, प्राचीन, भारत की पोशाके, वस्त्रो के निर्माण में स्थानीय सामग्री – रूई खालों आदि का प्रयोग; जलवायु तथा भौतिक परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग ।

(7.) **आवास –** विभिन्न युगों में रहने वाले लोगों के आवास, उनकी निर्माण प्रक्रिया, उनके निर्माण में प्रयोग आने वाली सामाग्री, विभिन्न युगों एवं स्थानो के लोगो का आवास।

(8.) **शक्ति –** इसके अंतर्गत छात्रों को इस बात से अवगत कराया जाये – (1) मानव शाक्ति (2) पशु शक्ति (3) जल–शक्ति (4) भाषाशक्ति (5) अणुशक्ति

(9.) **मशीनरी –** प्राचीनकाल के यन्त्र, लकड़ी के प्रारंभिक यन्त्र लोहे तथा इस्पात के औजार, इस्पात उत्पादन, भारत के मूलभूत उद्योग, भारत में औद्योगिक क्रांति, उद्योगो का विकेंद्रीकरण

(10.) **यातायात –** मनुष्य, पशु, भाप, पवन, इंजन आदि। भारत तथा विश्व की जहाज या नौका चलाने योग्य नदियाँ, समुद्री मार्ग, भारत में रेलो का विकास, सड़क यातायात, यातायात के विभिन्न साधनों का संक्षिप्त इतिहास एवं उनका विकास, प्राचीनकाल के संचार–साधन, आधुनिक काल के संचार साधनों का संक्षिप्त इतिहास, यातायात एवं संचार के विभिन्न साधनों का मानव जीवन पर प्रभाव।

(11.) भारत के प्राकृतिक भाग – इन भागों का भोजन, वस्त्र, आवास, शक्ति, मशीनरी तथा यातायात के दृष्टिकोण से भी अध्ययन किया जाये।

(12.) व्यापार

(13.) सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन – समाज के विकास के विभिन्न स्तर, भारतीय इतिहास के विभिन्न युगों में।

(14.) राज्य एवं केन्द्र स्तर पर शासन व्यवस्था।

(15.) विभिन्न क्रियाएं।

(16.) विज्ञान एवं प्राद्योगिक के क्षेत्र में हुई प्रगति एवं उसका मानव–जीवन पर प्रभाव।

(17.) सामजिक घटनाएँ

3.7.2 उच्चतर माध्यमिक स्तर:–

इसके अंतर्गत कक्षा 9, 10, 11, तथा 12 आती है। कक्षा 9 से 10 में सामाजिक अध्ययन का समन्वित पाठ्यक्रम प्रदान किया जाये। कक्षा 11 से 12 में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, समाजशास्त्र आदि को स्वतंत्र एवं पृथक पृथक विषयों के रूप में पढ़ाया जाये। कक्षा 9 एवं 10 के सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में अधोलिखित प्रकरणों को स्थान दिया जा सकता है –

(1.) व्यक्ति राष्ट्र एवं मानवता:–

इसके अंतर्गत अधोलिखित का विवेचन किया जाये।

(1) परिवार तथा पड़ोस।

(2) राष्ट्र एवं उसकी शासन व्यवस्था।

(3) आधुनिक भारत में रहन सहन।

(4) विश्व समाज एवं विश्व संगठन आदि।

(5) सिंचाई व्यवस्था।

(2.) संयुक्त राष्ट्र संघ का अध्ययन।

(3.) भारत की सांस्कृतिक स्थिति।

(4.) पूर्वी एवं पाश्चात्य सभ्यता।

(5.) विश्व के 5 महान राष्ट्रों – संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा चीन का संक्षिप्त अध्ययन एवं उनका विश्व–शांति के लिए योगदान।

(6.) भारतीय सभ्यता का इतिहास।

(7.) भारत की समस्याएं।

(8.) विश्व के प्रमुख प्राकृतिक भाग एवं उनकी विशेषताएं।

(9.) विज्ञान एवं प्रौद्यिगिकी प्रगति का मानव जीवन पर प्रभाव।

(10.) विश्व–शांति में भारत का योगदान।

(11.) भारत का राष्ट्रीय आंदोलन।

(12.) विभिन्न घटनाएं।

(13.) सामाजिक घटनाएं

3.6.3 सामाजिक अध्ययन के विषयों का कक्षानुसार पाठ्यक्रम –

(अ) इतिहास का पाठ्यक्रम

–: प्राथमिक स्तर पर पाठ्य वस्तु का प्रारूप:–

(1) **प्राचीन काल की कहानियाँ –**

प्राचीन कहानियाँ भारतीय जीवन गाथाओं से सम्बंधित हों। जैसे– राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, पृथ्वीराज, महाराणा प्रताप, कबीर, नानक, शिवाजी, चैतन्य, रणजीत सिंह, झाँसी की रानी, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू तथा लाल बहादुर शास्त्री आदि। सिकन्दर, अलाउद्दीन खिलजी, फिरोज तुगलक, अकबर, चाँदबीबी, औरंगजेब, नादिरशाह, मीर कासिम, सुल्तान सैयद अहमदखाँ और मोहम्मद अली जिन्ना आदि।

(2) **स्थानीय संस्कृति एवं परम्परायें –**

बालकों को स्थानीय तथा लोक कहानियो, एतिहासिक स्थानों, धार्मिक स्थानों जैसे दिल्ली का लाल किला, मथुरा वृन्दावन के मंदिर; दिल्ली की जामा 'मस्जिद' आगरा का ताजमहल, हड़प्पा मोहनजोदड़ो के अवशेष, शहीद स्मारकों की कहानियों में सम्मिलित किया जाये।

उपरोक्त विषय वस्तु पहली कक्षा से पाँचवी कक्षा तक पढ़ाया जाये और समय के अनुक्रम में विभाजित किया जाये। छात्रो के लिय ऐतिहासिक स्थानों, अजायबघरो का पर्यटन की व्यवस्था की जाये क्योंकि इस आयु के बालकों में वस्तुओं के देखने, छूने की अधिक जिज्ञासा होती है। नवीन वस्तुओं को देखकर जानने के लिये प्रश्न करता है इस प्रकार प्रत्यक्ष निरीक्षणों से बालकों के कौशल विकास के लिये कुछ कार्य भी कराये जाये। अतीत की शिल्प कला, एवं चित्रकला के विकास पर अधिक बल दिया जाए। पाठ्यवस्तु का प्रतिपादन इस प्रकार हो जिससे

शिक्षार्थी मे देश प्रेम तथा विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास हो और सत्य की परख कर सकें पाठ्य वस्तु उसके सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाये।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्य वस्तु के प्रारूप :–

(1) ऐतिहासिक प्रकरण:–

इस स्तर पर भारतीय इतिहास का आलोचनात्मक अध्ययन जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक पक्ष पर अधिक बल दिया और उनकी समस्याओं का अध्ययन वांछनीय है।

विश्व इतिहास का प्रगतिशील पाठ्यवस्तु का अध्ययन हो।

जैसे–

(अ) विभिन्न आंदोलन वैज्ञानिक तथा आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्ययन को साम्मिलित किया जाये।

(ब) तत्कालीन घटनाओं तथा समस्याओं को विशेष महत्व दिया जाये। माध्यमिक स्तर पर पाठ्य वस्तु :–

(1) **ऐतिहासिक प्रकरण –** सिकंदर का आक्रमण, मौर्यवंश, कुशान, साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य, गुलाम वंश, खिलजीवंश, तुगलक वंश, सल्लनतकाल

(2) **सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रकरण–** सिंधु घाटी की सभ्यता, आर्यो की सभ्यता, महाकाव्यकाल, जैनधर्म, बौद्धधर्म, सिखों का उत्कर्ष, ईस्ट इंडिया कम्पनी में संस्कृति, शिक्षा, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार

(3) **भारत का आधुनिक इतिहास–** सन् 1947 से आज तक जिसमें प्रजातंत्र अथवा गणतंत्र की स्थापना, संवैधानिक इतिहास, शासन प्रबंध, आजादी के युद्ध का इतिहास, वैज्ञानिक, औद्योगिक आर्थिक विकास, भारतीय संविधान आदि।

(ब) भूगोल शिक्षण का पाठ्यक्रम

प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम का प्रारूप–

प्राथमिक भौतिक तथ्य :–

दिशाओं, दूरी, दिन, रात, सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के सम्बंध कराया जाये। स्थानीय भौगोलिक तथ्यों का निरीक्षण कराया जाये।

प्राकृतिक तथ्य :–

प्राकृतिक तथ्यों का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करवाया जाये। ताप, वायु, आर्द्रता, मौसम, मिट्टी, चट्टानें पर्वत, जलाशय, नदियाँ, झीले, मरूस्थल, वन, घास का मैदान आदि तथ्यों का बोध कराया जाये।

मानवीय तथ्य–

स्थानीय मानवी निवास, मानव का आवास तथा प्रवास, मानवीय खान–पान, रहन–सहन तथा वस्त्रो आदि क्रियाओं में समानता, भाषा धर्म तथा जीवनयापनों के ढंगों में विषमता का बोध कराया जाये।

(2) माध्यमिक स्तर पर भूगोल के पाठ्यक्रम का प्रारूप–

स्थानीय वातावरण :–

स्थानीय भौगोलिक तथा मानवीय वातावरण के अध्ययन का उद्देश्य होता है कि बालक वास्तविक तथ्यों को समझें कि स्थल की रचना, जलवायु, जलाशय, वनस्पति एवं पशु आदि तथ्यों ने मानवी क्रियाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है।

प्राकृतिक वातावरण :–

(1) वन प्रदेश – इसमें शीतोष्ण तथा समशीतोष्ण प्रदेश सम्मिलित है।

(2) अर्ध–शुष्क – सावन, स्टेप्स तथा प्रेरीज घास के मैदान आते है।

(3) मरू–प्रदेश – इसमें कुछ गर्म तथा कुछ शीत प्रदेश सम्मिलित है।

(4) मानसूनी प्रदेश

(5) पर्वतीय प्रदेश

मानवीय वातावरण:–

(1) पृथ्वी पर मनुष्य की जनसंख्या का वितरण।

(2) मानव सभ्यता के प्रकार तथा कटिबन्ध।

(3) मानव एवं जल

(4) मानव एवं पर्वत

(5) मानव एवं मिट्टी

(6) मानव एवं पर्वत

(7) मानव एवं खनिजपदार्थ

(8) मानव एवं मरूप्रदेश

नगर एवं औद्योगीकरण :–

(1) नगरों के विकास के कारण

(2) नगरो के प्रकार एवं कार्य

(3) औद्योगिक केंन्द्र

(4) औद्योगीकरण के कारण

विश्व का आर्थिक जीवन :–

(1) उत्पादन करने वाले देश

(2) आयात करने वाले देश

(3) यातायात की सुविधायें – रेल, सड़क, जलयान, वायुयान

(4) बन्दरगाहों का आर्थिक दृष्टि से महत्व

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भूगोल के पाठ्यक्रम का प्रारूप–

संसार के भौगोलिक कटिबन्ध :–

(1) प्राकृतिक वातावरण के तथ्य, इसकी गतिशीलता, मानवीय क्रियाओं पर प्रभाव एवं मानव को अनुकूल।

(2) (अ) प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ कृषि, पशुपालन, वन उद्योग आदि।

(ब) औद्योगिक आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाले तथ्य, औद्योगीकरण, व्यापार, यातायात एवं खानिज पदार्थ आदि।

भौगोलिक तथ्यों के आधार पर विभिन्न प्रकार के कटिबन्धों में विभाजित किया जा सकता है। इसके लिए कुछ सुझाव दिये गये है –

(1) आर्द्र भूमध्यरेखीय प्रदेश।

(2) शीतोष्ण तथा समशीतोष्ण प्रदेश।

(3) भू–मध्य सागरीय प्रदेश।

(4) महासागरीय समशीतोष्ण प्रदेश।

(5) मध्य अक्षांशीय तथा महाद्वीप जलवायु प्रदेश।

(6) शीत तथा ध्रुवीय प्रदेश।

विश्व का राजनीतिक तथा आर्थिक भूगोल :–

(1) विश्व का राजनैतिक विभाजन

(2) विश्व का आर्थिक जीवन– अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा वर्तमान व्यापार

(3) विश्व की आर्थिक समस्यायें – प्रमुख आर्थिक वर्ग, अविकसित वर्ग।

(4) मानवी समस्यायें– जनसंख्या की वृद्धि एवं निवास, अधिक जनसंख्या की समस्या सामाजिक जीवन एवं विकास।

(5) विशिष्ट भौगोलिक समस्यायें– भूगोल के क्षेत्र की समस्या, प्रगति देशो की समस्यायें, नगरों के विकास की समस्यायें।

(स) अर्थशास्त्र शिक्षण का पाठ्यक्रमः–

अर्थशास्त्र का स्वतंत्र विषय के रूप में कार्य हाईस्कूल से प्रारम्भ होता है।

(1.) **हाईस्कूल स्तर पर –**

अर्थशास्त्र शिक्षण का कार्य दो प्रश्न पत्रों में विभक्त किया जाता है।

प्रथम प्रश्न पत्र :–

मूल्य, कीमत, उपयोगिता, धन, कर, लगान, आय, वस्तु–विनिमय, बाजार, क्रय विक्रय, आवश्यकतायें, उनका अर्थ तथा श्रेणीकरण, पारिवारिक बजट, घरेलू उद्योग धन्धे, कृषि–आय तथा उसका वितरण, बंटाई प्रथा तथा उसके दोष, श्रम समस्यायें, ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बंधित आर्थिक समस्यायें, सहकारी आंदोलनो आदि के अध्ययन का प्रावधान है।

द्वितीय प्रश्न पत्र :–

भौतिक वातावरण तथा उसका मानव जीवन पर प्रभाव, भारत की मिट्टियाँ, उनके प्रकार व विशेषताएं, प्रकार, जलवायु, सिंचाई के साधन, वर्ग, उसका वितरण, भारत की प्रमुख फसलें, जैसे – गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, पशु सम्पत्ति, तथा उसके केंद्र प्रमुख खनिज जैसे – लोहा, कोयला, अभ्रक आदि, शक्ति के विभिन्न साधन, भारत की वन सम्पदा, तथा उसके विवरण व प्रकार, जनसंख्या व उसका महत्व व घनत्व, उद्योग धन्धे व उनका स्थानीयकरण, यातायात के

साधन– सड़क, रेल, वायु तथा समुद्री यातायात, संदेश वाहक के साधन जैसे– डाक, तार, टेलीफोन, बेतार के तार आदि, भारत के प्रमुख औद्योगिक नगर, बन्दरगाह, हवाई अड्डे तथा व्यापारिक केंद्र आदि को सम्मिलित किया गया है।

(2.) **इण्टरमीडिएट स्तर :– (उच्च माध्यमिक स्तर)**

प्रथम प्रश्न पत्र :–

अर्थशास्त्र के अर्थ, स्वरूप, विकास, क्षेत्र तथा इसके अन्य विषयों के साथ सह सम्बंन्ध के अलावा उपभोग के नियम, उपयोगिता, उपयोगिता के नियम, उपभोक्ता, बजट, माँग व पूर्ति, पारिवारिक बजट, आय का वितरण तथा व्यय व उसका सामाजिक पक्ष, उत्पत्ति, उत्पत्ति के साधन, नियम, महत्व, भूमि, श्रम, पूँजी, प्रबन्ध, साहस, कर कार्य–कुशलता, श्रम–विभाजन, ग्रामीण उद्योग–धन्धे, औद्योगीकरण, प्रत्यक्ष कर, परोक्ष कर, प्रान्तीय कर प्रणाली, उत्तर प्रदेश में प्रांतीय संस्थाओं की आय की मद, भारतीय कृषि, भारत में यातायात के साधन, सिंचाई, जनसंख्या, का घनत्व, वितरण, श्रम का अर्थ व भेद आदि का अध्ययन किया जाता है।

द्वितीय प्रश्न पत्र :–

विनिमय तथा वितरण के विभिन्न पक्ष, पहलुओं तथा तत्वों के अध्ययन के लिये प्रस्तावित किया गया है। विनिमय के अंतर्गत छात्रों को वस्तु विनिमय, बाजार, मूल्य–निर्धारण, मुद्रा व द्रव्य, उनके भेद, कार्य, साख, साख–पत्र, बैंक व्यवस्था, सहकारिता, ग्रेरास का नियम, वितरण का अर्थ, समस्या, लगान तथा लगान–निर्धारण के सिद्धांत, मजदूरी, वेतन, ब्याज, लाभ कम्पूयटर इण्टरनेट, ई–कामर्स, ई–मेल तथा इनके लाभ तथा इनके उद्देश्य, सांख्यिकी–मंध्यमान, केंद्रीमान उनके परिणाम आदि।

नागरिक शास्त्र का पाठ्यक्रम :–

कक्षा 6 का पाठ्यक्रम–

1. स्थानीय सरकार का संगठन तथा कार्य–

(अ) ग्राम (ब) नगर (स) जिला इनके अधिकारी तथा कार्य

2. स्थानीय संस्थायें–

(अ) ग्राम पंचायत (ब) नगरपालिका तथा (स) अंतरिम जिला परिषद तथा इनका संगठन एवं कार्य

3. कहानियाँ–

जिसके द्वारा स्वदेश प्रेम, सत्यता, सहयोग, सहकारिता, दया, सहानुभूति, त्याग आदि गुणों का विकास किया जा सके।

4. अच्छी आदतों के निर्माण लिये प्रायेगिक कार्य–घर, ग्राम, पड़ोस

5. स्वास्थ्य सम्बंधी नियमों का सामान्य परिचय।

कक्षा 7 का पाठ्क्रम :–

1. गुणों तथा आदतो के विकास के लिये कार्य।
2. स्वास्थ्य नियमों का विस्तृत परिचय।
3. प्रदेश की सरकार :–

I. व्यवस्थापिका सभा का संगठन तथा कार्य।

II. कार्यपालिका का संगठन तथा कार्य।

III. न्यायपालिका का संगठन एवं कार्य।

कक्षा 8 का पाठ्यक्रम :–

(1) केंद्रीय सरकार का संक्षिप्त अवलोकन:–

i. केंद्रीय व्यवस्थापिका का संगठन तथा कार्य।

ii. केंद्रीय कार्यपालिका का संगठन तथा कार्य।

iii. सर्वोच्च न्यायालय का संगठन, क्षेत्र तथा कार्य।

राज्यों की सरकारों से सम्बंध।

(3) अंतर्राष्ट्रीय संगठन का संक्षिप्त अवलोकन –

i. लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना, संगठना तथा कार्य।

ii. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना, संगठन तथा कार्य।

कक्षा 9 व 10 –

प्रथम् प्रश्न पत्र :–

नागरिकशास्त्र के सिद्धांत :–

1. नागरिकशास्त्र–अर्थ, विषय–विस्तार तथा महत्व।
2. नागरिकशास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बंध।
3. व्यक्ति तथा समाज, संघ, समुदाय और राज्य।
4. नागरिक और नागरिक–अधिकार तथा कर्तव्य नागरिकता की प्राप्ति तथा विलोम।
5. राज्य – मुख्य अंग तथा कार्य।
6. सरकार तथा उसके विविध रूप–उसकी परिभाषाएं तथा गुण दोष।
7. सरकार तथा अंग - व्यवस्थापिक, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका इनके परस्पर सम्बंन्ध।
8. कानून तथा स्वतंत्रता।
9. राजनीतिक दल तथा जनमत।
10. मताधिकार तथा निर्वाचन – प्रणाली।
11. विभिन्न प्रायोगिक कार्य।

द्वितीय प्रश्न पत्र

भारतीय नागरिकता तथा प्रशासन –

1. भारत का संक्षिप्त वैधानिक विकास।
2. भारत के संविधान की विशेषताएं।
3. भारतीय नागरिकता तथा नागरिक के मूल अधिकार।
4. राज्य की नीति के निर्देशक तत्व।
5. संघीय कार्यपालिका – प्रेसीडेण्ट, लोकसभा तथा राज्य परिषद।
6. संघीय कार्यपालिका – प्रसीडेण्ट, उपराष्ट्रपति तथा मंत्रिपरिषद।

7. संघीय न्यायपालिका।
8. राज्य का शासन।
9. संघ तथा राज्यों का अधिकार – विभाजन तथा सम्बंध।
10. जिले का शासन प्रबंध।
11. स्थानीय संस्थायें।
12. भारतीय राजनीति दल।
13. भारतीय समाज की सामाजिक तथा आर्थिक समस्यायें तथा उनका सुधार।
14. भारत का संयुक्त राष्ट्र संघ।
15. विभिन्न व्यवहारिक क्रियाओं का संगठन एवं संचालन।

कक्षा 11 तथा 12 -

इन कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को स्थान प्रदान किया जाना चाहिए–

- नागरिकशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र और महत्व।
- नागरिकशास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बंध।
- नागरिक समस्याएं– इनका विवेचन, आर्थिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण।
- नागरिकता की समस्यायें।
- धर्म और भाषा नागरिकता पर प्रभाव।
- कानून तथा स्वतंत्रता।
- शासन का स्वरूप।
- लोकतंत्र तथा अधिनायक तंत्र।
- नागरिकों तथा राज्य के सम्बंध।
- सामाजिक घटनाएं।
- तत्कालीन घटनाएं।
- आर्थिक व्यवस्था का परिचय।
- राष्ट्रीय एकता तथा नागरिकता।
- विश्वनागरिककता – अंतर्राष्ट्रीयता, संगठनों का स्वरूप एवं उसके कार्य, अंतर्राष्ट्रीय सम्प्रदायों का सामान्य ज्ञान, भारत का विश्व– शांति के लिए योगदान।
- विभिन्न क्रियाओं एवं सस्थाओं का संगठन एवं संचालन।

प्रगति का स्वमूल्यांकन

1 माध्यमिक स्तर पर भूगोल के पाठ्यक्रम का प्रारूप बताइये।

2 हाईस्कूल स्तर पर अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम के विषय में विस्तार से बताइये।

3.6 सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध

सामाजिक अध्ययन के सम्प्रत्यय के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, व अर्थशास्त्र का वह ज्ञान सम्मिलित होगा जो विद्यार्थी को मानवीय संबंधों तथा मानव समाज के

सदस्य के रूप में अपना स्थान सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है। इन अंगी विषयों की विषय वस्तु विद्यार्थी को अपने पर्यावरण के समझने में सहायक होती है। यह पर्यावरण बालक में आयु वर्ग एवं शिक्षा स्तर के अनुरूप निरन्तर विकसित एवं वृद्धिमान होता जाएगा तथा पर्यावरण को समझने हेतु सम्बद्ध विषयों की विषय वस्तु का भी विस्तार होता जायेगा।

इन विषयों के अतिरिक्त भी कुछ विषयों का ज्ञान प्रसंगवश सामाजिक अध्ययन में समाविष्ट हो सकता है, जैस – वाणिज्य, नीतिशास्त्र, मानव जाति विज्ञान (Ethrology), नृवंश शास्त्र (Anthropology), राजनीति शास्त्र आदि। सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है :–

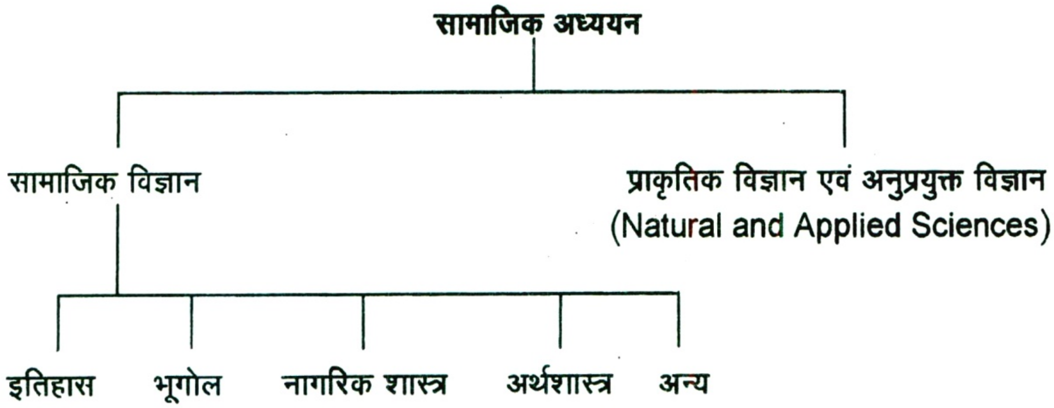

सामजिक विज्ञान (Social Science)–

(1) **इतिहास (History) –** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा प्रस्तावित सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम में इतिहास के प्रकरण यथा–मानवता का प्रागैतिहासिक काल तक का क्रमबद्ध इतिहास, सामाजिक संगठनों का उदय व पतन, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक विकास, विश्व के प्रमुख क्षेत्रों का ऐतिहासिक विकास, विभिन्न देशों का मानव इतिहास के संदर्भ में विकास, भारतीय इतिहास के किसी विशिष्ट पक्ष–सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास का गहन अध्ययन जो तत्कालीन भारत को समझने में सहायक हो।

इतिहास की उपरोक्त विषय–वस्तु से सामाजिक अध्ययन का इतिहास से एक विशिष्ट संदर्भ में सह–सम्बन्ध प्रकट होता है–यह संदर्भ है मानव समाज। सामाजिक अध्ययन में इतिहास से अधिकांश पाठ्यवस्तु सम्मिलित की जाती है क्योंकि मानव समाज के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ही वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संस्थाओं क्रो भली–भांति समझा जा सकता है जिसमें कि विद्यार्थी अपना सक्रिय योगदान कर सके। लोकतन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता व सामाजिक न्याय के हमारे संवैधानिक मूल्यों व आदर्शों का अवबोध भी सामाजिक अध्ययन के अंगी विषय इतिहास के माध्यम से ही होता है। राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास भी इतिहास से सामाजिक अध्ययन के घनिष्ठ सह–सम्बन्ध से ही

संभव है। स्थानीय इतिहास का राष्ट्रीय इतिहास में तथा राष्ट्रीय इतिहास का विश्व इतिहास में योगदान का अवबोध विद्यार्थियों को संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठाकर राष्ट्र व विश्व के प्रति उदार निष्ठा विकसित करता है। यह अवबोध सामाजिक अध्ययन के इतिहास से सह–सम्बन्ध द्वारा संभव होता है।

(2) **भूगोल (Geography) –** से सह–सम्बन्ध भौतिक पर्यावरण के अध्ययन द्वारा होता है। विभिन्न स्थानीय, प्रान्तीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा विश्व के अनेक भागों की भौगोलिक दशा तथा उनके वहाँ के जन–जीवन पर पड़े प्रभाव का अध्य्यन राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास करता है। प्राकृतिक शक्तियों पर मानव जीवन की विजय एवं प्रतिकूल परिस्थितियों को भी मानव द्वारा अनुकूल बनाने के प्रयास का परिचय विद्यार्थियों को भूगोल द्वारा ही होता है जो मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का अवबोध कराता है। इसलिए भूगोल से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी सामग्री सामाजिक अध्ययन में ली जाती है। मानव के क्रिया–कलापों का रंगमंच भूगोल ही प्रस्तुत करता है अत : सामाजिक अध्ययन का भूगोल से घनिष्ठ सह–सम्बन्ध होता है।

(3) **नागरिक शास्त्र (Civics) –** सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को कुशल नागरिक बनाना तथा उन्हें देश की लोकतान्त्रिक, स्वायत्तशासी एवं राजनीतिक संस्थानों में सक्रिय व प्रभावी भाग लेने हेतु प्रशिक्षित करना है। इस उद्देश्य से नागरिकशास्त्र से घनिष्ठ सह–सम्बन्ध स्थापित कर सामाजिक अध्ययन की अधिकांश सामग्री नागरिक शास्त्र से चयनित की जाती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा प्रतिपादित सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में अंकित नागरिक शास्त्र के निम्नांकित उद्देश्य है :–

"कक्षा IX व X नागरिकशास्त्र के दो मुख्य उद्देश्य है – (1) सक्रिय व कुशाग्र नागरिकता का विकास तथा (2) सामाजिक व राजनीतिक संस्थानों के संगठन व कार्यविधि के समुचित अवबोध का विकास करना। इसके अतिरिक्त यह भी समझना आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व शान्ति व सहकारिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।"

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सामाजिक अध्ययन में नागरिकशास्त्र का अर्थ व क्षेत्र, सामुदायिक जीवन, शासन पद्धतियाँ, अधिकार व कर्तव्य, लोकतन्त्रात्मक राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रकरण सम्मिलित किए जाते हैं।

(4) **अर्थशास्त्र (Economics) –** सामाजिक अध्ययन में अर्थशास्त्र की उन ज्वलन्त आर्थिक समस्याओं व प्रकरणों पर बल दिया जाता है। जिनका आम आदमी के दैनिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है, जैसे– स्वाधीनतापूर्ण व स्वाधीनोत्तर भारत की आर्थिक दशा, पंचवर्षीय योजनाओं में आर्थिक विकास, मुद्रा व वित्तीय संस्थाएँ, निर्धनता, महंगाई, कृषि व उद्योग की मंदी आदि ज्वलन्त आर्थिक समस्याएँ तथा देश के

प्राकृतिक व औद्योगिक संसाधनों के भावी विकास। इस प्रकार मानव जीवन पर आर्थिक प्रभावों की दृष्टि से अर्थशास्त्र का सामाजिक अध्ययन से सह–सम्बन्ध होता है।

(5) **अन्य सामाजिक विज्ञान (Other Social Sciences) -** समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, नृवंश शास्त्र, मानव जाति शास्त्र आदि अन्य सामाजिक विज्ञानों में भी कुछ सीमा तक सामाजिक अध्ययन का सह–सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

(6) **प्रकृति एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान (Natural and applied Science) –** प्रकृति एवं अनुप्रयुक्त विज्ञानों में हुई खोजों व अनुसंधानों के फलस्वरूप मानव जीवन पर अपरोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। भटनागर एवं व्यास के शब्दों में – "प्रकृति विज्ञान तथा प्रयोजनीय विज्ञान का सामाजिक अध्ययन से सीधा सम्बन्ध दिखाई देने पर भी इन विषयों में हुई खोज एवं अनुसंधान के परिणामस्वरूप मानव के सामाजिक जीवन पर अनिवार्य रूप से पड़ने वाले प्रभाव को भली प्रकार समझने तथा तत्सम्बन्धी नवीन समस्याओं को हल करने में परोक्ष रूप से उक्त विषयों से सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु प्राप्त होती है।" इस दृष्टि से सामाजिक अध्ययन में वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति व उसके मानव पर प्रभाव का उल्लेख किया जाना अपरिहार्य है। यह तथ्य इन विषयों का इससे सह–सम्बन्ध ही सूचित करता है।

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति का जो दस्तावेज– 'शिक्षा की चुनौतियाँ' प्रकाश में आया है उसमें तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री के.सी. पन्त ने कहा है– "शिक्षा की भूमिका स्थिर समाज को एक ऐसे समाज में परिवर्तित करना है जो विकास तथा परिवर्तन के लिए समर्पित हो। शिक्षा मूलतः भविष्य से सम्बन्धित है। यदि इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेशोन्मुख नई पीढ़ी स्वयं को अक्षम पाती है वह अपनी दुर्बलताओं के लिए वर्तमान पीढी को उत्तरदायी मानेगी। अत: सामाजिक अध्ययन विषय में भावी समाज की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखना होगा।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. विषयों के सह सम्बन्ध से आप क्या समझते है?
2. विद्यालय के अन्य विषयों के साथ सामाजिक अध्ययन के सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

3.7 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त एवं उपागम (Principles and Approaches of framing curriculum of Social Studies)

3.7.1 पाठ्यक्रम का सम्प्रत्यय (Concept of Curriculum)

पाठ्यक्रम किसी कक्षा स्तर पर अध्ययन किए जाने वाले विषय के लक्ष्य, उद्देश्यों, पाठ्य विषय–वस्तु, शिक्षण सहायक सामग्री, संदर्भ पुस्तकों, मूल्यांकन आदि से सम्बद्ध रूपरेखा को कहते है।

जॉन डीवी (Jonh Dewey) बालक एवं पाठ्यक्रम दोनों की सीमाएं है जो एकाकी प्रक्रिया को परिभाषित करती है। यह निरन्तर चलने वाला पुर्ननिर्माण है जो बालक के अनुभवों से गतिमान होता है। यह एक संगठनात्मक ढांचे का प्रतिनिधि स्वरूप है जिसे हम कई प्रकार से व्यक्त करते है। अध्ययन का एक भाग मानते है तो अपने आप में एक अनुभव है।

फ्रेंकलिन बोबिट (Franklin Bobbitt) के अनुसार, पाठ्यक्रम को दो तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है–

1. यह पूर्णतया अनुभवों का एक ऐसा दायरा है, जो निर्देशित अथवा अनिर्देशित रूप से व्यक्ति की योग्यताओं को उभारने से संबंधित है।

2. यह एक ऐसा क्रम है जिसके माध्यम से सुविचारित एवं निर्देशित प्रशिक्षित अनुभवों के द्वारा न सिर्फ बालक की योग्यताओं को उभारा जाता है बल्कि उसमें पूर्णता लाने हेतु उपयोगी प्रयास भी किए जाते हैं।"

National society for the study of education 1927 के अनुसार, “पाठ्यक्रम अनुभवों का ऐसा परिणाम है जो अधिगमकर्ता को जीवन के प्रति रूझान हेतु महत्वपूर्ण दृष्टिकोण देता है एवं सांसारिक परिस्थितियों से जुझने एवं उन पर नियंत्रण रखने हेतु सहायता देता है।”

होलीस एकोसवेल एवं केम्पबेल (Hallis Akoswel and Comphell) के अनुसार, “पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बालक के वे सभी अनुभव समाहित होते है, जो उसे अध्यापक के निर्देशन से प्राप्त होते है। इस तरह पाठ्यक्रम को अध्ययन का एक क्षेत्र माना जाता है जो विषयवस्तु की सीमाओं का प्रतिनिधित्व नही करता, बल्कि एक प्रक्रिया या विधि है।

रेल्फ टेलर **(Ralph Tyler)** के अनुसार, “पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी अधिगम के अनुभव समाहित है जो विद्यालय द्वारा शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित एवं नियोजित किए जाते है।

रोबर्ट गेने **(Robert Gange)** के अनुसार, पाठ्यक्रम एक ऐसा व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध विषय वस्तु की इकाईयों का संगठन है जो ऐसे क्रम से सुव्यवस्थित किया जाता है कि प्रत्येक इकाई का अधिगम का एक कार्य के रूप में सम्पन्न होता है बशर्ते है कि पूर्व क्रम में निर्धारित इकाईयों का अधिगमकर्ता को पर्याप्त ज्ञान हो।

3.7.1 पाठ्यक्रम के प्रकार (Types of curriculum)

नियोजित पाठ्यक्रम एवं वास्तविक पाठ्यक्रम में काफी अन्तर होता है गुडलेड (Goodlad) ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस अन्तर को परिभाषित किया है। उन्होंने पाठ्यक्रम के विश्लेषण के आधार पर पाँच प्रकार के पाठ्यक्रम बनाए है, जो निम्नलिखित है।

1. **प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Proposed curriculum(–** यह ऐसा पाठ्यक्रम है जो अनुसंधानकर्ताओं एवं व्यावसायिक संगठनों द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रस्तावित किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यकमों पर सामाजिक प्रवृतियों का अत्यधिक प्रभाव होता है एवं व्यक्तिगत विचारधारा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. **लिखित पाठ्यक्रम (Written curriculum)–** लिखित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इस बात का ध्यान रखा जाता है कि निर्धारित किए गए शैक्षिक लक्ष्य प्रस्तावित पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते है। लिखित पाठ्यक्रम कुछ अधिक विस्तृत एवं व्यापक होता है।

3. **सहायक पाठ्यक्रम (Assist curriculum) –** सहायक पाठ्यक्रम एक ऐसा पाठ्यक्रम है जो मुख्यपाठ्यक्रम की प्रतिछाया होती है, जिसमें मुख्य पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रावधान किया जाता है।

4. **पढ़ाया जाने वाला पाठ्यक्रम (Readable curriculum) –** वह पाठ्यक्रम जो अध्यापक द्वारा वास्तव में पढाया जाता है अवलोकनकर्ता द्वारा देखा जाता है। कक्षा कक्ष संस्थितियों में जो क्रिया कलाप वास्तविक रूप में होते है, वे पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आते है।

5. **परीक्षित पाठ्यक्रम (Tested curriculum) –** अध्यापकों द्वारा कक्षाओं में विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है वह परीक्षित पाठ्यक्रम है।

6. **अधिगमित पाठ्यक्रम (Learned curriculum) –** विद्यालयों में मिलने वाले अनुभवों से जो बालक के मूल्यों, प्रत्यक्षीकरण के अनुभवों या व्यवहार में परिवर्तन आते हैं, वह अभिगमित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आते हैं। बालक ने उपलब्ध परिस्थितियों में क्या सीखा है क्या समझा है एवं उसका उसके व्यवहार पर क्या प्रभाव पडता है इन सभी प्रभावों का एकीकृत स्वरूप ही अधिगमित पाठ्यक्रम है।

3.7.3 सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम (Curriculum of Social Study)

सामाजिक अध्ययन में पाठ्यक्रम का विशेष महत्व है क्योंकि सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य केवल बौद्धिक जानकारी तथा व्यावहारिक कुशलता से संबंधित नहीं है बल्कि इन उद्देश्यों में कई तरह के दृष्टिकोणों के विकास, आदतों के निर्माण तथा गुणों की प्राप्ति भी सम्मिलित है। अत: सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की सामग्रियों के आयोजन में हमें अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक सावधानी रखनी चाहिए। पाठ्यक्रम स्वयं साध्य नही बल्कि शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति का साधन मात्र है। के.एस. याजनिक (K.S. Yognik) ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है कि - “विद्यार्थियों के, जो तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते है, दृष्टिकोण, अभिवृत्ति एवं योग्यता में एक वांछित तथा प्रत्याशित परिवर्तन आना आवश्यक है। अत: पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथो में एक उपयोगी उपकरण (Tool) के रूप में होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षित करता होता है। कोठारी शिक्षा आयोग ने कहा है कि “सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य छात्रों को अपने पर्यावरण का ज्ञान, मानक संबंध को समझने की शक्ति और कुछ अभिवृतियों तथा मूल्यों को जो कि व्यक्तियों, राज्य, राष्ट्र और विश्व के मामलों में बुद्धिमतापूर्ण भाग लेने के लिए अपरिहार्य है, प्राप्त करने में सहायता देना है। अच्छी नागरिकता और भावात्मक एकीकरण के विकास के लिए भारत में सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यकम अत्यावश्यक है।

सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में कोठारी शिक्षा आयोग के कथनानुसार देश की वर्तमान आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप किया जाना वांछनीय है जिसमें विभिन्न विषयों की पाठ्यवस्तु के चयनित अंश ही नहीं अपितु जीवन से सम्बद्ध अनुभवों की प्राप्ति हेतु विभिन्न

क्रिया कलापों का समावेश किया जाना अपेक्षित है। इस प्रकार पाठ्यक्रम केवल कक्षा में पढाए जाने वाले विषयों तक ही सीमित नहीं अपितु माध्यमिक शिक्षा आयोग के शब्दों में उसमें वे सभी अनुभव सम्मिलित है जिन्हें एक बालक विद्यालय के विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा प्राप्त करता है। इस दृष्टि से विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम बन जाता है, जो छात्रों के समस्त पहलुओं को स्पर्श करते हुए उनके व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायता प्रदान करता है।"

3.7.4 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक आधार (Sociological and Psychological Bases of Social Studies Curriculum)

समाजशास्त्रीय आधार (Sociological Bases)

सामाजिक अध्ययन मुख्यत: मानवीय संबंधों का अध्ययन है जिसमें सामाजिक क्रियाशीलता निहित रहती है। सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में लोकतांत्रिक समाज के अनुकूल भावी नागरिक तैयार करने हेतु पाठ्यवस्तु का चुनाव किया जाता है। बाइनिंग व बाइनिंग (Bining and Bining) के अनुसार– सामाजिक अध्ययन की सामग्री वह आधार प्रस्तुत करती है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को वर्तमान विश्व को समझने, उन्हें विशिष्ट कुशलताओं व आदतों का प्रशिक्षण देने तथा उसमें ऐसी अभिवृतियों एवं आदर्शें का विकास करने में सहायता मिलती है जिससे कि वे लोकतांत्रिक समाज के कार्यकुशल एवं प्रभावी नागरिक बन सकें।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा प्रस्तुत शिक्षाक्रम में सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का सही समाजशास्त्रीय आधार स्पष्ट किया गया है "सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बालक को उसके विगत तथा वर्तमान भौगोलिक एवं सामाजिक पर्यावरण से अवगत कराना है। सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण के प्रभावी कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों में जन जीवन की विधियों तथा वर्तमान भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली में तीव्र रूचि विकसित करनी चाहिए। इसके साथ बालकों में मानवीय सम्बन्धों सामाजिक मूल्यों एवं अभिवृत्तियों की अन्तर्दृष्टि का विकास किया जाना चाहिए। ये सब भावी विकास मान नागरिकों को समुदाय राज्य देश तथा विश्व के मामलों में प्रभावी रूप से भाग लेने योग्य बनाते है। अत: सामाजिक अध्ययन के इस समाजशास्त्रीय आधार पर दृष्टि रखना वांछनीय है।

मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Bases) –

आधुनिक शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के फलस्वरूप अब शिक्षा बाल–केन्द्रित हो गई है। पाठ्यक्रम निर्माण के विषय–वस्तु के तार्किक (Logical) संगठन एवं प्रस्तुतीकरण के स्थान पर अब मनोवैज्ञानिक क्रम अधिक प्रभावी माना जाने लगा है। बाल मनोविज्ञान की आश्यकता के आधार पर सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण समन्वित उपागम (Integrated Approach) से किया जाना अब अधिक उपयुक्त माना जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा आयोग में पाठ्यक्रम निर्माण के दो आधार बताए गए है। पहला आधार पाठ्यक्रम को परम्परागत विषयों के अलगाव के रूप में न मानकर उसे विद्यालय के समस्त शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाकलापों के माध्यम से प्राप्त अनुभवों को समग्र रूप से माना

जाना चाहिए। दूसरा आधार विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान रखते हुए पाठ्यक्रम को गत्यात्मक तथा वैविध्यपूर्ण रखना है। इसके अतिरिक्त कक्षा स्तर एवं आयु वर्ग विशेष की योग्यता एवं क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का संगठन किया जाना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का ही परिचायक है। बाल केन्द्रित शिक्षा की कल्पना में पाठ्यक्रम का मनोवैज्ञानिक आधार निहित है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न (Self evaluation question)

1. पाठ्यक्रम के सम्प्रत्यय को स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ्यक्रम के प्रकार कौन-कौन से है, सूची बनाइये।
3. सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के आधारों को स्पष्ट कीजिये।
4. माध्यमिक स्तर में सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम की आवश्यकता बतायें?

3.7.5 पाठ्यक्रम संगठन के सिद्धान्त

(Principles of Organization of Curriculum)

1. **पाठ्यक्रम बाल–केन्द्रित व समाज केन्द्रित हो** –

(Curriculum should be child centred and community centred)

पाठ्यक्रम बालक की आवश्यकतावों तथा परिस्थितियों पर आधारित होना चाहिए। बालकों को निर्देशों की अपेक्षा अनुभवों की अधिक आवश्यकता होती है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी सहयोग, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा कार्यों में पहल करने की भावना दर्शाएँ तो हमें उनमें इन गुणों का विकास सार्थक क्रियाओं द्वारा करना होगा। सच्ची शिक्षा क्रिया तथा अनुभव से ही प्राप्त की जा सकती है। अत: पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों की रूचियों, आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के अनुरूप ही होना चाहिए।

बालकों को व्यक्तिगत प्रशिक्षण के साथ–साथ अन्य लोगों के साथ मिल–जुल कर रहना भी सीखाता है। बालक समाज का जिम्मेदार नागरिक है अत: विद्यालय के लक्ष्य एवं उद्देश्य समाज के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के आधार पर ही निर्धारित किए जाए क्योंकि विद्यालय के लक्ष्य एवं उद्देश्यों से शिक्षा की विषयवस्तु अथवा पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अप्रत्यक्ष रूप से समाज के लक्ष्यों के अनुसार ही पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए।

2. **पाठ्यवस्तु का लम्बीय तथा समतलीय समवाय (Vertical and Horizenatal Integration) –**

पाठ्यवस्तु के लम्बीय समवाय से तात्पर्य है कि, "विभिन्न कक्षाओं की सामग्रियों में पर्याप्त समन्वय हो, ताकि छात्र एक कक्षा की उपलब्धियों के आधार पर दूसरी कक्षा की सामग्रियों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण कर सके।" समतलीय समन्वय का तात्पर्य है कि किसी कक्षा के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का उसी कक्षा के अन्य विषयों की विषय वस्तु से परस्पर समवाय का ध्यान रखा जाए। इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम के संगठन में लम्बीय तथा समतलीय समवाय का पर्याप्त ध्यान रखा जाना चाहिए।

3. लचीलेपन का सिद्धान्त (Principle of Flexibility) –

पाठ्यक्रम का निर्धारण इसलिए किया जाता है कि अध्यापक बालकों के साथ मिलकर उसके लिए उपयोगी अनुभवों की योजना निर्माण करने में पथ–प्रदर्शन का कार्य करे। पाठ्यक्रम का अर्थ यह नहीं होता है कि उसका अक्षरश: पालन किया जाय। देश, काल, साधनों की उपलब्धता, शिक्षक की योग्यता व क्षमता तथा विद्यार्थियों की अभिरूचियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार आवश्यक परिवर्तन या संशोधन किए जाए अत: पाठ्यक्रम में पर्याप्त लचीलापन होना चाहिए अर्थात् नवीन परिस्थितियों में अनुकूलन की क्षमता भी होनी चाहिए।

4. क्रिया का सिद्धान्त (Principle of Activity) –

'करके सीखने' (Learning by doing) के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित क्रियाकलाप तथा प्रायोजना के रूप में स्वक्रिया द्वारा अधिगम हेतु पाठ्यक्रम में प्रावधान रखा जाना चाहिए। सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अभिरूचि, अभिवृति कौशल एवं ज्ञानोपयोग के उद्देश्यों की उपलब्धी हेतु केवल पुस्तकीय सैद्धान्तिक ज्ञान अनुपयोगी रहता है। अत: इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में उपयुक्त क्रिया–कलापों का समावेश करना वांछनीय है।

5. दूरदर्शिता का सिद्धान्त (Principle of Visionary) –

पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि वह बालक को इस योग्य बना दे कि विद्यालय छोड़ने के बाद बह स्वयं को सांसारिक जीवन की परिस्थितियों के अनुसार ढाल सके। उसमें न केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रखने की योग्यता ही हो अपितु वे प्रजातन्त्रात्मक जीवन पद्धति के अनुसार उसमें सुधार भी कर सके। अत: आवश्यक हो जाता है कि पाठ्यक्रम ऐसा हो कि बालकों को अपने आराम के क्षणों का समुचित प्रयोग भी सिखाए तथा प्रजातन्त्रात्मक नागरिकता की शिक्षा भी दे। यह तभी संभव हो सकता है जब दूरदर्शिता के सिद्धान्त को ध्यान में रखकर क्रियाओं तथा अनुभवों पर बल दिया जाए।

6. विस्तृत आधार का सिद्धान्त (Principle of Broad based) –

पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि वह बालक को केवल किसी विशिष्ट व्यवसाय अथवा प्रयोजन के लिए ही नहीं, अपितु जीवन तथा विश्व के लिए तैयार करे। वह बालकों को केवल स्वार्थपूर्ण जीवन ही नहीं, अपितु अन्य लोगों के साथ मिलकर रहना भी सिखाए। इन बातों के लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का आधार विस्तृत हो। उसमें भिन्न–भिन्न बालकों की भिन्न–भिन्न आवश्यकताओं, रूचियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं का स्थान होना आवश्यक है। अत: पाठ्यक्रम में वे सभी अनुभव सम्मिलित होने चाहिए जिन्हें विभिन्न विद्यालयी क्रियाओं द्वारा बालकों को प्रदान किया जा सकता है। पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत संतुष्टि, पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्ध तथा सभी प्रकार की सामाजिक क्रियाओं आदि की ओर भी समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए। स्थानीय बातों के साथ–साथ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावों का भी ध्यान रखना चाहिए।

7. मानव सम्बन्धों के विकास की संतुलित योजना का सिद्धान्त (Principle of Presenting an over all balanced plan of Growth in Human Relationship)–

सामाजिक अध्ययन विषय मानव सम्बन्धों में विकास की दिशा में अनेक संभावनाएँ प्रदान करता है। पाठ्यक्रम को प्रकरणों की निश्चित क्रमबद्धता तथा बालक के विकास तक ही सीमित न रह कर यह भी देखना चाहिए कि उसके सम्बन्ध अन्य लोगों के साथ भी अच्छे हो।

8. अन्तिम की अपेक्षा अनन्तिम होने का सिद्धान्त (Principle of being tentative rather than final) –

वर्तमान जीवन बड़ी तीव्र गति से बदल रहा है, अत: पाठ्यक्रम का निर्माण एक निरन्तर क्रिया बन गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि किसी भी सुनिश्चित पाठ्यक्रम के अधिकांश प्रकरण अनेक वर्षों तक प्रचलित रहेगे, किन्तु किसी न किसी प्रकार के परिवर्तन, परिवर्धन, निराकरण अथवा सुधार की आवश्यकता सदैव ही बनी रहती है।

उपर्युक्त सिद्धान्त बड़े महत्वपूर्ण है पाठ्यक्रम तैयार करते समय इनका ध्यान बड़ी सावधानी से रखा जाना चाहिए। इन सिद्धान्तों के अनुसार निर्मित पाठ्यक्रम में तीनों प्रकार के मनोवैज्ञानिक आधार सम्मिलित होंगे अर्थात् बालक को क्या सीखना चाहिए, यह क्या सीख सकता है तथा यह क्या सीखना चाहता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न Self Evaluation Questions

1. पाठ्यक्रम संगठन के सिद्धान्त कौन-कौन से है?
2. सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम संगठन के सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।

3.7.6 पाठ्यक्रम संगठन के उपागम (Approaches of the Organization of Syllabus)

सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम को माध्यमिक स्तर पर संगठित करने के प्रमुख उपागम निम्नलिखित है :

1. विषय–विशेष का तार्किक क्रम या कालक्रम उपागम (Logical Sequence or Chronological Approach)–

प्रत्येक विषय का अपना एक विशिष्ट अध्ययन–क्रम होता है। जो विषय की प्रकृति के अनुसार तार्किक माना जाता है। जैसे– इतिहास की विषय वस्तु तिथिक्रम (Chronological order) में प्रस्तुत की जानी चाहिए, भूगोल में विषय के प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों का अध्ययन करने के बाद ही किसी देश या प्रदेश का भूगोल पढ़ना उपयुक्त है तथा नागरिक शास्त्र में अपने प्रदेश या राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के पश्चात् ही देश की प्रशासनिक व्यवस्था से अवगत होना उचित रहता है। पाठ्यक्रम का संगठन करते समय विषय की प्रकृति का ध्यान रखना आवश्यक है।

2. समकेन्द्रित उपागम (Concentric Approach) –

सामाजिक अध्ययन के विषयों – इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम का संगठन प्राथमिक, उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर तीन वृत्तों (Cycles) में विभक्त कर पाठ्यवस्तु का क्रमश: अधिक विस्तार एवं गहराई से अध्ययन किया जाता है। यह इन तीनों स्तरों के विद्यार्थियों के विषयक्रम एवं उनकी योग्यता व क्षमता को ध्यान में रखकर किया जाता है। जैसे इतिहास विषय में प्राथमिक स्तर पर "पर्यावरण अध्ययन" के अन्तर्गत इतिहास की प्रमुख घटनाओं व व्यक्तियों का कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाता है। फिर उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं 6, 7 व 8 में भारतीय इतिहास के क्रमश: प्राचीन, मध्य व आधुनिक कालों का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है और तीसरे वृत्त माध्यमिक कक्षाओं नवीं व दसवीं में पुन: इन समस्त कालों का विस्तार से आलोचनात्मक अध्ययन किया जाता है।

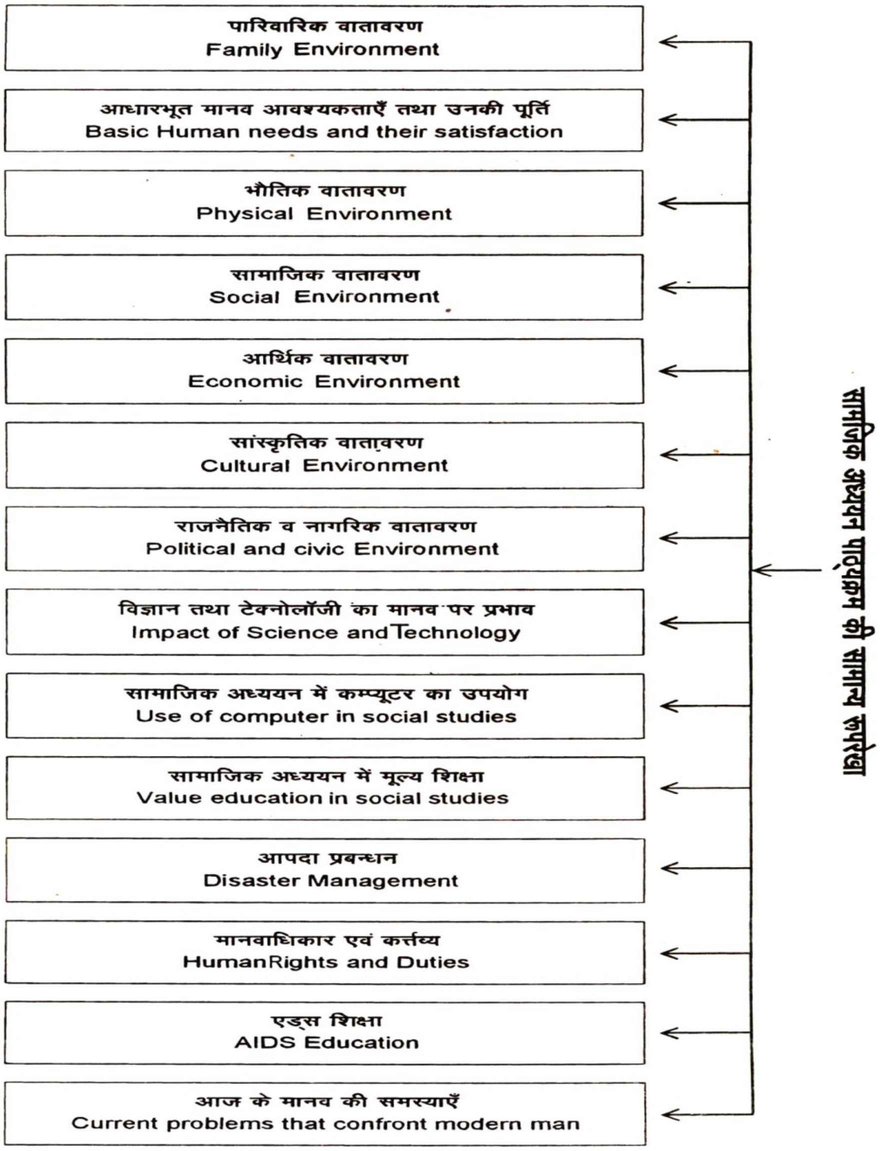

3. इकाई उपागम (Unit Approach)–

इकाई विषय वस्तु का वह भाग है जो स्वयं में परिपूर्ण एवं सुविधाजनक होता है। पाठ्यक्रम को विचार, संकल्पना, वांछित उद्देश्यों की एकरूपता के आधार पर सुविधाजनक इकाइयों (Units) में विभक्त कर प्रस्तुत किया जाता है। जैसे भारतीय इतिहास में सिन्धु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, महाकाव्य काल, मौर्य साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य आदि इकाइयों में विभक्त किया जा सकता है। इकाइयों को प्रकरणों (Topics) में विभक्त कर दिया जाता है जो दैनिक पाठ योजनाओं के आधार बनते है।

4. समन्वित उपागम (Integrated Approach) –

माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में कुछ इकाइयाँ समन्वित उपागम के आधार पर संगठित की जा सकती है। जैसे, 'भारत में स्वाधीनता आन्दोलन', 'भारत में पुनर्जागरण' आदि जिसमें सामाजिक अध्ययन के सभी विषयों को आवश्यकतानुसार समन्वित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्राथमिक कक्षाओं का पाठ्यक्रम तो समन्वित उपागम से ही प्रस्तुत करना वांछनीय है किन्तु उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में कुछ इकाइयाँ इस उपागम से संगठित की जा सकती है।

5. प्रयोजननिष्ठ उपागम (Objective Approach) –

इस उपागम के अनुसार इकाइयों (Units) का संगठन वांछित अवबोधों (Concepts) का उल्लेख करते हुए उनके समस्त सम्बन्धित पाठ्यवस्तु के तथ्यों को अंकित किया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कक्षा पहली से ग्यारहवीं तक के सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम का संगठन इसी उपागम के आधार पर किया गया है। यह उपागम शिक्षण को उद्देश्यनिष्ठ बनाने में सहायक होता है।

3.8 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा (General Pattern of Social studies Curriculum)

विभिन्न कक्षाओं के सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए निम्न प्रकरण सुझाए जा सकते है। किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि विषयवस्तु या सामग्री के चुनाव के लिए यह केवल संकेत या सुझाव मात्र ही है। अध्यापक या पाठ्यक्रम निर्माता अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं क्षमता के अनुसार स्थानीय समुदाय तथा अपने राज्य के शिक्षा विभागों के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम हेतु विषयवस्तु व सामग्री का चयन कर सकते है।

विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम के प्रकरणों का चुनाव करते समय वर्तमान में 'ज्ञात' से 'दूरगामी अज्ञात' की ओर बढ़ने की स्वाभाविक योजना होनी चाहिए। अर्थात् हमें बालकों के प्रत्येक अनुभवों से सामान्यीकृत अवधारणओं (Generalized Concept) की ओर बढ़ना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि हम प्राथमिक कक्षाओं में घरेलू कर्तव्य तथा माता–पिता और बालकों के कर्तव्यों का ज्ञान देते हैं तो उच्च प्राथमिक कक्षाओं में परिवार की व्याख्या एक नागरिक व नागरिक संस्था के रूप में कर सकते है। इसी प्रकार यदि प्राथमिक कक्षाओं में हम

मिट्टी, धूप, वर्षा तथा जलवायु के बारे में पढ़ाते हैं तो उच्च कक्षाओं में इस प्रकार बालकों का दृष्टिकोण विस्तृत कर सकते हैं कि भौतिक वातावरण का लोगों के जीवन तथा व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ता है। बालक को उसके घर, पडौस आगे राज्य, देश, विश्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का ज्ञान भी दिया जा सकता है। ऐसा करने से उसमें बड़े–बड़े समूहों के सामूहिक जीवन के दृष्टिकोण का विकास हो सकेगा और अन्त में विश्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक की सोच विकसित हो सकेगी।

3.9 अभ्यास प्रश्न

Q. 1. माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन के स्थान के समर्थन में पांच तर्क दीजिए।

State five arguments to justify the place of social studies in the secondary school syllabus.

Q. 2. सामाजिक अध्ययन विषय को पाठ्यक्रम में एक अन्तरिम या अन्तस्थ: (Core) विषय के रूप में सम्मिलित करने के कौन–कौन से शैक्षिक कारक है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

What are the various educational causes of including the subject social studies in the syllabus as a 'core' subject? Explain in briefy.

Q. 3. उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय किन–किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना चाहिए? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

What Principles should be kept in mind while framing syllabus of social studies for higer secondary classes? Explain in briefly.

Q. 4. पाठ्यक्रम को समयानुकूल परिवर्तनशील क्यों होना चाहिए? अपने राज्य के माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम गे सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिए।

Why should a syllabus be subjected to periodic changes? Give suggestions to improve social studies syllabus at secondary stage of your state.

Q. 5. सामाजिक अध्ययन के शिक्षाक्रम निर्माण के कालक्रम एवं संकेन्द्रीय उपागमों में अन्तर स्पष्ट कीजिए। अपने उत्तर में दृष्टान्त मी दीजिए।

Distinguish between the chronological and concentric approaches for framing the syllabus of social studies. Illustrate your answer.

Q. 6. "पाठ्यक्रम में किसी विषय के स्थान का औचित्य तभी है जब कि वह शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है।" भारतीय शिक्षा के किन उद्देश्यों की

प्राप्ति में सामाजिक अध्ययन शिक्षण सहायक है? अपने उत्तर की पुष्टि में उचित उदाहरण भी दीजिए।

"The place of subject in school syllabus is justified only when it helps in the attainment of general aims of education." Which of the aims of Indian Education can be achived through the teaching of social studies? Illustrate your answer with suitable example.

Q. 7. सामाजिक अध्ययन में विषयवस्तु के संगठन के कौन–कौन से उपागम है?

What are the different approaches of organising the subject matter in social studies? Discuss it.

Q. 8. "सामाजिक अध्ययन विद्यालयों में क्यों पढ़ाया जाना चाहिए?" आप सामाजिक अध्ययन के अध्यापक होने के नाते इस विषय की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

"Why Social Studies be tought in schools?" Being a teacher of social studies you should clear about the utility of the subject.

इकाई 4

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सप्रत्ययों का संज्ञानात्मक मानचित्र एवं पाठ्यक्रमीय तत्वों का बोध (Cognitive Map Of Concepts and Elements of Curriculum in Social Studies teaching)

संरचना (Structure)

4.0 उद्देश्य (Objectives)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

4.2 अवधारणाओं का संज्ञानात्मक मानचित्र (Cognitive map of concepts)

4.2.1 अर्थ व परिभाषा (Meaning and definition)

4.2.2 संज्ञानात्मक मानचित्र के कार्य (Function of cognitive map)

4.3 संकल्पना/अवधारणा मानचित्र विकास के सोपान (Developing steps of cognitive map of concepts)

4.4 उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण (Explanation with example)

4.5 संज्ञानात्मक मानचित्र तैयार करने की अवस्थाएं (Stages of preparing cognitive map)

4.6 पाठ्यक्रमीय तत्व (Curricular elements)

4.6.1 पाठ्यक्रम का अर्थ व परिभाषा (Meaning and definition of curriculum)

4.6.2 पाठ्यक्रम का मूल तत्व (Basic elements of curriculum)

4.6.3 पाठ्यक्रम का शैक्षिक तत्वों से संबंध (Relation between educational elements of curriculum)

4.6.4 पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकार (Types of curriculum)

4.7 अधिगम शिक्षण में अवधारणा/संकल्पना मानचित्र का महत्व व लाभ (Importance of cognitive map in teaching learning)

4.8 शिक्षक की भूमिका (Role of the teacher)

4.9 सारांश (Summary)

4.10 अभ्यास प्रश्न (Evaluation question)

4.11 संदर्भ सूची (References)

4.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के उपरान्त आप–

1. अवधारणाओं के संज्ञानात्मक मानचित्र से क्या अभिप्राय है जान सकेंगे।
2. अवधारणाओं के संज्ञानात्मक मानचित्र की संकल्पना के उद्भव एवं विकास को जान सकेंगे।
3. संज्ञानात्मक मानचित्र के कार्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. अवधारणाओं के संज्ञानात्मक मानचित्र के विकास के सोपानों को जान सकेंगे।
5. अवधारणाओं के संज्ञानात्मक मानचित्र के उदाहरण समझ सकेंगे।
6. भविष्य में अवधारणाओं को समझकर संज्ञानात्मक मानचित्र का विकास कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षण, प्रशिक्षण का आशाजनक नवाचार है जिसके द्वारा छात्रों को अर्थपूर्ण अधिगम उपलब्ध कराना सम्भव है। संज्ञानात्मक का अर्थ वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ज्ञान अर्जित किया जाता है। संकल्पना मानचित्र छात्रों को सूचना संगठित करने के लिए मानसिक बिम्ब प्रस्तुत करते हैं। वास्तव में ज्ञान को मस्तिष्क में धारण तभी किया जा सकता है जबकि उसका ठीक–ठीक बोध हो जाये। एक अवधारणा से अगली अवधारणा का जन्म होता है या यों कहें कि किसी एक अवधारणा को समझने से पूर्व उससे जुड़ी अन्य आधारभूत अवधारणाओं का बोध जरूरी होता है। अत: संज्ञानात्मक मानचित्र के माध्यम से किसी अवधारणा के हर पहलू का आलेखीय चित्रण उपलब्ध हो पाता है जिससे वह अवधारणा छात्र को बोधगम्य हो जाती है।

4.2 अवधारणाओं का संज्ञानात्मक मानचित्र (Cognitives map of concepts)

अवधारणा का संज्ञानात्मक मानचित्र अवधारणा को मस्तिष्क में संग्रहित व संरक्षित करने की सुव्यवस्थित एक सुसंगठित प्रक्रिया है जो किसी विषय या घटना या प्रकरण के विभिन्न घटकों के अन्तर्सम्बन्ध व विशिष्टताओं का स्पष्ट ज्ञान चित्रित रूप में मस्तिष्क के समक्ष प्रस्तुत करती है।

4.2.1 अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and deinition)

संज्ञानात्मक मानचित्र एक आलेखीय चित्र प्रणाली होता है जिसके माध्यम से संकल्पना का मानसिक बिम्ब अवधारणाओं के सहसम्बन्ध द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। संज्ञानात्मक मानचित्र के सम्प्रत्यय के प्रयोग का श्रेय टोल मैन (1948) को दिया जाता है। सन् 1960 के दशक में जोसेफ डी0 नोवक ने कार्नेल विश्वविद्यालय में संकल्पना मानचित्र तकनीकी का अध्ययन प्रारम्भ किया था। नोवेक ने डेविड ओसबेल के अधिगम सिद्धान्त कि नवीन सम्प्रत्यय सीखने के लिए पूर्व ज्ञान आवश्यक है पर बल दिया।

जब हम "कुर्सी या मेज" शब्द के संज्ञानात्मक मानचित्र का बच्चे में विकास करते हैं तो हम मेज या कुर्सी का आकार, प्रकार, सारांश, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, भार, बनावट, उपयोग

आदि विशेषताओं की संयुक्त प्रतिमा मस्तिष्क में बनाते हैं जिससे छात्र यह जान लेता है कि अमुक वस्तु कुर्सी व अमुक वस्तु मेज है। इस प्रकार हम केवल कुर्सी या मेज का बोध नहीं कराते अपितु कुर्सी या मेज का मानसिक बिम्ब मस्तिष्क में स्थापित करते हैं और तभी छात्र को कुर्सी या मेज का बोध होता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक मानचित्र किसी अवधारणा का अलिखित या चित्रात्मक स्वरूप होता है जो उस अवधारणा की छाप हमारे मन–मस्तिष्क पर छोड़ता है और उसी रूप में हमारा मस्तिष्क उस विषय वस्तु या अवधारणा को ग्रहण कर मस्तिष्क में संग्रहीत रखता है।

संकल्पना का संज्ञानात्मक मानचित्र एक प्रकार का बहुआयामी आलेखी निरूपण है जो विभिन्न सम्प्रत्ययों में सहसम्बन्ध जोड़ता है और नवीन सम्प्रत्यय का स्वरूप स्पष्ट करता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक मानचित्र रेखाचित्र है जो पूर्ण विकसित होने पर किसी अवधारणा या विषय का चिन्तन या विचार प्रस्तुत करता है।

किसी व्यक्ति द्वारा ज्ञान किस प्रकार संगठित किया जाता है, इसे संज्ञानात्मक मानचित्र द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। **मार्टिन (1994)** के अनुसार - "अवधारणा का संज्ञानात्मक मानचित्र संज्ञानात्मक संरचना के द्वि–आयामी चित्रण हैं जो किसी विषय अथवा प्रकरण के सम्प्रत्ययों की श्रेणीबद्धता तथा अन्त: सम्बन्ध दिखाते हैं। यह अवधारणा के विकास व संगठन को प्रदर्शित करते हैं।" Accourding to Martin "Concept of cognitive map as the 2–dimensional structure which shows sequential relation between subject and concept of topic"

अवधारणा मानचित्र विभिन्न विचारों में दृश्य चित्र स्थापित करके उनके संयोजन को समझने में सहायता की तकनीक है।

4.2.2 संज्ञानात्मक मानचित्र के कार्य (Introduction of Cognitive map) –

1. नवीन विचारों को विकसित करने (To develop new views)
2. विचारों को बोधगम्य बनाने (To make views understandable)
3. जटिल संरचनात्मक अवधारणाओं को स्पष्ट करने (To explain the complex cognitive concepts)
4. नवीन एवं पूर्व ज्ञान को एकीकृत करके स्पष्टता प्रदान करने (To collect and clear the new and previous knowledge)
5. अवधारणा के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने में सहायता प्रदान करता है। (Help to explain the various aspects of concept)

हम सब किसी न किसी विचार का मानचित्र अपने मस्तिष्क में उत्पन्न करते हैं। जब हम इन मानसिक प्रतिमाओं का उपयोग किसी जटिल संरचना वाली अवधारणा को जानने या विकसित करने में प्रयुक्त करते हैं तो यह प्रक्रिया संज्ञानात्मक मानचित्रण कहलाती है।

स्वमूल्यांकन

प्र.1. संकल्पना मानचित्र क्या है?

प्र.2. संज्ञानात्मक मानचित्र को एक आलेखीय प्रणाली क्यों कहा जाता है?

4.3 संकल्पना/अवधारणा मानचित्र विकास के सोपान (Steps of cognitive map concept)

संकल्पना मानचित्र किसी एक इकाई या एक प्रकरण या सम्पूर्ण विषय के लिए विकसित किया जा सकता है। संकल्पना मानचित्र विकास के सोपान निम्नवत है :–

1. विषय वस्तु का गहन, व्यापक अध्ययन

↓

2. विषय वस्तु से मुख्य–मुख्य केन्द्रीय विचारों (संप्रत्ययों) का चयन

↓

3. मुख्य सम्प्रत्ययों के अतिरिक्त उपलब्ध विशिष्ट तथ्य, अधीनस्थ तथ्य (उदाहरण) आदि का चयन

↓

4. मुख्य सम्प्रत्यय, विशिष्ट सम्प्रत्यय व अधीनस्थ सम्प्रत्यय को पदानुक्रम में व्यवस्थित करना मुख्य सम्प्रत्यय को केन्द्र में लिखना

   ↓

   अधीनस्थ सम्प्रत्यय को मुख्य सम्प्रत्यय के नीचे लिखना

   ↓

   विशिष्ट सम्प्रत्यय को ब्लॉक या गोल घेरे द्वारा व्यक्त करना

↓

5. सम्बन्धित सम्प्रत्यय को आस–पास तीर द्वारा जोड़कर लिखना

↓

6. मुख्य सम्प्रत्यय, विशिष्ट सम्प्रत्यय व अधीनस्थ तथा सम्बन्धित सम्प्रत्यय में सम्बन्ध दिखाने के लिए अनुप्रस्थ रेखाएं, तीर तथा गोला खींचना।

4.4 उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण (Explanation with example)

उदाहरण के लिए

नदी घाटी सभ्यता का अवधारणात्मक/ संकल्पना मानचित्र उपरोक्त सोपान का अनुसरण करने पर इस प्रकार प्राप्त होगा।

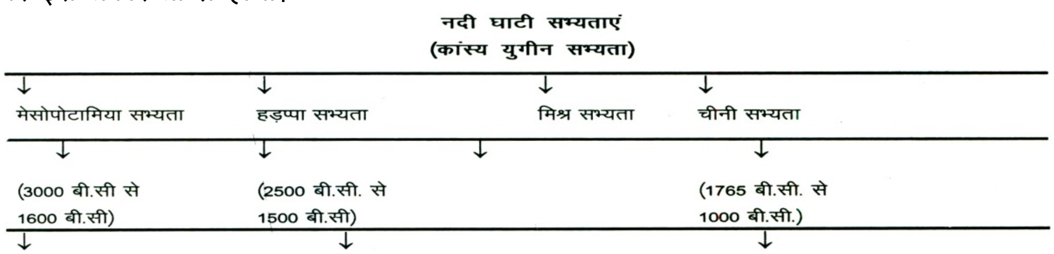

यूफ्रेटस एवं टिग्रिस नदी की घाटियों में

इन्दुस, सरस्वती नदी के किनारे

नील नदी के किनारे

ह्वांगहो नदी की घाटियों में

समान विशेषताएं :–

1. सभी नदी घाटियों में विकसित
2. सभी ने कांस्य का प्रयोग औजारों व उपकरणों के निर्माण में किया
3. सभी ने संगठित राजनीतिक एवं सामाजिक पद्धति का विकास किया, पक्की ईंटों से सुन्दर नगरों व शहरों का निर्माण किया।
4. सभी ने व्यापार वाणिज्य का विकास किया।
5. लेखन एवं लिपिका विकास।
6. नियम, कानून का निर्माण इत्यादि।

↓

विशिष्ट विशेषताएं

↓

मेसोपोटामिया सभ्यता	हड़प्पा सभ्यता	मिश्र सभ्यता	चीनी सभ्यता
↓	↓ ↓	↓	
1. मेसोपोटामिया का अर्थ है दो नदी के बीच की भूमि	1. शहरी सभ्यता	1. पिरामिडो के निर्माण के लिए प्रसिद्ध	1. कांस्य के सुन्दर औजार के व बर्तन का निर्माण
2. विकसित शहर राज्य मुख्य रूप से प्रसिद्ध शहरी	2. शहरी योजना के के लिए प्रसिद्ध		
3.	3. अच्छी सड़के		
4.	4. पक्की नालियां		
5.	5. सफाई इत्यादि		

इस प्रकार हम पाते हैं कि उपरोक्त संकल्पना मानचित्र के माध्यम से हमारे मस्तिष्क में कांस्य युगीन नदी घाटी सभ्यताओं – मेसोपोटामिया सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, मिश्र सभ्यता एवं चीनी सभ्यता का एक मानसिक बिंब मनस पटल पर बन जाता है। जिससे हमारे लिए इन नदी घाटी सभ्यता की विशेषताओं को जानना एवं उनमें समानता एवं असमानता को अलग कर पाना आसान हो जाता है। इस प्रकार संकल्पना मानचित्र का प्रयोग हम सामाजिक अध्ययन विषय में किसी भी प्रकरण को बोधगम्य बनाने के लिए कर सकते हैं।

आगे हम भूगोल विषय का एक प्रकरण 'मौसम', लेकर उसका संकल्पना मानचित्र विकसित करने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण 2 – मौसम की अवधारणा का संज्ञानात्मक मानचित्र

Cognitive map concept of Weather

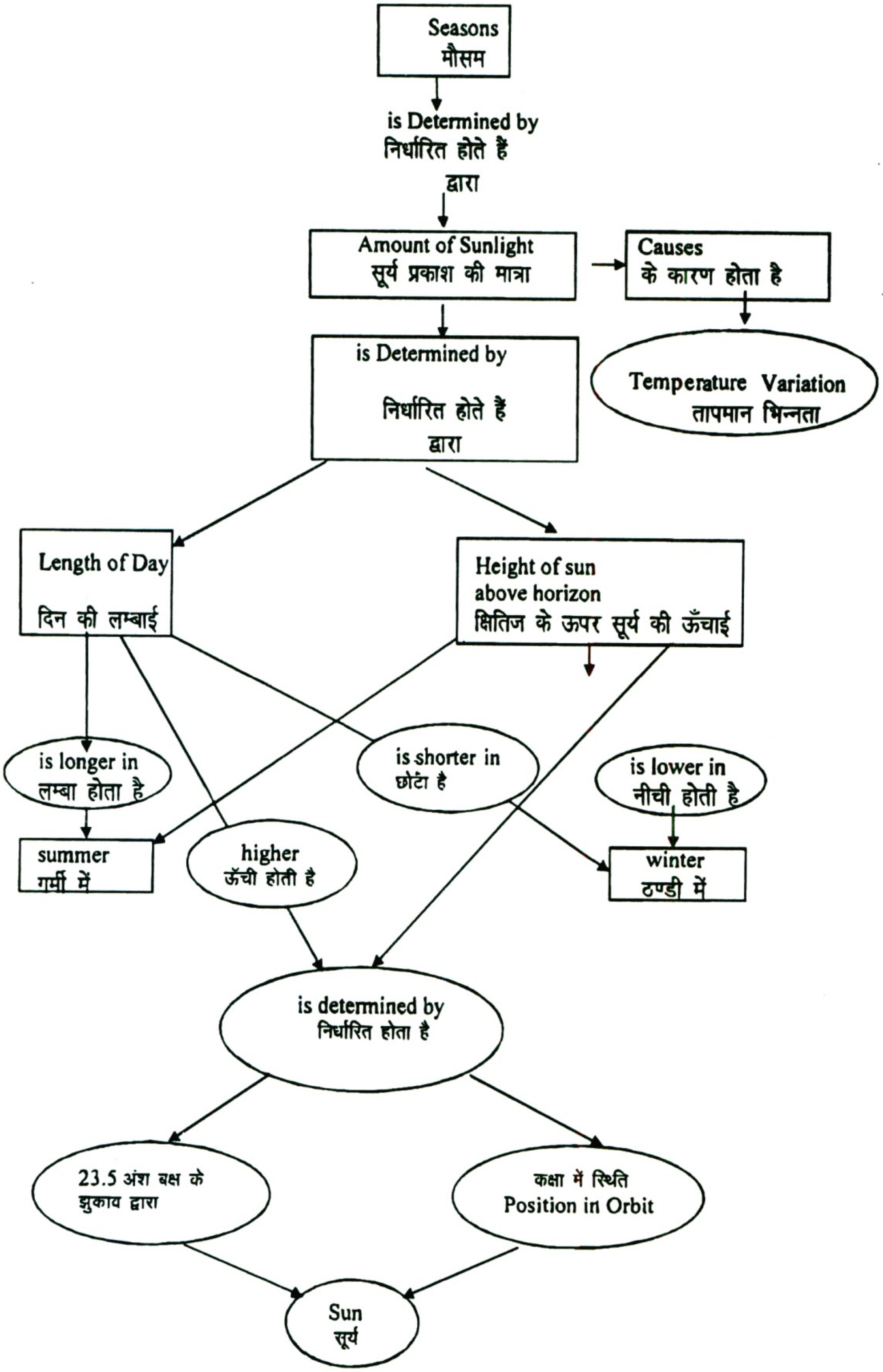

स्वमूल्यांकन प्रश्न -

1. संकल्पना / अवधारणा मानचित्र से क्या आशय है।
2. अवधारणा मानचित्र के विकास के सोपान लिखिए।
3. संज्ञानात्मक मानचित्र के क्या कार्य है।

4.5 संज्ञानात्मक मानचित्र तैयार करने की अवस्था (Stages of preparing cognitive map)

निम्न सामान्य अवस्थाएं है जिसके द्वारा पाठ्यक्रम छात्रों को प्रदान किया जाता है:–

तार्किक आधार (Logical based)

1. विषय क्यों पढाना है (Why to teach the subject)
   उद्देश्य (Objective)
2. पाठ्यक्रम तत्व क्यों पढाये जाये **(Why to teach curricular elements)**
   विषयवस्तु **(Content)**
3. क्या पढाना है? **(What to teach)**
   मोड़ (Mode)
4. कैसे पढाना है? **(How to teach)**
   मूल्यांकन **(Evaluation)**

4.6 पाठ्यक्रमीय तत्व (Curricular Elements)

शिक्षण प्रक्रिया के प्रमुख आधार शिक्षक, पाठ्यचर्या, छात्र एवं पर्यावरण होते हैं। यदि चारों में से किसी एक को निकाल दिया जाये तो शिक्षण प्रक्रिया ठप्प हो जायेगी। इन चारों तत्वों में छात्र के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास में मुख्य भूमिका पाठ्यचर्या की होती है। पाठ्यचर्या ही शिक्षक–शिक्षार्थी को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है।

4.6 पाठ्यक्रमीय तत्व (Curricular elements)

4.6.1 पाठ्यक्रम का अर्थ व परिभाषा

पाठ्यक्रम के लिए अंग्रेजी भाषा में curriculam शब्द का प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के "कुर्रेर" शब्द से आया है जिसका अर्थ होता है–"दौड़ का मैदान" (Race–courses) शिक्षा में पाठ्यक्रम से तात्पर्य है– शिक्षा का मैदान जहाँ शिक्षक एवं छात्र अनुभव प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम वह साधन है जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यह अध्ययन के व्यक्तित्व एवं तर्कपूर्ण क्रम है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है और वह नवीन ज्ञान एवं अनुभव को ग्रहण करता है। शिक्षा के दो अर्थ है– संकुचित अर्थ और वास्तविक या व्यापक अर्थ। संकुचित अर्थ में शिक्षा केवल स्कूल की चहारदीवारी में कैद प्रक्रिया है जो स्कूल और पुस्तकों तक सीमित है तदनुरूप पाठ्यक्रम भी

संकुचित अर्थ में केवल विभिन्न विषयों के पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित है परन्तु विस्तृत अर्थ में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वह सभी अनुभव आ जाते हैं जिसे कोई भी व्यक्ति जाने–अनजाने, संरचित या असंरचित रूप में किसी भी प्रकार से प्राप्त करता है।

मुनरो के अनुसार, "पाठ्यचर्या में वे समस्त अनुभव निहित है जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उदेश्यों की प्राप्ति के लिये उपयोग मे लाया जाता है। **"Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of education" (Munnaro)**

फ्राबेल के अनुसार, "पाठ्यचर्या को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए। "**Curriculum should be conceived as an epitome whole of the knowledge and experience of the human race" (Frabel)**

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार– "पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषय से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढाये जाते हैं बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं छात्रों के अनेकों अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।" **"Curriculum does not mean only the academic subjects traditionally taught in the school but includes the totality of experiences,that a pupil receives through the manfolded activities gained in school,in the classroom, library, laboratory workshop,play ground and in the numerous informal contacts between teacher and pupils. In a sense, the whole life of school becomes the curriculum which can touchall the points of the life of the students and help in the development of a balanced personality.**

4.6.2 पाठ्यक्रम के मूल तत्व Basic elements of curriculum

शिक्षा की प्रक्रिया का सम्पादन शिक्षक अपनी क्रियाओं का नियोजन तथा शिक्षण के अन्दर करता है उसके प्रमुख तीन तत्व होते है उद्देश्य पाठ्य वस्तु एवं शिक्षण विधियॉ। 'पाठ्यक्रम विकास' में पाठ्य वस्तु तथा शिक्षण विधियों को महत्व दिया जाता है। पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों को नियोजन उद्देश्यों की दृष्टि से किया जाता है। एक पाठ्यवस्तु से कई उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते है। परन्तु अधिगम–अवसरों एवं परिस्थितियों उद्देश्यों के स्वरूप को सुनिश्चित करते है। विशिष्ट अधिगम उद्देश्यों हेतु विशिष्ट अधिगम–परिस्थितियो का नियोजन किया जाता है। शिक्षण तथा अधिगम क्रियाएं पाठ्य क्रम के चार मूल तत्व माने है:–उद्देश्य पाठ्य वस्तु, शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन इन तीनों तत्वों में गहन समबन्ध होता है ।

1. उद्देश्य, **Objectives**
2. पाठ्यवस्तु, **Content**

3. शिक्षण विधि **Teaching method**
4. मूल्यांकन **Evaluation**
1. **उद्देश्य–** पाठ्यवस्तु शिक्षण विधियों तथा परीक्षणों का नियोजन उदेद्श्यों की दृष्टि से किया जाता है।

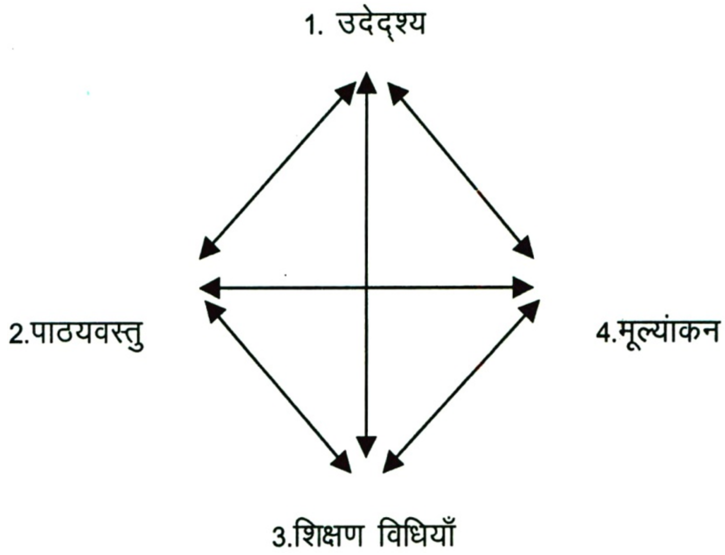

2. **पाठ्यवस्तु–** पाठ्यवस्तु का स्वरूप अधिक व्यापक होता है ।अधिगम परिस्थितियाँ उसके स्वरूप को सुनिश्चित करती है।
3. **शिक्षण विधियॉ–** उपयुक्त शब्द शिक्षण आव्यूह का चयन उद्देश्यों की प्राप्ति से किया जाता है। शिक्षण विधियों का सम्बन्ध पाठ्यवस्तु से होता है। शिक्षण आव्यूह अधिगम परिस्थितियों को उपलब्ध करती है। जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिर्वतन किये जाते है। जो पाठ्यक्रम वस्तु के स्वरूप को सुनिश्चित करते है।
4. मूल्यांकन
   परीक्षा द्वारा पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों की उपायेयता के सम्बन्ध में जानकारी होती है और जो पाठ्य के स्वरूप को सुनिश्चित करते है।

4.6.3 पाठ्यक्रम का शैक्षिक तत्वों से सम्बन्ध (Relation Between Educational Elements & Curriculum)

पाठ्यक्रम का शैक्षिक तत्वों से गहन सम्बन्ध होता है। शिक्षा प्रक्रिया के अर्न्तगत चार प्रमुख तत्व होते है। शिक्षा, अधिगम,पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक नियोजन। शिक्षण तथा अधिगम में सम्बन्ध होता है क्योंकि शिक्षण क्रियाओं से अधिगम परिस्थितियॉ उत्पन्न की जाती है जिनमें छात्र अनुभव करता है जिसमें अनेक अपेक्षित व्यवहार परिर्वतन लाया जाता है। शिक्षण क्रियाओं का सम्पादन पाठ्यवस्तु के आधार पर किया जाता है। जिसका स्वरूप पाठ्यक्रम निर्धारित करता है, विद्यालय में शैक्षिक आयोजन के अर्न्तगत शिक्षण अधिगम के अतिरिक्त अन्य पाठ्यक्रम सत्यापित क्रियाओं का नियोजन किया जाता है जिससे शैक्षिक परिस्थितियां आयोजित की जाती है इस प्रकार

के चारों तत्वों के आपसी सम्बन्ध का विवेचन एवम् प्रस्तुतीकरण हासफोर्ड ने अपनी (Theory of Instruction) नामक पुस्तक के अन्तर्गत किया है।

शिक्षा के चारों तत्वों का महत्व (Importance of 4 Elements in Education Teaching Educational Planning)

1. अधिगम (छात्र) (Learning) **2. शिक्षण (शिक्षक) (Teaching)**

3. पाठ्यक्रम तथा (Curriculum) **4. शैक्षिक नियोजन (Educational** Planning)

इन चारों पक्षों की अन्त: प्रक्रिया में धटको (Factor) का शिक्षण इस प्रकार है।

(अ) अधिगम (छात्र)

(अ) शिक्षण (शिक्षण)

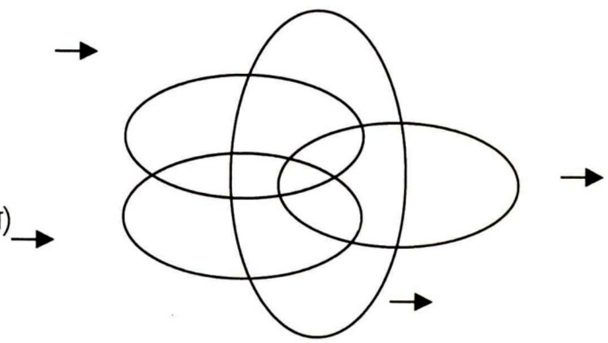

(स) पाठ्यक्रम

(द) शैक्षिक नियोजन

(अ) अधिगम वह प्रक्रिया है जो व्यवहार में परिवर्तन लाती है ।

(ब) शिक्षण वह प्रक्रिया है जो अधिगम में सुगमता प्रदान करती है ।

(स) पाठ्यक्रम में विद्यालयों द्वारा नियोजन अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है ।

(द) शैक्षिक नियोजन में समस्त शैक्षिक अनुभवों की क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जो विद्यालय में तथा विद्यालय से बाहर की जाती है ।

4.6.5 पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकार (Types of Curriculum)

पाठ्यक्रम के अनेक प्रकार होते हैं–

1. विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम– Subject Centered Curriculum
2. अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम– Experience Centered Curriculum
3. कार्य केन्द्रित पाठ्यक्रम– Work Centered Curriculum
4. बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम – Child Centered Curriculum
5. शिल्पकला केन्द्रित पाठ्यक्रम – Artcraft Centered Curriculum
6. सह सम्बन्ध पाठ्यक्रम – Co–relation Curriculum
7. मूल पाठ्यक्रम – Core Curriculum

1. विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम– विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम में बालकों की अपेक्षा विषयों को अधिक महत्व दिया जाता है। चूँकि पाठ्यक्रम में पुस्तकों का अधिक महत्व होता है : इसलिए इस पाठ्यक्रम को "पुस्तक केन्द्रित पाठ्यक्रम" भी कहते हैं।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम के दोष– (Demerits)

1. अमनोवैज्ञानिक है। इसके अन्तर्गत बालकों की रूचियों, आवश्यकताओं तथा योग्यताओं को कोई ध्यान नहीं रखा जाता।
2. यह कठोर होता है।
3. इसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास नहीं किया जा सकता,
4. इसके द्वारा बालकों में जनतांत्रिक भावनाओं का विकास नहीं किया जा सकता।
5. यह पाठ्यक्रम बच्चों में रटने की आदत पर ही बल देता है।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम के लाभ– (Merits)

इस पाठ्यक्रम में अनेक दोष के होते हुए भी कई लाभ हैं–

1. इस पाठ्यक्रम में उद्देश्य स्पष्ट होता है।
2. यह आसानी से समझ में आता है।
3. इसमें आसानी से परिवर्तन लाया जा सकता है।
4. इसकी विषय वस्तु पहले से ही निश्चित होती है।
5. इसके द्वारा विभिन्न विषयों में सह सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।
6. इसके द्वारा परीक्षा लेने में भी आसानी होती है।

2. अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम–

अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम में बालक के विकास हेतु अनुभव को विशेष महत्व दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम विषयों की अपेक्षा अनुभव पर आधारित होता है।

लाभ–(Merits) अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम के निम्नलिखित लाभ हैं–

1. इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता है।
2. इसके प्रयोग में समय अधिक लगता है।
3. इस पाठ्यक्रम को क्रियान्वित करने में अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है।
4. इसको सफल बनाने के लिए प्रभावशाली शिक्षकों की आवश्यकता पड़ती है।

दोष– (Demerits)

1. यह मनोवैज्ञानिक है।
2. यह लचीला तथा प्रगतिशील है।
3. इसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव है।
4. यह भौतिक तथा सामाजिक वातावरण का अधिक से अधिक प्रयोग करता है।
5. इसका आधार भी जनतांन्त्रिक होता है।

3. कार्य केन्द्रित पाठ्यक्रम– इसमें विभिन्न कार्यों को विशेष स्थान दिया जाता है।

4. **बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम–** इसमें बालक को मुख्य स्थान दिया जाता है। बालक ही पाठ्यक्रम का मुख्य केन्द्र होता है।

5. **सहसम्बन्ध पाठ्यक्रम–** इसमें विभिन्न विषयों का अलग–अलग न पढ़ाकर एक दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाने की व्यवस्था होती है।

6. **मूल पाठ्यक्रम (Core Curriculum)** मूल पाठ्यक्रम में कुछ विषय तो अनिवार्य होता है तथा अधिक विषय ऐच्छिक होते हैं। अनिवार्य विषयों का अध्ययन करना अधिक विषय ऐच्छिक होते हैं। अनिवार्य विषयों को अध्ययन करना प्रत्येक बालक के लिये अनिवार्य होता है तथा ऐच्छिक विषयों को व्यक्तिगत रुचियों एवं क्षमताओं के अनुसार चुना जाता है।

स्वमूल्यांकन -

प्र.1 पाठ्यक्रमीय तत्वों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

प्र.2 संज्ञानात्मक मानचित्र तैयार करने की अवस्था कौन-2 सी हैं?

4.7 अधिगम शिक्षण में अवधारणा/ संकल्पना मानचित्र का महत्व व लाभ–(Importance of Cognitive Map in Teaching Learning)

1. संकल्पना मानचित्र द्वारा अर्थपूर्ण अधिगम संभव है।
2. संकल्पना मानचित्र से सीखने पर कम से कम विचार भ्रांतियाँ होती है। जब छात्र ज्ञान संरचना करते है उस समय भ्रांतियां घटित होती है जिनका मुख्य कारण अपूर्ण ज्ञान/ अनुभव तथा त्रुटिपूर्ण व्याख्या अथवा गलत अनुभव करने से होते है।
3. सामाजिक अध्ययन में संकल्पना मानचित्र नियोजन और शिक्षण के साधन है।
4. संकल्पना मानचित्र प्रत्यस्मरण अधिगम में सहायक है।
5. संकल्पना मानचित्र द्वारा विशिष्ट संप्रत्ययों में पारस्परिक संबंधों के तर्क अथवा कारण जानने का अवसर मिलता है।
6. संकल्पना मानचित्र छात्रों के ध्यान को केन्द्रित करने तथा विषय का व्यापक रुप देखने के लिए अग्रिम व्यवस्थापक (Advance Organiser) के रुप में मार्ग दर्शन करते है।
7. संकल्पना मानचित्र कक्षा में अनुदेशन को दिशा देते हैं और उस समय यह मार्ग मानचित्र का कार्य करते है।
8. संकल्पना मानचित्र द्वारा छात्र मूल्यांकन संभव है।
9. संकल्पना मानचित्र द्वारा त्रुटिपूर्ण विचार भ्रांतियों का निदान होता है। यह अधिगम में सहायक है।
10. संकल्पना मानचित्र बनाने से अधिगम सरल बनता है एवं बोध विकसित करता है।

4.8 शिक्षक की भूमिका (Role of the Teacher)

सप्रत्यात्मक परिवर्तन प्रविधि में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक को एक उत्प्रेरक (Catalytic) की भूमिका अदा करनी होती है। जिससे छात्र को अधिगम के लिए नियोजन करने का अवसर मिलता है। इसके द्वारा छात्र–छात्रों को व्यक्तिगत रुप से, समूह में तथा पारस्परिक सहभागिता से अधिगम के अवसर प्राप्त होते है। शिक्षक को ऐसा अधिगम वातावरण सृजित करना होता है जिसमें छात्र अपने विचारों को कक्षा में रख सकें। ऐसे वातावरण में छात्रों की भागीदारी से ज्ञान निर्माण तथा अर्जन अधिक होता है। प्रो. पीटर हर्बर और रसल टेलर (2006) के अनुसारः–

1. शिक्षक छात्रों में जिज्ञासा का प्रेरक हैं जिसमें वह छात्रों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें प्रेरित करता है। इससे शिक्षक क्रिया (Activities) विकसित कर सकता है।
2. विचारों को चुनौती देने वाला, जिसमें छात्रों को उनके द्वारा प्रस्तुत व्याख्या पर विवेचनात्मक चिन्तन के लिए प्रोत्साहित कर सके।
3. संसाधन व्यक्ति जो आवश्यकतानुसार सामग्री उपलब्ध करा सके।
4. एक वरिष्ठ सह खोजकर्ता जो सबके विचारों को सम्मान दें।
5. वाद–विवाद करने वाला जो छात्रों को विचार एकत्र करने में सहायक है।

4.9 सारांश (Summary)

इस प्रकार स्पष्ट है कि संकल्पना का संज्ञानात्मक मानचित्र ज्ञान प्रतिनिधि है जिसका आकार मकड़ी के जाल की तरह हैं इस जाल के माध्यम से अवधारणा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी होती है साथ ही अवधारणा के विभिन्न प्रत्ययों में सम्बन्ध व अन्तर का बोध होता है जिससे मानसिक बिम्ब का विकास होता है सृजनात्मक वृत्ति विकसित होती है। इस प्रकार–

– संकल्पना का संज्ञानात्मक मानचित्र संकल्पनाओं में निहित प्रत्ययों का मानसिक प्रतिबिम्ब है।
– संकल्पना का संज्ञानात्मक मानचित्र संकल्पनाओं से जुड़े प्रत्ययों का जाल है जो उनमें निहित सम्बन्ध और अन्तर को दर्शाता है।
– संकल्पना का संज्ञानात्मक मानचित्र नवीन ज्ञान के सुस्पष्ट एकीकरण द्वारा संकल्पना विकास में सहायक होता है।

4.10 अभ्यास प्रश्न (Evaluation Question)

1. संज्ञानात्मक मानचित्र से आप क्या समझते हैं?
   What do you mean by Cognitive Map?
2. अवधारणा मानचित्र विकास के सोपन उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
   Give the steps of Concept of Cognitive map with examples.
3. पाठ्यक्रम के मूलतत्व कौन–कौन से है।

Give the basic element of Curriculum

4. पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकारों के नाम लिखियें।

   Write the names of different types of Curriculum

5. अधिगम् शिक्षण में अवधारणा मानचित्र के महत्वों को स्पष्ट कीजिए।

   Explain the importance of cognitive map in teaching learing

4.11 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची (References)

(1.) विंच, पी0 (1958), द आइडिया ऑफ सोशियल सांइस, रूटलेज एण्ड कीगेन पॉल, लंदन।

(2.) योकम, जी0 ऐ0 एण्ड सेमसन, आर0 जी0 (1948), मॉर्डन मेथेड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948।

(3.) मेहता, डी0 डी0 (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

(4.) कोचर,एस0 के0 (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यु दिल्ली : स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड।

(5.) इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0 (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस, न्यु दिल्ली।

इकाई–5

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम, विषयवस्तु आधारित विधियों के उदाहरण, एवं शिक्षण से सम्बन्धित विशिष्ट कौशल। Approaches of Teaching Methods, Specific illustrations of content based Methodology, Subject Specific Skills in Teaching of Social studies

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 शिक्षण विधियों का अर्थ एवं उपागम

5.2.1 ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach)

5.2.2 तुलनात्मक उपागम (Comparative Approach)

5.2.3 संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम (structural fuctional Approach)

5.2.4 सर्वेक्षण उपागम (Survey Approach)

5.2.5 आदर्श प्रतिरूप विश्लेषण उपागम (Ideal type analysis Approach)

5.3 पाठ्यवस्तु आधारित विभिन्न शिक्षण विधियां (Teching methods based on content)

5.3.1 पाठ्यपुस्तक विधि (Tex book Method)

5.3.2 व्याख्यान विधि (Lecture Method)

5.3.3 प्रश्न उत्तर विधि (Question answer Method)

5.3.4 कहानी विधि (Story Method)

5.3.5 विचार विमर्श विधि (Discussion Method)

5.3.6 निरीक्षण विधि (Observation Method)

5.3.7 प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method)

5.3.8 योजना विधि (Project)

5.3.9 समस्या समाधान विधि (Problem solving)

5.3.10 इकाई विधि (Unit method)

5.3.11 प्रदर्शन विधि (Demonstration Method)

5.3.12 खोज विधि (Heuristic Approach)

5.3.13 विश्लेषण–संश्लेषण विधि (Analysis Synthesis Method)

5.3.14 अभिनय विधि (Dramatic Method)

5.3.15 गृहकार्य विधि (Home work/assignment)
5.3.16 समवाय विधि (Co–Selation Method)
5.3.17 सर्वेक्षण विधि (Survey Method)
5.3.16 पुनर्विक्षण विधि (Reveiwing Method)
5.3.19 एकल विषय (Single Subject Method Regional)
5.3.20 प्रादेशिक विधि (Geographical Regional Method)
5.3.21 केन्द्रित या तुलना विधि (Centered or Comparative Method)
5.3.22 सामाजिकृत अभिव्यक्ति विधि (Socialized reciatation Method)
5.4 सारांश (Summary)
5.5 अभ्यास प्रश्न (Exercise questions)
5.6 संदर्भ पुस्तकों की सूची (References)

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप–

1. शिक्षण विधियों का अर्थ बता सकेंगे।
2. शिक्षण विधियों के उपागमों को जान सकेंगे।
3. शिक्षण विधियों के उपागमों का शोध कामों में प्रयोग कर सकेंगे।
4. पाठ्यवस्तु आधारित विभिन्न शिक्षण विधियों को जान सकेंगे।
5. पाठ्यवस्तु के आधार पर उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन कर सकेंगे।
6. विभिन्न शिक्षण विधियों के गुण–दोष एवं उपयोग का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है तो उसके समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती होती है कि वह विषय वस्तु को छात्र के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत करें कि अधिकतम अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। अधिगम की प्रक्रिया को नियमित व निर्देशित करने के लिए शिक्षक द्वारा अपनायी गई कार्य प्रणाली शिक्षण विधि के नाम से जानी जाती है। कौन सी कार्यप्रणाली अर्थात् शिक्षण विधि अधिक उपयोगी होगी यह निर्भर करता है विषय वस्तु की प्रकृति एवं अधिगमकर्ता के स्तर पर। अत: एक सफल शिक्षक वही है जो विषय–वस्तु की प्रकृति, छात्रों के स्तर एवं उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप समुचित शिक्षण विधि का चयन कर सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाये।

इस प्रकार शिक्षण विधि छात्रों के सम्मुख विषय–वस्तु को प्रस्तुत करने का तरीका है जिसकी सहायता से शिक्षक छात्रों के साथ पारस्परिक संवाद स्थापित करता है, छात्रों तक विषय वस्तु पहुंचाता है और उसे छात्रों के लिए बोध गम्य बनाता है। परम्परागत शिक्षण विधियाँ जहाँ शिक्षक केन्द्रित एवं पाठ्य वस्तु केन्द्रित हे वहीं आधुनिक शिक्षण विधियां बालकेन्द्रित है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में यद्यपि परम्परागत शिक्षण विधियों का भी काफी प्रयोग किया जाता है किन्तु अब आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रयोग पर अधिक बल दिया जा रहा है जिसमें

शिक्षक की भूमिका केवल पर्दे के पीछे से सहायता प्रदान करने की रहती है और छात्र स्वाध्याय, चिन्तन–मनन, विचार विमर्श, तर्क आदि के द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेकर स्वयं सीखने का प्रयास करता है।

5.2 शिक्षण विधियों का अर्थ एवं उपागम (Meaning of teaching Method and approach)

लैटिन भाषा में "Method" का अर्थ है–तरीका, रीति। शिक्षा में विधि का अर्थ है– शिक्षक द्वारा छात्र को विषय–वस्तु सम्प्रेषित करने का तरीका या रीति। शिक्षण विधि शिक्षण की विषय–वस्तु को छात्र तक पहुँचाने का एक साधन या तरीका है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में यह विधियाँ ऐसी होनी चाहिए जिससे सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। शिक्षण विधियों को विषय–वस्तु के अनुरूप ही सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। शिक्षण विधियाँ ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों को मात्र निष्क्रिय श्रोता न बनायें अपितु उन्हें सक्रिय बनाकर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का सक्रिय अंग बनायें और अधिकतम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हों।

Teaching method is a dynamic process of education

- विनिंग के अनुसार– "शिक्षण विधि शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।"
- वेस्ले के अनुसार– "शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे छात्रों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग– "शिक्षण विधि चाहे अच्छी हो या बुरी, शिक्षक तथा छात्रों में अवयवी ढंग की घनिष्ठता स्थापित करती है। यह घनिष्ठता उनके बीच होने वाली पारस्परिक क्रियाओं के माध्यम से स्थापित होती है। शिक्षण विधि छात्रों के मस्तिष्क पर ही प्रभाव नहीं डालती है, वरन् उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है अर्थात् उनके कार्य तथा निर्णय, उनके बौद्धिक तथा संवेगात्मक विकास, उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को भी प्रभावित करती है। अच्छी विधियाँ मनोवैज्ञानिकता तथा सामाजिकता पर आधारित होती है जिसके फलस्वरूप वे छात्रों के जीवन की गुणवत्ता को उन्नत बनाती हैं परन्तु बुरी विधियाँ इस गुणवत्ता को समाप्त कर देती है। अत: विधियों के चयन एवं निर्धारण में शिक्षकों को सदैव उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

उपागम का अर्थ– उपागम का अर्थ होता है– दिशा (Direction) + विधि (Method) अत: किसी विषय में उपागम का अर्थ हुआ कि किस दिशा में अध्ययन करना है और किस विधि से अध्ययन करना है। उपागम कार्य करने की दिशा व सोच को इंगित करता है।

समाजशास्त्रीय अध्ययनों में निम्नवत उपागमों का बहुत प्रयोग किया जाता है–

1. ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach)
2. तुलनात्मक उपागम (Comparative Approach)
3. संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम (Structural–Fuctional Approach)

4. आदर्श प्रतिरूप विश्लेषण उपागम (Ideal type analysis Approach)
5. सर्वेक्षण उपागम (Survey Approach)

5.2.1– **ऐतिहासिक उपागम–** ऐतिहासिक उपागम सामाजिक अध्ययन विषय को ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करने पर बल देता है। यह केवल कालानुक्रम के रूप में घटनाओं का लेखा जोखा मात्र नहीं है अपितु सामाजिक विषयों की विषय वस्तु के उद्भव व विकास का सामाजिक आवश्यकता व आकांक्षा के अनुक्रम में अध्ययन होता है।

5.2.2– **तुलनात्मक उपागम** का प्रयोग विभिन्न देशों, समाजों, कालों अथवा वर्ग समूहों या सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्धित तथ्यों का निष्पक्ष अध्ययन हेतु किया जाता है। इसमें तुलना समानता और असमानता को देखकर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

5.2.3– **संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम** में सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक घटनाओं, सामाजिक व्यवस्थाओं व सामाजिक संस्थाओं की संरचना, उसके ढाँचे और उसके द्वारा सम्पादित कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

5.2.4– **आदर्श प्रतिरूप विश्लेषण उपागम** में पहले प्रसंग या विषय का आदर्श काल्पनिक स्वरूप सोचा जाता है, फिर वास्तविक स्वरूप से उसकी तुलना करके वास्तविक स्वरूप की न्यूनताओं व यथार्थताओं का विश्लेषण किया जाता है।

5.2.5– **सर्वेक्षण उपागम** में क्षेत्र–विशेष में विद्यमान समस्याओं से प्रभावित लोगों से अवलोकन (Observation), साक्षात्कार (Interview), प्रश्नावली (Questionnaire) आदि प्रविधियों द्वारा तथ्य एकत्रित किया जाता है।

इन उपागमों का प्रयोग प्राय: शोध अध्ययन करते समय किया जाता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

प्रश्न 1.शिक्षण विधियों से आप क्या समझते हैं ?

प्रश्न 2.शिक्षण विधि और उपागम में आपस में अन्तर स्थापित करें?

प्रश्न 3.ऐतिहासिक उपागम एवं संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम में अन्तर बताइये?

प्रश्न 4.किसी विधि के अन्तर्गत उपागम का प्रयोग आप कैसे करोगे?

5.3 पाठ्यवस्तु आधारित विभिन्न शिक्षण विधियाँ (Teaching method based on content)

कक्षा शिक्षण करते समय कई सामान्य तथा कई विशिष्ट शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। सभी सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में कुछ विधियां तो एक जैसी ही होती है, जबकि किसी–किसी सामाजिक विज्ञान में कोई विशेष विधि भी होती है जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है–

शिक्षण विधियां	इतिहास	ना.शा.	अ.शा.	भूगोल	स.शा.	स.अ.
सामान्य शिक्षण विधियां						
1. पाठ्य पुस्तक विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
2. व्याख्यान विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
3. प्रश्न उत्तर विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
4. कहानी विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
5. विचार–विमर्श विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
6. निरीक्षण विधि (Observation)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
7. प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method)	x	x	x	✓	x	✓
8. योजना विधि(Project Method)						
9. समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
10. इकाई विधि (Unit Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
11. प्रदर्शन विधि(Demonstration)						
12. खोज विधि (Henristic Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
13. विश्लेषण–संश्लेषण विधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓
14. अभिनय विधि (Dramatic Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
15. गृहकार्य विधि (Assignment Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
16. समवाय विधि (Correlation Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
17. सर्वेक्षण विधि (Survey Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
18. पुनर्विक्षण विधि (Reviewing Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
19. एकल विषय (Single Subject Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
20. प्रादेशिक विधि (Geogaphical Regional Method)	x	x	x	✓	x	X

21. केन्द्रित या तुलना विधि (Centered or Comparative Method)	x	x	x	✓	x	X
22. सामाजीकृत अभिव्यक्ति विधि (Sociaized Recitation Method)	✓	✓	✓	✓	✓	✓

5.3.1 पाठ्यपुस्तक विधि–(Test Book Method)

मुद्रण कला के आविर्भाव के साथ ही पाठ्यपुस्तक शिक्षा प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण आधार बन गई। आज पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षा के सभी स्तरों पर ज्ञान प्रदान करने की महत्वपूर्ण विधि है। ई0बी0 वेस्ले के अनुसार– "पाठ्यपुस्तक शिक्षण पद्धति की वह प्रक्रिया है जिसका तात्कालिक उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सूचनाओं की समझदारी प्रदान करना होता है।"

वस्तुतः पाठ्यपुस्तक को शिक्षण विधि के रूप में स्वीकार करने के स्थान पर पाठ्यपुस्तक को माध्यम के रूप में स्वीकार करना ज्यादा तर्क संगत होगा किन्तु आज शिक्षण प्रक्रिया में इसका इतना अधिक प्रयोग होने लगा है कि इसने एक महत्वपूर्ण शिक्षण विधि का स्थान प्राप्त कर लिया है। आज दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक स्वअधिकगम सामग्री के रूप में तैयार की जाती है जिसकी सहायता से विद्यार्थी अध्यापक के अल्प सहयोग से ज्ञान अर्जित करते हैं। नियमित शिक्षा में भी पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षण की एक महत्वपूर्ण विधि है क्योंकि पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक विशेषज्ञ दल या विशेषज्ञ विशेष द्वारा किया जाता है जिससे पाठ्यचर्या की विषय–वस्तु सुनियोजित तरीके से लिपिबद्ध होती है जिसे विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार जब चाहे अध्ययन कर सकता है। पाठ्यपुस्तक विधि स्वअध्ययन की प्रवृत्ति के विकास में भी महत्वपूर्ण है। पाठ्यपुस्तक विधि सभी विषयों एवं सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अन्य अध्यापन विधियों के लिए भी आधार प्रस्तुत करती है। 'पाठ्यपुस्तक विधि' पाठ्यपुस्तक पर आधारित होती है। अन्य विषयों की भांति सामाजिक अध्ययन की भी प्रत्येक कक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक निर्धारित की जाती है। शिक्षक को अपना शिक्षण कार्य इस पर आधारित करना होता है। यह कहा जा सकता है कि पाठ्य पुस्तक विधि सर्वप्रचलित है।

उपयोगिता– (Utillity)

1. इसमें पाठ्य–सामग्री सुनियोजित एवं सुगठित होती है।
2. यह विधि ज्ञानार्जन का मितव्ययी साधन है।
3. यह विधि छात्रों को स्वाध्याय हेतु प्रोत्साहित करती है।
4. यह अध्यापक का शिक्षण कार्य में मार्गदर्शन करती है।
5. यह प्रयोग कार्य का निर्देश देते हैं।
6. यह शिक्षण स्तर में समानरूपता उत्पन्न करती है।
7. यह अन्य विधियों का आधार है।

8. यह पाठ्य सामग्री को संतुलित रूप में प्रस्तुत करती है।
9. इस पद्धति के द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति का विकास होता है।
10. इस पद्धति के द्वारा छात्र क्रमबद्ध रूप में ज्ञान को ग्रहण करना सिखते हैं।
11. इसके द्वारा छात्रों में मौखिक और लिखित रूप में अपने विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित हो जाती है।
12. इसके द्वारा छात्रों की भाषा–शैली का विकास होता है।
13. इस पद्धति के द्वारा छात्रों को पाठ से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि के अध्ययन की प्रेरणा प्राप्त होती है।

दोष– (Demerit)

1. इस पद्धति के द्वारा छात्र में रटने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।
2. इसके प्रयोग से कक्षा का वातावरण नीरस व अरूचिकर रहता है।
3. इस पद्धति के द्वारा नवीन पद्धतियों की पर्याप्त उपेक्षा की जाती है।
4. यह व्यापक दृष्टिकोण के विकास में सहायक नहीं है।
5. इसमें वांछित विस्तार का अभाव होता है।
6. इसमें अध्यापक के लिए स्वतन्त्रता का अभाव होता है क्योंकि पाठ्य पुस्तक पर अत्याधिक निर्भरता की सम्भावना रहती है।
7. इसमें विद्यार्थियों की सक्रियता का अभाव होता है।

5.3.2 व्याख्यान विधि– (Lecture Method)

व्याख्यान शिक्षण की पुरातन एवं सर्वाधिक उपयोग में लायी जाने वाली विधि है। व्याख्यान विधि मूलत: लोक सम्प्रेषण ही है। इस विधि का प्रयोग विद्यार्थियों को ज्ञान प्रेषित करने के लिए किया जाता है। आज जबकि शिक्षक एवं विद्यार्थी अनुपात 1:50 से भी काफी अधिक है, व्याख्यान विधि ही सर्वाधिक प्रभावी, सुलभ, सस्ती और उपयुक्त अध्यापन विधि है। यह अध्यापक केन्द्रित विधि है जिसमें अधिकांशत: शिक्षक ही सम्प्रेषण करता है एवं छात्र सुनते हैं। इस विधि की एक कमी यह है कि इसमें शिक्षक सक्रिय रहता है जबकि विद्यार्थी निष्क्रिय, तटस्थ स्रोत मात्र की भूमिका में रहता है। व्याख्यान उन तथ्यों, सिद्धान्तों अथवा अन्य सम्बन्ध की स्पष्टीकरण है जिनको शिक्षक चाहता है कि उसके सुनने वाले समझें। इसमें समझाने और सुनने पर अधिक बल दिया जाता है। अध्यापक एक प्रसंग पर एक 30–40 मिनट का सारगर्भित अथवा सर्वांगीण भाषण देता है, जिसे विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

व्याख्यान विधि के उद्देश्य हैं– (Objectives of lecture method)

- किसी विषय वस्तु की विस्तृत, गहन जानकारी देना।
- विचारों को प्रोन्नत करना।
- विषय को स्पष्ट करना।
- विषय में अभिरूचि एवं अभिवृत्ति का विकास करना।

व्याख्यान विधि के गुण : (Merits)

1. अध्यापन की सबसे सरल, सुलभ, सुगम विधि है।

2. बड़े समूह के शिक्षण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।
3. समय एवं धन की बचत होती है।
4. इसे कक्षा में एवं कक्षा के बाहर भी प्रयुक्त किया जा सकता है।
5. अध्यापक व्याख्यान की तैयारी पूर्व में ही कर लेता है अत: सुव्यवस्थित, सुनियोजित शिक्षण सम्भव होता है।
6. इसमें अध्यापक अनेक स्रोतों से एवं लम्बे समय से सूचनाएं एकत्रित कर प्रस्तुत करता है जिससे विद्यार्थियों को उच्च कोटि की नवीनतम सामग्री प्राप्त हो जाती है।
7. इससे छात्र में तर्क–शक्ति, विश्लेषण एवं विवेचन–शक्ति का विकास होता है।
8. शिक्षक और छात्र दोनों की भाषण के बीच प्रश्नोत्तर द्वारा सक्रिय रहते है।
9. यह तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक पद्धति है।
10. यह उच्च कक्षाओं के छात्रों हेतु विशेष रूप से सहायक है।
11. इस पद्धति के द्वारा विशाल–वस्तु को संक्षिप्त रूप में छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है।

व्याख्यान विधि की सीमाएं– (Limitations)

1. शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन कई भाषण मनो वैज्ञानिक ढंग से तैयार नहीं किए जा सकते।
2. निम्न स्तरीय कक्षाओं के लिए यह पद्धति अनुपयुक्त है।
3. अकुशल अध्यापकों की कक्षा में इस पद्धति से अनुशासनहीनता उत्पन्न होती है।
4. अध्यापक केन्द्रित विधि जिसमें शिक्षक सक्रिय जबकि विद्यार्थी सिर्फ निष्क्रिय स्रोता मात्र।
5. विद्यार्थी व्याख्यान की सुनी गई पचास प्रतिशत विषय वस्तु की याद नहीं रख पाते।
6. इसके द्वारा विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, सम्प्रेषण, तर्क एवं समस्या समाधान की योग्यता का विकास नहीं हो पाता।
7. विद्यार्थियों से सतत प्रतिपोष (Feed Back) नहीं मिल पाता।
8. नीरस, तथ्यपरक शिक्षण।
9. स्मृति पर बल।

स्वमूल्यांकन प्रश्न –>

1.पाठ्यपुस्तक को शिक्षण की एक विधि क्यों माना जाय।

2.व्याख्यान विधि सर्वाधिक रूप से प्रयोग की जाने वाली विधि है। स्पष्ट कीजिये

5.3.3 प्रश्नोत्तर विधि– (Question/Answer Method)

प्रश्न–उत्तर विधि सामाजिक अध्ययन शिक्षण की सर्वाधिक लोकप्रिय विधि है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में जीवन्तता लाती है और विद्यार्थी को सतत सक्रिय और सचेत बनाये रखती है। प्रश्न पूछने का परम्परागत लक्ष्य बालक के ज्ञान की जाँच करना था परन्तु आधुनिक शैक्षणिक प्रक्रिया में प्रश्न विविध प्रयोजनों की पूर्ति करते हैं। प्रश्न के माध्यम से छात्रों को सतत् सक्रिय बनाये रखा जा सकता है, उनमें विषय के प्रति रूचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न की जा सकती है। विषय पर ध्यान केन्द्रित करने, उनके पूर्व ज्ञान की जाँच करने, पाठ

के विकास करने, उनकी कठिनाइयों की जानकारी एवं उसका निदान करने, छात्रों के मानसिक विकास करने, पठित पाठ की जांच करने आदि में प्रश्न–उत्तर विधि का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है।

शिक्षण प्रक्रिया में प्रश्न–उत्तर विधि का निम्नवत रूप से प्रयोग किया जाता है–

(I) **प्रस्तावना प्रश्न के रूप में–** छात्रों के पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से सम्बन्धित करने हेतु।

(II) **विकासात्मक प्रश्न के रूप में–** पाठ के विकास हेतु छात्र सहयोग के लिए।

(III) **विचारात्मक प्रश्न के रूप में–** छात्रों के मस्तिष्क को क्रियाशील रखने एवं विचारशक्ति के विकास हेतु।

(IV) **समस्यात्मक प्रश्न के रूप में –** पाठ के प्रारम्भ में किसी समस्या को प्रस्तुत करने के लिए।

(V) **बोध प्रश्न–** छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान की जांच हेतु।

(VI) **पुनरावृत्ति प्रश्न–** पठित पाठ की पुनरावृत्ति हेतु।

(VII) **खोजपूर्ण प्रश्न–** छात्रों में खोजपूर्ण, सृजनात्मक शक्ति के विकास हेतु।

प्रश्न–उत्तर विधि छात्रों को सतत् क्रियाशील बनाए रखती है। साथ ही प्रतिपुष्टि एवं पुनर्बलन भी प्रदान करती है।

5.3.2.4 कहानी विधि– (Story Method)

कहानी विधि सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए काफी उपयोगी विधि है। कहानी सुनने की आदत बालकों को बचपन से ही होती है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि व्याख्यान आदि विधियों की तुलना में कहानी अधिक रूचिपूर्ण होती है और दीर्घ अवधि तक स्मृति में रहती है कहानी द्वारा सामाजिक अध्ययन विषय के तथ्यों, घटनाओं एवं परिस्थितियों का ज्ञान बड़ी ही आसानी से कराना सम्भव होता है।

कहानीविधि के प्रतिपादक प्लेटो थे। इतिहास व सामाजिक अध्ययन जैसे सामाजिक विज्ञानों में पाठशाला स्तर पर प्राय: कहानी विधि का उपयोग शिक्षक अपने शिक्षण में करता है। छोटी कक्षाओं में बालकों को कहानी सुनने की तीव्र लालसा होती है।

कहानी पद्धति की सफलता हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षक कहानी कहने की कला में निपुण हो तथा वह स्वयं भी कहानी कहने व सुनने में रूचि लेता है।

गुण:– (Merits)

1. इसके द्वारा बालकों का मनोवैज्ञानिक विकास होता है।
2. इसके द्वारा बालकों की कल्पना एवं निर्णय शक्ति का विकास होता है।
3. सुरूचिपूर्ण, सुलभ, सुगम और सस्ती विधि।
4. प्रभावी और दीर्घकालिक प्रभाव।
5. ज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ भावात्मक पक्ष का भी विकास।
6. कल्पना, निर्णय, सृजनात्मकता का विकास।
7. मस्तिष्क में सजीव चित्रण।

सीमाएं– (Limitations)

1. किसी भी विषय की सम्पूर्ण विषय–वस्तु का अध्यापन केवल कहानी विधि से संभव नहीं।
2. कभी–कभी गम्भीर एवं जटिल विषयों को व्यक्त करना संभव नहीं।
3. तर्क एवं चिंतन शक्ति का समुचित विकास नहीं।

5.3.5 विचार–विमर्श विधि (Discussion Method)

यह विवेकपूर्ण गहन, विस्तृत विचार की महत्वपूर्ण विधि हैं जिसका प्रयोग छात्रों में विचार पूर्ण चिन्तन के विकास हेतु किया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण की सफलता के लिए छात्रों की सक्रियता एवं सहभागिता आवश्यक है। विचार–विमर्श विधि में छात्रों को चिन्तन, क्रिया एवं सक्रिय सहभागिता का पूर्ण अवसर मिलता है।

इस प्रकार विचार विमर्श विधि एक समूह के मध्य आदान–प्रदान की विधि है जिसमें विवेचनात्मक, तार्किक एवं समस्यापरक चिन्तन होता है तथा जिससे किसी प्रकरण का बोध होता है और समस्या समाधान प्राप्त किया जाता है।

विचार विमर्श प्रक्रिया में शिक्षक मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। वह छात्रों को विचार विमर्श की प्रक्रिया का नियोजन और नियंत्रण करता है।

विचार विमर्श विधि के लाभ– (Merits)

1. इस पद्धति से छात्र विषय–वस्तु का चयन एवं संगठन करना सीखते हैं।
2. छात्र में स्वतन्त्र रूप से विचार करने की आदत का विकास होता है।
3. इससे छात्रों की तर्क एवं निर्णय शक्तियों का विकास होता है।
4. यह पद्धति व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर निर्भर है।
5. इसके द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।
6. छात्रों की सहभागिता को प्रोत्साहन
7. छात्र निष्क्रिय स्रोता मात्र नहीं, सक्रिय कार्यकर्ता
8. आलोचनात्मक चिन्तन के विकास में सहायक
9. सम्प्रेषण कौशल के विकास में सहायक
10. तर्क, चिन्तन, समस्या, समाधन के विकास में सहायक
11. विश्लेषण एवं विवेचना के विकास में सहायक
12. लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में सहायक
13. सामाजिक अध्ययन विषय के प्रकरणों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त

सीमाएं– (Limitation)

1. इस पद्धति का प्रयोग छोटी कक्षाओं में नहीं किया जा सकता है।
2. उद्देश्य केन्द्रित न रह पाने की दशा में वाद–विवाद समय के अपव्यय के सिवाय और कुछ नहीं है।
3. इस पद्धति के समय अधिक लगता है।
4. इसमें सम्पूर्ण विषय वस्तु का अध्यापन सम्भव नहीं है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न ->

1. विचार विमर्श विधि के गुण दोषों की चर्चा कीजिए।
2. कहानी विधि का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है।

5.3.6. निरीक्षण विधि (Observation Method)

सामाजिक अध्ययन विषय के प्रकरण जीवन्त समाज से होते हैं अत: निरीक्षण विधि सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण की एक उत्तम विधि है। भूगोल विषय में तो निरीक्षण का महत्व अन्य समस्त विधियों से एक सर्वाधिक है किन्तु इसका प्रयोग इतिहास, नागरिक शास्त्र एवं अर्थशास्त्र के प्रकरणो में भी सहजता से किया जा सकता हैं उदा0 के लिए ताजमहल के कला–शिल्प को निरीक्षण द्वारा ही समझा जा सकता है। झरने, नदी, पहाड़, पत्थर, खनिज, वनस्पति उद्योग धन्धों आदि का यथार्थ ज्ञान निरीक्षण द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस विधि से अध्ययन में जीवन्तता बनी रहती है, यथार्थ इन्द्रिय ज्ञान सम्भव होता है जिससे विषय के सभी पहलुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसकी सीमा यह है कि यह खर्चीली विधि है, समय अधिक लगता है और संवेदनशील निरीक्षणकर्ता की अपेक्षा रहती है।

निरीक्षण विधि के गुण–(Merits)

1. व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित है। प्रत्येक छात्र के अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार अध्ययन करने का अवसर मिलता है।
2. इससे शिक्षक एवं छात्रों के सम्बन्ध मधुर बनते हैं
3. व्यक्तिगत संलग्नता (Individual Engagemnet) के सिद्धान्त का अनुसरण करती है।
4. इससे छात्रों में स्वाध्याय की भावना जागत होती है।

सीमाएं–(Limitations)

1. इस पद्धति में किसी बात को सीखने में समय बहुत लगता है।
2. नागरिकशास्त्र का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम इस पद्धति से नहीं पढ़ाया जा सकता।
3. छोटी कक्षाओं के स्तर के लिए उपयुक्त नहीं।

5.3.7. प्रयोगशाला विधि–(Laboratory Method)

प्रयोगशाला विधि का प्रयोग मूलत: विज्ञान शिक्षण में होता है किन्तु विज्ञान में इसकी सफलता से प्रभावित होकर अन्य सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में इस विधि के प्रयोग किये जाने का प्रयास किया गया। भूगोल शिक्षण में प्रयोगशाला के अन्दर प्रकरण से सम्बन्धित ऐसी व्यवस्था का आयोजन किया जाता है जिससे छात्र क्रिया द्वारा ज्ञान (Learning by doing) प्राप्त करते हैं। भूगोल विषय के अनेकों प्रकरणों को छात्रों को प्रयोगशाला में ले जाकर स्वयं क्रिया द्वारा सिखाने से विषय का न केवल बोध होता है अपितु उनमें नवीन विचारों के पल्लवन का भी अवसर मिलता है। उदा0 के लिए सौरमण्डल का पूरा ज्ञान, ऋतु–परिवर्तन, भौगोलिक

घटनाओं का ज्ञान, भौगोलिक कारण–परिणाम का ज्ञान, प्रयोगशाला विधि द्वारा व्यवहारिक तरीके से प्रदान किया जा सकता है।

वस्तुतः प्रयोगशाला विधि का प्रयोग सामाजिक अध्ययन के अन्य प्रकरणों के लिए उतना लाभदायक नहीं है जितना भूगोल विषय के लिए है। इतिहास, नागरिकशास्त्र आदि विषयों में इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

5.3.8. योजना विधि (Project Method)

योजनाविधि आधुनिक शिक्षण विधियों में सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षण विधि हैं जॉन ड्यूवी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्त पर आधारित प्रोजेक्ट विधि का डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक द्वारा प्रतिपादन किया गया। प्रोजेक्ट या योजना विधि परम्परागत कक्षा शिक्षण को पुरानी शिक्षण विधियों के नीरस व बोझिल तरीकों के बयान पर छात्र को क्रियाशील बनाकर स्वयं करके सीखने पर बल देती है। किलपैट्रिक (1918) के अनुसार– "योजना एक ऐसी सोद्देश्य क्रिया है जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण लगन के साथ सम्पन्न की जाती है।" थामस और लैंग (1983) के शब्दों में – प्रोजेक्ट स्वेच्छा से किया जाने वाला ऐसा कार्य है जिसमें रचनात्मक प्रयास अथवा विचार हो और जिसका कुछ सकारात्मक परिणाम हो।

योजना विधि के गुण–(Merits)

- क्रिया आधारित विधि।
- वास्तविक अथवा प्राकृतिक वातावरण में सम्पन्न।
- स्वयं उद्देश्यों का निर्धारण एवं तदनुरूप नियोजन एवं निष्पादन।
- व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से अनिवार्यतः उपयोगी।
- स्वयं करके अनुभव प्राप्त करने पर बल।
- इसमें छात्र स्वयं अपना कार्य नियोजित करते हैं, कार्यान्वित करते हैं और मूल्यांकन करते हैं।

योजना के पद Steps of the project

- योजना का चयन (Selection of the Project)
- योजना का नियोजन (Planning of the Project)
- योजना की पूर्ति (Execution of the Project)
- योजना का मूल्यांकन (Evaluation of the Project)

योजना विधि की सीमाएं–(Limitations)

- समय, श्रम, धन अधिक लगता है।
- योजना संचालन हेतु अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।
- सामाजिक अध्ययन के सभी विषयों के हर प्रकरण का इस विधि द्वारा ज्ञान देना सम्भव नहीं है।

5.3.9. समस्या–समाधान विधि (Problem Solving Method)

समस्या समाधान विधि के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है समस्या समाधान विधि वह विधि है जिसमें चिंतन व तर्क को क्रमबद्ध रीति से नियोजित किया जाता है जिससे समस्या का हल प्राप्त किया जा सके।

समस्या समाधान विधि के चरण (Steps of Problem Solving method)

1. समस्या की पहचान
2. परिकल्पना का निर्माण
3. तथ्यों का संकलन, व्यवस्थापन, विश्लेषण
4. निष्कर्ष व समस्या समाधान

जोहन ब्रान्सफोर्ड एवं बैरी स्टीन ने समस्या समाधान विधि के (5) सोपान बताये हैं–

I	=	Identifying the problem समस्या की पहचान
D	=	Defining the problem समस्या का परिभाषीकरण
E	=	Exploring possible strategies सम्भावित रणनीति की तलाश
A	=	Acting the strategies रणनीति का क्रियान्वयन
L	=	Looking back (evaluation) मूल्यांकन

समस्या समाधान विधि के गुण (Merits)

- तार्किक, क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित चरणबद्ध विधि
- स्वनिर्णय की क्षमता का विकास
- सक्रियता एवं सहभागिता का विकास

सीमाएं (limitation)

- इस विधि में समय, श्रम अधिक लगता है।
- सभी विषयों में इसका प्रयोग सम्भव नहीं।
- अधिक अवधान एवं विवेक की आवश्यकता।
- इसका उपयोग केवल उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों में ही सम्भव।
- योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता।

स्वमूल्यांकन प्रश्न ->

1. योजना विधि प्रयोगशाला विधि से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
2. समस्या समाधान विधि का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में क्या उपयोग है।

5.3.10 इकाई विधि– (Unit Method)

इकाई विधि सामाजिक अध्ययन शिक्षण को एक नवीन एवं महत्वपूर्ण विधि है। इकाई विधि गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के इस सिद्धान्त पर आधारित है कि सीखने की प्रक्रिया के लिए जो भी सामग्री प्रस्तुत की जाय वह समग्र रूप में होनी चाहिएं इस विधि के अन्तर्गत छात्रों को

किसी भी ईकाई से सम्बन्धित समस्त पक्षों के सम्बन्ध में समग्र रुप में ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

इकाई विधि में–

1. ज्ञान की समग्रता पर बल दिया जाता है।
2. छात्रों के सम्मुख ज्ञान को सम्यक रूप से क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
3. छात्र को विषय–वस्तु का विस्तृत, गहन ज्ञान दिया जाता है।

इकाई विधि की सीमा–(Limits Unit Method)

- समग्रता के सिद्धान्त पर आधारित होने के कारण इसके द्वारा विषय का या तो पूर्ण ज्ञान हो जाता है या बिल्कुल ही नहीं हो पाता।
- पूरी इकाई का अध्ययन किये जाने के कारण इकाइयों का आकार बड़ा हो जाने से कक्षा में नीरसता आ जाती है।

5.3.11 प्रदर्शन विधि Demonstration Method–

प्रदर्शन सामाजिक अध्ययन शिक्षण को जीवन्त प्रस्तुत करने के उपक्रम में प्रयुक्त की जाने वाली महत्वपूर्ण विधि है जिसमें यह प्रदर्शित करते हैं कि किस प्रकार कोई घटना कार्य करती है। प्रदर्शन विधि किसी प्रयोग की कार्य विधि प्रदर्शित करने की एक क्रिया है। उदा0 के लिए विभिन्न भौगालिक एवं आर्थिक तथ्यों एवं घटनाओं को प्रदर्शन विधि द्वारा अच्छी तरह से स्पष्ट किया जा सकता है। इसमें छात्रों को स्वयं निरीक्षण द्वारा सीखने का अवसर मिलता है साथ ही उन्हें तथ्यों एवं घटनाओं का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। उदा0 के लिए दिन–रात की क्रियाविधि को स्पष्ट करने के लिए प्रदर्शन विधि का श्रेष्ठ उपयोग किया जा सकता है जैसे शिक्षक–ग्लोब, टार्च या बल की मदद से प्रदर्शन विधि द्वारा छात्रों को भौगोलिक तथ्य का ज्ञान दे सकता है।

गुण – (Merits) 1 – प्रभावशाली शिक्षण
2 – निरीक्षण द्वारा यथार्थ ज्ञान
3 – जीवन्त और सक्रिय शिक्षण

सीमांए–(Limitations) 1 – खर्चीली विधि
2 – दक्ष, योग्य प्रशिक्षित शिक्षक की आवश्यकता

5.3.12 खोज विधि (ह्यूरिस्टिक विधि) Heurisitic Method

खोज विधि वह विधि है जिसमें छात्र स्वयं नवीन संम्प्रतयय की खोज करते हैं। खोज विधि पर सुकरात और रूसों के समय से चिन्तन किया जाता रहा है। सुकरात ने खोज विधि को "प्रश्न पूछकर" प्रयोग मे लाने पर बल दिया और रूसो ने खोज विधि को व्यवहारिक समस्याओं का हल करके सीखने पर बल दिया है। जॉन डीवी ने बताया कि निष्क्रिय अध्ययन का विकल्प समस्या समाधान विधि का प्रयोग करने पर प्राप्त होता है। उन्होंने लिखा हे कि खोज विधि की उपलब्धि ज्ञान है और वह आगे खोज का साधन भी है।

गुण– (Merits)

- मानसिक क्षमता में वृद्धि करती है।

– छात्र स्वअध्ययन द्वारा मानसिक क्षमता का उपयोग करता है।
– आन्तरिक अभिप्रेरणा पर आधारित, वाह्य अभिप्रेरणा की आवश्यकता नहीं।
– छात्र केन्द्रित विधि
– क्रिया केन्द्रित विधि

5.3.13 विश्लेषण –संश्लेषण विधि– (Analysis and Synthesis Method)

इन विधियों का उपयोग सामाजिक अध्ययन शिक्षण में काफी किया जाता है। ये विधियां तथ्यों एवं घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करने में उपागम का कार्य करती हैं। जब हम छात्रों के सम्मुख विभिन्न तथ्य एवं उनके सम्बन्ध में अन्य जानकारी देते हैं तो छात्र विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष तक पहुंचते हैं। इसमें तथ्यों स्थितियों के मध्य सम्बन्ध एवं एक घटना से दूसरी घटना में सम्बन्ध व अन्तर का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है।

गुण– (Merits) – मानसिक विकास में सहायक
– तथ्यों एवं घटनाओं को समझने में सहायक
– नवीन निष्कर्ष प्राप्त करने में सहायक

5.3.14 अभिनय विधि– (Dramatic Method)

इस विधि का प्रयोग छोटी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए अधिक लाभप्रद होता है। यह विधि अभिनय ड्रामा पर आधारित है जिससे इसके द्वारा न केवल बालकों का मनोरंजन होता है अपितु जटिल विषय–वस्तु भी आसानी से समझ में आ जाती है। उदा0 के लिए– सामाजिक अध्ययन के छात्र पंचायत, नगरपालिका, जिला–परिषद, विधान सभा, लोकसभा, सांसद, न्यायपालिका आदि की कार्य प्रणाली एवं संरचना को अभिनय विधि द्वारा व्यावहारिक ढंग से जान सकते हैं।

गुण (Merits) – मनोवैज्ञानिक विधि
– सक्रिय एवं जीवन्त
– छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए सर्वोत्तम

5.3.15 गृहकार्य विधि– (Home Assignment Method)

गृहकार्य विधि वैसे तो सभी विषयों के शिक्षण में प्रयुक्त की जाती है किन्तु सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सर्वाधिक प्रयुक्त विधि है। गृहकार्य विधि द्वारा कक्षा में पढ़ायी गई विषय–वस्तु को आत्मसात कराने का प्रयास किया जाता है। शिक्षक की मौजुदगी में शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है और सभी छात्रों पर ध्यान रखता है किन्तु कक्षा के बढ़ते आकार के कारण कई बार यह संभव नहीं हो पाता हैं। अत: गृहकार्य विधि द्वारा छात्र में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास तो होता ही है साथ ही आत्म अभिव्यक्ति एवं आत्मप्रदर्शन का भी अवसर प्राप्त होता है।

कक्षा में ही विद्यार्थियों को करने के लिए कार्य दिया जा सकता है, जिसे वे शिक्षक की देखभाल में पूरा करें लेकिन उनको घर में करने के लिए भी गृहकार्य दिया जाना चाहिए। दिये गये गृहकार्य की शिक्षक को नियमित रूप से और भलीभांति जांच करनी चाहिए तथा विद्यार्थियों के गृहकार्य की कमियों और अच्छाइयों की कक्षा में सामान्यतया व्याख्या करनी

चाहिए। प्रत्येक गृहकार्य पर अंक या ग्रेड देना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को अपने स्तर का ज्ञान रहे तथा अधिक प्रेरणा मिले।

गुण (Merits)

- गृहकार्य विधि छात्रों की छिपी प्रतिभा को निखारने में सहायक।
- मौलिक चिन्तन के विकास में सहायक।
- अधिगमित सामग्री की पुनरावृत्ति।
- स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की रीढ़।

5.3.16 समवाय विधि (Co–relation Method)–

समवाय विधि सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अब काफी लोकप्रिय हो रही है। अन्तर अनुशासन उपागम के विकास के परिणाम स्वरूप एक विषय दूसरे विषय के साथ सम्बन्धित होकर विकसित होने लगा है। ऐसे में समवाय विधि का महत्व बढ़ना स्वाभाविक ही है।

समवाय विधि में छात्र सहसम्बन्धों के आधार पर ज्ञान का विकास करता है जिससे न केवल प्रत्यय का स्पष्ट बोध होता है अपितु अन्तर व समानता का भी बोध होता है। समवाय विधि द्वारा छात्र विधान सभा की कार्यविधि और संरचना को जानकर लोकसभा की कार्यविधि और संरचना को उसके आधार पर जानने का प्रयास करता है।

गुण (Merits)

- सहसम्बन्ध के आधार पर शिक्षाप्रणाली
- समानता व अन्तर का स्पष्ट ज्ञान
- छात्र क्रियाशील रहते है
- ज्ञान को श्रृंखलाबद्ध तरीके से सीखने में सहायक

5.3.17 सर्वेक्षण विधि (Survey Method)–

सर्वेक्षण विधि सामाजिक अध्ययन में काफी प्रयोग की जाती है। डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार– "एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष के सम्बन्ध में व्यवस्थित और पूर्ण तथा संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है"। बिटनी ने इसे इन शब्दों में परिभाषित किया है– "सामाजिक सर्वेक्षण एक व्यवस्थित प्रयास है जिसे कि एक सामाजिक संस्था समूह या क्षेत्र की वर्तमान दशा का विश्लेषण, स्पष्टीकरण ओर विज्ञप्तीकरण किया जाता है।

इसके द्वारा– (1) सामाजिक पक्षों के बारे में वास्तविक तथ्यों को एकत्र किया जाता है।

(2) कारणों व प्रभावों के मध्य सम्बन्ध का पता लगाया जाता है।

(3) संकलित तथ्यों के आधार पर भावी सुधार हेतु सुझाव दिया जाता है।

5.3.18 पुनर्वीक्षण विधि (Reviewing Method)

पाठ का दोहराना या पुनर्वीक्षण एक ऐसी विधि है, जो सभी शिक्षकों द्वारा कक्षा में पढ़ाते हुए प्रयोग में लाई जाती है। दोहरान प्रश्नों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाने वाले

वाक्यों द्वारा, किसी अपूर्ण वाक्यों को पूर्ण करवाने के द्वारा, किसी प्रश्न के हल द्वारा, किसी खेल द्वारा या किसी चित्रं मानचित्र को बनाने के अभ्यास द्वारा।

5.3.19 एकल विषय अध्ययन विधि (Single Subject Method)

निम्नांकित चरण

1. समस्या का संक्षिप्त उल्लेख
   अ. एकल विषयों का चुनाव
   ब. ईकाइयों के प्रकारों का उल्लेख
   स. एकल विषयों की संख्या
   द. विश्लेषण का क्षेत्र
2. घटनाओं के क्रम को बतलाना
3. निर्धारक अथवा प्रेरक कारक
4. कारकों का विश्लेषण और निष्कर्ष

5.3.20 प्रादेशिक विधि (Regional Method)

भूगोल शिक्षण में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमे समस्त संसार के प्रमुख बड़े–बड़े प्राकृतिक क्षेत्रों मे बांट लिया जाता है। यह विधि मानव व मानवीय तथ्यों पर भी बल देती है, जिससे यह बालकों के लिए शिक्षाप्रद और मनोरंजक बन जाती है। उच्च कक्षाओं में इस विधि का उपयोग करना उपयुक्त होता है।

5.3.21 केन्द्रित या तुलना विधि – (Centered or Comparative Method)

यह विधि भूगोल शिक्षण में काम में लाई जाती है। यह विधि "ज्ञान से अज्ञान की ओर चलो" के महत्वपूर्ण शिक्षण सूत्र के आधार पर विकसित की गई है। इस विधि से पढ़ाने में विद्यार्थी पहले अपने गांव की भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी अर्जित करते हैं, फिर अपने जिले की, फिर अपने प्रदेश के बारे में, फिर क्षेत्र, फिर देश, फिर महाद्वीप, और फिर संसार के बारे में।

5.3.22 समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति

Socialized recitation method

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसको समाज में रहकर कार्य करना पड़ता है। शिक्षा भावी जीवन की तैयारी का मुख्य आधार है और आज का बालक कल का नागरिक भी है। इस शिक्षण क्रिया का केन्द्र बिन्दु शिक्षार्थी है। यहां वह निष्क्रिय श्रोता से अपना स्थान बदलकर सक्रिय, विवकेशील निर्णय प्रस्तुत करने वाला बन जाता है। बालक स्वक्रिया के माध्यम से सीखने के साथ – साथ आपसे में प्रेम, सहकारिता, सहिष्णुता, सामाजिक, जागृति, कर्त्तव्य परायणता तथा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने की क्षमता का विकास करते है। इस पद्धति में चर्चा के लिए कोई निश्चित तरीका अपनाने का पूर्वग्रह नहीं होता। विषयवस्तु की उपयुक्तता के अनुसार शिक्षक अपनी सूझबूझ के अनुसार चर्चा का कोई भी रूप अपना सकता है। परन्तु सब रूपों में निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

1. चर्चा पूर्ण रूप से नियोजित हो। इससे शिक्षार्थियों की अभिरूचि बनाये रखने में सुविधा मिलगी और संदेह से बच सकेंगे।

2. इस पद्धति में शिक्षार्थियों की अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलता रहना चाहिए, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी शिक्षक के अपनी बात कहकर समूह की चर्चा में सक्रिय रूप से भाग ले सके।
3. चर्चा में सबको बोलने की प्रेरणा और स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। शिक्षक को यह निरन्तर देखते रहना चाहिए कि कहीं अधिक बोलने वाले छात्र ही बार–बार बोलकर दूसरों के बोलने का अवसर तो नहीं छीन रहे हैं।
4. चर्चा की योजना बनाने में भी विद्यार्थियों को भागीदार बनाया जाना चाहिए, जिससे वे अपना कार्य समझें।

लाभ (Merits)

1. इस पद्धति में विद्यार्थी कार्य करने के लिए स्वप्रेरित रहते हैं।
2. विद्यार्थियों को सामुहिक कार्य करने पर अधिक बल दिया जाता है।
3. इस पद्धति से छात्र स्वयं योजना बनाना सीख जाते हैं।
4. छात्रों में आत्म–प्रदर्शन, आत्म–नियन्त्रण, आत्म–विश्वास चिन्तन और तर्क–शक्ति के विकास करती है।

दोष (Demerits)

1. सभी विद्यार्थी इस प्रकार के आयोजन में समान रूप से भाग नहीं ले सकते हैं।
2. इस विधि में अधिकांश समय इस क्रिया में नष्ट हो जाता है कि छात्रों को क्या और कैसे काम करना है? जिससे उद्देश्य की तुलना में क्रिया मुख्य हो जाती है।

5.4 अभ्यास प्रश्न

1. प्रादर्शन विधि का सामाजिक शिक्षण में क्या उपयोग है?
2. प्रादेशिक विधि एवं केन्द्रित विधि का प्रयोग किस प्रकार की विषय वस्तु के शिक्षण के लिए किया जा सकता है?
3. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति सामाजिक अध्ययन शिक्षण की एक शसक्त विधि है? सपष्ट कीजिए।

5.5 सारांश (Summary)

इस इकाई में सामाजिक अध्ययन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न विधियों का वर्णन किया गया। आपसे अपेक्षा है कि विद्यार्थियों का स्तर, विषय वस्तु की माँग तथा उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए आप उचित शिक्षण विधि का चयन करेंगें।

5.6 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची (References)

(1.) **मफत, एम0 पी0** (1954), सोशल स्टडीज इन्स्ट्रक्सन, प्रेंटिस हॉल इंक न्यूयार्क।

(2.) **योकम, जी0 ऐ0 एण्ड सेमसन, आर0 जी0** (1948), मॉर्डन मेथेड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948।

(3.)**शर्मा, आर0 ए0** (2004), सामाजिक विज्ञान शिक्षण, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

(4.)**शर्मा, बी0 के0** (2004), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।

(5.)**मेहता, डी0 डी0** (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।

(6.)**कोचर, एस0 के0** (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यु दिल्ली: स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड।

(7.)**इंडीगर मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0** (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, न्यु दिल्ली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस

इकाई–6

संचार माध्यमों का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में एकीकरण एवं अनुप्रयोग

Media and Media Integration in teaching of social studies and its application

संरचना

6.0 उद्देश्य (Objectives)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 विषय वस्तु (Content)

6.2.1 सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के साधन व सामाजिक अध्ययन में उपयोग (Sources of Information Communication technology and their uses in social study)

6.2.2 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का कक्षा कक्ष में प्रयोग (Use of Information Communication technology in the class room)

6.2.3 वेब आधारित शिक्षा–आज की आवश्यकता (Web based Education A need of the home)

6.2.4 सामाजिक अध्ययन में वेब आधारित शिक्षण–अधिगम् (Web based teaching learning in social study)

6.2.5 वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम (Web based individualised learning)

6.3 सामाजिक अध्ययन के माध्यम (Medium of Study of Social Study)

6.3.1 श्रव्य माध्यम (Audio media)

6.3.2 दृश्य माध्यम (Video media)

6.3.3 श्रव्य दृश्य माध्यम (Audio Video media)

6.4 माध्यम एकीकरण (Media integration)

6.5 सारांश (Summary)

6.6 मूल्यांकन (Evaluation)

6.7 संदर्भ सूची (Refercences)

6.0 उद्देश्य (Objectives)

1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे ।

2. सूचना और प्रौद्योगिकी के साधनों को सूचीबद्ध कर सकेंगे ।
3. सूचना और प्रौद्योगिकी का कक्षा कक्ष में उपयोग कर सकेंगे ।
4. वेब आधारित शिक्षा को स्पष्ट कर सकेंगे ।
5. वेब आधारित शिक्षा को सा.अध्ययन में प्रयुक्त कर सकेंगे ।
6. वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम के उपयोग की व्याख्या कर सकेंगे ।

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

सूचना एवम् सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान अधिगम और बोध सूचना एवम् सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान अधिगम और बोध का निर्माण करना है। जिससे छात्रों में चिन्तन कौशल और अभिवृत्ति का विकास हो सके इसलिए प्रत्येक शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं का एक शैक्षिक प्रतिमान विकसित कर सके जिसके सूचना सम्प्रेषण द्वारा छात्र ज्ञान का निर्माण कर सकें।

यूनेस्को द्वारा गठित अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग लर्निंग: द ट्रेजर विदइन ने 21वीं शताब्दी में शिक्षा के प्रारूप पर प्रकाश डालते हुए कहा है– भविष्य के लिए शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में आवश्यक संशोधन की आवश्यकता है तथा इस कार्य के लिए शिक्षा की वर्तमान नीतियों तथा विधियों में परिवर्तन आवश्यक है। विज्ञान तथा तकनीकी इस कार्य में हमारी मदद कर सकते हैं। तथा इनके माध्यम से हम अपनी शिक्षा प्रणाली को 21वीं शताब्दी के लिए तैयार कर सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा की पहुंच विश्व के प्रत्येक नागरिक तक हो तथा इस कार्य में सरलता और सुगमता हो। सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीक में आए नए बदलाव दुनिया के कौने–कौने तक शिक्षा की अलख जगा सकते हैं।

सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीक के क्षेत्र में पिछले एक दशक में आई क्रान्ति ने अब अपना प्रभाव दिखाना प्रारम्भ कर दिया है। आज एक छोटे से कम्प्यूटर का बटन दबाकर विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

सूचना के क्षेत्र में इस क्रान्ति का सूत्रपात 19वीं शताब्दी में टेलीग्राफ के अविष्कार के साथ हो गया था। तत्पश्चात रेडियो, ट्रांजिस्टर, दूरसंचार, उपग्रह, कम्प्यूटर, इंटरनेट, मल्टीमिडिया (बहुमाध्यम) इत्यादि ने इस प्रौद्योगिकी को वर्तमान क्रान्तिकारी स्वरूप प्रदान किया। आज पूरे विश्व में औद्योगिक रूप से विकसित समाज एक ऐसे सूचना समाज के परिवर्तित होता जा रहा है जो कम्प्यूटर के बिना आगे बढने की सोच भी नहीं सकता। सूचना तथा संप्रेषण क्रांन्ति ने उपभोक्ता सुविधाएं जुटाने के साथ–साथ अब शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में कदम रख लिया है। सम्प्रेषण तकनीक में आ रहे नए बदलावों ने पढने और सीखने के पारम्परिक तौर–तरीके को बदल दिया है। इस सबका श्रेय जाता है–इन्टरनेट को।

यूनेस्को ने सूचना प्रौद्योगिकी को इस प्रकार परिभाषित किया है– वैज्ञानिक, तकनीकी तथा इंजीनियरी जैसी विधाएं तथा व्यवस्थापन तकनीक का प्रयोग सूचना के निष्पादित, संशोधित तथा प्रयोग करने के लिए कम्प्यूटर (संगणक) इत्यादि का प्रयोग करते हुए मानव तथा मशीन के बीच होने वाली क्रिया को, जो कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं

से जुडी हो, जब इलेक्ट्रॉनिक आयाम प्रदान किया जाता है, इस एकजुटता को ही सूचना प्रौद्योगिकी का नाम दिया जाता है।

6.2 विषय वस्तु (Content)

6.2.1 सचूना व संचार प्रौद्योगिकी के साधन व सा.अध्ययन में उपयोग (Sources of Information Communication Techonology and their uses in Social Study)

वैश्वीकरण व ज्ञान के विस्फोट के समय में सूचनाओं को शीघ्र संचारित करने के लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के इन साधनों का महत्वपूर्ण स्थान है–

(i) मुद्रित सामग्री
(ii) ऑडियो–वीडियो (श्रव्य–दृश्य)
(iii) रेडियो
(iv) दूरदर्शन (टेलीविजन)
(v) टेली प्रिन्टर
(vi) टेलीफोन (दूरभाष)
(vii) ई–मेल
(viii) इन्टरनेट
(ix) कम्प्यूटर
(x) उपग्रह
(xi) टेली कान्फ्रेन्सिग
(xii) एजुसैट (Edusat)

(i) **मुद्रित सामग्री (Printed Material) –** सूचनाओं को अतिशीघ्र प्रकाशित और प्रसारित करने में टाइपराइटर का प्रयोग बहुत पहले से हो रहा है। सा.अध्ययन के क्षेत्र में भी काफ सामग्री मुद्रित की गयी है।

(ii) **ऑडियो–वीडियो (श्रव्य–दृश्य) (Audio–video) –** सूचना व संचार के साधनों के अन्तर्गत ऑडियो (श्रव्य) और वीडियो (दृश्य) का प्रयोग सामाजिक अध्ययन पाठ योजना, शिक्षण, अधिगम, सम्प्रेषण और प्रशिक्षणों के अन्तर्गत होता है।

(iii) **आकाशवाणी (Radio) –** आकाशवाणी भी सूचना व प्रसारण का मुख्य साधन है। रेडियो की सहायता से सा.अध्ययन के क्षेत्र के नवीन जानकारियॉ प्रदान करता है। विद्यालयी प्रसारणों से माध्यम से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय व इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रसारण से छात्र लाभान्वित होते है। सा.अध्ययन से सम्बन्धित स्वास्थ्य, कृषि, पशुपालन निरोगी शरीर के ज्ञानवर्धक प्रसारण समय समय पर आकाशवाणी से प्रसारित किये जाते है।

(iv) **दूरदर्शन (टेलीविजन) (Television) –** सूचना और संचार माध्यमों के अन्तर्गत टी.वी. या दूरदर्शन का आज के युग में महत्वपूर्ण स्थान है। विशिष्ट चैनल जैसे नेशनल जियोग्रेफिक,

डिस्कवरी, एनिमल प्लेनट, आदि सा.अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों का सविस्तार प्रस्तुतिकरण करते है। इससे छात्र समुदाय को विशेष साथ मिल रहा है। क्योंकि यह कार्यक्रम विशेष रूप से प्रशिक्षित दलों द्वारा तैयार किये जाते हैं। दूरदर्शन द्वारा सा.अध्ययन शिक्षण कार्यक्रमों का प्रसारण नूतन शिक्षण पद्धतियों को प्रस्तुत करके विद्यालयी शिक्षा में प्रमुख स्थान रखता है।

(v) **टेली प्रिन्टर (Teleprinter) –** टेली प्रिन्टर भी सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का प्रमुख साधन है। इसके माध्यम से प्रिन्टर पर अत्यावश्यक सूचनाओं का संकलन करके प्रसारित किया जाता है।

(vi) **टेलीफोन (दूरभाष) (Telephone) –** टेलीफोन के माध्यम से दूर बैठे व्यक्ति से अल्प समय में ही वार्ता की जा सकती है। इसके माध्यम से यथाशीघ्र सूचनाओं का संचरण किया जाता है।

(vii) **ई–मेल (E–mail) –** इलेक्ट्रानिक मेल भी सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का प्रमुख अंग है। ई–मेल की वेबसाइट पर पता (एड्रेस) अंकित करके इन्टरनेट के माध्यम से सूचनाओं का आदान प्रदान किया जाता है।

(viii) **इन्टरनेट (Internet) –** इन्टरनेट के माध्यम से व्यक्तियों, संस्थाओं एवंम विभागों कार्यालयों में शीघ्रातिशीघ्र आवश्यक सूचनाओं के प्रसारण के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। सा. अध्ययन के विश्वकोष इत्यादि भी इन्टरनेट पर उपलब्ध है। सा.अध्ययन की शिक्षा व शोध से सम्बन्धित संस्थाओं तक इन्टरनेट के माधायम से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

(ix) **कम्प्यूटर (Computer) –** सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के उपर्युक्त साधनों की अपेक्षा कम्प्यूटर प्रमुख व उपयोगी साधन है। कम्प्यूटर वर्तमान युग की आवश्यकता है। समस्त प्रकार की सूचनाओं का संकलन इसके माध्यम से किया जाता है। यह मानव के मस्तिष्क की तरह कार्य करता है। कम्प्यूटर सॉफटवेयर वेब साइट व इन्टरनेट सूचनाओं के संचरण का कार्य करते है।

(x) **उपग्रह (Satellite Instructional Experiment) –** ग्रामीण विकास में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। भारत के भौगोलिक विस्तार के कारण महत्वपूर्ण स्थान है।

(xi) **टेली कॉन्फ्रेंसिंग (Tele Conferencing) –** इसके माध्यम से टेली–टीचिंग (शिक्षक) सम्भव हो सका है। इससे एक ही शिक्षक से कई जगह छात्र लाभान्वित हो सकते हैं। इसी प्रकार चिकित्सा क्षेत्र में भी विशेषज्ञों की देख–रेख में दवाएं दी जाती है व अन्य चिकित्सकों की राय दी जाती है। विशेष परिस्थितियों में ऑपरेशन इत्यादि पर नजर रखकर दिशा निर्देश प्रदान किये जाते है।

(xii) **एजुसैट (Educational Satellite) –** उचित उपग्रह (सेटेलाइट) ही विभिन्न माध्यमों से शैक्षिक संचरण को स्टूडियो से विद्यार्थी तक प्रसारित कर सकता है। इसको दृष्टिपथ रखते हुए इसरो ने शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति एक विशिष्ट उपग्रह एजुसैट को अन्तरक्षित में स्थापित किया है (20 सितम्बर, 2004) व इससे दूरगामी उदेश्यों की पूर्ति हेतु 72 चैनलों के प्रसारण की योजना है।

6.2.2 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का कक्षा–कक्ष में प्रयोग (Use of Information and Commmunication Technology in Class room)

प्रतियोगिता के इस दौर में हर विद्यार्थी की प्रथम आवश्यकता होती है अपने ज्ञान को उद्यतन (up date) करना और ऐसे में जब नियम नये परिवर्तन हो रहे हों तो सूचना एवं संचार की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह ही वह साधन है जिसके द्वारा छात्रों को सही व प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। अध्यापक निम्न प्रकार से सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की प्रयोग कर सकता है।

- विद्यार्थियों को कम्प्यूटर द्वारा सूचनाओं का विश्लेषण व संकलन करना
- सूचनाओं का डाटाबेस तैयार करना
- काम्पैक्ट डिस्क **(C.D.)** द्वारा जीव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की जटिलताओं को स्पष्ट करना।
- भिन्न क्रियाओं, परिवर्तनों एवं संरचनाओं को प्रायोगिक रूप में त्रि आयामों (3–D) में दिखाकर
- दूरदर्शन द्वारा अपने विषय के विशेषज्ञों की वार्ता सुनकर।
- टेली कॉन्फ्रेसिंग द्वारा एक विद्यालय के छात्रों का दूसरे विद्यालय के छात्रों एवं अध्यापकों के मध्य बातचीत करना।
- इन्टरनेट द्वारा नवीन जानकारियों को प्राप्त करने की विधियों का पता करना।
- ई–मेल द्वारा विद्यार्थी को समस्याओं का यथाशीघ्र समाधान कराना।
- विश्व की प्रमुख सन्दर्भ ग्रन्थों या पुस्तकों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

1. सूचना एवं संप्रेषण को पांच साधन लिखे-
2. मुद्रित सामग्री और कम्प्यूटर की दो विशेषतायें लिखें।
3. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कक्षा-कक्ष में तीन उपयोग लिखिए।

6.2.3 वेब आधारित शिक्षा– आज की आवश्यकता (Web based Education–Need of the hour)

सम्प्रेषण तकनीक में आ रहे ताजा बदलावों ने पढने और सीखने के पारम्परिक तौर–तरीकों को बदल दिया है। इसका श्रेय जाता है इन्टरनेट को। इन्टरनेट भूमण्डलीय जानकारियों का झरोखा है। इन्टरनेट, इन्टरनेशनल नेटवर्क का संक्षिप्त रूप है। इसके जन्मदाता डॉ. विन्टन जी सर्फ है। इसकी खेज 1990 में हुई। इन्टरनेट विश्व भर में फैले हुए असंख्य कम्प्यूटरों के नेटवर्क का नेटवर्क है। इन्टरनेटर विश्व भर में फैली हुई करोड़ों कम्प्यूटर प्रणालियों से निर्मित एक संयुक्त सृष्टि है। चुटकियों के वांछित सूचनाओं तक पहुंच कर ऑन लाइन सुविधा ने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के नए परिदृश्य खोल दिए हैं। इन्टरनेट को संक्षेप में नेट अथवा वेब भी कहा जाता है।

आधुनिक युग में उच्च शिक्षा को सार्वजनिक तथा सुलभ बनाने में वर्चुअल (आभासी) विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली वेब आधारित शिक्षा मुख्य भूमिका प्रदान कर सकती है।

वर्चुअल (आभासी)– विश्वविद्यालय में किसी वास्तविक विश्वविद्यालय की सभी विशेषताएं तो होती है। मगर उसकी कई प्रमुख कमियां जैसे छात्रों की सीमित संख्या, सीमित पाठ्यक्रम, विषय चुनने की बाध्यता, पंजीकरण की कठोर शर्ते, कठोर वार्षिक परीक्षा प्रणाली, एक पक्षीय अध्ययन, अनुदेशात्मक सामग्री की गुणवत्ता की निम्न स्तर आदि नहीं होती है।

वेब आधारित शिक्षा, ऑन लाइन शिक्षा तथा दूरस्थ शिक्षा से भिन्न है। वेब आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए किसी भी शैक्षिक संस्थान को अपनी वेबसाइट का निर्माण करना पड़ता है। इस वेबसाइट के माध्यम से वास्तविक समय में आभासी कक्षा का वातावरण तैयार किया जाता है। इस आभासी कक्षा में अध्यापक, पाठयक्रम तथा अधिगमकर्ता तीनों की उपस्थिति होती है। तथा छात्र व शिक्षक के परस्पर अन्त प्रक्रिया कर विचारों आदान–प्रदान करते हैं। वास्तविक विश्वविद्यालयों की भांति आभासी विश्वविद्यालयों के लिए भी छात्रों को औपचारिकताएं पूरी करती है। जैसे प्रवेश पत्र भरना, प्रवेश परीक्षा देना, पंजीकरण फीस जमा करना आदि। परन्तु सभी कार्य छात्रों को घर बैठे इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन करना होता है। पंजीकरण के पश्चात छात्र अपने अनुकूल पाठ्यक्रम का चुनाव कर शिक्षण की किसी भी विधि, सेमीनार विधि, अन्वेषण विधि, स्व: शिक्षा विधि आदि को चुन सकते है। वेब आधारित शिक्षा में छात्रों तथा शिक्षक निम्न क्रियाएं कर सकते हैं।

– छात्र अपने अधिगम स्तर के अनुकूल कहीं से भी किसी भी प्रकार का पाठ्यसामग्री डाउनलोड कर सकते हैं तथा घर बैठे स्व: अध्ययन कर सकते है।

– किसी विषय के किसी विशिष्ट बिन्दु पर कठिनाई उत्पन्न होने पर छात्र शिक्षकों विषय विशेषज्ञों तथा दूसरे छात्रों के साथ विचार विमर्श कर कठिनाई का समाधान कर सकते है।

– समूह के मिलकर किसी भी समस्या का समाधान कर सकते है।

– ई–लाईब्रेरी के माध्यम से शिक्षक तथा छात्र किसी भी डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से कोई भी पुस्तक पढ सकते हैं।

– शिक्षक निरन्तर अपने ज्ञान तथा शिक्षण कौशलों में वृद्धि कर सकते है तथा खुद को नवीन शिक्षण पद्धतियों से युक्त कर सकते है।

जब चाहो जहॉ चाहो तथा जो चाहों (शिक्षा के सन्दर्भ में) वाक्य को चरितार्थ करती है वेब आधारित शिक्षा

वेब आधारित शिक्षा के उदेश्य को चित्र –1 में दर्शाया गया है।

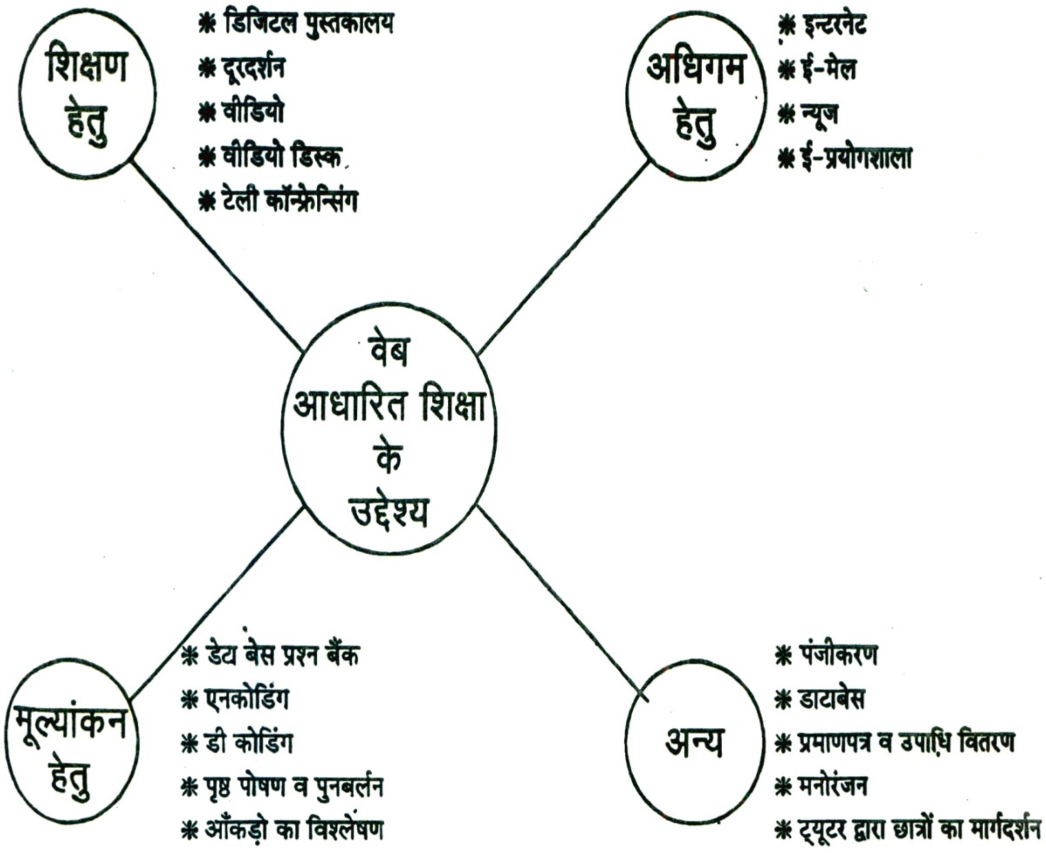

चित्र 1– वेब–आधारित शिक्षा के उद्देश्य

4. शिक्षा में जब चाहों, जहां चाहों, जो चाहों, किस सन्दर्भ में कहा गया है?

6.2.4 सा.अध्ययन में वेब आधारित शिक्षण–अधिगम (Web based Teaching–Learning in Social Study)

वेब आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के इस भाग के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा पढाए जाने वाले विषय से संबंधित नवीनतम तथा छात्रों के लिए उपयोगी जानकारी को एकत्र करने के लिए इससे संबंधित वेब साइटों का भ्रमण कर सकते हैं। तथा वेब आधारित शिक्षण के दौरान इनका प्रयोग कर सकते हैं। इस विधि के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष सामाजिक अध्ययन **(Social Study),**सम्प्रत्यय **(Concepts),**सामान्यीकरण **(Generalisations),**नियम **(Laws)** तथा सिद्धान्तों **(Theories)** से निर्मित सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान का अथाह भण्डार होता है। इसके साथ चित्रों प्रयोगों इत्यादि का प्रदर्शन वेब आधारित कक्षा शिक्षण में किया जा सकता है। त्री आयामी चित्र एनीमेशन तथा मल्टीमिडिया (बहु माध्यम) के माध्यम से किसी भी अपूर्त संप्रत्यय को छात्रों को आसानी से समझाया जा सकता है।

वेब आधारित कक्षीय शिक्षण प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा शैक्षणिक उद्देश्यों को निर्धारण तथा इन उदेश्यों की स्पष्ट प्राप्ति हेतु एक शैक्षणिक योजना बनाना अतिआवश्यक है। इस योजना के अन्तर्गत शैक्षणिक विधियों तथा प्रविधियों, शिक्षकों, विषय

विशेषज्ञों, मूल्यांकन इत्यादि आता है। इस महत्वपूर्ण कार्य के पश्चात वेब साइट के माध्यम से शिक्षक अपना शिक्षण कार्य करता हैं। प्रदर्शन, परिचर्चा प्रश्न, प्रयोग, परियोजनाओं, इत्यादि के माध्यम से शिक्षक तथा छात्रों के बीच अन्त: प्रक्रिया होती है तथ दो तरफा सजीव संवाद स्थापित होता है। शिक्षक तथा छात्र किसी विषय में कठिनाई उत्पन्न होने पर वेबसाइट के माध्यम से विषय विशेषज्ञों से उस पर विचार विमर्श कर उनकी राय जान सकते हैं तथा अपना सन्देह दूर कर सकते है। इसके पश्चात शिक्षक द्वारा छात्रों के व्यक्तिगत अधिगम हेतु कुछ शैक्षणिक कार्य संपादन के दौरान तथा समाप्ति पर किया जाना है।

6.2.5 वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम (Web Based Individualized learning)

इसके अन्तर्गत अधिगमकर्ता सर्वप्रथम वेब साइट से सम्बन्ध स्थापित कर अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित संपूर्ण जानकारी एकत्र करता है तथा इससे सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी जुटाकर सीखना प्रारम्भ करता है। इन्टरनेट पर सभी जानकारी तथा सूचनाएं वेब पेज के रूप में होती है। चूंकि इन्टरनेट पर किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा सभी जानकारियाँ एक दूसरे से जुड़ी हुई है। इसलिए इन पेजों को वेब पेज कहते हैं। बहुमाध्यम युक्त वेब पेजों के माध्यम से अधिगमकर्ता को ध्वनि, चित्र, आलेख, एनीमेशन युक्त पाठ पढ़ने की सुविधा प्राप्त होती है। इस अधिगम का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि अधिगमकर्ता स्वतंत्र रहते हुए अपनी व्यक्तिगत सीखने की गति से शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इस प्रकार के अधिगम के शिक्षक का कार्य एक मार्ग दर्शक के समान होता है जो छात्रों की अधिगम प्रक्रिया के लिए योग्य परिस्थितियों का निर्माण करता है। छात्र तथा शिक्षक इंटरनेट चैटिंग के माध्यम द्वारा एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित कर सकते है तथा प्रश्न इत्यादि पूछने के लिए छात्र तथा शिक्षक एक दूसरे का चैटिंग के माध्यम से ठीक प्रकार समझ सकते हैं। छात्र किसी भी समस्या पर शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों तथा अन्य छात्रों से उनकी राय जान सकते हैं तथा उचित सहायता प्राप्त कर सकते है। वेब आधारित शिक्षा में छात्र तथा शिक्षक के मध्य सम्प्रेषण स्थापित करने में ई–मेल की मुख्य भूमिका होती है। छात्र अपने लिखित कार्य, परियोजनाओं इत्यादि को पूरा करके मूल्यांकन हेतु शिक्षक के पास ई–मेल के माध्यम से भेज सकते हैं। इसके अतिरिक्त छात्र अपनी समस्याओं को लिखित रूप में शिक्षक के पास भेज सकते है। शिक्षक छात्रों को ई–मेल के माध्यम से समस्याओं के हल पृष्टपोषण **(feedback)** तथा मूल्यांकन के परिणाम भेज सकते है। वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम को चित्र 2 द्वारा समझाया गया है।

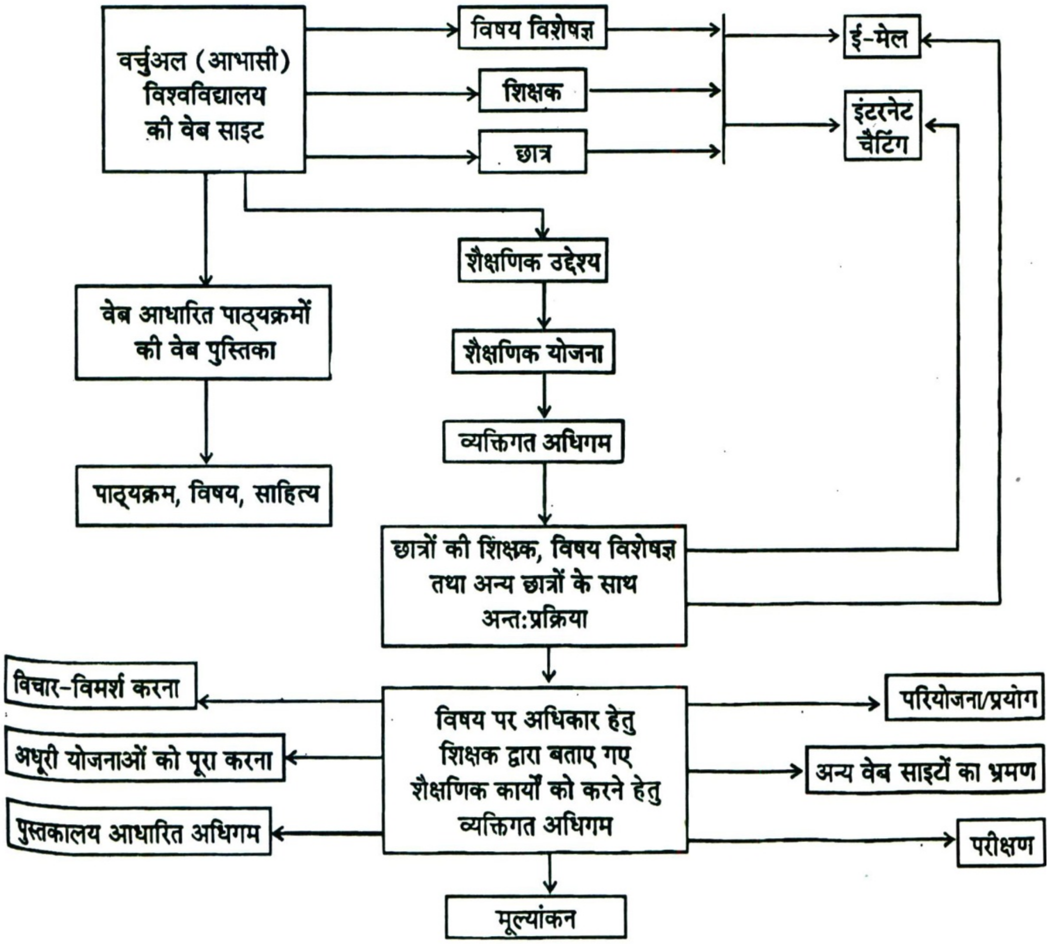

चित्र 2 – वेब–आधारित व्यक्तिगत अधिगम–एक प्रारूप

(स्त्रोत : नौशाद हुसैन भारतीय आधुनिक शिक्षा – 2004)

6.3 सामाजिक अध्ययन के अध्ययन माध्यम (Medium of Study of Social Study)

शैक्षणिक उद्देश्यों की प्रभावी और कुशलतापूर्वक प्राप्ति में छात्रों की सहायता करने हेतु एवं शिक्षण को सफलतापूर्वक सम्पादित करने हेतु विभिन्न माध्यमों को प्रयोग किया जाता है। इसमें चाक बोर्ड से लेकर आधुनिक तकनीकी के नव उत्पाद कम्प्यूटर जैसे कई माध्यमों का यथास्थान आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग किया जाता है। कक्षा शिक्षण की विभिन्न अवस्थाओं मे इन सभी माध्यमों का कभी न कभी किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

संक्षेप में सामाजिक अध्ययन विषय में प्रयुक्त प्रमुख शिक्षण माध्यम निम्नवत है–

6.3.1. श्रव्य माध्यम (Audio media) – इनके अन्तर्गत वे माध्यम आते हैं जिनसे छात्र कानों के माध्यम से सुनकर वस्तु का अथवा विषय का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये निम्नलिखित है–

1. रेडियो **(Radio)**
2. ग्रामोफोन **(Gramphone)**
3. टेपरिकार्डर **(Taperecorder)**

1. रेडियों– रेडियों शिक्षा जगत का सर्वाधिक सुलभ, सस्ता और लोकप्रिय साधन है जिसमें न केवल मनोरंजक अपितु ज्ञानवर्द्धक तथ्यों, घटनाओं एवं अन्य सूचनाओं से सम्बन्धित जानकारी प्रसारित की जाती है। शिक्षक आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में अल्प रेडियो सेट देने की व्यवस्था की जाये। हम सिफारिश करते हैं कि रेडियो पाठों के उपयोग के लिए शिक्षा विभागों को आकाशवाणी के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। शिक्षकों के लिए और यदि सम्भव हो तो छात्रों के लिए भी मुद्रित सामग्री द्वारा इन पाठों को अनुपूरित करना चाहिए। हम यह भी मुद्रित सामग्री द्वारा इन पाठों को अनुपूरित करना चाहिए। हम यह भी सिफारिश करते हैं कि शिक्षकों के लिए विशेषरूप से आकल्पित विशिष्ट रेडियो वार्ताओं का सुबह या दिन ढले प्रसारण किया जाये। इनसे उनके विशयगत ज्ञान में वृद्धि होगी और पा0 तैयार करने में मार्गदर्शन मिलेगा।

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में इसके उपयोग के लिए पर्याप्त अवसर है। इसके द्वारा भारतीयों के रहनसहन के स्तर तथा उनको उच्च बनाने के उपाय, ग्रामीण समस्याओं एवं उनके सुधार, आर्थिक विकास योजनाऐं, भाक्ति के साधन एवं भारत में उनकी वृद्धि के उपाय, भौगोलिक परिस्थितियां तथा उनका मानव के आर्थिक जीवन पर प्रभाव आदि प्रकरणों पर वार्तायें प्रस्तुत की जा सकती हैं।

इसका प्रयोग शिक्षा के सभी स्तरों पर किया जा सकता है। रेडियो द्वारा प्रसारित सामग्री को (3) भागों में बांटा जा सकता है–

(1.) शुद्ध मनोरंजनात्मक कार्यक्रम

(2.) तथ्यपरक अप्रत्यक्ष शिक्षण पाठ

(3.) प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ

- शुद्ध मनोरंजनात्मक कार्यक्रम का यद्यपि शिक्षण से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता फिर भी वे सामाजिक आचार विचार, रहन–सहन, संस्कृति की अपरोक्ष शिक्षा करते हैं।
- तथ्यपरक अप्रत्यक्ष शिक्षण पाठ का प्रसारण शिक्षण उद्देश्यों हेतु नहीं किया जाता फिर भी वे सामाजिक विषय के विभिन्न पहलुओं से जुड़े होने के कारण शिक्षण से सम्बन्धित हो जाते हैं।
- प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ का सीधा सम्बन्ध स्कूली पाठ्यक्रम से होता है। रेडियो द्वारा प्रसारित ये पाठ विषय–विशेषज्ञों द्वारा तैयार किये जाते हैं और कक्षा या स्तर विशेष के विद्यार्थियों के लिए प्रसारित किये जाते हैं।

(2) **ग्रामोफोन–** रेडियो कक्षा शिक्षण में सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक प्रकरण के लिए उपयोगी हो सकता है और न ही सम्भव हो सकता है अत: इस कमी की पूर्ति ग्रामोफोन द्वारा हो सकती है जिससे पहले से रिकार्ड की गई विषय–वस्तु छात्रों की सुविधा एवं आवश्यकतानुसार सुनाया जा सकता है।

(3) **टेपरिकार्ड–** टेपरिकार्ड सामाजिक अध्ययन शिक्षण में प्रयुक्त उपयोगी, सुलभ और सुविधाजनक उपकरण है जिसके द्वारा सामाजिक अध्ययन विषय से सम्बनिधत तथ्यों, जानकारियों को टेप करके कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा सहायक सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। यह शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता है। इसका उपयोग तभी किया जाना चाहिए जब इसकी सहायता से बालक किसी तथ्य या घटना को अच्छी तरह समझ सकते हों। टेप दो प्रकार के होते हैं – प्लास्टिक तथा कागज के। प्लास्टिक का टेप कागज के टेप की अपेक्षा अधिक व्ययी होता है; परन्तु यह अधिक स्थायी होता है। साथ ही प्लास्टिक के टेप में आलेखन मिटाना आधिक सुगम होता है। टेप–रिकॉर्डर की सहायता से बालकों के बोलने के ढंग में सुधार किया जा सकता है। साथ ही यह साधन रेडियो की अक्षमता को दूर कर सकता है। पाश्चात्य देशों में इसकी सहायता से रेडियो के पाणें का कक्षों शिक्षण में उपयोग किया जा सका है।

6.3.2 दृश्य माध्यम **(Video media)** – दृश्य माध्यम का अभिप्राय उन साधनों से है जिनमें केवल दृश्येन्द्रिय का प्रयोग होता है अर्थात जिनमें ज्ञान मुख्यत: दृश्य इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त होता है।

(1.) **श्यामपट्ट–** श्यामपट शिक्षक का मित्र होता है। श्यामपट शिक्षकों को अपने शिक्षण के केन्द्रीय तत्व, केन्द्रीय विचार, तथ्य अंकित करने में सहायता प्रदान करता है साथ ही शिक्षक द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करने हेतु चित्र बनाने, ग्राफ, आरेख बनाने का स्थान प्रदान करता है जिससे न केवल शिक्षण प्रभावशाली बनता है अपितु रूचिकर भी बनता है।

अब श्यामपट के स्थान पर 'चाक बोर्ड' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है क्योंकि काले रेग के पट के स्थान पर अब नीले या हल्के हरे रंग के बोर्ड पर नीले या सफेद चाक से लिखने से ज्यादा स्पष्ट लेखन होता है जिससे छात्रों के नेत्र पर कम दबाव पड़ता है।

(2.) **सूचना पट–** सूचना पट एक पट्टिका होती है जिस पर सूचना दी जाती है साथ ही महत्वपूर्ण तथ्यों, दृष्टान्तों एवं घटनाओं को सूचित करने वाले प्रपत्रे, समाचार–पत्रों की कतरनें, चित्र आदि लगा दिये जाते हैं, छात्र अवकाश के समय उन्हे देखते एवं पढ़ते हैं इस प्रकार यह चित्रों, मानचित्रों, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की कतरनें तथा विशिष्ट पाठों या सामाजिक रूचि के प्रकरणों से सम्बनिधत तथ्यों के प्रदर्शन के लिए उपयुक्त माध्यम है। इसी का एक अन्य रूप है “फ्लेनेलबोर्ड” जिसकी पट्टिका पर फ्लेनेल चढ़ा रहता है जिसमें चित्र, रेखाचित्र या कतरनें थोड़ा दबाकर चिपका देते है।

(3.) **वास्तविक पदार्थ**– सामाजिक अध्ययन विषय में वास्तविक पदार्थों एवं नमूनों को देखने से न केवल समझ पैदा होती है अपितु निरीक्षण शक्ति का विकास भी होता है और विषय के प्रति रूचि विकसित होती है। छात्रों को ताजमहल के बारे में बताने पर उनका ज्ञान सीमित रहता है जबकि ताजमहल दिखकर उनकी समझ और अभिरूचि दोनों का विकास सम्भव होता है उसी प्रकार पर्वत, पठार, नदी, घाटी, झरना, तालाब आदि को वास्तविक रूप में दिखाना ज्यादा श्रेयस्कर होता है।

(4.) **मॉडल या नमूने**– छात्रों को सामाजिक अध्ययन विषय के हर प्रकरण को प्रत्यक्ष निरीक्षण हेतु बार–बार बाहर ले जाना सम्भव नहीं होता और कई बार विषय–वस्तु कालातीत हो जाने के कारण प्रेक्षणीय नहीं होती ऐसी स्थिति में उस वस्तु या घटना या स्थिति का मॉडल बनाकर दिखाया जा सकता है। वास्तव में मॉडल सामाजिक अध्ययन विषय का सर्वाधिक लोकप्रिय, सुलभ और उपयुक्त माध्यम है जिसका प्रयोग न केवल विषय को बोधगम्य बनाता है अपितु रूचिकर भी बनाता है। कुछ मॉडल वर्णनात्मक प्रकृति के होते हैं तो कुछ कार्यकारी मॉडल होते हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि विविध क्रियाएं कैसे होती हैं।

(5.) **चित्र**– जब वास्तविक पदार्थ एवं मॉडल के कक्षा शिक्षण में दिखाना सम्भव नहीं होता है तब वहां चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इनके माध्यम से सामाजिक अध्ययन का प्रकरण स्पष्ट, जीवंत और रोचक बन जाता है उदा0 के लिए विभिन्न देशों के निवासियों के चित्र भौगोलिक दृश्यों एवं घटनाओं के चित्र रहन–सहन संस्कृति के चित्र उनमें विभिन्न देशों के बारे में समझ पैदा करने में सहायक होते हैं।

(6.) **जादू की लालटेन**(Magic Lantern) –यह एक चित्र प्रदर्शक यंत्र है। यह यंत्र शिक्षण को सजीव तथा प्रभावी बनाने में सफल सिद्व हु आ है। इनके प्रयोग में स्लाइडों की आवयकता होती है। सामाजिक – अध्ययन का शिक्षक अपने विषय की विभिन्न स्लाइडों को इसके माध्यम से प्रदर्शित करके अपने पाणे को राजीव एवं बनाया जा सकता है।

(7.) **रेआलिया**– 'रेआलिया' से अभिप्राय उन वस्तुओं से है जिसका किसी संस्कृति विशेष या समाज विशेष के लोग निर्माण करते हैं या जिनका वे उपयोग करते हैं। ये वस्तुएं उस संस्कृति या समाज विशेष की अभिन्न अंग होती हैं। इनके वास्तविक प्रदर्शन द्वारा उस समाज या संस्कृति का वास्तविक परिचय कराया जाता है। उदा0 के लिए हड़प्पा सभ्यता के औजारों को संग्रहालय में ले जाकर वास्तविक रूप में दिखाकर हड़प्पा सभ्यता की जानकारी देना। इस प्रकार संग्रहालयों के भ्रमण द्वारा प्राचीन कालीन आभूषणों, वस्त्र, अस्त्र–शस्त्र, बर्तन–भांडो आदि को दिखाकर उस से जुड़ी जानकारी दी जा सकती है।

(8.) **डायोरामा**– डायोरामा उस त्रिविमियी दृश्य को कहते हैं जिसमें किसी संस्कृति–विशेष या समाज विशेष के लोगों की किसी मूलभूत मानवीय क्रिया को या उनकी विशिष्ट जीवन पद्धति को अपनाया गया है। गत्ते से बने बक्से के एक हिस्से को काटकर डायोरामा

बनाया जा सकता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण हेतु डायोरामा माध्यम से किसी काल विशेष के या समाज विशेष के वास्तविक जीवन पद्धति को प्रदर्शित किया जा सकता है।

(9.) **चित्र विस्तारक यंत्र** (Epidiascope) – जादू की लालटेन के प्रयोग के लिए शिक्षक को स्लाइडें बनानी पड़ती हैं, परन्तु चित्र विस्तारक यंत्र के प्रयोग में ऐसा नहीं करना पड़ता। इसमें छोटे–छोटे चित्रों, मानचित्रों, पोस्टरों, पुस्तक के पृष्ठों को कमरे में अंधेरा करके पर्दों पर बड़ा करके दिखाया जाता है। चित्र–विस्तारक यंत्र ने नागरिक शास्त्र, इतिहास भूगोल आदि विषयों को पढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

(10.) **मूक चित्र** (Soundless Motion Pictures)– मूक–चित्र चलचित्र का मूल रूप है। इसके द्वारा विभिन्न क्रियाओं को पूर्णरूप से दिखाया जा सकता है। इस उपकरण की यह विशेषता है कि इसमें चित्रों को दिखाया जाता है, किन्तु ध्वनि नहीं होती। अतएव चित्र विस्तारक उपरकरण की अपेक्षा मूक चित्रों का शिक्षण में विशेष महत्व है।

(11.) **चार्ट–** सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण हेतु चार्ट बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। चार्ट से अभिप्राय है– "एक सीधी–सादी एवं सपाट चित्रात्मक प्रदर्शन मुक्त वस्तु"। यह विषय वस्तु को बोधगम्य बनाती है, साथ ही प्रदर्शित सूचना बहुत प्रभावी ढंग से और शीघ्रता से छात्रों तक पहुंचती है। ये चार्ट विविध प्रकार के होते हैं।

जैसे - **(1) विवरणात्मक चार्ट**– इनमें ऐतिहासिक विकास या किसी प्रक्रिया विशेष के सभी चरणो का उल्लेख किया जाता है जैसे–नदी घाटी सभ्यता के विकास का चार्ट ।

(2) सारणी चार्ट– इनमें तथ्यों का विवरण तालिका सामान्य के रूप में खाने अथव सारिणी बनाकर, प्रस्तुत किया जाता है ताकि तुलना करने में सुविधा हो। उदा0 – आर्थिक विकास की दर को प्रदर्शित करता चार्ट।

(3) वृक्ष चार्ट– इसके द्वारा विकासक्रम या संवर्द्धन को प्रस्तुत किया जाता है जैसे (1) सामाजिक अध्ययन विषय के विकास का चार्ट (2) मुगलवंश के शासकों का वृक्ष चार्ट।

(4) प्रवाह चार्ट– इसमें किसी विषय वस्तु को उसकी संरचना, कार्यविधि, परिवर्तन, आदि के क्रमिक विकास या पतन के चरणों को दर्शित करने के लिए तीरों, आयतों व रेखाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया जात है। उदा0 – मुगलवंश के शासकों का प्रवाह चार्ट इत्यादि।

(12.) **ग्राफ / आरेख–** ग्राफ या आरेख मात्रासूचक आधार सामग्री / आकड़ों को प्रस्तुत करने का उत्तम साधन है। इसके माध्यमों से भूगोल, अर्थशास्त्र आदि विषयों में प्रयुक्त आंकड़े युक्त प्रकरण को सरलता से समझा जा सकता है। कुछ प्रमुख ग्राफ या आरेख इस प्रकार हैं जो सामाजिक अध्ययन में सर्वाधिक प्रयुक्त होते हैं–

(1) स्तम्भ आरेख

(2) वृत्त आरेख

(3) रेखीय ग्राफ

(4) चित्र आरेख– इनमें स्तम्भों या रेखाओं के स्थान पर चित्रों का प्रयोग होता है शेष सभी चीजें उसी प्रकार रहती हैं।

(13.) **मानचित्र / नक्शे**– किसी भी भौगालिक क्षेत्र की प्राकृतिक, राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक व भौगालिक जानकारी प्रदान करने में मानचित्र व नक्शे का प्रयोग किया जाता है। जब हम किसी नई जगह के बारे में कुछ जानना चाहते हैं तो कागज की समतल सतह पर रेखाओं, बिन्दुओं, रंगों, शब्दों और संकेतों के माध्यम से आकृति उकेरकर जानकारी प्रदान करते हैं, यही मानचित्र या नक्शा कहलाता है मोटे तौर पर सामाजिक अध्ययन विषय में प्रयुक्त मानचित्र / नक्शे निम्नवत है–

(1) **प्राकृतिक मानचित्र / नक्शे**– इसमें प्राकृतिक विषय वस्तु जैसे जलवायु, तापमान, वर्षा, मिट्टी, उपज आदि की जानकारी दी जाती है।

(2) **राजनीतिक मानचित्र / नक्शे** – इस प्रकार के नक्शे में किसी देश विशेष के राजनीतिक क्षेत्र, सीमाओं आदि के बारे में जानकारी दी जाती है।

(3) **आर्थिक मानचित्र / नक्शे** – क्षेत्र विशेष की आर्थिक गतिविधियों को दर्शित करने वाली जानकारी दी जाती है।

(4) **सामाजिक मानचित्र / नक्शे** – इसमें किसी समाज या देश की जनयंख्या, भाषा, धर्म, पर्व आदि की जानकारी दी जाती है।

(5) **ऐतिहासिक मानचित्र**– इसमें किसी देश या शासन के ऐतिहासिक प्रकरण जैसे– साम्राज्य, विजय, पराजय, संधि आदि को दर्शित करती जानकारी दी जाती है।

(14.) **ग्लोब**– ग्लोब का प्रयोग विशेष रूप से भौगोलिक अध्ययन में किया जाता है ग्लोब पृथ्वी की आकृति का प्रतिमान होता है जिसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान की न केवल स्थिति अपितु दूरी व दिशा का भी ज्ञान होता है।

स्वमूल्यांकन -

1. रेडियो और टेपरिकार्ड को माध्यम के रूप में उपादेयता बताइये ।
2. दृश्य माध्यमों की सामाजिक अध्ययन शिक्षण में क्या भूमिका है?
3. रेआलिया और डायोरामा में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

6.3.3 श्रव्य–दृश्य माध्यम–

इनके अन्तर्गत वे माध्यम आते हैं जिनमें छात्र श्रवणेन्द्रियों एवं दृश्येन्द्रियों के समन्वित उपयोग से ज्ञान प्राप्त करते हैं। उदा0 के लिए–

(1) **चलचित्र (सिनेमा)**

चलचित्र सामाजिक अध्ययन शिक्षण का प्रमुख व महत्वपूर्ण माध्यम है। यद्यपि भारत में अभी इसका प्रयोग शैशवावस्था में है किन्तु फ्रान्स, बेल्जियम, डेनमार्क, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में इसका समुचित प्रयोग किया जा रहा है। विभिन्न देशों के निवासियों का रहन–सहन वेश–भूषा, सभ्यता–संस्कृति, भौगोलिक घटनाओं, आर्थिक मामलों, सामाजिक मामलों को सजीव ढंग से प्रस्तुत करने में चलचित्र की भूमिका अद्वितीय है। उदा0 के लिए एड्स, दहेज

विरोधी, बाल विवाह विषय पर जागरूकता हेतु अनेको शिक्षाप्रद फिल्मों को मिर्माण किया जा चुका है।

(2) **दूरदर्शन–**

दूरदर्शन एक ऐसा शैक्षिक उपकरण है जिसमें छात्रों की श्रवण तथा दृष्टि सम्बन्धी दोनों ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग एक साथ होता है। ध्वनि एवं चित्र का संगम विषय–वस्तु को न केवल बोधगम्य बनाता है अपितु रूचिकर भी बनाता है। दूरदर्शन पर सामान्य तथा शैक्षिक प्रसारण दोनों ही किये जाते हैं दूरदर्शन से खुला परिपथ या प्रसारण टेलीविजन माध्यम से जहां सुदूर क्षेत्रों में सम्प्रेषण सम्मव है वहीं दूरदर्शन के माध्यम से ही सी.सी.टी.वी. (बन्द परिपथ टेलीविजन) द्वारा कम दूरी में प्रसारण केन्द्र से श्रवण केन्द्र तक प्रसारण को तार या सूक्ष्म तरगों द्वारा पहुँचाकर सम्प्रेषण किया जा सकता है।

इसके प्रयोग द्वारा मनोरंजन के सीथ–साथ शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति सम्भव हो पाती है।

(3) **वीडियों / वी.सी.आर. / डी.वी.डी.–**

यह श्रव्य दृश्य उपकरणों में अत्यन्त आधुनिक उपकरण हैं जिनकी मदद् से टेलीविजन की सीमाओं से मुक्ति मिलती है ओर उसके पूरे लाभ भी मिलते हैं। दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामग्री एक समय विशेष पर प्रसारित होती है ओर शिक्षक के लिए उसको कक्षा में शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त कर पाना दुस्कर होता है जबकि इस माध्यम द्वारा जो भी सामग्री सम्प्रेषित करनी होती है उसे रिकार्ड कर लिया जाता है और फिर शिक्षक अपनी सुविधानुसार पूर्ण या अंश रूप में अपने शिक्षण के साथ–साथ या शिक्षण के बाद जैसे चाहता है वैसे प्रयोग कर पाता है और बार–बार उसे दिखाकर प्रतिपुष्टि भी प्राप्त कर पाता है।

(4) **कम्प्यूटर–**

कम्प्यूटर आधुनिक तकनीकी की वह महानतम देन है जिसने शिक्षक के लिए व्यापक अवसर प्रदान किये हैं। इसकी सहायता से शिक्षक अपने शिक्षण में तो सुधार ला ही सकता है साथ की छात्रों के अधिगम में सहायता भी कर सकता है। कम्प्यूटर द्वारा कोई भी कार्यक्रम नियोजित कर पाना, उसको क्रियान्वित कर पाना और प्रतिपुष्टि प्राप्त कर पाना न केवल सम्भव हुआ है अपितु सरल और सुविधा जनक भी हुआ है।

(5) **प्रोजेक्टर–**

प्रोजेक्टर का प्रयोग बड़े पैमाने पर उपस्थित समूह को दिखाने के लिए किया जाता है। इसमें फिल्म, फिल्म पट्टी एवं स्लाइडें प्रयुक्त होती हैं और अब कम्प्यूटर के साथ जोड़कर कम्प्यूटर की छोटी स्क्रीन को बड़े पर्दे के रूप में प्रयुक्त करने में भी इसका प्रयोग होता हैं इस प्रकार अब यह केवल मूक तस्वीर प्रस्तुत करने वाले माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। इसके प्रयोग द्वारा कम्प्युटर को कक्षा–शिक्षण में पूरी कक्षा हेतु प्रयुक्त कर पाना सम्भव हुआ है।

6.4 माध्यम एकीकरण (Media integration)

शैक्षिक तकनीकी के अविर्भाव के परिणामस्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाकर अधिकतम वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव होनी शुरू हुई। इसी परिपेक्ष्य में शिक्षण में

विभिन्न माध्यमों या तकनीकियों का प्रयोग किया जाने लगा। यह सर्वविदित तथ्य है कि शिक्षा के उद्देश्य बहुआयामी होते हैं, उन्हें किसी एक माध्यम या तकनीक से प्राप्त नहीं किया जा सकता अत: कई माध्यमों या तकनीकियों का प्रयोग समन्वित रूप से एक साथ किया जाना जरूरी हुआ जिसके लिए माध्यम एकीकरण की आवश्यकता हुई।

अत: माध्यम एकीकरण से अभिप्राय माध्यमों के प्रयोग में आपसी तालमेल से है जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की निरन्तरता भंग हुए बिना अधिकतम वांछित अधिगम उद्देश्य की प्प्ति की जा सके।

कई बार ऐसा देखा जाता है कि शिक्षक एक से अधिक माध्यमों का चयन कर लेता है किन्तु उनमें आपसी तालमेल का अभाव होता है जिसका परिणाम यह होता है कि शिक्षक जिन शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्प्ति का उद्देश्य रखता है उससे इंटर उद्देश्यों की प्राप्ति होती है अत: शिक्षक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती जहाँ माध्यम का चयन है वहीं एक से अधिक माध्यम के चयन पर उनमें एकीकरण दूसरी सबसे बड़ी चुनौती बन जाता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न-

1. संचार माध्यम एकीकरण की क्यों आवश्यकता होती है ?
2. संचार माध्यम चयन के प्रमुख आधारों का संक्षेप में विवरण कीजिए।
3. संचार माध्यम क्रियान्वयन के सोपानों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

6.5 सारांश (**Summary**)

माध्यम एकीकरण दक्ष एवं योग्य शिक्षकों की अपेक्षा रखता है जिन्हें न केवल माध्यमों का ज्ञान हो अपेक्षा माध्यमों के प्रयोग एवं माध्यमों में एकीकरण की जानकारी और कुशलता हो। अत: आपसे अनुरोध है कि आप माध्यम चयन एवं एकीकरण में उद्देश्यों की प्रकृति एवं माध्यम की क्षमता, माध्यमों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएं, संसाधनों की उपलब्धता एवं माध्यम का समुचित ज्ञान आदि को ध्यान में रखते हुए आप उचित माध्यम का चयन करें।
सूचना सम्प्रेक्षण प्रौद्योगिकी के कार्य तथा अधिगम कर्ता की भूमिका

आई.टी.सी. के शिक्षण के उपयोग	अधिगम कर्ता की भूमिका
1. ज्ञान प्राप्त करना 2. अभ्यास व दोहराना 3. विचारों की खोज 4. एकत्रित व रिकोर्ड करना 5. प्रस्तुतिकरण एवम् रिपोर्ट करना	1. ज्ञान ग्रहण करना 2. प्रापक 3. खोज करने वाला 4. ग्रहण करने वाला 5. ज्ञान का सृजन कर्ता (ज्ञान का निर्माणकर्ता)

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में आज के युग में पारम्परिक साधनों के स्थान पर कम्प्यूटर, ई–मेल, इन्टरनेट व मल्टीमिडिया ने ली है। आज की आभासी (वर्चमुल) शिक्षा में

इसका महत्व और भी बढ गया है। वेब आधारित शिक्षा ने जीव विज्ञान की सूक्ष्मताओं व जटिलताओं को समझने में सरलता प्रदान की है। उच्च तकनीक के प्रस्तुतीकरणों ने शिक्षण–अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने में सहायता की है।

6.6 मूल्यांकन प्रश्न (Evaluation Question**)**

1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न साधनों का वर्णन कीजिए।
   Explain different sources of information and communication technology.
2. वेब आधारित शिक्षा क्या है?
   What do you mean by web based education?
3. वेब आधारित शिक्षण अधिगम के उदेश्यों की विवेचना कीजिए?
   Discuss the objectives of web based teaching learning.
4. श्रव्य–दृश्य सामग्री का उपयोग सामाजिक अध्ययन में क्या है?
   What are the uses of Audio–Vedio aids in social studies.
5. वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम को चित्र द्वारा प्रदर्शित कीजिए।
   Represent web based individual learning by diagram.

6.7 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची (references)

(1.) **अख्तर मेंहदी रिजवी** (2006) विद्यालयी शिक्षा से सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अंक 3–4 मा.शि.बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

(2.) **Dahiya SS** (2004) ICT,ITs integration in Teacher Education University News 42 (22), 2004.

(3.) **N.C.E.R.T.** (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

(4.) **नौशाद हुसैन** (2004) परम्परा से हटकर वेब शिक्षा भारतीय आधुनिक शिक्षा अंक –2 अक्टूबर 2004 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

(5.) **Sagar Krishnan** (2005) TCTs and Teacher Training Author Press, New Delhi.

(6.) **विंच, पी0** (1958), द आइडिया ऑफ सोशल सांइस, रूटलेज एण्ड कीगेन पॉल, लंदन।

(7.) **योकम, जी0 ऐ0 एण्ड सेमसन, आर0 जी0** (1948), मॉर्डन मेथेड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948।

(8.) **मेहता, डी0 डी0** (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

(9.) **कोचर, एस0 के0** (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यु दिल्ली : स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड़।

(10.) **इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0** (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, न्यु दिल्ली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस

इकाई–7

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में नियोजन : वार्षिक योजना, इकाई योजना एवं दैनिक पाठ योजना Planning in Social Studies : Sessional, Unit and Daily Lesson planning

संरचना

7.0 उद्देश्य **(Objectives)**

7.1 प्रस्तावना **(Introduction)**

7.2 विषय वस्तु **(Contents)**

- 7.2.1 नियोजन का अर्थ **(Meaning of Planning)**
- 7.2.2 पाठ योजना का अर्थ व परिभाषा (Meaning and definition of lesson plan)
- 7.2.3 दैनिक पाठ योजना की आवश्यकता **(Need of daily lesson plan)**
- 7.2.4 पाठ योजना के लिए शिक्षक की आवश्यकतायें **(Need of teachers for planning a lesson)**
- 7.2.5 पाठ योजना के तत्व (Component/Element of lesson plan)
- 7.2.6 पाठ लेखन प्रविधि (Process of lesson writing)

7.3 पाठ नियोजन की विभिन्न प्रणालियाँ **(Systems of lesson plan)**

- 7.3.1 हरबार्ट प्रणाली **(Herbert system)**
- 7.3.2 हरबार्ट प्रणाली पर आधारित पाठ योजना का स्वरूप **(Format of lesson plan besed on Herbert system)**

7.4 मूल्यांकन प्रणाली **(Evaluation System)**

7.5 पाठ योजना के प्रकार **(Types of lesson plan)**

- 7.5.1 वार्षिक पाठ योजना **(Annual lesson plan)**
- 7.5.2 इकाई पाठ योजना **(Unit plan)**
- 7.5.3 दैनिक पाठ योजना **(Daily lesson plan)**

7.6 सारांश **(Summary)**

7.7 मूल्यांकन प्रश्न (**Evaluation**)

7.8 संदर्भ सूची (**References**)

7.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र

1. छात्र नियोजन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
2. छात्र पाठ योजना का अर्थ, परिभाषा व तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. छात्र इकाई योजना व पाठ योजना का अर्थ लिख सकेंगे।
4. हरबार्ट प्रणाली के आधार पर छात्र पाठ का विकास कर सकेंगे।
5. वार्षिक, इकाई व दैनिक पाठ योजना में भेद कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा एक कला है। शिक्षण कौशल में दक्षता प्राप्त करना प्रत्येक शिक्षक के लिए आवश्यक होता है शिक्षक की व्यावहारिक सफलता उत्तम शिक्षण पर निर्भर करती है। उत्तम शिक्षण तथा शिक्षण अधिगम में नियोजन की महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है। इसलिए एक उत्तम नियोजन का बोध एवं पाठ योजना का निर्माण शिक्षक की कुशलता के द्योतक है। नियोजन, पूर्व चिन्तन के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं पर भी बल देता है। शिक्षा नियोजन को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. दीर्घकालिक नियोजन
2. लघु कालिक नियोजन

दीर्घकालिक नियोजन में शिक्षण अधिगम के लिए एक सत्र की योजना बनाई जाती है जिसमें एक वर्ष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को उपयुक्त इकाईयों में विभक्त किया जाता है तथा विभिन्न पाठों में संगठित किया जाता है। इस क्रम को विद्यालय के निर्धारित समय विभाजन के अनुसार व्यवस्थित करके इकाई योजना में विभक्त किया जा सकता है। इसी क्रम में प्रतिदिन शिक्षण–अधिगम के लिए शिक्षक को पाठयोजना विकसित करनी होती है अर्थात शिक्षक को पाठ निर्माण करना होता है जिसमें शिक्षक एवं छात्र अनुदेशन वातावरण में क्रियायें आयोजित करते है। जिसका उद्देश्य है "उपयुक्त अधिगम घटित होना निश्चित करना है।".

7.2 विषय वस्तु (Content)

शिक्षण नियोजन को विभिन्न भागों में विभाजित किया जाता है जिससे सरलता पूर्वक शिक्षण पूरा किया जा सके। इसके प्रमुख तीन भाग है

1. सत्र के लिए नियोजन
2. इकाई नियोजन
3. पाठ नियोजन

7.2.1 नियोजन का अर्थ (Meaning of Planning)

नियोजन वह प्रविधि है जिसमें

1. उद्देश्य परिभाषित किये जाते है,

2. विषय वस्तु का चयन किया जाता है,
3. सीखने के लिए आवश्यक क्रियायें तथा अनुभव निर्धारित किये जाते है।
4. शिक्षण के लिये रणनीति बनाई जाती है। क्रियाओं के समन्वय के लिए नियोजन किया जाता है।

शिक्षण–अधिगम नियोजन में पूरे सत्र में काम आने वाली विषय वस्तु का अवलोकन होता है। इसका विभाजन त्रिमासीय सत्र, इकाई एवं प्रतिदिन पाठ के अनुसार आयोजित किया जाता है।

नियोजन– सत्र / इकाई– / प्रतिदिन पाठ — की आवश्यकतानुसार हों

7.2.2 पाठ योजना का अर्थ व परिभाषा (Meaning and definition of lesson plan)

आमतौर पर शिक्षक दैनिक पाठ योजना का आशय यह समझते हैं कि उनको कल कक्षा में क्या पढ़ाना है, कौन से प्रश्न पूछने है, किस प्रकार की विषय सामग्री प्रयोग करनी है तथा विद्यार्थियों को गृह कार्य के रूप क्या देना है। अत: जब शिक्षक एक कालांश के लिए शिक्षण की योजना तैयार करता है, तो उसे दैनिक पाठ योजना अथवा शिक्षण की रूपरेखा कहते है जिसका वह कक्षा शिक्षण में अनुसरण करता है।

शिक्षक जिस पाठ्यवस्तु को पढाना चाहता है, उसे छोटी इकाईयों में विभक्त कर लेता है। एक इकाई की विषय वस्तु को वह एक कालांश में पढाता है, जब पढाने के लिए उस विषय वस्तु की एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाए तो उसे दैनिक पाठ योजना कहते है।

दैनिक पाठ योजना कक्षा कार्य की पूर्व लिखित योजना है, जिसमें शिक्षक पाठ के प्रयोजन और उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयोग की जाने वाली विधियों को निश्चित करता है।

बाइनिंग तथा बाइनिंग के अनुसार– "दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्यवस्तु का चयन करना और कमबद्ध करना तथा प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्णय करना प्रमुख है।" (Daily lesson planning involes defining the objectives, selecting and arranging the subject matter and determining the method of procedure.

डेविस के अनुसार "कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। क्योंकि शिक्षक की प्रगति के लिए कोई बात इतनी बाधक नहीं है जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी है" **(Lesson must be prepared before going in the class as there is nothing so total to a teacher's progress as unpreparedness."**

7.2.3 दैनिक पाठ योजना की आवश्यकता (Need of daily lesson plan)

दैनिक पाठ योजना की प्रत्येक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है, अत: शिक्षक को पाठ का नियोजन करना चाहिए।

1. दैनिक पाठ योजना अध्यापक के शिक्षण कार्य को नियमित नियोजित और व्यवस्थित करती है।
2. यह अध्यापक के शिक्षण कार्य को निश्चित सीमाओं के अन्दर रखकर उसके समय और शक्ति को नष्ट होने से बचाती है।
3. यह शिक्षण को अव्यवस्था और विचारहीनता से दूर रखकर उसे सफल बनाने में सहायता देती है।
4. यह प्रतिदिन के कार्य, विषय सामग्री के चयन, शिक्षण की विधियों और विद्यार्थियों की क्रियाओं के बारे में शिक्षक को विचार करने के लिए बाध्य करती है।
5. यह पाठ विषय को सुसंगठित रूप देकर उसके कुशल संचालन में योग देती है।

7.2.4 पाठ योजना के लिए शिक्षक की आवश्यकतायें (Needs of teachers for lesson planning)

1. विषयवस्तु का ज्ञान
2. छात्रों के संज्ञानात्मक विकास का ज्ञान
3. विशिष्ट उद्देश्य लेखन
4. शिक्षण विधियों का ज्ञान
5. मूल्यांकन विधियों का ज्ञान
6. छात्रों के पूर्व ज्ञान को निर्धारित करना।

7.2.5 पाठ योजना के तत्व/घटक (Elements/Conponents of a lesson plan)

1. विषय –वस्तु
2. समयावधि
3. कक्षा का स्तर
4. अनुदेशनात्मक उद्देश्य
5. पूर्व ज्ञान का अनुमान
6. विषय वस्तु का पाठ्य बिन्दुवार विभाजन
7. सहायक सामग्री
8. शिक्षण विधि
9. शिक्षक क्रिया
10. छात्र क्रिया
11. मूल्यांकन
12. प्रतिपुष्टि व प्रतिपोषण

जैक्सन ने शिक्षण नियोजन को शिक्षण की पूर्व क्रिया अवस्था के नाम से अभिहित किया है जिसमें शिक्षक की वह सब तैयारी सम्मिलित है जो वह कक्षा में जाने से पूर्व सम्बन्धित पाठ के विषय में करता हैं इसमें वस्तुत: ''क्या पढ़ाना है, कब और कैसे पढ़ाना है, तथा उसके मूल्यांकन को पूर्ण रूप से उल्लेखित किया जाता है।" नियोजित शिक्षण शिक्षक को दिशा प्रदान करता है और शिक्षक की शक्ति, समय और साधन का समुचित दोहन कर शिक्षण

को सशक्त, रूचिकर एवं प्रभावी बनाता है जैसा कि योकम एवं सिम्सन मानते हैं– "नियोजन अपव्यय को रोकता है। यह शिक्षक को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित होने में सहायता देता है।"

7.2.6 पाठ लेखन प्रविधि (Process of lesson writing)

समस्त पाठ समान नहीं होते है। विषय की प्रकृति प्रकरण की आवश्यकता तथा छात्रों की पृष्ठभूमि, पाठ योजना में भिन्नता लाती है। किन्तु पाठ योजना के तत्व अधिकतर समान होते है।

1. सामान्य सूचना (General information)

विषय, इकाई, प्रकरण, कक्षा, दिनांक

2. विशिष्ट उद्देश्य लेखन (Writing specific objective)

विशिष्ट उद्देश्य अथवा अनुदेशात्मक उद्देश्य छात्रों की अपेक्षित उपलब्धि का वर्णन है। विशिष्ट उद्देश्य लेखन में क्रियात्मक सूचक शब्दों का प्रयोग आवश्यक है, इन उद्देश्यों का मापन संभव है। इन उदेश्यों की उपलब्धि पाठ की समाप्ति के पश्चात अपेक्षित है।

3. सहायक शिक्षण सामग्री (Teaching aids)

इसका शिक्षण अधिगम में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा छात्र अधिगम में व्यस्त रहता है, अभिप्रेरित करता है पाठ को रोचक बनाती है देता है तथा छात्रों को अधिगम के लिए लोकतांत्रिक वातावरण देता है ।

4. छात्रों का पूर्व ज्ञान प्रकरण से सम्बन्धित (Previous knowledge)

पाठ प्रारम्भ करने के लिए शिक्षक को छात्रों को पूर्व ज्ञान निर्धारित करना आवश्यक होता है। नवीन अनुभव तथा पूर्व ज्ञान, छात्रों को नवीन अर्थ देता है। और ये ही अधिगम है।

5. शिक्षण विधियॉ (Teaching Methods)

शिक्षण विधियों का चयन प्रकरण तथा विषय की प्रकृति के आवश्यकतानुसार किया जाता है। छात्रों को अधिगम करवाने तथा उन्हें व्यस्त रखने हेतु छात्र केन्द्रित शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाना चाहिये। जैसे, संवाद, व्याख्या करना, खोज विधि, समस्या समाधान आदि जिससे उन्हें अधिगम में प्रोत्साहन मिलें।

6. प्रस्तावना (Introduction)

पाठ की प्रस्तावना एक महत्वपूर्ण क्रिया है। इसके द्वारा छात्रों को नवीन ज्ञान के लिए आमंत्रित किया जाता है। प्रस्तावना के द्वारा 3 कार्य पूर्ण होते है–

i) छात्रों को पूर्वज्ञान का प्रत्यास्मरण करवाकर उन्हें नवीन ज्ञान से जोडना।
ii) छात्रों को क्रिया में व्यस्त रखना।
iii) अधिगम के लिए छात्रों को उत्प्रेरित करना।

पाठ की प्रस्तावना प्रश्न पूछ कर प्रदर्शन विधि द्वारा तथा कुछ क्रिया करके व करवा के की जा सकती है।

7. पाठ विकास (Development of lesson)

यह शिक्षण का प्रमुख घटक है, इसमें विषय वस्तु शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन प्रविधि मिलकर प्रयोग में लाये जाते है। इस घटक की प्रमुख आवश्यकता है अधिगम को छात्र केन्द्रित बनाना। इसमें शिक्षक व छात्र मिलकर 40 मिनट तक कार्य करते है।

8. मूल्यांकन (Evaluation)

शिक्षण के साथ–साथ विकासात्मक (Formative) मूल्यांकन महत्वपूर्ण है तथा शिक्षण के पश्चात समग्र (Summaries) मूल्यांकन किया जाता है। समग्र मूल्यांकन से पाठ की पुनरावृत्ति होती है।

9. श्याम पट्ट सार (Black board summary)

मूल्यांकन के साथ–साथ श्यामपट्ट सार भी विकसित किया जाना आवश्यक जिससे छात्र शिक्षण के मुख्य बिन्दुओं को लिख सकें।

10. गृह कार्य (Home assignment)

शिक्षण के बाद छात्रों को गृह कार्य दिया जाता है। इसमें छात्रों को सृजनात्मकता लाने तथा बढाने से संबंधित प्रश्न दिये जाने चाहिये।

11. संदर्भ पुस्तक (References)

12. स्वमूल्यांकन (Self Evaluation)

7.3 पाठ नियोजन की विभिन्न प्रणालियां

पाठ नियोजन की भिन्न–भिन्न प्रणालियां हैं। इनमें से कुछ निम्नवत हैं :–

1. हरबार्ट प्रणाली
2. मूल्यांकन प्रणाली
3. डीवी व किलपैट्रिक प्रणाली
4. मोरिसन प्रणाली

7.3.1 हरबार्ट प्रणाली :

इस प्रणाली के प्रणेता जर्मन शिक्षाविद हरबार्ट हैं। इन्होंने शिक्षण को मनोवैज्ञानिक रूप देने के लिए रूचि पर बल दिया है। इसी कारण यह एक नवीन प्रणाली के रूप में प्रतिपादित हुई। इसमें मुख्य बल पाठ्य वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर दिया जाता है।

हरबार्ट का विचार था कि जो भी पाठ बालक के समक्ष प्रस्तुत किया जाय वह पूर्व ज्ञान पर आधारित हो। इससे ज्ञानार्जन सरलता से हो जाता है। साथ ही पर्याप्त समय तक मस्तिष्क में बना भी रहता है। पाठ का प्रस्तुतीकरण इस तरह से होना चाहिए कि उसका इन्द्रिय–प्रत्यक्षीकरण बालकों को हो जाये। इसलिए यहां सहायक सामग्री पर बल दिया जाता है। इसके साथ ही साथ पाठ वस्तु को छोटी–छोटी इकाइयों में प्रस्तुत किया जाये जो आपस में तार्किक रूप से सम्बद्ध हो।

हरबार्ट की सामान्य शिक्षण विधि को "पंचपदी प्रणाली" कहते हैं। वास्तव में हरबार्ट ने चार पदों का ही प्रतिपादन किया था।

1. स्पष्टता :– विषयवस्तु या तथ्यों को छात्रों के सम्मुख स्पष्टता से रखना।
2. साहचर्य :– प्रस्तु की जाने वाली पाठ्यवस्तु का छात्र के पूर्व ज्ञानसे सम्बन्ध।
3. व्यवस्था :– प्रस्तुत किये जाने वाले ज्ञान को क्रमबद्ध रूप देना।
4. विधि – छात्र द्वारा अर्जित नवीन ज्ञान का वास्तविक जीवन में अच्छी विधि द्वारा प्रयोग। हरबार्ट के चार पदों को उनके शिष्यों ने और स्पष्ट बनाने का प्रयास किया। इसी प्रयास में उनके शिष्य जिलर ने स्पष्टता को दो भागों में विभाजित कर दिया–

प्रस्तावना और प्रस्तुतीकरण एक अन्य शिष्य रीन ने इन दोनों पदों के बीच एक उप पद –उद्देश्य कथन भी जोड़ दिया। इस प्रकार

पहला पदः– (अ) प्रस्तावना (ब) उद्देश्य कथन

दूसरा पदः– प्रस्तुतीकरण

बाद में हरबार्ट के अनुयायियों ने बाकी तीन पदों के नामों में भी परिवर्तन कर दिया

1. सम्बन्ध की तुलना में
2. व्यवस्था को सामान्यीकरण में
3. विधि को प्रयोग में

इस प्रकार अन्तिम रूप में हरबार्ट के पांच पद में है :–

1. अ) प्रस्तावना ब.) उद्देश्य कथन
2. प्रस्तुतीकरण
3. तुलना
4. सामान्यीकरण
5. प्रयोग

हरबार्ट आदि के विचारों के आधार पर पाठ योजना के निम्नलिखित सोपान हो सकते हैं :–

1. प्रस्तावना
2. प्रस्तुतीकरण
3. तुलना या सम्बन्ध
4. सामान्यीकरण या नियमीकरण
5. प्रयोग
6. पुनरावृत्ति

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक पाठ के उपर्युक्त सभी सोपान अपनाये जायें। कौन से सोपानों को अपनाना है, यह पाठ की प्रकृति और प्रयोग में लायी जाने वाली शिक्षण विधियों पर निर्भर करता है।

7.3.2 पाठ योजना का स्वरूप — हरबार्ट के पंच पदों पर आधारित पाठ योजना का स्वरूप पाठ योजना

तिथि — कक्षा

विषय — कालांश

प्रकरण अवधि

विद्यालय का नाम

सामान्य उद्देश्य

विशिष्ट उद्देश्य

सहायक सामग्री

पूर्व ज्ञान

प्रस्तावना

उद्देश्य कथन

प्रस्तुतिकरण	शिक्षण क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट सारांश
पुनरावृत्ति प्रश्न गृहकार्य			

स्वमूल्यांकन

1. पाठ योजना का अर्थ क्या है?
2. पाठ योजना के तत्व लिखिए?
3. हरबार्ट की पंजपदीय प्रणाली से आप क्या समझते हैं?
4. हरबार्ट प्रणाली पर आधारित अपने सामाजिक अध्ययन विषय के किसी एक प्रकरण पर पा0 योजना बनाइए।

7.4 मूल्यांकन प्रणाली

इस प्रणाली के प्रणेता अमेरिकी शिक्षाविद् बी०एस० ब्लूम हैं अत: इसे ब्लूम की पाठ योजना प्रणाली भी कहा जाता है। शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है और शिक्षा की सफलता की कसौटी है उद्देश्यों की सम्प्रति। उद्देश्य कैसे निर्धारित हों इसीलिए ब्लूम ने 1956 में पहली बार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। ब्लूम ने अधिगम उद्देश्यों को तीन वर्गों मे बांटा :–

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य
2. भावात्मक उद्देश्य
3. मनोगामक या क्रियात्मक उद्देश्य

ब्लूम के **ज्ञानात्मक** शैक्षिक उद्देश्यों को टेक्सोनामी के अन्तर्गत 6 वर्ग में रखा गया है।

1. ज्ञान – सूचना की पहचान एवं प्रत्यास्मरण
2. अवबोध – सूचना का अवबोधन (समझ) तथा विचारों में लाना
3. अनुप्रयोग– सूचना को प्रयोग में लाना

4. विश्लेषण– सूचना को उसके छोटे भागों में विभाजित करना तथा उनका सम्बन्ध देखना।
5. संश्लेषण – सूचना के भागों को एकीकृत (समग्र) बनाना
6. मूल्यांकन– विचार धारणा, महत्व का निर्णय, निष्कर्ष निकालना, आन्तरिक निर्णय लेना, वाह्य निर्णय लेना

भावात्मक पक्ष का सम्बन्ध व्यक्ति में सजगता आने पर होने वाले आन्तरिक बदलाव, अपनेपन की वृद्धि से है जैसे अभिवृत्ति, रुचि, मूल्य आदि। भावात्मक पक्ष की टेक्सोनामी के विकास का श्रेय क्रेथहोल (1964) को जाता है। भावात्मक उद्देश्यों को टेक्सोनामी के अन्तर्गत 5 वर्गों में रखा गया है :–

आहरण (ग्रहण करना)

1. अनुक्रिया करना
2. अनुमूल्यन
3. संगठन
4. चारित्रीकरण (मूल्य द्वारा)

क्रियात्मक या मनोगामक पक्ष के अन्तर्गत वे उद्देश्य आते हैं जिनमें शारीरिक अवयवों एवं उनके संचालन का कौशल निहित होता है। इस क्षेत्र में व्यापक उद्देश्यों का निर्धारण कार्य अभी तक पूरा नहीं हो पाया है। डेव ने 5 शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया है।

1. अनुकरण
2. परिवर्तन, जोड़–तोड़
3. शुद्धीकरण
4. कलात्मकता
5. स्वभावीकरण

विभिन्न पक्षों के टेक्सोनामी का संयुक्त माडल

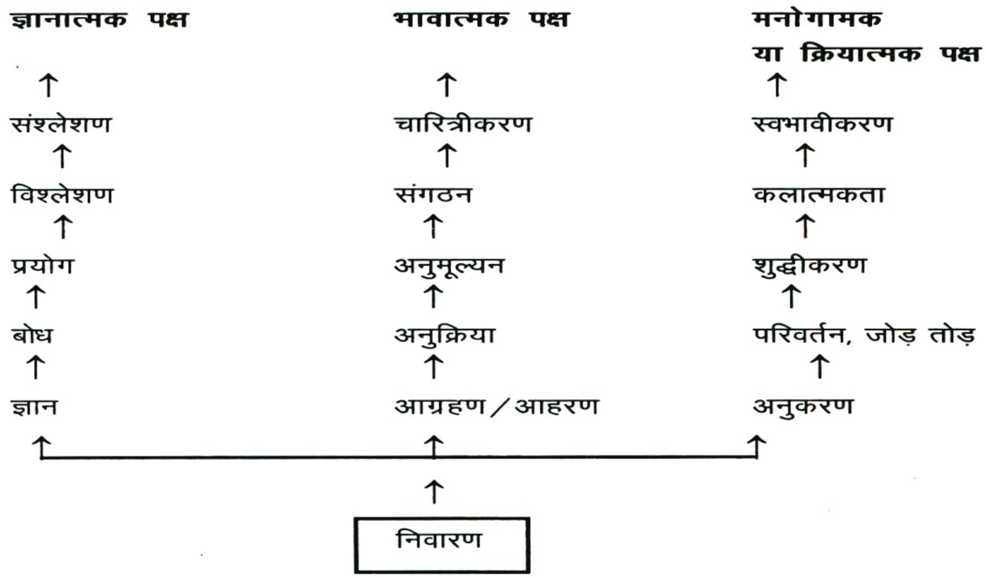

सामान्य उद्देश्य एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्य में अन्तर :

सामान्य उद्देश्य वे उद्देश्य हैं जिन्हें समाज प्राप्त करना चाहता है। समाज इन्हें राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली एवं विद्‌यालयी शिक्षण द्‌वारा प्राप्त करना चाहता है। यह व्यापक होते हैं एवं इनकी प्राप्ति दीर्घावधि में होती है जैसे–प्रजातांत्रिक समाज का विकास करना, उत्तम नागरिकता का विकास करना, श्रेष्ठ मानवीय गुणों का विकास करना आदि।

जबकि अनुदेशनात्मक उद्देश्य वह विशिष्ट उद्देश्य है जिस पर शिक्षक और छात्र का अनुदेशन निर्भर करता है। यह वह उद्देश्य है जिन्हें कक्षा शिक्षक के उपरान्त प्राप्त करना ध्येय होता है और जिनकी सम्प्राप्ति का मूल्यांकन अपेक्षित अन्तिम व्यवहार के रूप में किया जाता है। जैसे–भारत के संविधान में उल्लिखित मूल अधिकारों का ज्ञान कराना, भारतीय संविधान की निर्माण एवं संशोधन प्रक्रिया का ज्ञान करना इत्यादि।

स्वमूल्यांकन

1. हरबार्ट प्रणाली के तीन पक्ष कौन-कौन से है।
2. विभिन्न पक्षों के टेक्सोनामी का संयुक्त मॉडल प्रस्तुत कीजिए।

7.5 पाठ योजना के प्रकार

सामाजिक अध्ययन में अनुदेशनात्मक नियोजन 3 प्रकार का हो सकते है:–

1. वार्षिक योजना
2. इकाई योजना
3. दैनिक पाठ योजना

7.5.1. वार्षिक योजना :

वार्षिक योजना एक प्रकार का शैक्षिक कलेण्डर होता है जिसमे वर्ष भर की गतिविधियां कब और कैसे होंगी– का नियोजन रहता है। सभी विद्‌यालय एवं अधिशासी निकाय वार्षिक योजना का निर्माण करते हैं एवं वर्ष के अन्त में मूल्यांकन करते हैं। इसके द्‌वारा पूरे साल भर की शैक्षिक गतिविधियां नियमित एवं नियंत्रित की जाती हैं।

7.5.2. इकाई योजना :

इकाई योजना द्‌वारा अधिगम प्रबंधन में सुविधा होती है। इकाई विचार इस बात पर बल देता है कि विषय–वस्तु समग्र रूप में प्रस्तुत करने से ही स्पष्टतया समझी जा सकती है। इसमें सभी अधिगम क्रियाओं का अनुक्रम दिया जाता है। और उन क्रियाओं से सम्बन्धित प्रयोग में आने वाली पठनीय अधिगम सामग्री का उल्लेख होता है। इसमें सम्पूर्ण पाठ्‌यवस्तु को एक क्रम में इकाई कर प्रस्तुत किया जाता है।

इकाई योजना आधारित पाठयोजना

इकाई योजना के विभिन्न पद

1. पाठ का शीर्षक
2. उद्देश्य एवं अपेक्षित योग्यताएं

   अ. उद्देश्य   ब. अपेक्षित योग्यताएं

3. विषय–वस्तु
4. शिक्षण प्रक्रिया
   अ. अध्यापक क्रिया ब. छात्र क्रिया
5. मूल्यांकन
   अ पाठान्तर्गत ब.पाठोपरान्त

रूपरेखा

विषय: इतिहास **कक्षा 7वीं**

इकाई – हर्षवर्द्धन **समय 40 मि.**

उप इकाईयाँ

1. हर्षवर्द्धन का जीवन
2. हर्षवर्द्धन का राज्यारोहण
3. हर्षवर्द्धन की विजय (सफलताएं)
4. हर्षवर्द्धन की धार्मिक नीति
5. हर्षवर्द्धन की आर्थिक नीति
6. हर्षवर्द्धन की सैनिक व्यवस्था
7. हर्षवर्द्धन की न्याय व्यवस्था
8. हर्षवर्द्धन का व्यक्तित्व

उद्देश्य :–

1. ज्ञानात्मक – छात्र निम्न तथ्यों, घटनाओं आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। हर्षवर्द्धन के जीवन व शिक्षा, राज्यारोहण, धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, न्यायायिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, व्यक्तितत्व का मूल्यांकन।
2. अवबोधात्मक – छात्र उपर्युक्त तथ्यों का वर्गीकरण तथा विभेद कर उनका महत्व प्रकट कर सकेंगे।
3. कौशलात्मक – छात्र मानचित्र, समय रेखा व स्रोत सन्दर्भों के अध्ययन में कुशलता का विकास कर सकेंगे।
4. अभिरुच्यात्मक – छात्रों में सम्बद्ध तथ्यों के अध्ययन की रुचि विकसित होगी।
5. सहायक सामग्री – समय रेखा, मानचित्र इत्यादि।

अध्यापन बिन्दु	**अध्यापन स्थितियाँ**	
	अध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया

मूल्यांकन –

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
2. लघु प्रश्न

3. निबंधात्मक प्रश्न

गृहकार्य –

1.

2.

3.

7.5.3 दैनिक पाठ योजना

पिछले पृष्ठों में इकाई पाठ योजना का वर्णन किया गया है। दैनिक पाठ योजना इस इकाई योजना का एक अंश मात्र होती है। दैनिक पाठ योजना शिक्षक के दैनिक शिक्षण के (कक्षा के अंदर) कार्यकलापों की योजना है। परन्तु दैनिक पाठ योजना से संपूर्ण लाभ इकाई योजना के ही परिपेक्ष्य में उठाया जा सकते हैं क्योंकि इसमें विषय वस्तु का केवल एक बहुत छोटा से अंश रहता है। दैनिक पाठ योजना का इकाई योजना से सीधा संपर्क होता है इसलिए हर दैनिक पाठ योजना पिछले पाठ से संबंधित होती है।

दैनिक पाठ योजना का प्रारूप

दिनांक	विषय –अर्थशास्त्र	कक्षा–9वीं
विद्‌यालय	प्रकरण –मशीन से लाभ	समय–40मिनट

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों में अर्थशास्त्र के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
2. छात्रों को अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत करना।
3. छात्रों को अर्थशास्त्र की उपादेयता से परिचित कराना।

विशिष्ट उद्देश्य

छात्रों को मशीनों से लाभ के बारे में बताना।

पूर्व ज्ञान –

1. छात्र दैनिक जीवन में आर्थिक क्रियाओं से परिचित हैं।
2. छात्र लाभ हानि से परिचित हैं।

सहायक सामग्री – समाचार पत्र, पत्रिका, घड़ी, पेन, पेन्सिल आदि।

प्रस्तावना–

अध्यापक प्रश्न	छात्र संभावित उत्तर
प्र.1. हमें समाचार किन स्रोतों से मिलता है।	रेडियो, टीवी, समाचार पत्रों में
प्र.2. समाचार पत्र कहा छपते हैं?	प्रेस में
प्र.3. प्रेस में समाचार पत्र किससे छपते हैं	छपने की मशीन से
प्र.4. मशीन से कौन–कौन से लाभ होते हैं?	समस्या

उद्देश्य कथन - छात्रों आज हम 'मशीन से लाभ' का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतिकरण

शिक्षण बिन्दु	अध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया
उत्पादन में वृद्धि	प्र. 1. कुछ प्रमुख समाचार पत्रों के नाम बताइये	दैनिक जागरण राष्ट्रीय सहारा, हिदुस्तान टाइम्स ऑफ इण्डिया द हिन्दू।
	प्र. 2. इतना बड़ा समाचार पत्र हाथ से लिखने में कितना समय लगेगा (एक समाचार पत्र दिखाते हु ए)	कई दिन लगेंगे
	प्र. 3.यह पत्र मशीन से कितने दिन में लिख जाय।	कुछ ही घण्टों में
	प्र. 4.एक बुनकर एक दिन में कितना कपड़ा बुन सकेगा।	लगभग 8–10 मीटर
	प्र. 5.वही कपड़ा मशीन से कितने समय में बन जायेगा। अध्यापक कथन:– अत: बच्चों इससे निष्कर्ष निकलता है की मशीन से थोड़े समय में ही अधिक उत्पादन होता है।	कुछ ही समय में
2.समय की बचत	प्र. 6. बैंक में रुपया कौन गिनता है?	कैशियर
	प्र. 7.वह नोट किस प्रकार गिनता है?	हाथ से
	प्र. 8.यही काम यदि मशीन से किया जाए तो क्या होगा?	कम समय लगेगा।
	प्र. 9.इसी प्रकार जोड़–घटाव, गुणा–भाग मौखिक या हाथ से कागज पर कम और मशीन जैसे कैलकुलटेर से करने में क्या अन्तर है? अध्यापक प्रश्न:– अत: छात्रों इस निष्कर्ष के द्वारा हम यह कह सकते है की मशीन से कार्य जल्दी होता है लेकिन हाथ से कार्य करने में समय लगता है।	मशीन से कार्य जल्दी होता है जबकि हाथ से देर लगती है।
3. मूल्य में कमी	प्र. 10.एक कपड़ा हाथ से बनाने में दर्जी को 1 दिन लगता है तो महीने भर में कितने कपड़े बनेंगे?	30 कपड़े
	प्र. यदि मशीन से एक दिन में 10 कपड़े बनते हैं तो 1 दर्जी 1 महीने में कितने कपड़े बनायेगा?	300 कपड़े

	प्र. 12.हाथ से कपड़ा बनाने में लागत कम अयेगी या मशीन से अध्यापक कथन:– इस प्रकार मशीन से कपड़ा बनाने पर कम लागत अयेगी तथा हम अधिक कपड़े का निर्माण मशीन द्वारा कर सकेंगे।	मशीन से

श्यामपट सारांश

मशीन से लाभ ....

उत्पादन में वृद्धि ....

समय की बचत ....

मूल्य में कमी ....

....

....

....

7.6 सारांश (Summary)

शिक्षण अधिगम में नियोजन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। शैक्षिक नियोजन 3 प्रकार के होते है– सत्रीय इकाई तथा पाठ नियोजन शैक्षिक नियोजन में अनेक तत्वों का योगदान होता है जैसे– विषय वस्तु उद्देश्य सम्प्रत्ययों का चयन, विशिष्ट उद्देश्य लेखन छात्रों का पूर्व ज्ञान को पहचानना, क्रियाओं का चयन, उपयुक्त शिक्षण विधियों का उपयोग एवं मूल्यांकन। पाठ का निर्माण, विषय वस्तु, तथा शिक्षण विधियों के साथ–साथ मूल्यांकन को आधार मानकर विकसित किया जाता है। इकाई योजना तथा पाठ योजना में व्यापक अंतर होता है। एक पाठ, इकाई योजना का भाग है तथा एक इकाई में 2–7 पाठ हैं जो एक दूसरे पर निर्भर होते है। अत: यह कहा जा सकता है कि पाठ योजना की सहायता से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को अधिक नियोजित क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित कर सकता है।

7.7 अभ्यास प्रश्न (Evaluation)

1. नियोजन का क्या अर्थ है। What do you mean by planning?
2. इकाई योजना व पाठ योजना में क्या अंतर है। 4 अंतर लिखिए
   What the difference between unit and lesson planning Write 4 differences.
3. अपने विषय के किसी प्रकरण पर पाठ का निर्माण कीजिए
   Develop a lesson plan on any topic related to your subject.

4. पाठ योजना लिखने की प्रविधि बताईये।
   Explain the process of writing a lesson plan
5. हरबार्ट प्रणाली की विवेचना कीजिए
   Discuss the Herbert System

7.8 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

(1.) शर्मा. आर0 ए0 (2004), सामाजिक विज्ञान शिक्षण, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

(2.) शर्मा. बी0 के0 (2004), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

(3.) शुक्ल रमाशंकर, डागर वी0 एस0 एवं भुक्ल अनिल (1993), शिक्षण एवं अधिगम के आधारभूत तत्व, शिक्षक प्रकाशन, कोटा।

(4.) कोचर, एस0 के0 (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, न्यु दिल्ली : स्टरलिंग पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड।

(5.) इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0 (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, न्यु दिल्ली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस

इकाई–8

विशिष्ट उदाहरणों सहित छात्र का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन निदानात्मक परीक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, मल्टीपल प्रश्न–पत्रों का निर्माण। प्रश्न बैंक का विकास खुली पुस्तक परीक्षा के लिये विषय वस्तु विशिष्ट प्रश्न बनाना Student Assessments in social studies teaching with specific illustrations, diagnostic, Testing, Remedial teaching, Development of multiple question paper sets, Development of question bank, content specific questions for open book examination.

इकाई की संरचना

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 शैक्षिक निदान का अर्थ
8.2.1 शैक्षणिक निदानात्मक परीक्षाएँ
8.2.2 नैदानिक परीक्षाओं के उद्देश्यों की आवश्यकता
8.2.3 निदानात्मक परीक्षण का उपयोग
8.2.4 निदानात्मक परीक्षण का स्वरूप
8.2.5 अंकन प्रक्रिया
8.2.6 परीक्षण परिणामों का विश्लेषण एवं कारण जानना
8.3 उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व
8.3.1 उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य
8.3.2 उपचारात्मक शिक्षण की विधियॉ
8.3.3 उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया
8.4 मूल्यांकन
8.4.1 मूल्यांकन का महत्व
8.4.2 मूल्यांकन की विधियां
8.5 परीक्षा

8.5.1 परीक्षा के प्रकार

8.6 बहु उद्देश्य प्रश्न पत्र सेट्स का निर्माण

8.7 प्रश्न बैंक का निर्माण

8.8 खुली पुरतक परीक्षा के लिए विषय वस्तु विशिष्ट प्रश्न बनाना

8.9 सारांश

810 मूल्यांकन

8.11 संदर्भ सूची

8.0 उदेश्य (Objectives)

इस इकाई की समाप्ति पर आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. शैक्षणिक निदान एवं उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ, महत्व एवं उद्देश्य बता सकेंगे।
2. नैदानिक परीक्षण के निर्माण की आवश्यकता, उपयोग, निर्माण विधि स्वरूप एवं अंकन प्रक्रिया अपने शब्दों में स्पष्ट कर सकें।
3. उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ व आवश्यकता बता सकें।
4. मूल्यांकन की अवधारणा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. मूल्यांकन की विभिन्न विधियों को जान सकेंगे।
6. परीक्षा के स्वरूपों व लिखित परीक्षा के प्रकारों को जान सकेंगे।
7. बहु विकल्पीय प्रश्नपत्र के विकास के सोपानों को जान सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अधिगम शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए मूल्यांकन व मापन को उस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है। इस प्रविधि में छात्रों की प्रगति और उपलब्धि सम्बन्धित सूचनाएं व आंकड़े एकत्रित किये जाते है। शिक्षा के विभिन्न पक्ष मूल्यांकन विधि से प्रभावित होते हे। उत्तम मूल्यांकन, अधिगम शिक्षण विधि का अभिन्न अंग होता तथा इसका लाभ छात्रों और शिक्षा प्रणाली दोनों को मिलता है। शिक्षक अपने शिक्षण की सफलता का आंकलन तथा छात्र अपने अधिगम के स्तर का निर्धारण मूल्यांकन द्वारा ही करता है जो छात्र में हुए परिवर्तन की सूचक होती है। किन्तु प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली छात्रों की उपलब्धियों व प्रगति का सम्पूर्ण मानचित्र प्रस्तुत नहीं कर पाती। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा 2005 में मूल्यांकन एवं मापन के लिए मूल परिवर्तन पर बल दिया है।

8.2 शैक्षणिक निदान का अर्थ (Meaning Educational Diagnosis)

यह स्वाभाविक है कि व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर एक विषय किसी विद्यार्थी के लिए आसान व रूचिकर हो सकता है तो दूसरे विद्यार्थी के लिए वही विषय कठिन व अरूचिकर हो सकता है। अर्थात एक ही कक्षा–कक्ष में विभिन्न योग्यता के विद्यार्थी होते है। ये विद्यार्थी

स्वभाव, बुद्धि रूचियों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न होते है। कुछ विद्यार्थी शारीरिक दोषों के कारण शिक्षक की बात नहीं समझ पाते हैं। कुछ विद्यार्थी मंद बुद्धि के कारण तथा विषय में रूझान व रूचि न होने के कारण विषय को समझ नहीं पाते है। अत: इन स्थितियों में एक आदर्श अध्यापक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि इन विद्यार्थियों की कठिनाईयों का निदान कर उनका उपचार करना आवश्यक हो जाता है।

8.2.1 शैक्षणिक निदानात्मक परीक्षाएं (Educational diagnostic testing)

अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने हेतु कई अनुसंधान किये जा रहे है। उनमें से एक है शैक्षणिक निदानात्मक परीक्षण। इस परीक्षण का उपयोग विद्यार्थियों को समूह में से प्रखर बुद्धि व मंदबुद्धि के बालकों में वर्गीकृत करने अथवा किसी विशेष गुण के आधार पर विद्यार्थियों के चुनाव हेतु किया जाता है।

नैदानिक परीक्षा वह परीक्षा है जिससे विद्यार्थियों की किसी विषय संबंधी कठिनाई अथवा कमजोरी का पता लगाया जा सके। यह निष्पत्ति परीक्षाओं से भिन्न है। निष्पत्ति परीक्षा से यह ज्ञात किया जा सकता है कि किसी विद्यार्थी ने किन विषयों में कितना ज्ञान प्राप्त / ग्रहण किया।

इन परीक्षाओं में छात्रों को अंक प्रदान किये जाते है। जिसके आधार पर छात्र की उस विषय में योग्यता जांची जाती है। इसके विपरीत नैदानिक परीक्षा का कार्य छात्रों की विषय संबंधी कठिनाईयों तथा कमजोरियों का निदान करना है। इसमें अंक नहीं दिये जाते, किंतु इन परीक्षण के द्वारा छात्रों के द्वारा विषय संबंधी महसूस की गई। की जा रही कठिनाईयों को ज्ञात किया जाता है। छात्रों का कठिनाई स्तर नैदानिक परीक्षाओं में क्रमबद्ध प्रश्न के कठिनाई स्तर के अनुसार ज्ञात किया जा सकता है। यह क्रम सरल से जटिल की ओर होना चाहिये। इस प्रकार के क्रम में यदि कोई छात्र निश्चित प्रश्न हल नहीं कर पाता है तो यह पता लगाया जा सकता है कि इस स्थान पर उसे कितनी कठिनाई है। इस तरह विद्यार्थी की कठिनाई का पता लगाकर उसे दूर किया जा सकता है।

8.2.2 नैदानिक परीक्षाओं के उद्देश्यों की आवश्यकता (Objectives of Diagnostic test)

नैदानिक परीक्षाओं को प्रमुख उद्देश्य है।

1. **विद्यार्थियों की विषय संबंधी कमजोरी का पता लगाना**– इस परीक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी द्वारा किये जा रहे अधिगम में आने वाली कठिनाई का पता लगाना है। इसके लिए इस परीक्षा में प्रश्नों का क्रम सरल से कठिन / जटिल की ओर होता है। जिस पद पर छात्र प्रश्न हल नहीं कर पाता अथवा कठिनाई महसूस करता है तब शिक्षक द्वारा उसकी कमजोरी का पता लगाकर उसका उपचार किया जाता है।

2. **अधिगम को बेहतर बनाने हेतु**– इस परीक्षण के द्वारा छात्रों की कमजोरियां व कमियों का पता लगाकर उनके अधिगम अनुभवों को बेहतर बनाया जा सकता है।

3. **विषय में रूचि विकसित करने हेतु**– यदि विद्यार्थी की कमियों का पता लगाकर उन्हें दूर करवाया जाये तो इसके उपरान्त वह विषय छात्र के लिए सरल व रूचिकर हो जाता है।

4. **उच्च प्राप्तांकों को प्राप्त करने में सहायता:–** जब किसी विद्यार्थी की कठिनाई का निवारण शिक्षक द्वारा कर लिया जाता है तो वह विद्यार्थी उस विषय वस्तु को पढ़ने व समझने में रूचि लेने लगता है। वह अध्यापक के द्वारा प्रदान गई विषय वस्तु को आत्मसात करने की कोशिश करता है। फलस्वरूप वह परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने का प्रयास करता है और उसे इसमें सफलता भी मिलती है।

5. **आत्म विश्वास व मनोबल बढाने में सहायता** –जब विद्यार्थी किसी विषय वस्तु को समझने में असमर्थ होता है तो वह विषय उसे नीरस व अरूचिकर लगने लगता है। किन्तु नैदानिक परीक्षण द्वारा जब उसकी कठिनाई को हल कर दिया जाता है, तथा विषय वस्तु उसे समझ में आने लगती है तब उसका मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ने लगता है।

6. **निदानात्मक परीक्षण के निर्माण की आवश्यकता**– निदान शब्द का प्रयोग साधारणतया चिकित्सा विज्ञान मे किया जाता है। इसमें लक्षणों के आधार पर रोग का पता लगाया जाता है तथा रोग का निदान करने के उपरान्त ही उसकी उपयुक्त चिकित्सा करता है। यदि इसमें कोई त्रुटि रह जाती है तो वह शीघ्र ठीक नहीं होती। इसी प्रकार अध्यापक भी विद्यार्थी की कमजोरी के कारणों का पता लगाता है। यदि इसमें शिक्षक से कोई भूल हो जाये तो उसके निर्देश सफल नहीं होते। इसलिए उपचार करते समय शिक्षक को विद्यार्थी की कठिनाई का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक का कार्य डाक्टर से कठिन होता है, क्योंकि यहां पिछड़ा छात्र अपने पिछड़ेपन के कारणों को नहीं जानता। अत: शिक्षक के पास निदान के कुछ उपकरण होने चाहिए।

8.2.3 निदानात्मक परीक्षण का उपयोग (Use of diagnostic test)

इस परीक्षण का उपयोग छात्रों की कठिनाईयों का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसमे सबसे पहले छात्रों को उपलब्धि परीक्षण दिया जाता है। जिसके प्राप्त अंक द्वारा छात्रों को प्रतिभाशाली, मंदी बुद्धि व औसत बुद्धि वाली श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। इसके पश्चात मंद बुद्धि बालकों को उनकी कमियां ज्ञात करने के लिए निदानात्मक प्रश्न–पत्र दिया जाता है। इस प्रकार परीक्षाओं का क्षेत्र सीमित व निश्चित होता है तथा विषय से संबंधित होता है। इसमें छात्रों के स्तर का ध्यान रखा जाता है। प्रश्न पत्र द्वारा छात्रों की कमियां दूर होती जाती है तथा धीरे–2 वह अध्यापन में रूचि लेने लगता है।

8.2.4 निदानात्मक परीक्षण का स्वरूप (Structure of diagnostic test)

यह परीक्षण छात्रों की विषय संबंधि कठिनाई व कमजोरी पता लगाने के लिये है। इन परीक्षण में कोई समय सीमा नहीं होती और कई बार भी ली जा सकती है। क्योंकि इनका उद्देश्य छात्रों की कमियों / कमजोरियों का पता लगाना होता है। जो उसे किसी विषय विशेष में आ रही है। जिसके कारण वह कक्षा में प्रगति सामान्य रूप से नहीं कर पा रहा है।

इस परीक्षा में छात्र का नाम, आयु विषय,कक्षा विद्यालय का नाम, दिनांक आदि का विवरण लिखवाया जाता है। इसमें प्रश्न लघु उत्तरात्मक व वस्तुनिष्ठ होते है।

8.2.5 अंकन प्रक्रिया (Scouting process)

परीक्षण के उपरान्त छात्रों के द्वारा की गई अशुद्धियों को अंकित किया जाता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है विद्यार्थी के कार्य की गुणात्मक व्याख्या उसकी संख्यात्मक उपलब्धि

से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके आधार पर ही विद्यार्थी के मूल कारण का पता लगाया जा सकता है तथा कारण के संदर्भ में सही उपचार देना संभव हो सकता है।

8.2.6 परीक्षण परिणामों का विश्लेषण एवं कारण जानना (Analysis of result and to find out the causes)

इस परीक्षण के अंकन से प्राप्त अंकों / परिणामों का विश्लेषण कर यह जानने का प्रयास किया जाता है कि छात्र किस प्रकार की त्रुटियॉ करते है? अत: उनकी गलतियों का पता लगाकर उनका कारण जानना आवश्यक होता है। इसके बाद ही उनके लिए उपचारात्मक कार्यक्रम बनाना चाहिये। छात्र के कमजोरी के अनेक कारण हो सकते है। इन कारणों का पता लगाना अध्यापक के लिए कठिन होता है। छात्र की कमजोरी के निम्न कारण हो सकते है।

1. विद्यालय, व घर का वातावरण,
2. पारिवारिक समस्या
3. स्वास्थ्य संबंधि समस्या
4. सांवेगिक कारक आदि।

अध्यापक को छात्र के बाहरी व आन्तरिक दोनों कारकों पर ध्यान देना चाहिये। शिक्षक का सीधा संबंध छात्रों के आन्तरिक कारकों से है तथा इनसे संबंधित उपचारात्मक उपाय बनाने चाहिये।

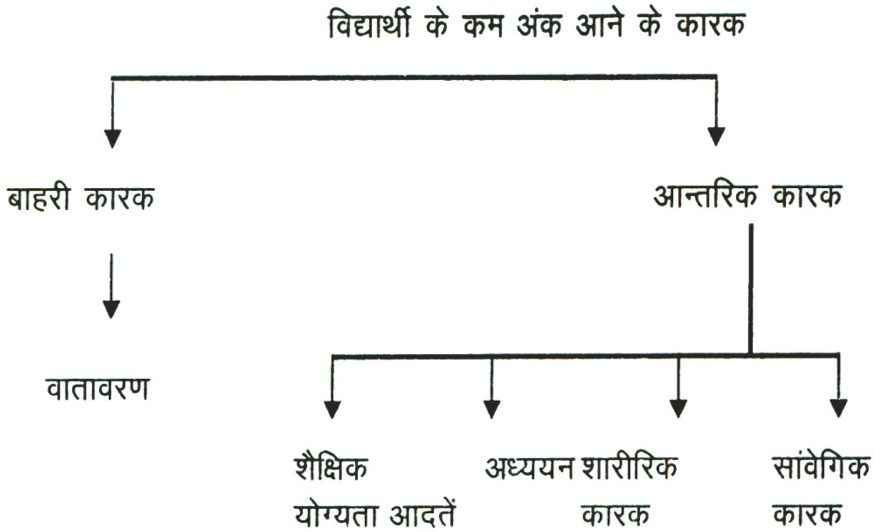

कभी कभी

1. अभिप्रेरण की कमी
2. विषय की कठिन प्रकृति
3. विषय अध्यापक का कटु व्यवहार
4. खराब अध्यापन आदि

विषय के प्रति अरूचि उत्पन्न करने में सहायक होते है। इससे छात्र में विषय के प्रति नकारात्मक प्रकृति विकसित होने लगती है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की अधिक आवश्यकता होती है।

8.3 उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व (Meaning, need and importance of Remedial teaching)

सफल शिक्षण तथा प्रभावी शिक्षक बनने के लिए उसे अपना ध्यान केन्द्रित निम्न बातों पर करना होता है। जैसे

1. विद्यार्थियों को विषय वस्तु किस प्रकार पढ़ानी है।
2. क्या विधि प्रयुक्त करनी है?
3. क्या कौशल सीखाने है?
4. कक्षा में कैसे अंत क्रिया करनी है?
5. मूल्यांकन कैसे करना है?
6. प्रश्नों की रचना कैसी है?

विद्यार्थी की सीखने संबंधी कठिनाईयों का पता लगाने की प्रक्रिया शैक्षणिक निदान है और इन कठिनाईयों को दूर करते हुये समुचित शिक्षण प्रक्रिया अपनाना, उपचारी शिक्षण है। उपचारी शिक्षण हेतु ऐसी प्रभावशाली विधियों का निर्माण किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों की शिक्षण संबंधी गलतियों का निराकरण किया जा सके। इसलिये नैदानिक परीक्षण सदैव उपचारात्मक शिक्षण का अनुगामी होता है।

उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्त्व (Need and importence of remedial teaching)

निदान का अपने आप में कोई महत्व नहीं होता जब तक कि निदान के पश्चात विद्यार्थी को उचित उपचार न दिया जाये। उपचार शब्द चिकित्सा विज्ञान से लिया गया है। शिक्षण के क्षेत्र में भी उपचार ऐसे विद्यार्थियों का किया जाता है जिन्हें अध्ययन अध्यापक में कठिनाई महसूस होती है। छात्र को कक्षा में अध्यापक द्वारा पढ़ाई गई विषय वस्तु समझ नहीं आती है या किसी विशेष प्रकरण को लेकर उनके मन में शंका रहती है ऐसी परिस्थितियों में अध्यापक उन कठिनाईयों के कारण जानकर उन्हें दूर करने के प्रयास करता है। कठिनाई के कारण कई हो सकते है 1. घर का वातावरण 2. विद्यालय का वातावरण आदि।

ऐसी कठिनाईयों को हल करने के लिए छात्रों के अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करके उनसे घर का उचित वातावरण बनाये रखने का आग्रह कर सकते है।

विद्यार्थी का केवल निदान करके छोड़ दिया जाता है तथा उपचार नहीं किया जाता, ऐसी स्थिति में छात्र के हित अहित में बदल जाते है। विद्यार्थी अपनी कमजोरियां को जानकर अपने आपको और छात्रों से पिछड़ा हुआ महसूस करती है। इसलिए अध्यापक को निदान के साथ उपचार करना भी आवश्यक है। शिक्षक को नैदानिक परीक्षण के परिणामों का उल्लेख करते समय यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि विद्यार्थी के कार्य की गुणात्मक व्याख्या उसकी संख्यात्मक उपलब्धि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी के आधार पर विद्यार्थी की त्रुटि का मूल कारण निकाला व उस कारण का उसी संदर्भ में सही उपचार दिया जाना सम्भव है।

8.3.1 उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Remedial teaching)

इसके उद्देश्य निम्नलिखित है:–

1. छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्या को हल करना।
2. छात्रों के अन्तर्द्व्न्दों का समाधान करना।
3. छात्रों की शारीरिक भावात्मक तथा सामाजिक अक्षमताओ को दूर करना।
4. छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहयोग देना।
5. छात्रों को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना।
6. छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना जिससे वह त्रुटियों में सुधार कर सके।
7. अधिगम के दुष्परिणामों को उपचारित करना।

8.3.2 उपचारात्मक शिक्षण विधियॉ (Methods of Remedial Teaching)

प्रत्येक छात्र की अपनी अलग–2 समस्यायें होती है। वह अधिगम करते समय इन समस्याओं को महसूस करते है। कई परिस्थितियाँ ऐसी होती है जहां विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से शैक्षिक उपचार करना होता है। जैसे भूगोल विषय के प्रयोगों में किसी क्षेत्र की लम्बाई, कोर्नर चौडाई आदि मापने के लिए रेन्जिंग रोड को सैट करना सीखाया जाता है जिससे उसकी कठिनाई हल हो जाये।

उपचारात्मक शिक्षण के लिए निम्न विधियों का प्रयोग किया जा सकता है–

1. व्यक्तिगत अभ्यास के द्वारा
2. सामूहिक उपचार
3. व्यक्तिगत रूप से छात्रों की गलतियों का निवारण
4. व्यक्तिगत भेदों के आधार पर निवारण
5. उपचार गृह
6. माध्यम के उचित प्रयोग द्वारा जैसे–टेप, सी.डी. आदि का उपयोग करके।

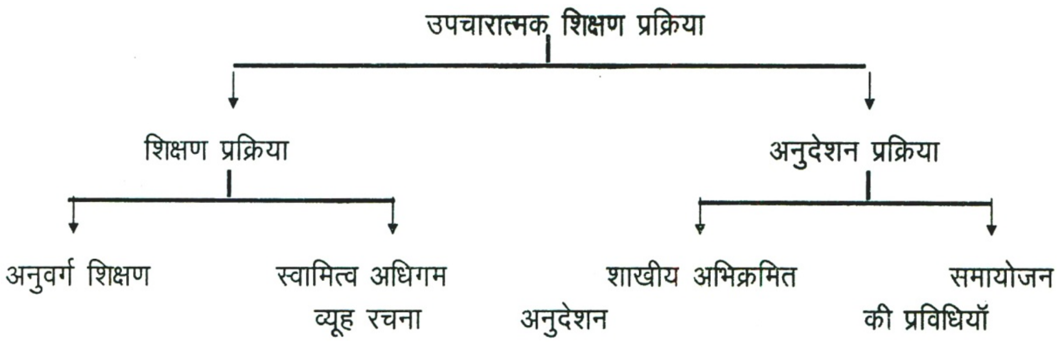

उपचारात्मक शिक्षण तथा अनुदेशन का तत्कालिक उद्देश्य छात्र की अधिगम समस्या तथा कठिनाई को हल करना होता है तथा अन्तिम उद्देश्य छात्र में स्वामित्व अधिगम **(mastery learning)** में सहायता प्रदान करना है। उपचारात्मक प्रक्रिया, शिक्षण तथा

अनुदेशन दोनों में प्रयुक्त की जाती है क्योंकि इस प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य अधिगम में सहायता प्रदान करना है।

अनुवर्ग शिक्षण **(Tutorial teaching)** में एक शिक्षक के पास छात्रों का छोटा समूह होता है जिसमें 5–10 छात्र होते है। छात्रों के पूर्वज्ञान को ध्यान में रखकर शिक्षक शिक्षण–बिन्दुओं पर चर्चा करता है तथा प्रत्येक छात्र की कठिनाई का हल निकालता है तथा उपचारात्मक शिक्षण करता है।

स्वामित्व अधिगम व्यूह रचना **(Mastery learning)** में पाठ्यवस्तु को छोटे–2 हिस्सों में बॉट दिया जाता है तथा प्रत्येक भाग को छात्र द्वारा अभ्यासित करवाया जाता है। तथा परीक्षा के आधार पर गणना की जाती है। अधिगम में यदि कठिनाई आती है तो उसका निदान किया जाता है। अधिगम की कठिनाईयों के कारणों के आधार पर सुधारात्मक अनुदेशन की व्यवस्था की जाती है। छात्रों की व्यक्तिगत अधिगम त्रुटि पर ध्यान दिया जाता है तथा उन्हें दूर करके उस पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया जाता है।

अनुदेशन प्रक्रिया शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन को उपचारात्मक प्रविधि के रूप में उपयोग किया गया है। क्योंकि इसमें गलत उत्तर चुनने पर विभिन्न शाखाओं से गुजरे हुये सही उत्तर तक पहुंचता है और उसे वह गलत उत्तर के कारण भी स्पष्ट किया जाता है। अत: इसके माध्यम से भी उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

छात्रों की समायोजन प्रविधि को उपचारात्मक प्रक्रिया में उपयोग लिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में समायोजन की अलग–2 क्षमता होती है। छात्र अपनी समझ आवश्यकता योग्यता के अनुसार अधिगम को समायोजित करते है। अधिगम के सभी घटकों का ध्यान उपचारात्मक प्रक्रिया में रखा जाता है। छात्र स्वगति से सीखता है।

इस प्रकार निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण एक दूसरे के पूरक होते है तथा यह प्रक्रिया साथ–2 चलती है।

8.3.3 उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया (Procedure/process of remedicial teaching)

विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण अलग अलग समस्यायें होती है। एक छात्र के लिए जो उपचारात्मक प्रक्रिया अपनाई जाती है आवश्यक नहीं कि दूसरे छात्र भी उसी उपचारात्मक प्रक्रिया से लाभान्वित हो। अत: छात्र की समस्या की प्रकृति व स्वयं के व्यक्तित्व व आदतों के आधार पर उसे उपचार बताया जाता है। कभी कभी छात्र की समस्या का हल उसे दुबारा शिक्षसा देने के ही निकल जाता है। अत: अधिगम की कठिनाई की प्रकृति तथा उसके कारण को ध्यान में रखकर विशिष्ट प्रकार की उपचारात्मक प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। उपचारात्मक शिक्षण प्रक्रिया को निम्न रेखा चित्र की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है।

8.4 मूल्यांकन

मूल्यांकन व्यक्तित्व के व्यापक परिवर्तनों तथा शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है। यह केवल बुद्धि विकास या विषय–वस्तु के ज्ञान की प्राप्ति तक ही सीमित नहीं है, अपितु मूल्यांकन का सम्बन्ध विषय ज्ञान के अतिरिक्त अभिरूचि, तथा व्यक्तित्व परिवर्तन आदि से भी होता है।

उद्देयों के सन्दर्भ में शिक्षण परिस्थितियों में छात्रों मे कहाँ तक व्यवहार परिवर्तन हो रहा है इसका आकंलन भी मूल्यांकन मे किया जाता है। अत: मूल्यांकन द्वारा विषय वस्तु के ज्ञान की जॉच होती ही है। साथ ही बालक की रूचियों अभिव्यक्तियों योग्यताओं तथा दृष्टिकोण आदि के परिर्वतन तथा विकास की जॉच भी की जाती है। जैसा कि सी0एस0 रास भी मानते है, मूल्यांकन का प्रयोग बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व अथवा शिक्षा की समस्त स्थितियों की जॉच प्रक्रिया के लिए किया जाता है।

इस प्रकार मूल्यांकन शिक्षा प्रतिक्रिया का एक आवश्यक अंग है शिक्षक अपने शिक्षण का मूल्यांकन छात्र में हुए व्यवहार परिर्वतन के आधार पर करता है मूल्यांकन का क्षेत्र केवल यही तक सीमित नही है कि छात्र ने परीक्षा में कितने अंक प्राप्त किये बल्कि देखना यह होगा कि बालक के व्यक्ति का विकास कहाँ तक हुआ है।

8.4.1 मूल्यांकन का महत्व

- मूल्यांकन द्वारा यह मालूम किया जाता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हो सकी है
- मूल्यांकन द्वारा यह भी निश्चित किया जाता है कि किन विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकी है ताकि समुचित उपचारात्मक अनुदेशन दिया जा सकें।
- कक्षा में छात्रों के उद्देश्यों की प्राप्ति के अनुसार स्तरीकारण किया जा सकता है।
- शिक्षक की विधियों तथा प्रविधियों की उपादेयता और उनकी कमजोरियों को भी ज्ञात किया जा सकता है।
- शिक्षण–अव्यूह मे सुधार तथा विकास किया जाता है तथा अनावश्यक अधिगम स्रोतों को भी हटाया जा सकता हैं।
- मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिए पुनर्बलन का कार्य करती है।
- मूल्यांकन की प्रक्रिया ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के संबंध के प्रदत्तों का संकलन करती है। परम्परागत परीक्षण से ज्ञानात्मक उद्देश्यों का ही मापन किया जाता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है। इसके अनेक प्रकार की प्रविधियों प्रयुक्त की जाती है।
- ज्ञानात्मक उद्देश्यों के लिए मौखिक, लिखित, निबन्धात्मक परीक्षायें तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षायें तथा प्रयोगात्मक परीक्षाएं उपयोग में लाई जाती है। निरीक्षण प्रविधि का भी प्रयोग करते हैं।
- भावात्मक उद्देश्यों के लिए अभिरूचि सूची, रेटिंग स्केल तथा मूल्यों की परीक्षा आदि प्रयुक्त किये जाते है। निबंधात्मक परीक्षाए भी आंशिक रूप से प्रयुक्त की जा सकती है।
- क्रियात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयोगात्यक परीक्षा अधिक उपयोगी मानी जाती है। इसमें छात्रों को कुछ क्रियाएं करनी पड़ती है उनके कौशल का मूल्यांकन किया जाता हैं।

8.4.2 मूल्यांकन की विधियाँ (Methods of Evaluation,)

शिक्षक जब उद्देश्यों के लिए अधिगम परिस्थितियों का निर्माण कर लेता है तब मूल्यांकन के लिए परीक्षा का निर्माण किया जाता है। इस परीक्षा से यह निश्चित किया जाता है कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हो सकी है। मेगर का कथन है कि इस सोपान में शिक्षक

नियोजन, शिक्षण–विधियों, अनुदेशन तथा अन्य शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता का मूल्यांकन करता है, जिससे सुधार तथा विकास के लिए शिक्षक को प्रोत्साहन मिलता है।

मूल्यांकन प्रविधियों का वर्गीकरण (Classification of Evaluation)

विद्यालयों में प्रयुक्त की जाने वाली सभी मूल्यांकन प्रविधियों को प्रमुख रूप से दो वर्गो में विभाजित किया जाता है।

(अ) परिमाणात्मक **(Quantitative)**

ब) गुणात्मक (Qualitative)

(अ) परिमाणात्मक परीक्षाएं (Quantitative)

मूल्यांकन में इस प्रकार की प्रविधियां अधिक उपयोगी विश्वसनीय तथा वैध होती है। यह तीन प्रकार की होती हैं।

1. मौखिक परिक्षा (Oral Examination)
2. लिखित परिक्षा (Written Examination)
3. प्रयोगात्मक परिक्षा (Practical Examination)

परिमाणात्मक परीक्षायें **(Quantitative test)**

1. मौखिक परीक्षा (Oral Examination) – इसमें मौखिक प्रश्न, वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा नाटक आदि को प्रयुक्त किया जाता है।
2. लिखित परीक्षा (Written Examination) – आजकल लिखित परीक्षा का काफी प्रचलन है। छात्र की विषयगत योग्यता का आकलन प्रश्नपत्रों के माध्यम से लिखित उत्तर के रूप में प्राप्त किया जाता है लिखित परीक्षा के तीन रूप है–

(1) निबन्धात्मक परीक्षा

(2) लघु उत्तरीय परीक्षा

(3) वस्तुनिष्ठ परीक्षा

(4) प्रायोगिका परीक्षा

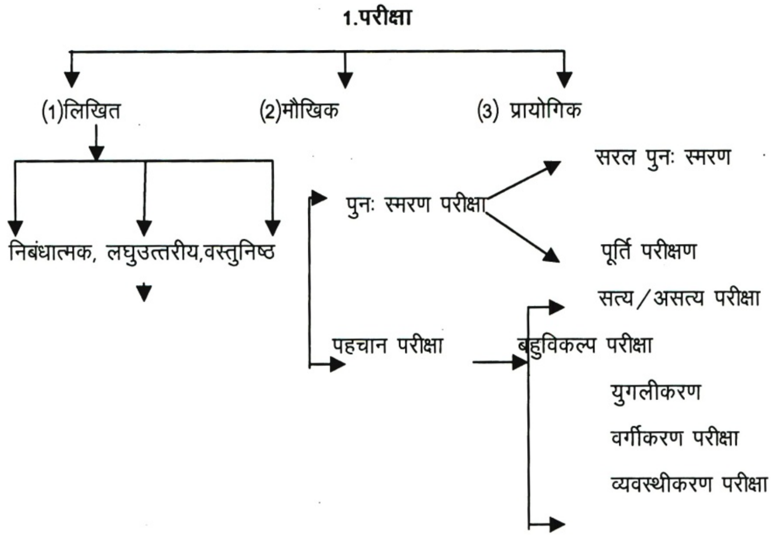

(ब) गुणात्मक परीक्षा **(Qualitative test)**

विद्यालय में गुणात्मक परीक्षाओं का उपयोग आन्तरिक मूल्यांकन के लिए किया जाता है। यह साधारणत: पाँच प्रकार की होती है।

(1) संचयी आलेख (Cumulative Rewards)

(2) एनेकडोटल आलेख (Anecdotal Rewards)

(3) निरीक्षण **(Observation)**

(4) जाँच सूची (Cumulative)

(1) संचयी आलेख **(Cumulative Records)** – विद्यालयों में प्रत्येक छात्र के संबंध में सूचानाओं को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता हैं। इसमें शैक्षिक, प्रगति मसिक परिक्षा फल, उपस्थित, योग्यता तथा अन्य विद्यालयों की क्रियाओं ने भाग लेना आदि का आलेख प्रस्तुत किया जाता है। छात्र की प्रगति तथा कमजोरियों को जानने के लिए अभिवोकों, शिक्षको तथा प्रधानचार्य के लिए यह अधिक उपयोगी अलेख होता है।

(2) एनेकडोटल आलेख **(Anecdotal Records)** – इसमें बालकों के व्यावहार से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाओं तथा कार्यो का वर्णन किया जाता है। इन कायों तथा घटनाओं का आलेखन सही रूप में किया जाता है निरीक्षण करने वाले छात्र की रूचियों तथा झुकावों को उत्पन्न करने वाले घटको का भी आलेख करता है, इसके आधार पर छात्र के सम्बन्ध में सामान्यीकरण किया जा सकता है और निर्देशन ने इसे प्रयुक्त करतें हैं।

(3) निरीक्षण **(Observation)** – इसका प्रयोग विशेष रूप से छोटे बालकों के मूल्यांकन, के लिए किया जाता है क्योंकि उनको अन्य कोई परीक्षा नहीं दी जा सकती है और उनके व्यवहार में वास्तविकता होती है। इसका प्रयोग उनकी योग्यता तथा व्यवहारों के सम्बन्ध में किया जाता है। उच्च कक्षाओं में छात्र स्वयं आत्मनिरीक्षण के जिए भी इसे प्रयोग करता है।

(4) जाँच सूची **(Cumulative)** – लिखित प्रयोग विशेष रूप से छोटे बालकों के मूल्यांकन के लिए ज्ञानात्मक पक्ष की जाँच करती है। जाँच सूची का प्रयोग अभिरूचियों, अभिवृत्तियों तथा भावात्मक पक्ष के लिए किया जाता है। इसमें कुछ कथन दिय जाते है। उन कथनों के संबंध में छात्रों को हाँ अथवा नहीं में उत्तर अंकित करना होता है। इस प्रकार के कथनों की सूची के रचना करते समय उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिये। प्रत्येक कथन को किसी विशल उद्देश्य का मापन करना चाहिए। जैसे :–

(I) आपको शिक्षण सोपनों का स्मरण करने में रूचि हैं। हाँ/नहीं

(II) आप पा0 योजना की रचना करने में रूचि लेते हैं। हाँ/नहीं

(5) अनुपस्थिति मापनी **(Rating Scale)** – इसमें कुछ कथन दिए जाते है, उनका तीन, पाँच, सात बिन्दुओं 'तक सापेक्ष निर्णय करन' होता है। इसका उपयोग उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए किया जा सकता है, क्योकि निर्णय लेने की शक्ति छोटी आयु के छात्रों में नहीं होती हैं। शिक्षक भी प्रत्येक छात्र के मापन के लिए इसका प्रयोग करता है,

परन्तु शिक्षक को प्रत्येक छात्र से भली प्रकार परिचित होना चाहिए। अनुपस्थिति मापनी के कथन स्पष्ट तथा विशिष्ट व्यवहारों से संबंधित होने चाहिए।

8.5 परीक्षा

परीक्षा मूल्यांकन की बड़ी महत्वपूर्ण विधि है। छात्र ने कितने अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त किया है शिक्षक के शिक्षण द्वारा कितने अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है, इसे जानने का एक साधन है परीक्षा जिसमें पढ़ाई गई विषयवस्तु से प्रश्न पूछकर जॉच की जाती है और छात्र की निष्पत्ति का आंकलन किया जाता है।

यह परीक्षा तीन प्रकार की होती है।

8.5.1 लिखित

आजकल लिखित परीक्षा का काफी चलन है छात्र की विषयगत योग्यता का आंकलन प्रश्न पत्रों के माध्यम से लिखित उत्तर के रूप में प्राप्त किया जाता है लिखित परीक्षा के तीन रूप है

8.5.1.1 निबंधात्मक परीक्षा

निबंधात्मक परीक्षा में छात्रों को प्रश्नो के उत्तर निबंन्ध के रूप में लिखने होते है उदाहरण के लिए 1. भारतीय संस्कृति की विलक्षणता पर एक निबंन्ध लिखिए या भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

निबंधात्मक परीक्षा का प्रयोग प्राचीनकाल से किया जाता रहा है, इसीलिए इसे परम्परागत परीक्षा भी कहते है। इसमें परीक्षार्थी से कोई भी प्रश्न मौखिक या लिखित रूप में पूछा जाता है आप वह उसका उत्तर एक निश्चित समय के अन्दर निबंन्ध के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें व्यक्ति अपने विचारों को स्वतंन्त्रता पूर्वक व्यक्त करता है। इसके माध्यम से व्यक्ति की चिन्तनकिया, विचारो का संगठन और प्रकाशन की योग्यता, रचनात्मक योग्यता, भाषा शैली एंव अभिव्यक्ति क्षमता आदि की जॉच की जाती है।

निबंधात्मक परीक्षा में प्रयुक्त होने वाले प्रश्न

निबंधात्मक परीक्षा में उद्देश्यों के अनुसार विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है । इसमें प्रयुक्त होने वाले प्रमुख प्रश्न इस प्रकार है।

1. **वर्णनात्मक प्रश्न** – इसमें विद्यार्थी से किसी घटना, तथ्य या प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। यह वर्णन विस्तृत या संक्षिप्त दोनो हो सकता है। जैसे अलाउद्दीन की शासन–व्यवस्था का संक्षिप्त / विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. **व्याख्यात्मक प्रश्न** – इस प्रकार के प्रश्न में तर्क के आधार पर उत्तर दिये जाने की अपेक्षा रहती है जैसे गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल क्यो है। व्याख्या कीजिए ।
3. **विवेचनात्मक प्रश्न** – इस प्रकार के प्रश्न में उत्तरदाता से किसी वस्तु, घटना तथ्य या प्रक्रिया का वर्णन करने के साथ–साथ गुण–दोषों का भी वर्णन किये जाने की अपेक्षा रहती है जैसे–गुप्त कालीन शासन एंव न्याय व्यवस्था की विवेचन कीजिए।

4. **परिभाषात्मक प्रश्न** – इस प्रकार के प्रश्न द्वारा वस्तु तथ्य, घटना या प्रक्रिया के स्वरूप के सम्बन्ध में निश्चयात्मक रूप से जानने का प्रयास किया जाता है
5. **तुलनात्मक प्रश्न** – इन प्रश्नों द्वारा किन्ही दो वस्तुओं, विचारों, तथ्यों की विशेषताओं गुण–दोषों के आधार पर तुलना करने के लिए कुहा जाता है। उदाहरण गुप्तकालीन एंव मुगलकालीन शासन की तुलना कीजिए।
6. **आलोचनात्मक प्रश्न** – इस प्रकार के प्रश्न में विचार तथ्य, घटना या प्रक्रिया की उपयुक्ता का मूल्यांकन करना उद्देश्य होता है।

उदाहरण– आधुनिक प्रतिस्थर्द्धालक अर्थव्यवस्था की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।

विश्लेषणात्मक प्रकार – इस प्रकार के प्रश्न से किसी तथ्य के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हुए विश्लेषण की अपेक्षा रहती है।

जैस– भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में मझोले उद्योगों या कुटीर धन्धों का क्या योगदान है? विश्लेषण कीजिए।

निबंधात्मक परीक्षा का गुण

: रचना एवं प्रशासन में सुगमता

: विचार– अभिव्यक्ति की स्वतंन्त्रता

: व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति

: विस्तृत गृहन अध्ययन की जरूरत

: उच्च मानसिक योग्यताओं जैसे–तर्क, चिंतन स्मृति, कल्पना बुद्धि आदि के प्रयोग की आवश्यकता

: धन, समय व शक्ति तीनों दृष्टियों से मितव्ययी

निबंधात्मक परीक्षा का दोष–

: पूरे पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता

: वस्तुनिश्ठता का अभाव,

: रटने व लिखने पर अधिक बल

: स्पष्ट व सटीक उत्तर का अभाव

निबंधात्मक परीक्षा में सुधार के उपाय

निबंधात्मक परीक्षाओं को उच्च स्तरीय बौद्धिक कुशलताओं मौलिक एवं सूझबूझ पूर्ण विचारों तथा सृजनात्मक क्षमताओं की जॉच करने के लिए उपयुक्त समझा जाता है अत: इनका प्रयोग न केवल उचित है अपितु बंदनीय भी है किन्तु जिस रूप में इनका प्रयोग किया जा रहा है, उसमें सुधार की काफी आवश्यकता है। यह सुधार द्विपक्षीय होना चाहिए।

1. निबंधात्मक प्रश्नों में सुधार

1. प्रश्न सरल भाषा में तथा प्रत्यक्ष पूछने चाहिए।
2. प्रश्नों से सम्बन्धित निर्देश स्पष्ट व विस्तृत होने चाही।
3. प्रश्नों की संरचना ऐसी होनी चाहिए कि पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व हो सके।
4. प्रश्नों की संख्या अधिक हो तथा उत्तर में संक्षिप्त व सारगर्भित विवेचना की मॉग हो।

5. लेखन योग्यता,भाषा शैली,अभिव्यक्ति क्षमता, विषयवस्तु की समझ आदि के मूल्यांकन के उद्देश्य से प्रश्न की रचना की जानी चाहिए।

2. उत्तर – पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में सुधार

प्रश्न रचना में सुधार लाने के साथ–साथ उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में परिर्वतन लाना आवश्यक है जैसे–

1. पर्याप्त अनुभवी एवं प्रशिक्षित परीक्षकों द्वारा ही मूल्यांकन हो।
2. उत्तरों के नमूने प्रत्येक प्रश्न के लिए दिये जाये तथा अंकन विधि के बारे में स्पष्ट निर्देश हो।
3. आंकन विधि को विषय–वस्तु गहनता, प्रस्तुतीकरण अभिव्यक्ति क्षमता, लेखन–शैली, भाषा–शैली और घटकों में स्पष्ट अंकवार विभाजन कर स्पष्ट कर देना चाहिए।
4. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास हो।

8.5.1.2. लघु उत्तरीय परीक्षा

इन प्रश्नों का उत्तर लघू रूप में देना होता है। इनके उत्तर निबंधात्मक परीक्षा की तुलना में कुछ अधिक निश्चित होते है जैसे–

प्र0. भारतीय संस्कृति की (2) मुख्य विशेषता बताइये।

8.5.1.3 वस्तुनिष्ठ परीक्षा

वस्तुनिष्ठ परीक्षा में चिन्ह विशेष या एक या दो शब्द द्वारा उत्तर दिया जाता है। इन प्रश्नों के उत्तर या तो एक दम सही होते है या गलत होते है। कम समय में अधिक से अधिक प्रश्न पूछे जा सकते है प्रश्न पूरी पाठ्यचर्या पर पूछे जाते है जैसे–

भारत की राजधानी............................... है **(लखनऊ,बम्बई नई दिल्ली, कलकत्ता)**

वस्तुनिष्ठ परीक्षा विश्वसनीय तथा प्रमाणिक होती है। किन्तु इसका दोष यह है कि इसके द्वारा बालको की विचार–शक्ति तक शक्ति, भाषा शैली तथा विचारों की अभिव्यक्ति की जॉच नहीं हो पाती है। ये परीक्षाएं बालक की केवल स्मरण शक्ति की जॉच करती है तथा कभी–कभी अनुमान को भी प्रोत्साहन देती है।

8.5.1.4

वस्तुनिष्ठ परीक्षा का वर्गीकरण

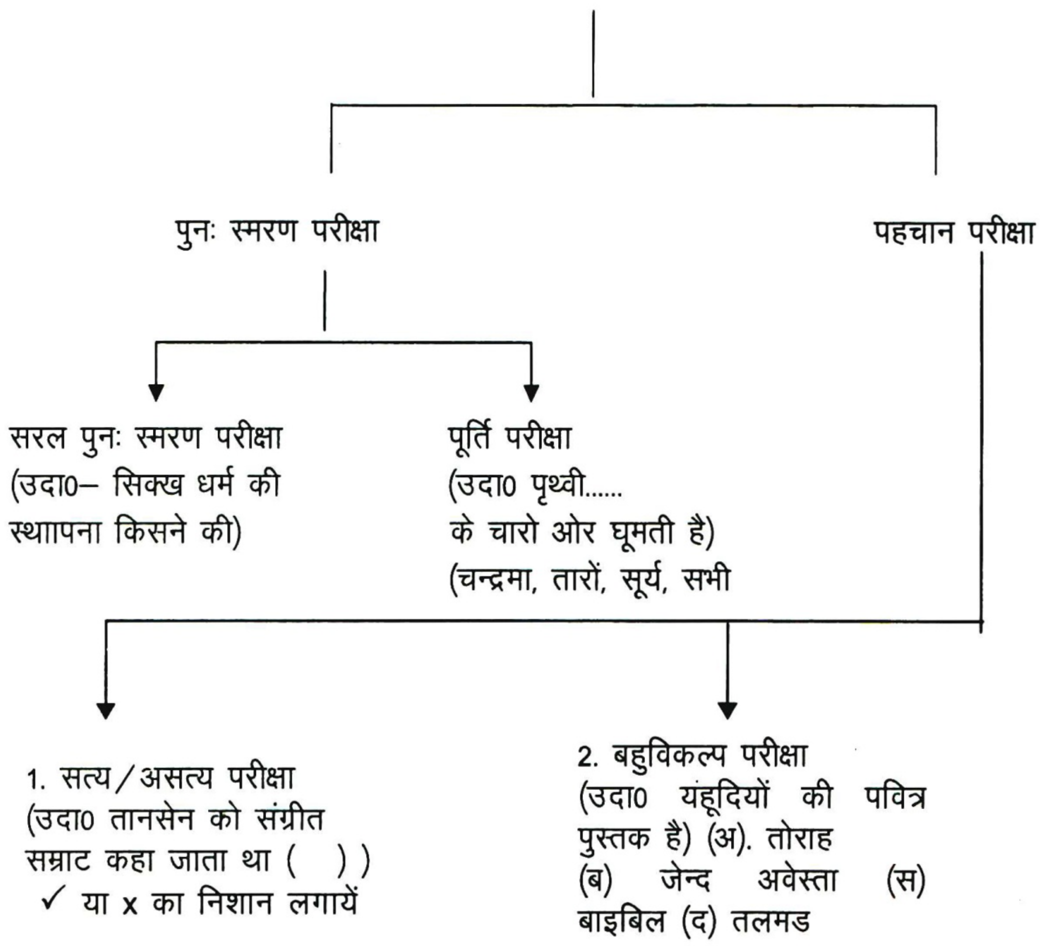

स्वमूल्यांकन

1. मूल्यांकन का अर्थ व महत्व बताईये।
2. मूल्यांकन विधि का वर्गीकरण कीजिए।
3. परीक्षा का मूल्यांकन में क्या महत्व है?
4. लिखित परीक्षा के प्रकार लिखिए?

8.6 बहु उद्देशीय प्रश्न–पत्र सेट्स का निर्माण (Construction of Multi–Objective Question Paper Sets)

शिक्षा का उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वांछनीय विकास एवं परिवर्तन लाना है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति/विद्यार्थी ने किस सीमा तथा स्तर तक की है, विद्यार्थी ने क्या सीखा है अथवा क्या नहीं सीखा है, इन सभी प्रश्नों का उत्तर मूल्यांकन द्वारा जाना जाता है।

मूल्यांकन के कई तरीके है। प्रचलित रूप से विद्यार्थियों में मूल्यांकन का स्वरूप लिखित परीक्षण, मौखिक परीक्षण या प्रायोगिक परीक्षण के रूप में होता है।

परीक्षण, व्यक्ति या बालक की समस्त मानसिक योग्यताओं तथा व्यक्तित्व गुणों के मापन का वह साधन है तो उसके प्रति निर्णय लेने एवं उसे समझने में सहायक होता है।

शिक्षा के विभिन्न प्रकार के उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। उपलब्धि परीक्षण **(Achievement Test)** से प्राप्त छात्र के प्राप्तांकों के आधार पर सम्बन्धित विषय में सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है और इस सम्बन्ध में पूर्व कथन किया जा सकता है।

उपलब्धि परीक्षण मुख्यत: दो प्रकार के होते है:–

(i) मानकीकृत (Standarized Achievement Test)

(ii) अध्यापक निर्मित (Teacher made Achievement test)

प्रमापीकृत परीक्षण से तात्पर्य ऐसे परीक्षण से है जिसमें प्रश्नों की रचना पाठ्य–वस्तु के अनुकूल हो जिसकी प्रशासन विधि, परीक्षण यंत्र, निर्देश, अंकन–विधि एवं व्याख्या करने के मानक निश्चित हों जिससे कि उस परीक्षण का प्रयोग विभिन्न स्थलों एवं समय पर किया जा सकें।

अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण, अध्यापक द्वारा अपने विद्यालय या कक्षा के शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये बताये जाते है। इनका प्रयोग कक्षा की परिस्थितियों में किया जाता है। इनकी विश्वसनीयता व वैद्यता को पूर्व परीक्षण द्वारा निश्चित नहीं किया जाता है। इस प्रकार के परीक्षण के निर्माण में आसानी होती है। अध्यापक अपनी सुविधानुसार इनका प्रयोग कक्षा के छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने के लिये करता है।

किसी भी सन्तुलित प्रश्न–पत्र को बनाने के लिये अध्यापक को निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये

(i) विषय वस्तु का निर्धारण

(ii) विभिन्न उद्देश्य आधारित प्रश्नों का निर्माण

(iii) विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का समावेश

प्रश्न–पत्र का निर्माण करते समय अध्यापक विषय–वस्तु की सीमा का निर्धारण करता है अर्थात छात्रों का मूल्यांकन पाठ्यसामग्री में से करता है, कौन कौन से उपविषय उसमें सम्मिलित होंगे। उदाहरण के लिये जीवविज्ञान विषय में यदि कक्षा 9 के लिये प्रश्न पत्र तैयार करता है तो अध्यापक को पहले यह तै करना होगा कि वह कितने पठित पाठों में से मूल्यांकन करना चाहता है, विद्यार्थियों को विषय वस्तु की सीमा बतानी होगी उदाहरण के लिये किसी परीक्षण में विद्यार्थियों को बीज की बाहरी एवं आन्तरिक संरचना, बीजों के प्रकार, बीजों को अंकुरण आदि में से मूल्यांकित करना हो तो अध्यापक विषय–वस्तु को अंकभार भी प्रदान करेगा अर्थात् किस विषय वस्तु को कितने प्रतिशत भार प्रदान करना है?

8.7 प्रश्न बैंक का निर्माण (Construction of Question–Bank)

एसोसियेशन ऑफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज के द्वारा मोनोग्राफ ऑफ क्वेश्चन बैंकिंग फॉर यूनिवर्सिटीज में प्रश्न बैक निर्माण की निम्नयोजना प्रस्तावित की गई है

प्रश्न बैंक प्रायोजना:–

1. प्रथम अवस्था – विभिन्न विषयों में प्रश्नों के प्रकार का निर्धारण।
2. द्वितीय अवस्था – पिछले प्रश्न–पत्रों, अध्यापकों व प्रश्न–पत्रों के निर्माण विशेषज्ञों से प्रश्न एकत्रित करना।
3. तृतीय अवस्था – कॉलेजों, विश्वविद्यालयों व कार्यशालाओं में प्रश्न बनाना।
4. चतुर्थ अवस्था – प्रश्नों का चयन व छँटनी करना, प्रारम्भिक प्रश्न बैंक का निर्माण।
5. पंचम अवस्था – प्रश्नों / पदों को विशिष्ट रूप से निर्मित कार्डों में लिखना व कार्डेक्स ट्रे में रखना।
6. षष्ठम अवस्था – तैयार प्रश्नों का 20 प्रतिशत न्यादर्श चयन कर वास्तविक क्षेत्र में प्रयोग कर देखा जाता है।
7. सप्तम अवस्था – प्रश्नों / पदों का विभिन्न अध्यापकों द्वारा वास्तविक क्षेत्र में प्रयोग परीक्षण।
8. अष्ठम अवस्था – परीक्षण पदों को व्यवहार–विशेषताओं के आधार पर सम्मिलित करना।

8.8 खुली पुस्तक परीक्षा के लिये विषय वस्तु विशिष्ट प्रश्न बनाना (Construction of Content Specific Questions for Openbook Examination)

शैक्षिक मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका आधार निर्धारित शैक्षिक उद्देश्य होते हैं तथा इनसे सम्बन्धित विषय वस्तु, अधिगम क्रियाओं तथा मूल्यांकन के द्वारा बालकों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है, अत: जैसे ही शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण हो जाता है, मूल्यांकन प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। आधुनिक उद्देश्य आधारित मूल्यांकन विद्यार्थियों की अधिगम में पर्याप्तताओं व अपर्याप्तताओं की विवेचना व विवरण पर ध्यान केन्द्रित करता है। खुली पुस्तक परीक्षा हेतु विषय वस्तु पर आधारित विशिष्ट प्रश्न बनाये जाते हैं जिनका उदेश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में आये परिवर्तनों का जांचना है विभिन्न प्रकार के अनुदेशानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक हुई है जिन्हें अध्यापक अपनी अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में उपयोग में लेता है।

खुली पुस्तक परीक्षा में मूल्यांकन के समय पुस्तक के उपयोग करना मना नहीं है। परन्तु प्रश्न विशिष्ट होने के कारण प्रत्येक विद्यार्थी उसका उत्तर दे पाने में समर्थ होता है केवल वही विद्यार्थी उन प्रश्नों का उत्तर दे पाते हैं जिन्होंने पाठ्यवस्तु को पूर्व में ध्यानपूर्वक पढ़ा है तथा समझा भी है। इस प्रकार की मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रश्न बीच बीच में से तथा भाषा बदल कर बनाये जाते है जिससे छात्र के समझ की जाँच की जा सके। सीमित समय में प्रश्न

को समझना व उसका उत्तर ढूंढना प्रत्येक छात्र के लिये आसान काम नहीं होता है। विद्यालय स्तर पर भाषा में व्याकरण संबंधी प्रश्नों को हल करने के लिये डिक्शनरी का उपयोग करना

8.9 सारांश

वास्तव में मूल्यांकन एक अनवरत क्रिया है। इसका उद्देश्य केवल स्तर निर्धारण एवं वर्गीन्नति ही नहीं है। इससे छात्रों की प्रगति एवं कमजोरी के क्षेत्रों का भी परिचय मिलता है। शिक्षक उन अध्याप्य बिन्दुओं के पुन: शिक्षण का अयोजन करता है। जो वैयक्तिक कठिनाइयों के कारण छात्र नहीं सीख पाए। अत: आपसे आशा की जाती है कि आप मूल्यांकन को अधिक उद्देश्यनिष्ठ बनाकर विश्वसनीयता वैधता और व्यवहारिकता जैसे तत्वों का समावेश कर इसको प्रमाणिक स्वरूप प्रदान करेंगे।

- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में कमियों की पहचान के लिये निदानात्मक परीक्षण किया जाता है।
- निदानात्मक परीक्षण द्वारा छात्रों की विषय संबंधी कमजोरी, रूचि तथा आत्म विश्वास देखने के लिये उपयोगिता है।
- निदानात्मक परीक्षण शिक्षक द्वारा निर्मित होता है जो एक विशिष्ट कक्षा के लिये है।
- छात्रों की शैक्षिक कमियों को दूर करने के लिये उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है।
- बहु उद्देशीय प्रश्न–पत्र सेट्स का निर्माण, परीक्षा प्रणाली में गुणवत्ता लाता है।
- प्रश्न बैंक का निर्माण छात्रों को गहन एवं उपयोगी अधिगम को ओर प्रेरित करता है।

8.10 अभ्यास प्रश्न

1. नैदानिक परीक्षाओं के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।
   (Decribe the Objectives of Diagnostic test.)
2. विद्यार्थी के कम अंक आने के क्या कारण हो सकते?
   (Mention the reasons of achieving less marks by the students)
3. उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ व प्रक्रिया स्पष्ट कीजिये।
   (Explain the meaning and process of Remedial teaching)
4. मूल्यांकन के महत्व बताईये।
   (Give the importance of evaluation)
5. बहु उद्देशीय प्रश्न–पत्र सेट्स के निर्माण पर चर्चा कीजिए।
   (Discuss about the construction of multi–objective question paper sets)

8.11 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

(1.) **विंच, पी0** (1958), द आइडिया ऑफ सोशल सांइस, रूटलेज एण्ड कीगेन पॉल, लंदन।

(2.) **योकम, जी0 ऐ0 एण्ड सेमसन, आर0 जी0** (1948), मॉर्डन मेथेड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948 ।

(3.)**मेहता, डी0 डी0** (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।

(4.)**कोचर, एस0 के0** (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, स्टरलिंग पब्लिकेशन न्यु दिल्ली।

(5.)**इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0** (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस, न्यु दिल्ली।

(6.)**भट्ट, बी0 डी0**, मॉर्डन मेथेड्स ऑफ टीचिंग : कानसेप्ट एण्ड टेकनीक, कनिश्का पब्लि0।

इकाई–9

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अनुदेशात्मक सामग्री का विकास: पाठ्य पुस्तक का निर्माण एवं मूल्यांकन

Developement of Instructional materials in teaching of social studies: text book, its preparation and evaluation

संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 अनुदेशन का अर्थ एवं परिभाषा

9.2.1 अनुदेशनात्मक सामग्री का अर्थ

9.3 अनुदेशात्मक सामग्री की आवश्यकता एवं महत्व

9.4 पाठ्य पुस्तक का अर्थ एवं परिभाषा

9.5 पाठ्य पुस्तक की विशेषताएं

9.6 पाठ्य पुस्तक की उपयोगिता

9.7 पाठ्य पुस्तक चयन के सिद्धान्त

9.8 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का निर्माण

9.9 पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन

9.9.1 पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मापदण्ड

9.10 सारांश

9.11 अभ्यास प्रश्न

9.12 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

9.0 उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप–

- अनुदेशात्मक सामग्री का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व जान सकेंगे।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्य पुस्तक का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं बता सकेंगे।
- पाठ्य पुस्तक की उपयोगिता को स्पष्ट कर सकेंगे।
- पाठ्य पुस्तक चयन के सिद्धान्त जान सकेंगे।
- पाठ्य पुरतक के निर्माण को स्पष्ट कर सकेंगे।
- पाठ्य पुस्तक का मूल्यांकन कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना (Introduction)

सन् 1920 में सिडनी एल.प्रेसी ने एक ऐसी शिक्षण मशीन का निर्माण किया जिसके द्वारा छात्रों के सामने प्रश्नों की एक श्रृंखला प्रस्तुत हो जाती थी और उन्हें प्रश्न का उत्तर देने के एकदम बाद ही अपने उत्तर के सही या गलत होने की जानकारी मिल जाती थी। छात्र इससे अपनी प्रगति का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने निर्धारित उद्देश्यों की ओर जाने के लिए दुगुनी शक्ति से प्रेरित होकर प्रभावशाली ढंग से लग जाते थे। सन् 1950 के पश्चात बी.एफ. स्किनर ने सीखने पर उनके प्रयोग किये और एक स्व–शिक्षण **(Self Teaching)** सामग्री का निर्माण किया। इसी सामग्री को अभिक्रमित अध्ययन या अभिक्रमित अनुदेशन **(Programmed learning)** अथवा अभिक्रमित अधिगम का नाम दिया गया।

पाठ्य पुस्तक वह साधन है जिसके माध्यम से अध्यापक किसी निर्धारित पाठ्य चर्चा, विषय की व्यापकता एवं सीमाओं को कक्षा के सामने प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। माध्यमिक स्तर पर ज्ञान के विस्फोट से पाठ्य पुस्तक की परम आवश्यकता होती है। बालकों को सभी तथ्य उनके आयु व अधिगम क्षमता के अनुसार पाठ्य पुस्तक में पढ़ने को मिलते है। पाठ्य पुस्तक निर्धारित पाठ्यक्रम का विस्तृत रूप है जो पाठ्य वस्तु को सुनियोजित क्रम में प्रस्तुत करता है।

शैक्षिक प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्य पुस्तकें निर्धारित पाठ्यचर्चा का प्रतिनिधित्व करती है। पाठ्य पुस्तकें निर्धारित पाठ्य चर्या तथा संबंधित शिक्षण अधिगम प्रविधि को प्रस्तुत करती है। अत: जब शिक्षा नीति और पाठ्यचर्या में परिवर्तन होता है तो पाठ्य पुस्तकों में भी परिवर्तन हो जाता है।

9.2 अनुदेशन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning of Instruction and Definition)

जेम्स.ई. एस्पिच तथा बिर्लविलियम्स के अनुसार, "अभिक्रमित अनुदेशन अनुभवों का वह नियोजित क्रम है जो उद्दीपक अनुक्रिया सम्बन्ध के रूप में सक्षमता की ओर ले जाता है। **(Programmed instruction is a planned sequence of experience teaching to proficiency in terms of stimulus response relationship)**

स्टीफल ने, "ज्ञान के छोटे अंशों को एक तार्किक क्रम व्यवस्थित करने का अभिक्रम तथा इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया को अभिक्रमित अनुदेशन कहा है" **(The arrangements of tiny bits of knowledge in to logical sequence is called the programmed and its process is called programmed learning.)**

एन.एस. मावी **(N.S.MAVI)** कहते हैं, "अभिक्रमित अनुदेशन सजीव अनुदेशात्मक प्रक्रिया को स्वयं अधिगम अथवा स्वयं अनुदेशन में परिवर्तित करने की वह तकनीक है जिसमें विषय वसतु को छोटी–छोटी कडियों में विभाजित किया जाता है जिन्हें सीखने वालों को पढ़कर अनुक्रिया करनी होती है जिसके सही अथवा गलत होने का उसे तुरन्त पता चल जाता है। **(N.S. Mavi–"Programmed instruction is a technique of converting the**

live–instructional process in to self–learning or auto instructional readable materials is the term micro sequence of subject matter which the learners are required. to read, and make some responce, the correctness or incorrectness of which is told to him immediately.")

शिक्षा शास्त्री डी.एल.कुक **(D.L.COOK)** के मतानुसार "अभिक्रमित अधिगम स्व–शिक्षण विधियो के व्यापक सम्प्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त एक विद्या है" **(Programmed learning is a term sometimes used synonymeously to refer to the proader concept of auto instructional method")**

9.2.1 अनुदेशनात्मक सामग्री का अर्थ

विश्व के बदलते परिदृश्य ने शिक्षा के उदारीकरण की अवधारणा को जन्म दिया है। प्रतिस्पर्धा आधारित विश्व में शिक्षा का उदारीकरण एक तेजी से विकसित होता हुआ आयाम है।

विकासशील देशों में शिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक व्यक्तियों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या ने राष्ट्र निर्माताओं एवं शिक्षाविदों को, सब तक शिक्षा की पहुँच उपलब्ध कराने हेतु नूतन मार्ग खोजने के लिए विवश कर दिया है। उच्च शिक्षा पर प्रति विद्यार्थी खर्च एवं विकासशील राष्ट्रो के सीमित संसाधनों के मध्य सम्बन्ध एवं सन्तुलन बनाना आज एक चुनौती पूर्ण कार्य हो गया है। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिससे विकासशील राष्ट्र विकास के पथ पर तेजी से चलकर विकसित राष्ट्रो की श्रेणी में आ सकें।

परन्तु भारत जैसे विकासशील देशों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता के कारण आज भी मुद्रित अनुदेशनात्मक सामग्री पर ही जोर दिया जाता है। हमारे देश में शिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या है, जिन तक संसाधनों की सीमितता की स्थिति में मुद्रित पाठ्य–सामग्री की सहायता से ही पहुँचा जा सकता है।

अनुदेशनात्मक सामाग्री पाठ्यपुस्तक के पाठ या कक्षा में दिये गये व्याख्यान से भिन्न होती है।

9.3 अनुदेशनात्कम सामग्री की आवश्यकता एवं महत्व

छात्र–अध्यापक के मध्य व्यक्तिगत स्तर पर अन्त: क्रिया नही हो पाने की स्थिति में यह अनुदेशनात्मक सामग्री ही अधिगमकर्ता को विषय का ज्ञान कराती है। अनुदेशनात्मक सामग्री के आधार पर ही विद्यार्थी अपने विषय की विषय–वस्तु की तैयारी करता है। अधिकांश विद्यार्थी यह अनुभव करते है कि सही प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री उन्हे अध्ययन एवं सीखने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षक की समीपता के अभाव में अधिगमकर्ता को स्व–मूल्यांकन भी करना पड़ता है, ऐसे में अनुदेशनात्मक सामग्री में मूल्यांकन से सम्बान्धित प्रश्नों को पर्याप्त संख्या में दिया जाना अति आवश्यक हो जाता है। विविध प्रश्नों एवं क्रियाओं एवं अनुप्रयोगो द्वारा अनुदेशनात्मक सामग्री, अधिगमकर्ता को स्व–मूल्यांकन के अवसर प्रदान करती है।

एक अच्छी अनुदेशनात्मक सामग्री की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है :–

- आंतरिक एकरूपता।
- निश्चित सीमाएं।
- उपलब्ध ज्ञान से सामंजस्य।
- मितव्ययता।
- उपयोगिता।
- व्यापकता।
- अनुकूलता। .
- मूल्य ।
- समय ।

उपरोक्त बिन्दूओ के विश्लेषण से स्पष्ट जाता है कि पूर्ण नियोजिन अनुदेशनात्मक सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, व्यापक हो तथा छात्रों में सजनात्मक, रूचि और उत्साह को बढ़ावा देने वाली हो।

9.4 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning & Definitions of Text Book of Social Studies)

सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है– हाल क्वेस्ट के अनुसार, "पाठ्यपुस्तक अनुदेशीय अभिप्रायों के लिए व्यवस्थित किया गया एक प्रजातीय चिन्तन का अभिलेख है।"

(The text book is a record of recall thinking organised for instructional purpose)

2. बेकन के अनुसार, "पाठ्यपुस्तक कक्षा–कक्ष के प्रयोग के लिए निर्धारित की गयी पुस्तक है।"

(Text book is a book designed for classromm use)

3. लेंग के अनुसार, "पाठ्यपुस्तक किसी अध्ययन की प्रमुख शाखा के लिए एक मानक पुस्तक है।"

(Text Book is a standard book for any particular branch of study)

4. शैक्षिक शोध विश्व शब्द कोष के अनुसार, आधुनिक तथा प्रचलित अर्थ में पाठ्यपुस्तक सीखने वाला साधन है जिसका प्रयोग विद्यालयों तथा कॉलेजों में अनुदेशन कार्यक्रम को परिपूर्ण करने के लिए किया जाता है। सामान्य अर्थ में पाठ्यपुस्तक मुद्रित होती है इसकी जिल्द मजबूत होती है यह अनुदेशन अभिप्राय से प्रयुक्त की जाता है तथा इसको सीखने वालों के हाथों में सौंपा जाता है।

(In the modern sence and as commonly understood, the text book is a learning instrument usually employed in schools and colleges to support a programme if instruction in ordinary usage, The text–book is

printed. It is non–consumable, It is hard bound, it serves as avowed instructional purpose and it is load In the hands of the learner)

5. अमेरिकन पाठ्यपुस्तक प्रकाशन संस्थान के अनुसार पाठ्य पुस्तक विद्यालय या कक्षा हेतु छात्र तथा शिक्षक के प्रयोग के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जिसमें एकाकी विषय अथवा घनिष्ठ रूप से संबंधित विषयों पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत किया जाता है।

(" A true text book is one specially prepared for the use of pupil and teacher in a school or a class, presenting a course of stydy in a single or closed related subjects)

9.5 सामाजिक अध्ययन की पाठ्य पुस्तक की विशेषताएं (Merits or Charactristics of social studies text book)

1. पाठ्य पुस्तक में विषय सामग्री छात्रों हेतु प्रेरणास्पद होनी चाहिये।
2. पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त रूप से दृष्टांत, उदाहरण, चित्र दिए जाएं।
3. पुस्तक की भाषा शैली सरल, सुग्राहय, बोधगम्य एवं स्पष्ट होनी चाहिए।
4. पुस्तक की विषयवस्तु का छात्रों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं, उनके सामाजिक व प्राकृतिक परिवेश से सम्बन्धित होना आवश्यक है।
5. घटनाओं, तथ्यों एवं सिद्धान्तों के क्रियात्मक कार्यो, ग्राफ रेखाचित्र आकर्षक एवं स्पष्ट किया जाना चाहिये, इससे शिक्षण में रोचकता आती है।
6. पुस्तक के विभिन्न प्रकरणों क्रमबद्धता तथा सह सम्बद्धता या तारतम्यता स्थापित किया जाना चाहिये।
7. विभिन्न प्रकरण सरल से कठिन की ओर नामक सिद्धान्तों तथ्यों, घटनाओं, प्रावधानों के अनुसार क्रमबद्ध होने चाहिये। भाषा आयु व योग्यता के अनुकूल हो।
8. पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक क्रम में होनी चाहिये।
9. सामाजिक अध्यापक की पाठ्यपुस्तक किसी विशेषज्ञ, शिक्षाविद् एवं अनुभवी लेखक द्वारा लिखी होनी चाहिये तथा शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करती हो।
10. अच्छी पाठ्यपुस्तक शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम **(Syllabus)** पर आधारित होनी चाहिए ताकि पाठ्यवस्तु में क्रमबद्धता व तारतम्यता बनी रहे।
11. पुस्तक प्रकरणों का लक्ष्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना होना चाहिये। संवैधानिक प्रावधानों, नियमों, तथ्यों की यथार्थता पर जोर दिया जाए।
12. पाठ्यपुस्तक में छात्रों तथा शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु नवीन एवं उत्तम विधियों का वर्णन होना चाहिये। यह शिक्षक के लिए शिक्षण कौशल हेतु सहायक है।
13. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में संबंधित चित्र, रेखाचित्र मानचित्र तालिकाऐं तथा आंकड़े होने चाहिये। इनकी सहायता से बालक पाठ्य सामग्री शीघ्रता से समझ जाते हैं।

9.8 सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता (Utility of Social Studies text Book)

सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता निम्नलिखित है

1. इसके उपयोग से छात्र तथा शिक्षक दोनों का समय बचता है।
2. कम मूल्य पर छात्र महत्वपूर्ण तथ्य तथा सूचनाएं प्राप्त कर लेते है।
3. पाठ्य पुस्तक वह साधन है जिसके माध्यम से अध्यापक किसी विषय को कक्षा के सामने प्रस्तुत करने में समर्थ होता है।
4. उचित चुनाव की गई पाठ्यपुस्तक छात्रों को स्वाध्याय व प्रेरणा का अवसर देती है।
5. पाठ्य पुस्तकें पाठ की तैयारी में विशेष सहायक होती है।
6. गृह कार्य के लिए पाठ्य पुस्तको का उपयोग विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होता है।
7. इससे शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।
8. विषय वस्तु की सीमा ज्ञात हो जाती है।
9. यह एक सन्दर्भ सामग्री का स्वरूप है।

9.7 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक चयन के सिद्धान्त (Criteria for the Selection of Social Studies Text–Book)

सामाजिक अध्ययन की पाठ्य पुस्तक चयन में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है–

1. पाठ्य वस्तु का चयन एवं व्यवस्थ अ. छात्रों की दृष्टि से– उनकी रूचि, अवस्था, योग्यता, मानसिक स्तर, प्रवृतियों, अभिरूचियों तथा संवेगात्मक स्तर के अनुकूल हो।

ब. समाज की दृष्टि से – पाठ्यवस्तु का चयन समाज की दृष्टि से होना चाहिये जिससे पाठ्य पुस्तकें समान तथा आर्थिक विकास एवं उन्नति के लिए देश के नागरिकों में नवजागरण का संचार कर सकें।

स. पाठ्य वस्तु की व्यवस्था छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिये।

द. समस्याओं एवं शिक्षण–विधियों के अनुकूल व्यवस्था की जाये।

य. पाठ्य–वस्तु में मनोवैज्ञानिक क्रम स्थापित किया जाये।

2. पाठ्य वस्तु की बाहय आकृति – टाइप, जिल्द, कागज, पंक्तियों की संख्या, शब्दों के बीच की दूरी, आकार, मारजिन की चौडाई आदि की उचित व्यवस्थ पर ध्यान दिया जाये।

3. विषय–सूची – उसकी ग्राहयता महत्व तथा क्षेत्र।

4. प्रस्तुतीकरण – (i) जिसके द्वारा छात्रों में स्वाअध्ययन की आदतों का निर्माण एवं कुशलताओं का विकास हो सके।

(ii) दूसरे विषयों की पाठ्य वस्तु से सह–संबंध स्थापित करने में सहायक हो।

(iii) वर्ग तथा वैयक्तिक विभिन्नताओं की सन्तुष्टि करता हो।

(iv) सीखने के नियमों के अनुकूल हो।

(v) निर्देशित अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करने वाला हो।

(vi) शिक्षण–सूत्रों के अनुकूल हो।

(vii) छात्रों की विषय के प्रति रूचि जाग्रत करे।

(viii) छात्रों के मानसिक एवं संवेगात्मक स्वर के अनुकूल हो।

(ix) छात्रों के मानसिक विकास में सहायक हो।

5. शैक्षिक साधन – अभ्यास के लिए प्रश्न, निर्देश, सहायक पुस्तकों की सूची, अनुक्रमणिका, प्रस्तावना आदि की यथार्थता तथा उनकी उपयुक्तता।

6. उदाहरण – शाब्दिक तथा प्रदर्शनात्मक उदाहरण – सूची–पत्र, तालिकाये ग्राफ, रेखाचित्र एवं रेखाकृतियां, मानचित्र, आंकड़ो, उद्धरणों एवं सन्दर्भो की शुद्धता उपयुक्तता तथा पर्याप्त संख्या।

7. लेखक – उनके विचारों की स्पष्टता, मौलिकता एवं निष्पक्षता, उसका अनुभव एवं प्रसिद्धि, योग्यता तथा प्रकाशन और मनोविज्ञान का ज्ञान।

9.8 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का निर्माण (Development of Social Studies Text–book)

एक अच्छी पाठ्यपुस्तक का विकास करना बहुत ही कठिन कार्य है। इसका विकास एवं निर्माण बहुत ही सावधनी के साथ किया जाना चाहिए। एक अच्छी पाठ्यपुस्तक का निर्माण एवं विकास निम्न बातों पर निर्भर करता है:

1. **पाठ्यपुस्तक का निर्माण कर्ता** – पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया जाना चाहिए जिसे सामाजिक अध्ययन विषय का यथार्थ एवं पूर्ण ज्ञान हो। उसे उस कक्षा को पढ़ाने का अनुभव हो जिस कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक निर्मित की जानी हो। जिस कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक विकसित की जा रही हो। उस कक्षा के बालकों की मानसिक योग्यताओं, रूचियों, अभिरूचियों एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं का भी उसे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। निर्माणकर्ता का भाषा पर भी पूर्ण अधिकार होना चाहिए तथा उसमें लेखन योग्यता भी होनी चाहिए।

2. **पाठ्यक्रम पर आधारित** – सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का विकास करते समय शिक्षा विभाग द्वारा सामाजिक अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को ध्यान में रखना चाहिए। सामाजिक अध्ययन विषय के सभी अंगों से संबंधित पाठ्यसामग्री को इसमें स्थान दिया जाना चाहिए जिससे किसी भी कक्षा विशेष के बच्चों को एक ही स्थान पर संपूर्ण पाठ्यक्रम से संबंधित पाठ्यसामग्री उपलब्ध हो सके।

3. **उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो** – पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को भी ध्यान में रखना चाहिए। पाठ्यपुस्तक में दी गई शिक्षण एवं पाठ्यसामग्री की सहायता से ही अध्यापक सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत होता है। इसमें निहित विषय–वस्तु घटनाएं, तथ्य, सिद्धान्त, एवं अन्य जानकारी

सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति में विद्यार्थियों की सहायता करती है। अतः जो भी तथ्यात्मक सूचनाएं पाठ्यपुस्तक के लिए ग्रहण की जाएं वे उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो।

4. **पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु** – पाठ्य पुस्तक का निर्माण करते समय पाठ्यवस्तु का चयन करने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(i) पाठ्य वस्तु उस श्रेणी के बच्चों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए जिस श्रेणी के लिए वह लिखी जा रही है।

(ii) पाठ्य वस्तु बच्चों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं, उनके सामाजिक एवं प्राकृतिक परिवेश से संबंधित होनी चाहिए।

(iii) पाठ्य वस्तु बच्चों की जिज्ञासा तथा रूचि को बढाने वाली होनी चाहिए।

(iv) पाठ्य वस्तु सरल, स्पष्ट एवं सुबोध होनी चाहिए।

(v) अपने प्रदेश देश तथा विश्व की आवश्यक ऐतिहासिक, सामाजिक एवं भौगोलिक बातों का वर्णन होना चाहिए।

(vi) विषयवस्तु ऐसी हो जो विभिन्न प्रांतों एवं विभिन्न देशों के अन्योन्याश्रय संबंध को महत्व देती हो। भिन्न भिन्न स्थानों, प्रातों तथा देशों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक निर्भरता दिखाने वाली सामग्री पारस्परिक सदभाव विकसित करने में सहायक होती है।

(vii) अन्य प्रातों एवं देशों के निवासियों के रहन–सहन, विचार एवं धर्म आदि के विषय मे सही तथा निष्पक्ष प्रस्तुतीकरण होना चाहिए। ऐसे वाक्य नहीं होने चाहिए जिससे किसी भी धर्म या संप्रदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचे।

(viii) पाठ्य वस्तु में भारत के गौरवशाली इतिहास का दिग्दर्शन भी छात्रों को कराना चाहिए जिससे उनमें हीनता का भावना के स्थान पर आत्मगौरव की भावना का विकास हो सके।

(ix) पाठ्य वस्तु में ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण करते समय नाम तथा तिथियों की यथार्थता एवं शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए।

(x) सामाजिक अध्ययन की पाठ्य वस्तु देश के आदर्श भावी नागरिकों के निर्माण में सहायक होनी चाहिए।

5. **पाठ के अंत में सारांश** – पाठ्य पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अंत में सारांश के रूप में मुख्य–मुख्य बातें दोहराई हुई होनी चाहिए।

6. **अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए निर्देश** – पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक पाठ के अंत में स्वाध्याय विस्तृत अध्ययन, संदर्भ ग्रंथों का अवलोकन, समय रेखा, मानचित्र माडल आदि बनाने अतिरिक्त समवाय अध्ययन एवं अन्य स्व–क्रियाओं को करने की प्रेरणा देने के लिए शिक्षकों तथा छात्रों का मार्गदर्शन करने हेतु आवश्यक निर्देश देने चाहिए।

7. **अभ्यासार्थ प्रश्न** – प्रत्येक पाठ के अंत में पुनरावृत्ति गृहकार्य एवं अभ्यास के लिए निबंधात्मक लघु उत्तर तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाने चाहिए।

8. **पारिभाषिक शब्द आदि की व्याख्या** – प्रत्येक पाठ के अंत में उस पाठ में आए हुए विशिष्ट शब्दों, पारिभाषिक शब्दों, तिथियों आदि की स्पष्ट व्याख्या करनी चाहिए जिससे उस शब्द की स्पष्टता विषय वस्तु को भी स्पष्ट कर दे।

9. **चित्र, मानचित्र चार्ट आदि** – सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य–वस्तु को स्पष्ट करने के लिए जितना स्थान उपलब्ध हो, उसके अनुसार विषय से संबंधित, उपयुक्त तथा आवश्यक चित्रों का प्रयोग किया जाना चाहिए। ये चित्र एक ओर तो विषय को स्पष्ट करते हैं तथा दूसरी ओर पाठ्य पुस्तक को रोचक भी बनाते है।

10. पाठ्य वस्तु की व्याख्या

(i) पाठ्य पुस्तक में पाठ्य वस्तु से संबंधित विभिन्न पाठ सरल से कठिन की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर आदि शिक्षण सूत्रों के अनुसार व्यवस्थित किए जाने चाहिए। प्रारंभ में सरल पाठ और बाद में कठिन पाठ क्रमबद्ध रूप में होने चाहिए।

(ii) पाठ्य वस्तु की व्यवस्था में मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक क्रम का भी ध्यान रखना चाहिए।

(iii) पाठ्य पुस्तक में विभिन्न पाठों की व्यवस्था इस क्रम से की जाए कि विभिन्न पाठों में पारस्परिक संबंध बना रहे।

(iv) विषय वस्तु की व्यवस्था प्रकरण के अंश के सिद्धांत पर होनी चाहिए अर्थात किसी भी श्रेणी में पढाए जाने वाले प्रकरण के अंशों का पिछली तथा अगली कक्षा से पूर्ण संबंध हो।

(v) पाठ्य पुस्तक के पाठ समान अनुपात में होने चाहिए। यह न हो कि एक पाठ एक कालांश में पूर्ण हो जाए और दूसरा पाठ एक सप्ताह में। पाठों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाए कि उनकी लंबाई धीरे–धीरे बढ़े।

(vi) पाठ का आकार छोटे बच्चों के लिए छोटा तथा बड़े छात्रों के लिए बड़ा होना चाहिए।

11. पाठ्य पुस्तक की भाषा–शैली

(i) पाठ्य पुस्तक की भाषा सरल एवं शुद्ध होनी चाहिए जो कि बच्चों को आसानी से समझ में आ सके।

(ii) वाक्यों की लंबाई बच्चों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तक के पाठों के वाक्य छोटे हों परंतु माध्यमिक कक्षाओं के लिए अत्यंत छोटे वाक्य उचित नहीं होते।

(iii) भाषा तथा वाक्य व्याकरण की दृष्टि से भी शुद्ध होने चाहिए।

(iv) पुस्तक रूचिकर एवं मनमोहक शैली में लिखी होनी चाहिए। लेखन शैली ऐसी हो कि पाठ को पढ़ने में बच्चों का मन लगे। संवादात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियां बच्चों को ज्यादा अच्छी लगती है।

(v) तकनीकी शब्दों को अंग्रेजी में साथ ही दे देना चाहिए।

12. पाठ्यपुस्तक की छपाई तथा गेटअप

(i) मुखपृष्ठ–पाठ्यपुस्तक का मुखपृष्ठ **(Title Page)** सचित्र और आकर्षक होना चाहिए। मुखपृष्ठ से विषय वस्तु का भाव भी प्रकट होना चाहिए। मुख पृष्ठ से पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता का संकेत मिलता है। इस पर पुस्तक का पूरा नाम छपा होता है। प्रकाशक का नाम, लेखक का नाम तथा कक्षा विशेष का नाम छपा होना चाहिए।

(ii) पाठ्य पुस्तक का आकार ऐसा होना चाहिए जिससे छात्रों को पुस्तक पढ़ने तथा अपने स्कूल बैग में रखने आदि में सरलता हो। छोटी कक्षाओं के लिए बडे आकार की तथा बड़ी

कक्षाओं के लिए थोड़ा छोटे आकार की पुस्तकें ठीक रहती है। आजकल सामान्यतया $7'' \times 9\frac{1}{2}$ इंच की पुस्तकें ज्यादा प्रचलन में है।

(iii) पाठ्य पुस्तक का निर्माण करने के लिए कागज अच्छे स्तर का होना चाहिए। सफेद चिकना कागज अच्छा रहता है।

(iv) पाठ्य पुस्तक की जिल्द बहुत आकर्षक तथा मजबूत होनी चाहिए। उसकी सिलाई ऐसी हो कि पुस्तक आसानी से खोलकर पढी जा सके।

(v) पाठ्य पुस्तक की छपाई अच्छे स्तर की होनी चाहिए। छपाई के लिए सीधे अक्षरों का प्रयोग करना चाहिए। अक्षर स्पष्ट तथा अच्छी तरह पढ़े जाने योग्य होने चाहिए। छपाई छात्रों की आयु के अनुसार होनी चाहिए। वर्णों तथा चित्रों का आकार, शीर्षक आदि आवश्यकतानुसार उचित आकार में छापने चाहिए।

13. **पाठ्य पुस्तक निर्माण संबधी अन्य आवश्यक बातें** – सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय पाठ्य वस्तु, भाषा शैली तथा छपाई से संबंधित बातों के अतिरिक्त कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए:

(i) **भूमिका या प्रस्तावना या विषय प्रवेश (Preface)** – पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में पाठ्यपुस्तक की प्रस्तावना प्रस्तुत की जानी चाहिए इसमें लेखक यह दर्शाता है कि उसने पुस्तक लिखने का निर्णय क्यों लिया है। प्रस्तावना में लेखक पाठ्यपुस्तक की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करता है तथा पुस्तक किस कक्षा विशेष के लिए लिखी गई है इस बात का संकेत देता है। यहाँ पर लेखक उन सभी अन्य विद्वानों शिक्षा शस्त्रियो एवं स्रोतों के प्रति आभार भी व्यक्त करता है जिनकी सहायता पुस्तक लिखने में ली गई है।

(ii) **विषय सूची (Table of Contents)** – प्रस्तावना के बाद पाठ्यपुस्तक में विषयसूची दी जाती है जिसमें पाठ्यपुस्तक में संकलित या व्यवस्थित सभी अध्यायों की सूची क्रमबद्ध रूप में दी जाती है। और प्रत्येक अध्याय के सामने उसके पृष्ठ का संकेत भी दिया जाता है कि वह अध्याय किस पृष्ठ नंबर पर छपा है।

(iii) **परिशिष्ट (Appendix)** – पाठ्यपुस्तक के विभिन्न अध्यायों को लिखते समय उनके विभिन्न तथ्यों तथा विचारों से संबंधित विषय सामग्री कई बार साथ–साथ देना संभव नहीं हो पाता है। उन्हें परिशिष्ट के रूप में बाद में दिया जाता है, जैसे– सामाजिक अध्ययन से संबंधित दृश्य–श्रव्य सामग्री व उसके मिलने के स्थान के बारे में सूचना, जनसंख्या संबंधी आंकड़े, घटनाओं तथा तिथियों की सूची आदि। इनकी सहायता से पाठ के तथ्यों को समझने में सहायता मिलती है।

(iv) **सूचीपत्र (Index)** – पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पाठों को लिखते समय जिन अन्य लेखकों के ग्रंथों को प्रसंग के रूप में लिया गया है या जिनके विचारों एवं कथनों को उद्धृत किया गया है उनके नाम एवं उन द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची वर्णमाला के वर्णों के क्रमानुसार दी जाती है। इससे यह लाभ होता है कि यदि कोई अध्यापक किसी पाठ से संबंधित विषय का विस्तृत अधययन करना चाहता है तो वह उन लेखकों की पुस्तकों का अध्ययन कर लाभ उठा सकता है।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर यदि पाठयपुस्तक का निर्माण किया जाएगा तो उससे शिक्षकों एवं छात्रों को वास्तविक लाभ हो सकेगा। कोठारी आयोग ने कहा है– एक ऐसी पाठ्यपुस्तक जो एक सुशिक्षित एवं सुयोग्य विषय विशेषज्ञ द्वारा लिखी गई हो और जिसके निर्माण में मुद्रण स्तर, चित्र एवं सामान्य सज्जा के प्रति समुचित सावधानी प्रयोग की गई हो, विद्यार्थियों की रूचि को जाग्रत करेगी और अध्यापक के कार्य में सहायक सिद्ध होगी।

इस प्रकार सही ढंग से निर्मित पाठ्यपुस्तक सभी के लिए उपयोगी हो सकेगी। लेकिन उसका पूरा लाभ तभी हो सकेगा जब पाठ्यपुस्तकों की छपाई करने वाले प्रकाशक निम्न बातों को ध्यान में रखेंगे।

(i) **पाठ्य पुस्तक का मूल्य** – पाठ्यपुस्तक का मूल्य उतना ही रखा जाए जिससे कि बच्चे आसानी से उसे खरीद सकें। प्रकाशको को बहुत ज्यादा लालच में न पडकर सही कीमत में पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए। इसके लिए सरकार को नियंत्रित मूल्य पर कागज उपलब्ध कराना चाहिए ताकि प्रकाशक पाठ्यपुस्तक की कीमत ऐसी तय करें जो बच्चों की सामर्थ्य के भीतर हो।

(ii) **पाठ्यपुस्तकों का वितरण** – पाठ्यपुस्तक बच्चों के लिए बाजार में आसानी से उपलब्ध भी होनी चाहिए। कई बार पुस्तक विक्रेता पुस्तकों की कमी दिखाकर पुस्तक पर छपी हुई कीमत से ज्यादा पैसे वसूल करते है। सरकार को इस बात की पूरी निगरानी रखनी चाहिए कि पुस्तकें यथेष्ट मात्रा में पुस्तक विक्रेता के यहां उपलब्ध हों।

9.9 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन

इस विषय की पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित गुणों का आधार बनाया जा सकता है–

क्या पाठ्यपुस्तक छात्रों के स्तर के अनुसार है' क्या पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त सामग्री छात्रों के लिए उपयोगी है' क्या मनोवैज्ञानिक ढंग से लिखी है? भाषा शैली एवं शब्दावली कैसी है? क्या पर्याप्त उदाहरण दिए गए है? क्या पाठ्यपुस्तक सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करती है? क्या प्रकरण तर्क संगत है? क्या पुस्तक सामाजिक अध्ययन के प्राप्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ्य है? आदि गुणों के आधार पर सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन किया जाना चाहिये।

9.9.1 सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मापदण्ड (Norms/Scale for Evaluation of text–book in social studies)

शर्मा एवं माहेश्वरी महोदय ने सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तको के मूल्यांकन के मापदण्ड निम्न प्रकार बताए हैं।

1. प्रकाशन सामग्री–

अ. पुस्तक का नाम ब. लेखक अथवा लेखक गण स. प्रकाशक द. पृष्ठ संख्या य. पुस्तक का मूल्य

2. यांत्रिक तत्व

अ पुस्तक का आधार एवं साज सज्जा ब. जिल्द की सुदृढता स. कागज द. छपाई य. मारजीन की चौड़ाई

3. संगठन

अ. पाठों की सामान्य योजना ब. पाठों का तर्क सम्मत विभाजन स. पाठों की पूर्णता द. सारांश

4. प्रस्तुतीकरण

अ. शैली ब.भाषा स. स्थूलता द. निष्पक्षता य. प्रायोगित शब्द

5. उदाहरण

अ. उदाहरणों की शुद्धता ब. गुण स. छात्रों के लिए उपयुक्त उदाहरण।

6. चित्र, मानचित्र, रेखा चित्र, चार्ट तथा ग्राफ

अ. संख्या, ब. शुद्धता स. स्थूलता द. आकार

य. उपयुक्त तथा महत्व र स्पष्टता

7. प्रश्न

अ पाठ्यवस्तु से सम्बन्ध ब. उनकी विस्तृता स. शिक्षक तथा छात्रों की दृष्टि से महत्व द. उनकी प्रेरणात्मक शक्ति।

8. परिशिष्टता तथा अनुक्रमणिका

अ. व्यवस्थापन ब. विषय सूची स. व्यावहारिकता द. पूर्णता य. महत्व

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद **(NCERT)** द्वारा एक अच्छी पाठ्यपुस्तक के मापदण्ड हेतु निम्नलिखित बिन्दु निर्धारित किए हैं–

1. पाठ्यपुस्तक का नियोजन **(Planning of Text Book)**

इसके अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक के निर्माण एवं प्रकाशन संबंधी सभी पक्ष सम्मिलित किए जाते है जैसे–

अ. शिक्षण संबंधी उद्देश्य **(Instructional Objectives)**

ब. विषय वस्तु के प्रति उपक्रम **(Approach of the subject)**

स. संगठनात्मक प्रतिरूप **(Organisation Pattern)**

द. पुस्तक का आकार **(Size of Book)**

2. पाठ्य पुस्तक का चयन (Selection of Contract)

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु आते है।

अ. पाठ्यपुस्तक की शुद्धता **(Accuracy of content)**

ब. पाठ्य पुस्तक की गुणवत्ता **(Adequacy of content)**

स. अद्यनातन की पाठ्यवस्तु **(Up to Date content)**

द. पाठ्यक्रम की समविष्टता (Coverage of the syllabus)

य. विद्यालय में समग्र शिक्षाक्रम औचित्य (Fitness in to the total curriculum of the subject in the school)

र. सामाजिक व राष्ट्रीय एकीकरण के परिवेश का ग्रहण (Adoption of the perspective of social and National Integration)

ल. मानव समाज के विकास में सम्प्रत्यय का ग्रहण (Adoption of the concept of Development of Human society)

व. वांछित अभिवृत्तियों का विकास (Inculation of Desirable Attitudes)

3. विषय सामग्री का संगठन व प्रस्तुतीकरण (Organization and Presentation of the Material)

अ. अध्यायीकरण व अनुच्छेदीकरण (Chapterization and Presentation of the Paragraphing)

ब. तार्किक संगठन (Logical Organization)

स. प्रस्तुतीकरण का स्वरूप **(Form of Presentation)**

द. अधिगम सिद्धान्तों से अनुरूपता (Conformity of the Principle of Learning)

य. भाषा की उपयुक्तता एवं शुद्धता (Suitablity and Accuracy of Language)

र. शिक्षण निर्देशन **(Teaching Guidance)**

4. दृष्टान्त सामग्री (Illustrations Materials)

अ. प्रासंगिकता ब. शुद्धता स. उपयुक्तता द. विविधता य. नियोजन का समय

5. अभ्यास कार्य निर्माण (Framing of Experises)

अ. विषय वस्तु की समाविष्टता

ब. दत्त कार्य (Home work/Assignment) की व्यावहारिकता

स. दत्त कार्य का नियोजन एवं प्रकार

6. पुस्तक की भौतिक विशेषताएं (Physical Features of the book)

अ. बाहय आवरण तथा साज–सज्जा

ब. स्थायित्व एवं जिल्द बंदी

स. उपयोगिता

द. मुद्रण एवं भाषायी शुद्धता।

7. सहायक विशेषताएं (Auxiliary Features)

इसके अनतर्गत शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु निर्देश सम्मिलित हैं।

9.10 सारांश (Summary)

पाठ्य पुस्तक वह साधन है जिसके माध्यम से अध्यापक किसी विषय को कक्षा के सामने प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। पाठ्य पुस्तक से शिक्षण व अधिगम सरल व सुनियोजित होता है। पाठ्य पुस्तकें निर्धारित पाठ्यचर्या का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षा नीति और

पाठ्यचर्या में परिवर्तन पुस्तकों में परिलक्षित होता है। एक उत्तम पाठ्यपुस्तक छात्रों को चिन्तन एवम प्रयोग के लिए और निष्कर्ष निकालने के लिए अवसर देती है।

सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक की महत्वपूर्ण भूमिका है। पाठ्यपुस्तक प्रतिपुष्टि क्रिया में सहायक है। शिक्षण अधिगम संसाधन है। सूचनाओं का संग्रह है। एक मार्गदर्शक, अभिप्रेरक का संग्रह है। एक संदर्भ सामग्री है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक एक अनुदेशक, मानक व पुनरावृति के लिए उपयोगी है।

सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक पाठ्यक्रम के अनुसार हों, अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित हो विषय वस्तु का संगठन उचित हो पाठ्यपुस्तक की मूल्यांकन उसके चयन में सहायक है। इसके लिए पुस्तक की विषय सामग्री व भौतिक आधार की विवेचना की जाती है।

9.11 अभ्यास प्रश्न (Evaluation Question)

1. एक उत्तम सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक की पांच विशेषतायें लिखिए **Write fire charactersticer of a good social text book.**

2. सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन के आधार लिखिए। Write the basis of the evaluation of asocial studies text book.

3. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक चयन के सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए। **Explain the principles of selection of social study.**

4. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक के निर्माण के पद लिखिऐ। **Mention the steps of construction of social study.**

9.12 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

1. विंच, पी. (1950), द आइडिया ऑफ सोषण साइंस, रूटलेज एंड की गेन पॉल लंदन।
2. योकम, पी. ए. एंड सेमसन, आर. पी. (1948), मॉडर्न मेथेडस एंड टेक्नीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948।
3. मेहता, डी. डी. (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन।
4. कोचर एस.के. (2003), दि टीचिंग, ऑफ शोषण साइन्स, स्टरलिंग पब्लिकेशन न्यू दिल्ली।
5. इंडिगर करलाव एंड भास्कर राव डी, (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज, सक्सेज फूली, डिस्कवरी पब्लिकेशन हाऊस, न्यू दिल्ली।
6. भट्ट, बी. डी. मॉडर्न, मेथेडस ऑफ टीचिंग, कनसेप्ट एंड टेक्नीक, कनिष्का पब्लि.।
7. डा. मंगल उमा (2006), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
8. त्यागी, एम. पी. सिंह, बिजेन्द्र, त्यागी ओंकार सिंह (2000) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, अरिहंत, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
9. शर्मा, बी.एल. माहेश्वरी बी.के. (2005) सामाजिक अध्ययन शिक्षण धार लाल बुक डिपो, मेरठ।

इकाई 10

सामाजिक अध्ययन शिक्षण से संदर्भित विशिष्ट शिक्षण सहायक सामग्री उसका निर्माण एवं मूल्यांकन Content specific teaching aids in social studies, its preparation and evaluation

संरचना (Structure)

10.0 उद्धेश्य (Objectives)

10.1. प्रस्तावना (Introduction)

10.2. अवधारणा (Concept)

10.3. उपयोगिता महत्व (Utility and importance)

10.4. शिक्षण सामग्री का चयन

10.5. सावधानियाँ (Precaution)

10.6. वर्गीकरण (Classification)

10.7. शिक्षण सहायक सामग्री का मूल्यांकन) Evaluation of teaching aid material)

10.8. मूल्यांकन (Evaluation)

10.9. सारांश (Summary)

10.10. अभ्यास प्रश्न (Evaluation question)

10.11. संदर्भ सूची (References)

10.0 उद्धेश्य (Objectives)

इस इकाई को पढ़ने के बाद शिक्षण सहायक सामग्री से सम्बन्धित निम्नलिखित बिन्दुओं को समझ सकेगें :–

(अ) शिक्षण सहायक सामग्री की अवधारणा

(ब) सामाजिक अध्ययन शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री का महत्व तथा आवश्यकता

(स) शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग में ली जाने वाली सावधानियाँ

(द) शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार

(न) शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करना

(य) आवश्यकतानुसार उचित शिक्षण सहायक सामग्री का चयन तथा निर्माण

(र) शिक्षण सहायक सामग्री का मूल्यांकन

10.1 प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी विषय के पाठ को रोचक, सारगर्भित एवं सरल प्रस्तुतिकरण के लिये उपयुक्त सहायक सामग्री का होना आवश्क है। इसके प्रयोग से पाठ में एक प्रवाह बना रहता है जटिल

तथ्यों को सरलता से समझाया जा सकता है और विभिन्न विषयों से जोड़ते हुए विषयवस्तु की महत्ता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। इसके अभाव में शिक्षण निरस हो जाता है और विषयवस्तु सरल एवं बोधगम्य नहीं बन पाती है। अत: इसका प्रयोग आवश्यक है।

10.2 शिक्षण सहायक सामग्री की अवधारण

प्राचीनकाल से अब तक प्रत्येक शिक्षक का यह प्रयास रहा है कि वह कुछ ऐसे साधनों का प्रयोग करे जिससे छात्रों का ध्यान विषय वस्तु की ओर केन्द्रित हो सके तथा आसानी से विषयवस्तु को ग्रहण कर सकें। इसके लिए वह अनेक विधियों तथा शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करता हैं। शिक्षण सहायक सामग्री मौखिक भी हो सकती है तथा दृश्य–श्रव्य भी। इनका प्रभाव शिक्षण पर तभी अच्छा हो सकता है जब शिक्षक इनका प्रभावशाली उपयोग करे। इस पाठ में इसी विषय पर चर्चा की जायेगी।

अर्थ – विस्तृत अर्थ में वह सभी कुछ जो एक अध्यापक द्वारा अपने शिक्षण को सुगम, सहज एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए तथा एक विद्यार्थी द्वारा अच्छी तरह सीखने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। शिक्षण सहायक समाग्री के नाम से जाना जाता है। इसका प्रयोग मनोरंजन के लिये नहीं किया जाता है, बल्कि मानसिक क्रिया में वृद्धि के लिए किया जाता है।

10.3 उपयोगिता एवं महत्व (Utility or Importance)

सामाजिक अध्ययन मानव तथा उसके अपने पर्यावरण के साथ संबंधों का अध्ययन है। इस प्रकार यह सामाजिक रूचियों तथा क्रियाओं से जुड़ा हुआ एक पूर्ण व्यावहारिक विषय है। परन्तु इसकों पूर्ण रूप से समझने के लिए एक समृद्ध पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है। इस पृष्ठभूमि के निर्माण में शिक्षण–सहायक समाग्री सहायता प्रदान करती है। इसे छात्र देखकर, सुनकर, छूकर, चख कर, सूंघ कर तथा सोच विचार कर अपने विभिन्न इन्द्रियों से जब प्रतिक्रिया करते है तो उन्हे सरलता पूर्वक नवीन ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है। ये साधन शिक्षण में निम्नलिखित दृष्टिकोणों से उपयोगी है :–

10.3.1 इन्द्रियों से अनुभव प्राप्त करना – (Attaining Knowledge through various sense organs)

ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान की द्वार होती है। जो ज्ञान इनसे प्राप्त किया जाता है वे स्थायी अथवा दीर्घकालिक होते है। अत: पाठ इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाना चाहिये कि बालकों को अनेक प्रकार के इन्द्रियानुभव प्राप्त हो सके। इस कार्य में शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग का बहुत महत्व होता है।

10.3.2. विषयवस्तु की स्पष्टता (Clarity of the subject matter) –

सामाजिक अध्ययन विषय से सम्बन्धित बहुत से ऐसे विचार, सिद्धान्त तथा प्रक्रियाये होती है जिन्हें मौखिक रूप से समझना कठिन होता है परन्तु दृश्य–श्रव्य साधनों की सहायता से इन्हे आसानी से समझाया जा सकता है।

10.3.3. प्रत्यक्ष अनुभव का विकल्प (Substitute for direct experience)

सामाजिक अध्ययन–शिक्षक को ऐसे विषयवस्तु भी पढ़ाने पड़ते है जो भूतकाल अथवा बहुत दूर की घटनाओं से संबंधित होते है अथवा जिन्हें वास्तविक रूप में कक्षा में लाना सम्भव नही होता है जैसे हाथी या रेलगाड़ी। ऐसी स्थिति में उनका चार्ट, चिन्ह अथवा मॉडल प्रस्तुत कर बहुत आसानी से छात्रों को वह विषय वस्तु बोधगम्य बनाया जा सकता है।

10.3.4. प्रत्यक्ष अनुभवों के प्रेरक के रूप में (Supplement to direct experience)

ये साधन प्रत्यक्ष अनुभवों के पूरक होते हैं। कोई उद्योग, रेलवे स्टेशन, मेला, बस स्टैण्ड आदि को दिखाने के बाद इनसे सम्बन्धित चलचित्र या चित्र दिखाने से छात्रों का अनुभव स्थायी होगा तथा उसमें उनकी रूचि भी जागृत हो सकेगी। परिणाम स्वरूप छात्र उसके बारे में और जानने का प्रयास करेगा।

10.3.5. अभिप्रेरणा (Motivation) तथा रोचक बनाना (Making the subject interesting)

शिक्षण सहायक सामग्री विषयवस्तु को रोचक बना देती है जिससे छात्रों की उसमें रूचि जागृत हो जाती है। इससे बालक स्वप्रेरित होकर विषयवस्तु को जल्दी, सरलता से सीख लेते है तथा देर तक याद रखते है।

10.3.6 कक्षा का वातावरण सजीव एवं सक्रिय बनाना (Making classroom environment live and active) – विद्यार्थी तथा अध्यापकों के मध्य अनुभवों के आदान प्रदान तथा छात्रों को अधिगम अनुभव प्रक्रिया में सक्रिय साझेदार बनाने में शिक्षण सहायक सामग्री अधिक से अधिक अनुभव प्रदान करते है। परिणाम स्वरूप कक्षा का वातावरण सजीव एवं सक्रिय बन जाता है।

10.3.7. पिछड़े बालको की सहायता (Help to weak children) – ये साधन पिछड़े बालको के अधिगम में बहुत सहायता करते हैं। ऐसे बालक चित्रों, फिल्मों, मॉडलो तथा रेडियो आदि की सहायता से नइ बातों को सरलता से सीख लेते है।

10.3.8. कल्पना एवं निरीक्षण शक्ति का विकास (Development of imagination and observation skills) – प्रतिबिम्ब शिक्षण का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से छात्रों की कल्पना, निरीक्षण, विष्लेषण, संश्लेषण आदि शक्तियों का विकास होता है। उन्हें अनुभवों का विस्तृत आधार मिलता है जिससे विश्लेषण, तुलना, सामन्यीकरण तथा संश्लेषण की क्षमता विकसित होने में सहायता मिलती है।

10.3.9. अनुशासनहीनता की समस्या के हल में सहायक (Helpful in solving the problem of Indiscipline) – व्याख्यान तथा पाठ्यपुस्तक विधि छात्रों को कक्षा में निष्क्रिय बना देती है, वे ऊब तथा नीरसता अनुभव करने लगते है। परिणाम स्वरूप कक्षा में अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न हो जाती है। शिक्षण सहायक सामग्री इसके विपरीत कक्षा में रोचकता लाते है कक्षा के वातावरण को सजीव बना देते है जिससे छात्रों का ध्यान अधिगम की ओर केन्द्रित हो जाता है तथा अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न नही होती है।

10.3.10. सामाजिक अध्ययन के उद्धेश्यों की प्राप्ति में सहायक (Helpful in the realisation of the objectives of social studies teaching) – सामाजिक अध्ययन, समाज और व्यक्तियों के सम्बन्धों तथा सामाजिक परिवेश से परिचित कराने वाला एक पूर्ण क्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक विषय है। ज्ञान, कौशल, रूचि और दृष्टिकोण सम्बन्धी जो परिवर्तन छात्रों के व्यवहार में लाने के प्रयास किये जाते है वे शिक्षण सहायक सामग्री की सहायता से आसानी से लाये जा सकते है।

10.4 शिक्षण सामग्री का चयन

सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री का बहुत महत्व है। अत: इसका चयन व प्रयोग करना भी बहुत आवश्यक है। इनके चयन के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित है

1. सहायक शिक्षण सामग्री अधिगम केसाथ समेकित **(Integrated)** होनी आवश्यक है।
2. यह विद्‌यार्थी की उम्र, बुद्धि और अनुभवों के अनुरूप होनी चाहिए।
3. इसमें उपयोग में लेने वाली भाषा विद्‌यार्थी की समझ में आ जाए इस प्रकार की होनी चाहिए।
4. सहायक शिक्षण उत्प्रेरित और अत्यधिक सूचनाएं प्रदान करने वाली होनी चाहिए।
5. सहायक शिक्षण सामग्री वास्तविक, उचित होनी चाहिए।
6. सहायक शिक्षण सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो आसानी से उपलब्ध की जा सके जब कब कभी भी उसकी आवश्यकता हो।
7. सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग स्थनीय दशाओं और आवश्यकता के अनुरूप हो सके ऐसा होना आवश्यक है।
8. चयन करने वाली शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग करने से पूर्ण सन्तुष्टि की प्राप्ति होनी चाहिए।
9. सहायक शिक्षण सामग्री विषय के प्रकरण से संबंधित होनी चाहिए।
10. सहायक शिक्षण सामग्री के द्‌वारा प्रकरण का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत होना चाहिए।
11. अत्याधिक साधनों का अनावश्यक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

10.5 सावधानियॉ (Precaution)

शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करते समय बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। यदि इस्तेमाल करते समय सावधानी नहीं रखी जाए तो शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग प्रभावी नहीं हो सकेगा। इसलिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है:–

- शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण के उद्धेश्यो की प्राप्ति में सहायक हो।
- छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव के विकल्प के रूप में अधिक से अधिक प्रत्यक्ष एवं यथार्थ अनुभव देने में समर्थ हो।
- शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग करने के लिये आवश्यक परिस्थितियों को पहले से ही जुटाने के प्रयास किये जाने चाहिये ।
- शिक्षण सहायक सामग्री को प्रयोग करने से पूर्व पूर्वाभ्यास कर लेना चाहिये।

- जिस सहायक सामग्री का उपयोग करना है उनसे सम्बन्धित विषयवस्तु पहले से पढ़कर आने के लिए छात्रों को निर्देशित किया जाना चाहिये।
- जिस पाठ्य अंश के समय शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना हो उसे उसी समय छात्रों के सामने लाना चाहिये। सभी सामग्री को एक साथ अनावश्यक रूप से प्रदर्शित नही किया जाना चाहिये।
- शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग छात्रों के लिए अधिक से अधिक लाभदायी है या नही इस सम्बन्ध में सुनिश्चित होना चाहिये।
- शिक्षण सहायक सामग्री के बाद उसके अनुभव को प्रभावशाली बनाने के लिए अनुवर्ती कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिये।

10.6 शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व में हमने देखा कि जो भी शाब्दिक अथवा अशाब्दिक साधन शिक्षण कार्य में विषयवस्तु को छात्रों को समझाने में सहायता करते है वही शिक्षण सहायक सामग्री हैं। इस प्रकार शिक्षण सहायक सामग्री को निम्नानुसार वर्गीकृत कर सकते हैं :–

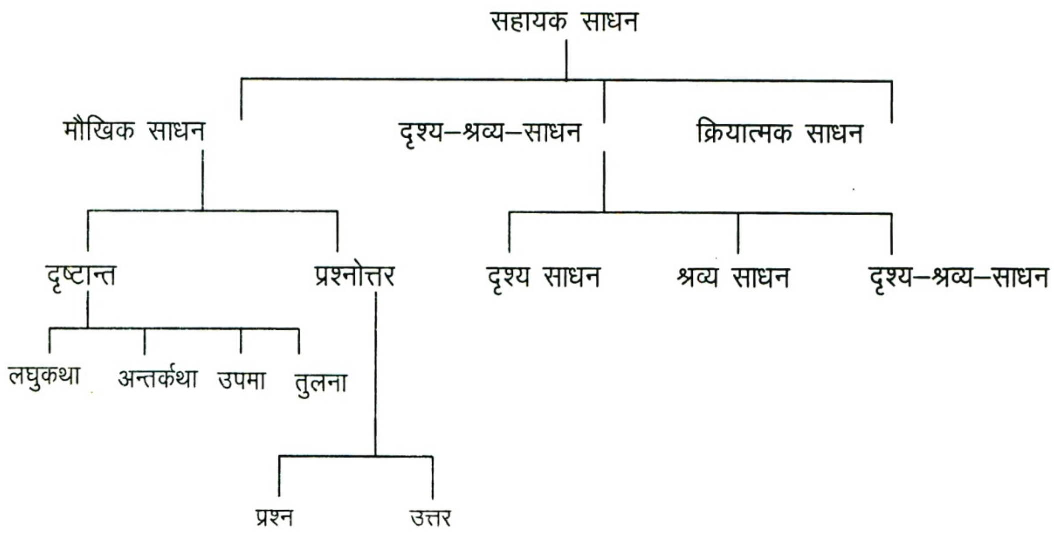

(a) मौखिक साधन (Verbal Aids)

दृष्टान्त (उदाहरण) (Illustration or Example)

शिक्षण में उदाहरण का प्रयोग छात्रों को ज्ञान का स्पष्टीकरण कराने एवं भावों को हृदयंगम कराने मे होता है। जितने अच्छे प्रकार के दृष्टान्त का प्रयोग शिक्षण में होता है उतनी ही सफलता पूर्वक बालक को पाठ समझ में आ जाता है। दृष्टान्त में लघुकथा, अन्तर्कथा, उपमा–उपमेय,तुलना इत्यादि का उपयोग किया जाता है। दृष्टान्त का उपयोग व्याख्या करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जब बालक पाठ को समझने में कठिनाई अनुभव करते है उस समय उदाहरण का उपयोग बालको की कठिनाई को हल कर देता है।

प्रश्नोत्तर (Question Answer)

प्रश्नोत्तर शिक्षण का एक महत्व पूर्ण अंग है। उचित प्रश्न पूछना तथा उसका उत्तर छात्रों से प्राप्त करना शिक्षक की कुशलता का परिचायक है। पाठ की प्रस्तावना, विकास, पुनरावृत्ति एवं मूल्यांकन आदि सभी में प्रश्नों की आवश्यकता पड़ती है। प्रश्न पूछना तथा उत्तर देना द्विधुर्वीय क्रिया है। अध्यापक छात्रों से प्रश्न करता है तो छात्र भी अपनी समस्या समाधान के लिए अध्यापक से प्रश्न कर सकता है।

b) दृश्य–श्रव्य–साधन (Audio–Visual–Aids)

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में उपलब्ध परिस्थितियों, साधनों एवं विषय सम्बन्धी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रकार की दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जाता है। **)I) दृश्य साधन (Visual–Aids)**

दृश्य का शाब्दिक अर्थ है जिसे आखों से देखा जा सके। अत: ऐसे सभी साधन जिनको देखकर बालक पाठ को सरलतापूर्वक समझ ले दृश्य साधन कहलाते है। ये दो प्रकार के होते है। **प्रथम – प्रक्षेपी साधन** (Projective Aids) – इनका प्रयोग किसी चित्र या प्रक्रिया को पर्दे पर चित्र के रूप में दिखाये जाने के लिए किया जाता है। इसमें स्लाइड, फिल्म पट्टी, फोटो ग्राफिक फिल्म, मूक चलचित्र आदि आते है।

द्वितीय – अप्रक्षेपी साधन (Non Projective Aids) – ये वे उपकरण है जो उन पर अंकित लिखायी चित्र या आकृतियों के माध्यम से बिना प्रक्षेपण के भी इगन प्राप्त कराने में मदद कर सकते है। इसमें श्याम पट्ट, बुलेटिन बोर्ड, फ्लेनलबोर्ड, चार्ट, चित्र, रेखाचित्र, छायाचित्र, मानचित्र, ग्लोब, समय रेखा, कार्टून, पोस्टर, माडल, नमूने आदि आते है।

(II) श्रव्य साधन (Audio – Aids)

दृश्य की भाँति श्रव्य का अर्थ है– जिसे सुना जा सके। श्रवण का कार्य श्रवणेन्द्रियों द्वारा सम्पन्न होता है। इसलिए वे सभी साधन जिन्हे सुनकर बालक पाठ को सरलता एवं शीघ्रता से सीख सके श्रव्य साधन कहलाते है। इसमें ग्रामोफोन, रेडियों, टेपरिकार्ड, रिकार्ड प्लेयर आदि सम्मिलित होते है।

(III) दृश्य–श्रव्य साधन (Audio - Visual Aids)

इस वर्ग में वे साधन आते है जिनमें बालको की दृश्य और श्रव्य दोनो ही इन्द्रियों का प्रयोग एक साथ होता है। इसमें टेलीविजन, वीडियों, शिक्षण,–मशीन, कम्प्यूटर, कठपूतली का प्रदर्शन आदि सम्मिलित होते है।

C) क्रियात्मक साधन (Activity Aids)

इन साधनों के प्रयोग से मात्र देखने, सुनने के अतिरिक्त स्वयं करके सीखने के भी अवसर उपलब्ध हो सकते है। इनमें नाटक, कवि सम्मेलन, अभिनय, संग्रहालय, मेले, प्रदर्शनियों तथा पर्यटन एवं भ्रमण आदि का आयोजन, विभिन्न सामुदायिक साधनों एवं स्त्रोतो का प्रयोग आदि सम्मिलित है। अब उपरोक्त सभी शिक्षण सहायक सामग्री का विस्तार से वर्णन किया जा रहा है।

दृश्य साधन (Visual Aids) अप्रक्षेपी साधन (Non Projective Aids)

1. **श्यामपट्ट लेखन (Use of Black Board)**

   इसका प्रयोग पाठ को प्रस्तावित करने से लेकर उसके प्रस्तुतिकरण, पुनरावृत्ति, मूल्यांकन तथा गृहकार्य देने में प्रभावशाली प्रयोग किया जाता है। परन्तु यह तभी सम्भव है जब इसका समुचित उपयोग शिक्षक द्वारा अध्यापन में किया जाये।

2. **बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board)**

   इनका प्रयोग कक्षा तथा कक्षा के बाहर विद्यार्थियों की सूचना के लिए विभिन्न प्रकार की लिखित, चित्रात्मक और मुद्रित सामग्री को भली–भाँति प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया जाता है। यह लकड़ी के फ्रेम में साफ्टवुड या कार्क मैटेरियल आदि की शीट लगाकर बनाया जाता है। जिससे पिन आसानी से गाड़ा जा सके। सुरक्षा के लिए शीशे या जाली युक्त फ्रेम लगाकर ताले का प्रबन्ध कर दिया जाता है। इस पर वास्तविक पदार्थ के नमूने, क्रियाओं के माडल, चित्र, आर्ट, मानचित्र, रेखाचित्र, कार्टून, पोस्टर, समाचार पत्रों या पत्र–पत्रिकाओं में मुद्रित महत्व पूर्ण खबरों की कतरने, सामुदायिक क्रियाओं, शैक्षिक तथा रूचिकर क्रियाओं आदि के आयोजन सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की चित्र प्रदशिक्त किये जाते है।

3. **फ्लैनल बोर्ड (Flanal Board)**

   यह लकड़ी या फ्लाईवूड का बोर्ड होता है जिस पर फ्लैनल का कपड़ा लगा होता है जिसमें ऊन के रेशे होते है जो खुरदुरे होते हैं। इसी कारण जब इसे किसी अन्य खुरदुरे तल वाले टुकड़े से मिलाया जाता है तो दोनो टुकड़े चिपक जाते है। चिपकने वाले दुसरे टुकड़े पर लिखा जाता है अथवा चित्र बनाया जाता है। इस पर विषय वस्तु से सम्बन्धित नियम, परिभाषा, सिद्धान्त, चित्र, ग्राफ आदि फ्लैश कोर्ड के रूप में लिखकर चिपका दिया जाता है। इस प्रकार विषयवस्तु आसानी से छात्रों के सामने प्रेषित किया जाता है।

4. **वास्तविक पदार्थ (Real Objects)**

   अधिगम अनुभव प्रदान करने मे प्रत्यक्ष अनुभवों का कोई विकल्प नही है। भ्रमण तथा संग्रहालय आदि इसी आवश्यकता की पूर्ति के साधन है। कक्षा में पढ़ाते समय भी वास्तविक पदार्थो का प्रदर्शन उपयोगी होता है। विभिन्न प्रकार के डाक टिकट, मूर्तियाँ, छोटी–छोटी शीशियाँ मे रखी गयी विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तैसे दाल, अनाज, मिट्टी के नमूने आदि। ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी देने के लिए सामाजिक अध्ययन में डाकटिकट, सिक्के तथा मूर्तियों का उपयोग किया जा सकता है। डाक टिकटों पर जारी करने का समय, जिस घटना या महापुरूष के लिए जारी किया जाता है उसके जन्म तथा मृत्यु की तिथि अंकित होती है।

5. **चित्र (Pictures)**

   वस्तुओं तथा घटनाओं के प्रत्यक्ष विकल्प के रूप में चित्र एक सुलभ एवं सस्ता साधन होता है। इससे हर प्रकार की विषय वस्तु को स्पष्ट, प्रभावपूर्ण तथा बोध गम्य बनाया जा सकता है। जैसे इतिहास पढ़ाते समय अशोक, अकबर, झाँसी की रानी तथा शिवाजी

का चित्र प्रस्तुत कर उनकी वेशभूषा, व्यक्तित्व तथा उनके कार्यों का सजीव वर्णन छात्रों के सामने रखा जा सकता है। इसी प्रकार सामाजिक अध्ययन का शिक्षक उचित चित्रों का प्रयोग कर अपने शिक्षण को प्रभावी तथा सुस्पष्ट कर सकता है। चित्रों का उपयोग करते समय ध्यान रखना चाहिये कि चित्र समय, स्थान तथा सरल है। चित्र दो प्रकार के होते है, स्थिर तथा चलचित्र।

6. ग्राफ (Graph)

इनका प्रयोग अधिकतर एक चित्र सूचनाओं, सर्वेक्षण, परिणामों और संख्यात्मक या गुणात्मक आंकड़ो आदि को ठीक प्रकार प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। इसमें रेखचित्र, दण्डचित्र, वृत्तचित्र, चित्रात्मक ग्राफ आदि सम्मिलित होते है।

7. समय रेखा (Time Line)

समय रेखा एक प्रकार के ऐसे रेखा ग्राफ का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें सरल रेखाओं के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं के तारतम्य, घटने के समय तथा अन्तराल को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की महत्व घटनाओं की समय रेखा

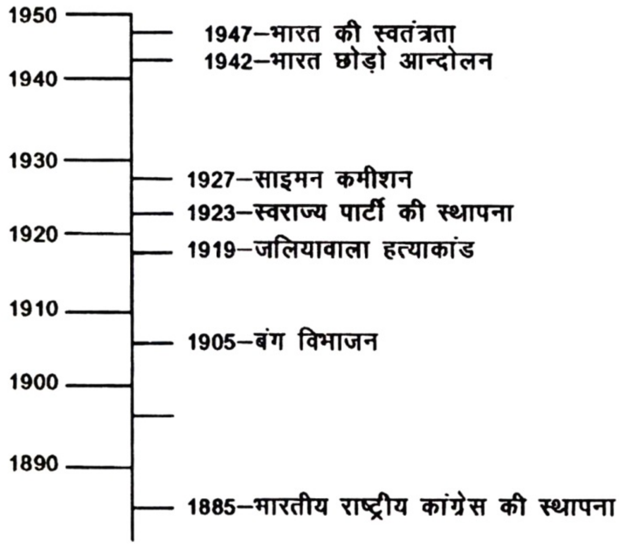

8. चार्ट (Chart)

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में चार्टो का बहुत महत्व है। ये चार्ट बने बनाये बाजार से भी उपलब्ध हों जाते है तथा इनका निर्माण भी किया जा सकता है। चार्ट वृक्ष की आकृति वाले, समय चार्ट, प्रवाह चार्ट, तालिका चार्ट, समस्या चार्ट तथा चित्रात्मक चार्ट आदि विभिन्न प्रकार के हो सकते है। इसका प्रयोग विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के विषय वस्तु को स्पस्ट करने के लिए प्रस्तावना, प्रस्तुतिकरण, पुनरावृत्ति एवं गृहकार्य देने आदि कि लिए किया जा सकता है।

9. मानचित्र (Map)

इसका प्रयोग सामाजिक अध्ययन में उन बिन्दुओं के अध्ययन में किया जाता है जिनका सम्बन्ध पृथ्वी के विभिन्न स्थानों या क्षेत्रों से होता है। जैसे कोई घटना पृथ्वी के किस भाग में घटित हुई या कोई वस्तु विश्व के किस स्थान पर मिलती है इत्यादि को मानचित्रो की सहायता से पढ़ाया जा सकता है। मानचित्र प्राकृतिक तथा राजनीतिक दोनो प्रकार के हो सकते है।

10. ग्लोब (Globes)

मानचित्र की सहायता से हम पृथ्वी और उसके भागो की स्थिति से परिचित होने का प्रयत्न अवश्य करते है परन्तु इससे पृथ्वी के वास्तविक स्वरूप का आभास नही होता। ग्लोब द्वारा यह कार्य प्रभावपूर्ण ढंग से पूरा किया जा सकता है। ग्लोब एक प्रकार से पृथ्वी के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित करने वाला मॉडल है। ग्लोब भौतिक, राजनैतिक, भौतिक तथा राजनैतिक दोनो तथा खाका ग्लोब **(Outline Globe)** चार प्रकार के होते है। इनका आवश्यकतानुसार सामाजिक अध्ययन शिक्षण में प्रयोग किया जा सकता है।

11. आरेख या रेखा चित्र (Diagrams)

ये रेखाओं तथा प्रतीकों के माध्यम से बनाई हुई ऐसी आकृतियाँ होती है जो अपनी चित्र तथा संकेतात्मक भाषा द्वारा विषय वस्तु के अभिव्यक्ति में काफी सहायक सिद्ध होती है। इनके प्रयोग में लाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमें प्रयुक्त संकेतात्मक भाषा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को ठीक तरह से समझ में आ सके तथा वे इसके माध्यम से सम्बन्धित विषय भली भाँति समझ सके। परन्तु रेखाचित्र में बने आकार किस बात की और संकेत करते है इनका प्रारम्भिक ज्ञान उन्हे होना चाहिये।

12. व्यंग चित्र (Cartoons)

व्यंगचित्र ऐसी सामग्री है जो व्यंग के माध्यम से जीवन की कठोर वास्तविकताओं, समस्याओं तथा उनके हल को प्रभावशाली तरीके से सामने रखने में सक्षम होती है। इनको प्रयोग में लाना अधिक खर्चीला भी नही होता है क्योंकि ये आसानी से अखबारों एवं पत्र पत्रिकाओं से प्राप्त किये जा सकते है। छात्रों की सहायता से इन्हें बनवाया भी जा सकता है।

13. पोस्टर (Posters)

पोस्टरों में वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों या घटनाओं से सम्बन्धित ऐसी चित्रात्मक अभिव्यक्ति होती है जो किसी विशेष संदेश या अपील को समाज या अपने दर्शकों के सामने बड़े ही प्रभावपूर्ण ढंग से रखने की क्षमता रखती है। सामाजिक अध्ययन में पाठों को प्रस्तावित करने, प्रस्तुतीकरण के समय महत्वपूर्ण विचार, घटना तथा प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित हेतु, विषयवस्तु का समवायदैनिक जीवन तथा अन्य विषयों के साथ करने में तथा भावनात्मक पक्षो से सम्बन्धित व्यवहार परिवर्तन में महत्व पूर्ण भूमिका निभा सकता है।

14. माडल या प्रतिमान (Models)

जब वास्तविक पदार्थों और उनसे सम्बन्धित प्रतिक्रयाओं को प्रत्यक्ष रूप से दिखा पाना संभव नही होता उस अवस्था मे ऐसा विकल्प छात्रों के सामने रखा जाता है वास्तविक वस्तु नही होते हुए भी वास्तविक वस्तु की प्रकृति तथा उसके क्रिया कलापों की अभिव्यक्ति सर्वोत्तम ढंग से कर सके। सामाजिक अध्ययन में माडल का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जा सकता है :–

- जब वास्तविक वस्तु का आकार छोटा हो।
- जब वास्तविक वस्तु का आकार बड़ा हो तथा कक्षा में लाना सम्भव नही हो।
- जब वास्तविक वस्तु वर्तमान में उपलब्ध न हो।
- वास्तविक वस्तु काल्पनिक हो अथवा देख पाना संभव नही हो। जैसे–ताजमहल, बांध, पनडुब्बियाँ, टैंक्स आदि।
- जबकि विभिन्न क्रियाओं को प्रदर्शित करना हो। जैसे – दिन रात को होना, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण आदि।

प्रक्षेपी साधन (Projective Aids)

एपीडाइ स्कोप तथा प्रोजेक्टर – विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्टरों से – (स्लाइड या फिल्म स्ट्रिप्स प्रोजेक्टर, शिरोपरि प्रोजेक्टर, अपारदर्शी प्राजेक्टर) दृश्यात्मक सामग्री को पर्दे पर बड़े रूप में दिखाया जाता है। स्लाइड तथा फिल्म स्ट्रिप्स प्रोजेक्टर में केवल पारदर्शी पदार्थो को ही पर्दे पर प्रक्षेपित किया जा सकता है जबकि स्पीडास्कोप तथा अपारदर्शी प्रोजेक्टर से चित्र, ग्राफ, मानचित्र, रेखा कृतियाँ, मुद्रित तथा हस्तलिखित सहायता से बिना स्लाइड बनाये पर्दे पर दिखाये जा सकते है। विभिन्न प्रकार के माडल, नमूने, वास्तविक पदार्थो को भी पर्दे पर दिखाया जा सकता है। वास्तविक पदार्थो मे सिक्के, पण्डुब्बियाँ, दस्तावेज, सर्वेक्षण रिपोर्ट, आदि सम्मिलित किये जा सकते है।

II श्रव्य साधन (Audio Aids)

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए श्रव्य साधनो के रूप में रेडियो, ग्रामोफोन, टेप रिकार्डर, रिकार्ड प्लेयर आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

1. रेडियो (Radio)

रेडियो मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा प्राप्ति का भी एक अमूल्य साधन है। प्रथम, सामान्य प्रसारण (General Broad casts) द्वितीय, विशेष प्रसारण। सामान्य प्रसारण मे किसी विषय विशेष से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करने हेतु औपचारिक रूप से प्रसारण नही होता है परन्तु उनसे विषय सम्बन्धी शैक्षणिक लाभ अवश्य होता है। विभिन्न स्तरों के समाचार, वार्ताए, भाषण, संगीत एवं साहित्यिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक रूचि के कार्यक्रम, इस सामान्य प्रसारण मे आते है। विशेष प्रसारण विशेषज्ञों की सहायता से प्रसारित किये जाते है। इनमे निश्चित क्रम से व्यवस्थित किये हुए विषय विशेष के पाठ होते है जिन्हे दूर–बैठे छात्र सुनकर आवश्यक ज्ञान प्राप्त करते है।

2. टेप रिकार्डर (Tape–Recorder)

रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों को तभी सुना जा सकता है जब प्रसारण हो रहा हो। परन्तु श्रव्य साधन के रूप में ऐसे साधन का उपयोग सामाजिक अध्ययन मे अधिक प्रभावशाली हो सकता है। जिसके द्वारा जिस समय जिस प्रकार के प्रकरण सम्बन्धी ज्ञान की आवश्यकता हो, वह तुरन्त सुनने को मिल जाये। टेप रिकार्डर इसमें बहुत उपयोगी साधन हो सकता है। इस पर रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम, विभिन्न व्यक्तियों के साक्षात्कार, प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित ध्वनियाँ, गोष्ठियों एवं परिचर्चाओं का विवरण, भाषण तथा प्रवचन रिकार्ड किये जा सकते है। चित्र, चार्ट, स्लाईड आदि के प्रदर्शन के समय विवरण देने के समय इसका प्रयोग कर सकते है।

3. डी.वी.डी. प्लेयर (D.V.D. Player)

इसमें कैसेट के स्थान पर सी.डी. का प्रयोग किया जाता है। इसका भी शिक्षण में प्रभावी उपयोग किया जा सकता है। विभिन्न समस्याओं पर आयोजित वार्ताएं, भाषणों तथा नाटको आदि का सी.डी. तैयार कर आवश्यकतानुसार शिक्षण मे प्रयोग किया जा सकता है।

दृश्य–श्रव्य साधन (Audio - Visual Aids)

1. चलचित्र या फिल्म (Motion Picture or Film)

इसका प्रदर्शन दृश्य–श्रव्य साधनों के अन्तर्गत आता है, क्योकि इस साधन में किसी फिल्म को जब प्रोजेक्टर की सहायता से पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता है तब दृश्य के साथ – साथ फिल्म पर रिकार्ड की गयी सम्बन्धित आवाज भी सुनायी देती है। इनके प्रदर्शन से वास्तविक और प्रत्यक्ष अनुभवों की प्राप्ति को बहुत ही सहज बनाया जा सकता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में भूतकाल की घटित घटनाओं, व्यक्तियों, वस्तुओं, प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित समस्याओं, सम–सामयिक घटनाओं प्रक्रिया तथा प्रभाव को प्रभावी ढंग से दिखाया जा सकता है।

2. वीडियो (Video)

यह एक बहुत ही सशक्त एवं प्रभावशाली दृश्य – श्रव्य साधन और उपकरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें तीन प्रकार के उपकरणो की आवश्यकता पड़ती है। टेलीविजन की दृश्य प्रस्तुति के लिए वीडियो कैसेट इसमें देखने तथा सुनने की सामग्री टेप होती है तथा वीडियो कैसेट रिकार्डर **(V.C.R.)** एवं वीडियो कैसेट प्लेयर **(V.C.P.)** वी.सी.आर. से रिकार्डिग तथा दृश्य की प्रस्तुति दोनो सम्भव होता है जबकि वी.सी.पी. से केवल रिकार्ड किये गये दृश्य की सजीव प्रस्तुति सम्मव होती है। सामाजिक अध्ययन विषय के लिए बाजार से कैसेट खरीदे जा सकते है। इन सी. ई. आर. टी. सी. एट., डायट आदि ने शैक्षिक कैसेट तैयार भी किये है जिन्हें प्रयोग किया जा सकता है। इससे अध्यापक अपने इच्छानुसार अपने समय से इनका प्रयोग कर सकता है।

3. कम्प्यूटर्स (Computers)

कम्प्यूटरों की गिनती सबसे अधिक विकसित दृश्य–श्रव्य शिक्षण साधनों और उपकरणें मे की जाती है। सामाजिक अध्ययन शिक्षक टेपरिकार्डर तथा टेलीविजन की भाँति ही

कम्प्यूटर का प्रयोग भी सुविधा पूर्वक कर सकता है। अब तो कम्प्यूटर शिक्षण भी अनिवार्य हो गया है तथा विद्यालयों में भी इन्हें उपलब्ध करवाया जा रहा है। इससे विद्यार्थी स्वयं प्रयत्नों से खेल–खेल मे ही ज्ञान प्राप्त कर लेते है।

4. **टेलीविजन (Television)**

रेडियो तथा टेपरिकार्डर के द्वारा तो केवल सुनकर ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जबकि टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रम रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते है। उपग्रह सेवाओं ने आज दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रसार क्षेत्र को बहुत अधिक व्यापक बना दिया है। इससे प्रसारित देश विदेश के समाचार सामयिक विषयों पर आयोजित परिचर्चाएं, गोष्ठियाँ वार्ताएं, साक्षात्कार, संगीत, नृत्य, साहित्य, एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, कृषि कार्यक्रम, महिला जगत, घर–परिवार, संसद की प्रक्रिया आदि कार्यक्रमों का सामाजिक अध्ययन शिक्षण में बहुत महत्व है। सामाजिक अध्ययन शिक्षक इन प्रसारणों से सम्बन्धित अनुसरण कार्यक्रम आयोजित कर छात्रों को अधिगम अनुभव में सहयोग कर सकता है।

5. **कठपुतली का खेल (Puppet Show)**

कठपुतली को खेल भी इसी श्रेणी मे आता है क्योंकि इसमें मंच पर कठपुतलियाँ दिखायी देती है परन्तु पीछे से संचालक पात्रों के अनुरूप आवाज बदल कर बोलता है। यह बहुत ही मनोरंजक होता है। छात्र इसमें बहुत रूचि ले सकते है। सामाजिक अध्ययन का अध्यापक सामाजिक समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, बिमारियों, भौतिक पर्यावरणीय समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों का समाज पर प्रभाव, प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव आदि से सम्बन्धित विषय वस्तु को बहुत ही सरलता से छात्रों के सामने रख सकता है तथा समस्या समाधान भी बता सकता है।

क्रियात्मत्क साधन (Activity Aids)

1. **नाटकीयता (Dramatization)**

इसके अन्तर्गत नाटक, ड्रामे, जुलूस, मूक अभिनय, अनुकरण आदि क्रियाये आती है। इनके आयोजन से छात्रों को कल्पना तथा अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। इनमें भाग लेने से रूचि, मौलिकता तथा पहल शक्ति का विकास होता है। इससे बालको को नियोजन, संगठन तथा योजनापूर्ति का अवसर मिलता है। नाटकीयता सरल हो तथा सारी प्रक्रिया मं शैक्षणिक महत्ता को सर्वोच्चता दी जाये।

2. **स्कूल का संग्रहालय (School Museum)**

सामाजिक अध्ययन के छात्रों को देश के बड़े–बड़े अजायबघर दिखाने से छात्रों को बहुत लाभ मिलता है। इसलिए प्रत्येक विद्यालय को अपना सुव्यवस्थित भूतकाल पर प्रकाश डालने वाला संग्रहालय होना चाहिये। इसके लिए छात्रों तथा अध्यापको दोनो को विद्यालय के लिए पर्याप्त सामग्री एकत्रित करने का प्रयास करना चाहिये। विद्यालय के संग्रहालय में चित्र, चार्ट, नक्शे, ग्राफ, आकृतियाँ, सिक्के, यंत्र, टिकटे, वेशभूषा, शस्त्र, पत्र–पत्रिकायें, रिकार्ड, हस्तलेख तथा स्तम्भ इत्यादि एकत्रित करके, विषयानुसार

वर्गीकृत कर रखना चाहिये। इन्हे कक्षा में भी ले जाकर दिखा सकते है अथवा छात्रों को संग्रहालय मे लाकर दिखा सकते है।

3. **विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन (Resource Visitors)**

   सामाजिक अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को (जैसे– डॉक्टर, बैंक मैनेजर, सरंपच, पोस्ट मास्टर, स्थानीय पुलिस इन्सपेक्टर, इलाके के एम.एल.ए. आदि को) बुलाकर भाषण दिलवाया जा सकता है। वे अपने भाषण मे छात्रों को अपना कार्य तथा समाज के विकास में अपने योगदान को बता सकते है ।

4. **शैक्षिक पर्यटन (Educational Tour)**

   इसके आयोजन से सामाजिक जीवन की कुशलताओं के साथ–साथ नियोजन, क्रियान्वयन, मूल्यांकन समीक्षा करना आदि भी छात्र सीखते है। सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक पर्यटन के माध्यम से छात्रों को वर्तमान तथा भूतकाल की वास्तविक वस्तुओं, मकानों स्थानों आदि की जानकारी मिलती है ।

5. **त्योहारों, मेलों तथा राष्ट्रीय दिवसों को मनाना (Celebration of Festivals and National days)**

   इनके मनाने से छात्रों को काफी लाभ होता है। छात्रों में उत्सुकता उत्पन्न होती है। वे उस त्योहार, मेला तथा राष्ट्रीय दिवसों के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करते है ।

10.7 शिक्षण सहायक सामग्री का मूल्यांकन

सामाजिक अध्ययन में प्रयुक्त सहायक सामग्री का मूल्यांकन निम्नलिखित आधार पर किया जा सकता है:–

अ– जो भी सहायक सामग्री प्रयोग में लायी जाये वह पाठ के विकास में सहायक हो ।

ब– शिक्षण के उद्धेश्यों को पूर्ण करने में सहायक हो ।

स– व्ययशील न हो ।

द– स्वस्पष्ट हो ।

10.8 सारांश

अर्थ – सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में प्रयुक्त दृश्य–श्रव्य साधनों से अभिप्राय उन शिक्षण साधनों से है जो एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों के प्रयोग द्वारा अधिगम प्रक्रिया को सहज बना देते है ।

उद्धेश्य –

1. विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान की प्राप्ति ।
2. विषयवस्तु की स्पष्टता ।
3. स्थायी एवं प्रभावपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति ।

4. शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों तथा सूत्रों का उपयोग ।
5. समय एवं परिश्रम की बचत ।
6. कक्षा के वातावरण कोसरल एवं सजीव बनाना ।
7. प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने का सर्वोत्तम विकल्प ।
8. मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक ।
9. व्यक्तिगत भिन्नताओं की सन्तुष्टि में सहायक।
10. विशिष्ट विद्यार्थियों के आवश्यकता पूर्ति में सहायक ।
11. अनुशासनहीनता की समस्या के हल में सहायक ।
12. नवीन शिक्षण विधियों तथा तकनीको के उचित प्रयोग में सहायक ।
13. सामाजिक अध्ययन के उद्धेश्यों की प्राप्ति में सहायक ।

सावधानियाँ –

चयन सम्बन्धी, प्रयोग करने सम्बन्धी पूर्व तैयारी, उद्धेश्यों की प्राप्ति सम्बन्धी तथा अनुवर्ती कार्यक्रम सम्बन्धी सावधानी रखनी चाहिये ।

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

1. मौखिक साधन 2. दृश्य–श्रव्य साधन 3. क्रियात्मक साधन

1. मौखिक साधन – उदाहरण (दृष्टान्त) तथा प्रश्नोत्तर

2. दृश्य–श्रव्य साधन – दृश्य साधन 2. श्रव्य साधन 3. दृश्य–श्रव्य साधन

3. क्रियात्मक साधन – नाटक, शैक्षिक यात्रा, उत्सव मनाना, भाषण।

10.9 अभ्यास प्रश्न

1. दृश्य–श्रव्य साधन क्या हैं? सामाजिक अध्ययन शिक्षण मे इनका क्या उपयोग है?
   What is an audio–visual aid? Discuss the importance of utilizing such aids in the teaching of social studies?)
2. स्कूल में संगहालय क्यो होना चाहिये? यह सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं?
   What are the chief purposes of having a school museum? How far can it be an effective aid in teaching social studies?
3. सामाजिक अध्ययन में आप ग्राफ का प्रयोग किस प्रकार कर सकते हैं? ग्राफ की मुख्य किस्में तथा इनका उपयोग भी लिखे।
   How would you make use of graphs as a tool of classroom teaching? Discuss the kind of graphs and its use in social studies.)

10.10 संदर्भ ग्रन्थ

1. Ahluwalia, S.L; Audio Visual Hand Book, delhi: NCERT, 1967
2. Chakarbarti, S.K; Audio visual: Education in India New Delhi; Oxford & I.B.H. 1962
3. Bining, Arther C. and Bining, David H. Teaching the Social Studies in secondary schools (3rd ed.), New York, M.C. Graw Hill, 1952
4. Moffatt, Maurice P.Social Studies Instruction, New York: Prentice Hall, 1950
5. Wesley, E.B.: teaching Social Studies in High Schools, Boston: D.C. Heath and company, 1958.

9.12 सन्दर्भ पुस्तकों की संख्या

1. विंच पी. (1958) द आइडिया ऑफ सोषल साइंस, सटलेज एंड की जेलपॉल लंदन ।
2. योकम, जी.ए. एंड सेमसन, आर.पी. (1948) मॉडर्न मेथैडस एंड टेक्वीक्स ऑफ टीचिंग न्यूयार्क 1948।
3. मेहता, डी.डी. (2003) सामाजिक अध्ययन शिक्षण मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन ।
4. कोचरी एस.के. (2003) दि टिचिंग ऑफ सोशल साइंस, स्टरलिंग पब्लिकेशन न्यू दिल्ली ।
5. इंटीगर मरलाव एंड भास्कर राव डी. (2003) टीचिंग सोशल स्टडीज सक्सेज फुली, डिस्कवरी पब्लिकेशन हाऊस, न्यू दिल्ली ।
6. भट्ट, बी.डी. मॉडर्न, मेथैडस ऑफ टीचिंग, कानसेप्ट एंड टेक्नीक कनिश्का पब्लिकेशन ।
7. डा. मंगल उमा (2006) "सामाजिक अध्ययन शिक्षण आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली ।
8. त्यागी, एम.पी. सिंह विजेन्द्र, त्यागी ओंकार सिंह (2000) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, अरिहंत प्रकाशन, जयपुर
9. शर्मा, बी.एल. माहेश्वरी बी.के. (2005) "सामाजिक अध्ययन शिक्षण, धाल लाल बुक डिपो, मेरठ ।

इकाई 11

सामाजिक अध्ययन के अध्यापक की विशेषताएं, समस्याएं एवं समाधान

Qualities of a good social studies teacher, problems and solution

संरचना

11.0 उद्येश्य (Objective)

11.1 परिचय (Introduction)

11.2 सामाजिक अध्ययन के शिक्षक का महत्व (Importance)

11.3 सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के कार्य (Functions)

11.4 सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के गुण (Qualities)

- 11.4.1 सामान्य गुण
- 11.4.2 विशिष्ट गुण
- 11.4.3 व्यावसायिक गुण

11.5 सामाजिक अध्ययन के शिक्षक की समस्या एवम् समाधान (Problems and Solutions)

11.6 सारांश (Summary)

11.7 अभ्यास प्रश्न

11.8 सन्दर्भ ग्रथ सूची (Reference)

11.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई को पढने के बाद आप निम्नलिखित बिन्दुओं को जानने में सक्षम हो जायेगे :–

- सामाजिक अध्ययन शिक्षक का महत्व (Importance of a social Studies teacher)
- सामाजिक अध्ययन शिक्षक का कार्य (Functions of a social studies teacher)
- सामाजिक अध्ययन शिक्षक के सामान्य विशिष्ट एवं व्यावसायिक गुण (General, special and Professional Qualities of a social studies teacher)
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में बाधाएं तथा उनका सामाधान (Problems in social studies teaching and their solutions)

11.1 परिचय (Introduction)

प्राचीन काल से गुरू शिष्य परम्परा चली आ रही है लेकिन वर्तमान युग में इसमें बदलाव आ गया है। इसके लिए न केवल शिक्षक जिम्मेदार है बल्कि विद्यार्थी भी जिम्मेदार है। प्राचीन काल में केवल वही शिक्षक सफल माना जाता थ जो अपने विषय का पण्डित होता थ। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एडम्स (Adms) महोदय कहते हैं कि शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, शिक्षा रूपी द्विमुखी प्रक्रिया दो धुरिया हैं एक हैं शिक्षक तथा दूसरी है शिक्षार्थी अत: शिक्षक को बालक की प्रवृतियों, रूचियों, क्षमताओं, योग्यताओं एवं आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ।

11.2 सामाजिक अध्ययन – शिक्षक का महत्व (Importance of a social studies teacher)

विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा देने के लिए सामाजिक अध्ययन विषय का अच्छा से अच्छा उद्धेश्य निर्धारित किया जाता हैं, अच्छे से अच्छे शिक्षण विधियों पर विचार विमर्श किया जाता हैं, पाठ्यक्रमों का निर्माण किया जाता हैं, उचित शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग करने की बात की जाती हैं तथा उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों की रचना की जाती हैं। परन्तु ये सभी साधन और स्त्रोत कितने भी उपयुक्त और प्रभावपूर्ण क्यों न हों, एक योग्य और समर्थ अध्यापक के अभाव में निष्प्राण एवं निर्जीव ही साबित होते है, क्योंकि अध्यापक ही किसी विधि सहायक सामग्री व साधन आदि की सफलता एवम् असफलता का आधार होता हैं। इसीलिए सामाजिक अध्ययन का शिक्षक निम्नलिखित दृष्टिकोणों से महत्व पूर्ण होता हैं :–

(अ) विषयवस्तु की दृष्टि से – इस विषय का संबंध केवल मानव के अतीत से ही नही होता है अपितु वर्तमान समाज की दैनिक घटनाओं तथा विश्व की नवीनतम् घटनाओं से भी होता है। इसलिए बहुत कम अध्यापक इसके स्वरूप को भली प्रकार समझते हैं तथा भली प्रकार पढ़ाने में सक्षम हो पाते हैं ।

(ब) छात्रों की रूचियों, अभिवृत्तियों तथा कौशलों की दृष्टि से – यह एक ऐसा विषय है जिसमें अध्यापक को पाठ्यक्रम के साथ–साथ छात्रों की रूचियों, अभिवृत्तियों तथा कौशलों का ध्यान भी एक सीमा तक रखना पड़ता हैं जिससे विद्यार्थियों में वर्तमान एवं भविष्योन्मुख समाज के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न हो सके तथ वह समाज के विकास में सक्रिय योगदान देने में सक्षम हो सके ।

(स) छात्रों को योग्य नागरिक एवं नेता बनाने की दृष्टि से – सामाजिक अध्ययन शिक्षक से यह अपेक्षा की जातीं हैं कि वह राष्ट्र को योग्य नागरिक एवं उत्तरदायित्वपूर्ण नेता दे सके। इसके लिए उसे छात्रों में एक परिपक्व, सुलझे विचारों, जागरूक तथा प्रजातंत्रात्मक मूल्यों में विश्वास रखने वाले व्यक्तित्व को विकसित करना होता हैं। अत: उसका कर्तव्य हो जाता हैं कि वह छात्रों को सुशिक्षित बनने तथा जीवन की तैयारी में सहायता करे ।

उपरोक्त महत्व की दृष्टि से सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को कुछ विशेष कार्य करने होते है जो अन्य विषय के अध्यापकों से भिन्न होते हैं।

11.3 सामाजिक अध्ययन शिक्षक के कार्य (Functions os social studies Teacher)

एक सामाजिक अध्ययन – शिक्षक को निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य करने होते हैं :–

(अ) शिक्षण तथा बाल मनोविज्ञान का अध्येता –

(Student of Education and child psychology)

अपने छात्रों के प्रभावशाली विकास के लिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को उनके स्वभाव, रूचियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा कमियों को जानना आवश्यक है तभी वह छात्रों को उचित मार्गदर्शन दे सकता हैं। इसके लिए समय–समय पर सामजिक अध्ययन के शिक्षक को कभी छात्रों का सहायक, कभी पथ प्रदर्शक तो कभी मित्र बनना होता हैं ।

(ब) तात्कालिक घटनाओं तथा सामाजिक विज्ञानों का ज्ञाता

(Student of current affairs and social sciences)

सामाजिक अध्ययन शिक्षक को अपने विषय की सामग्री विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से मिलती हैं। चूंकि इस विषय की अच्छी पाठ्यपुस्तकें कम मिलती हैं। इसलिए आवश्यक विषय सामग्री छात्रों को उपलब्ध कराना सामाजिक अध्ययन शिक्षक का दायित्व हो जाता हैं। शिक्षण को सुविधाजनक बनाने तथा सामाजिक विज्ञानों में वृद्धि करने के लिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को विश्व में होने वाली तात्कालिक घटनाओं की जानकारी रखना भी आवश्यक होता हैं। जिससे वह छात्रों तक उन्हें पहुँचा सके ।

(स) अपने विषय के प्रकरणों का चयन तथा व्यवस्थापन

(Selection and arrangement of topics in his subject)

विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से प्राप्त विषय सामग्री से सामाजिक अध्ययन के शिक्षक का काम नही चलता हैं। उसे तो इन विज्ञानों से केवल प्रयोगात्मक सामग्री ही स्वीकार्य होती हैं परन्तु तर्कपूर्ण ढंग से अपने विद्यार्थियों के लिए समुचित इकाईयों में बाँटने का कार्य तो उसे ही करना पड़ता है। सामाजिक अध्ययन की पुस्तकें लिखने में भी विभिन्न समूहों के छात्रों की रूचियों तथा क्षमताओं का ध्यान नही रखा जाता हैं। अत: अपने छात्रों के अनुभवों तथा उनकी रूचियों के अनुरूप उसे सामग्री का चयन करके उसकी व्यवस्था करनी होती है। इतना ही नही सामाजिक अध्ययन शिक्षण में आवश्यकतानुसार तात्कालिक घटनाओं, दृश्य श्रव्य साधनों तथा अन्य अनेक क्रियाओं द्वारा भी इस सामग्री की पूर्ति करनी होती है ।

(द) विभिन्न समूहों एवं तत्वों का व्याख्याता तथा संयोजक (Interpreter and Coordinator between different groups and elements)

सामाजिक अध्ययन शिक्षक को छात्रों के अनुभवों, छात्रों के अतीत एवं वर्तमान समाज के उद्धेश्यों की तथा उनके प्राप्ति के लिए किये गये प्रयासों की, उसकी सामाजिक एवं तकनीकी उपलद्धियों की, तथा उसमें पाये जाने वाले अवसरों एवं सुख सुविधाओं की व्याख्या करनी होती हैं। इतना ही नही वह वर्तमान काल की व्याख्या भूतकाल के सन्दर्भ में तथा वर्तमान में एक वस्तु की व्याख्या दूसरे वस्तु के सन्दर्भ में करता है। इस प्रकार वह व्याख्या करके वर्तमान तथा भूत का, नवीन तथा प्राचीन का, देशी तथा विदेशी का दूर तथा समीप का परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। अत: सामाजिक अध्ययन शिक्षक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य एक व्याख्याता के रूप में जीवन की तैयारी के साथ–साथ उसके विवेचन का भी है।

11.4 सामाजिक अध्ययन – शिक्षक के गुण (Qualities of a social studies teacher)

सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को उपरोक्त महत्वपूर्ण कार्य करने होते है। अत: उसे ऐसे विशेष गुणों तथा विशेषताओं से युक्त होना आवश्यक हो जाता है जो उसे उसके उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने एवं सामाजिक अध्ययन विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बना सके। इन गुणों को निम्नलिखित दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :–

प्रथम – सामान्य गुण (General Qualities)

द्वितीय – विशिष्ट गुण (Specific Qualities)

सामान्य गुण से तात्पर्य उन गुणों से है जो सभी विषय के अध्यापकों में सामान्य तौर पर होने चाहिये। वास्तव में ये वे विशेषताए होती है जो एक व्यक्ति को अध्यापक के रूप में प्रतिष्ठित करती है। जबकि विशिष्ट गुण वे गुण है जो किसी व्यक्ति को विषय विशेष का सफल अध्यापक बनने में सहायक सिद्ध होते है।

11.4.1 सामान्यगुण (General Qualities)

1. **प्रभावशाली व्यक्तित्व (Impressive Personality)** – प्रत्येक स्थिति में विद्यार्थियों के व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन लाने, उसके आचरणो का विकास करने तथा व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास करने की दिशा में अध्यापकों का व्यक्तित्व महती भूमिका अदा करता है। इसके अन्तर्गत उसका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ उच्च आचरण एवं व्यवहार, प्रभावी आवाज, आदर्श खान–पान तथा रहन–सहन आता है। जिससे छात्र प्रभावित होकर अनुकरण करने का प्रयास करते है ।

2. **नेतृत्व की क्षमता एवं अनुशासन प्रिय – (Quality of leadership and Disciplinarian)**

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक सही अर्थो में छात्रों का नेता होता है। अत: अध्यापकों में विद्यार्थियों का नेता बनकर उनका मार्गदर्शन करने की क्षमता होनी चाहिये। कुशलता पूर्वक नेतृत्व करने तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए अनुशासन प्रिय भी होना चाहिये ।

3. **आत्मविश्वास की भावना (feeling of Selfconfidence)**

अध्यापक को अपनी शक्तियों एवं योग्यताओं पर पूरा विश्वास होनो चाहिये तभी वह अपने दायित्वों को सफलता पूर्वक पूर्ण कर सकता है ।

4. **अध्ययन शील (Studious)**

गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में "जो दीप स्वयं नही जलता वह दूसरों को प्रज्वलित कैसे कर सकता है।" इस प्रकार एक अध्यापक के लिए स्वभाव से ही अध्ययन शील होना आवश्यक है। विश्व के किसी भी कोने में जो भी नया ज्ञान विकसति हो रहा है, जो भी परिवर्तन आ रहे है उन सबका ज्ञान उसे होना चाहिये तभी वह अपने विद्यार्थियों को नया कुछ दे सकेगा ।

5. **नैतिक गुण (Moral Values)**

एक सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के नैतिक गुणो में सहानुभूति, अंतरदृष्टि, इमानदारी, निष्ठा, निष्पक्षता, धैर्य, सत्य प्रियता, स्पष्टवादिता, परिश्रम, सहिष्णुता तथा निपुणता से नियोजन करना आदि सम्मिलित है। एक अध्यापक का व्यवहार विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण तथा निष्पक्ष होना चाहिये। उसे छात्रो को समझकर संहिष्णुता, धैर्य तथा निपुणता से उनके व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिये। उसे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक, निष्ठावान तथा परिश्रमी होना चाहिये। अध्यापक को अपने वचन तथा कार्यो से सत्यप्रियता एवं स्पष्टवादिता का परिचय देना चाहिये। यदि एक सामाजिक अध्ययन के अध्यापक में उपरोक्तगुण होगे तभी वह अपने विद्यार्थियों को इन गुणों को ग्रहण करने के लिए अभिप्रेरित कर सकेगा ।

6. **अभिव्यक्ति क्षमता (Expression Power)**

अभिव्यक्ति के अन्तर्गत पाँच प्रकार के कौशल– वर्णन, कविताएँ सुनाना, नाटकीकरण (हाव–भाव सहित), स्पष्टीकरण (लिखित, मौखिक, चित्रात्मक) तथा प्रदर्शन, सम्मिलित होते है। एक सामाजिक अध्ययन शिक्षक को शिक्षण में आवश्यकतानुसार उपरोक्त कौशलो का प्रयोग करने में सक्षम होना चाहिये। इसके लिए अध्यापक के विचारों में स्पष्टता का होना आवश्यक है। जब तक वह अपने भावों तथा विचारों में स्पष्ट नही होगा तब तक अपने ज्ञान तथा विचारों की अभिव्यंजना शक्ति को प्रभावी नही कर सकेगा। शिक्षण की सफलता सक्षम अभिव्यक्ति पर निर्भर करती है। इसलिए अध्यापक को बोलने, लिखने तथा अपनी कार्य शैली के माध्यम से अपनी संप्रेषण शक्ति के उचित प्रकाशन तथा विकास पर बल देना चाहिये ।

7. विनोदप्रियता (A sense of humour)

एक विनोदप्रिय सामाजिक अध्ययन अध्यापक केवल अपना मानसिक स्वास्थ्य ही अच्छा नही रखता बल्कि कक्षा के वातावरण को भी तरोताजा तथा तनाव रहित बनाए रखने में सक्षम होता है। कठिन एवं अरूचिकर विषय को भी अपनी विनोद प्रियता से सरल एवं बोधगम्य बना देता है। साथ ही अपने विद्यार्थियों को थकान एवं नीरसता से यथा सम्भव दूर रखता है।

8. विश्वबन्धुत्व की भावना (A sense of International Brother hood)

तकनीकी एवं ज्ञान के तीव्र विकास के साथ विश्व समाज छोटा होता जा रहा है। प्रत्येक देश के हित तीव्रता से वैश्वीकरण का अंग बनते जा रहे है। ऐसी परिस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना व सहयोग की बड़ी आवश्यकता है। एक सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को समझना चाहिये कि वह अपने राष्ट्र का नागरिक होने के साथ विश्व परिवार का भी एक अंग है। अत: उसे अन्तर्राष्ट्रीयता के लिए शिक्षा के उद्धेश्यों को भली प्रकार समझकर उन सभी विधियों तथा साधनों का प्रयोग करना चाहिये जिनसे बालको में राष्ट्रीयता की भावना के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना भी विकसित हो सकती है ।

9. अध्यापक के कार्यकारी गुण (Executive Ability)

(अ) पहल करने की प्रवृति (Spirit of taking initiative)

एक अच्छा सामाजिक अध्ययन अध्यापक उपलब्ध साधन तथा सामग्री एवं परिस्थिति को देखकर उसके अनुकूल अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। इतना ही नही वह स्वयं आगे बढ़कर नवीन कार्य करने की पहल भी करता है। जबकि वे अध्यापक जो कुछ करना नही चाहते है वे साधनों की कमी बताकर कार्य से पीछा छुड़ाने का प्रयास करते है अथवा दिन–प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए प्रधानाध्यापक अथवा उच्च अधिकारियों के पास दौड़ते रहते है ।

(ब) प्रबन्धन एवं निर्देशन की क्षमता (Organising and directive capacity)

सामाजिक अध्ययन का अध्यापक एक कुशल प्रबन्धक एवं निर्देशक भी होना चाहिये। किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है कि वह आपकी योजना की रूप रेखा सूझ–बूझ तथा बूधिमता से बनाये तथा उस कार्य को इस प्रकार क्रियान्वित करे कि कम से कम समय तथा साधनों का अपव्यय हो। ये अध्यापक के सुप्रबन्ध पर ही निर्भर करता है ।

11.4.2 सामाजिक अध्ययन अध्यापक के विशिष्ट गुण (Specific qualities of social studies teacher)

1. विद्‌वता (Scholarship)

एक सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को केवल अपने विषय का ही ज्ञान नही होना चाहिये बल्कि जीवन, समाज तथा दुनिया की सामान्य बातों का भी ज्ञान होना चाहिये क्योंकि सामाजिक अध्ययन का विषय क्षेत्र समाज के दैनिक जीवन से लेकर विश्व की समस्याओं तक विस्तृत है। अत: एक अध्यापक सामाजिक अध्ययन विषय तभी पढ़ा

सकता हैं जबकि उसको इनका ज्ञान हो। इसीलिए सामाजिक अध्ययन के अध्यापक से निम्नलिखित अपेक्षायें की जाती हैं :–

(अ) **अपने विषय का गहन ज्ञान हो (Knowledge of his Subject)–** एक अध्यापक सामाजिक अध्ययन तभी सफलता पूर्वक पढ़ा सकता है जबकि वह अपने विषय का गहरा ज्ञान रखता हो। इसलिए सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों में से कम से कम दो विषयों का विशेषज्ञ हो ।

(ब) **सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित अन्य विषयों तथा क्षेत्रों का ज्ञान**

(Knowledge of the subjects and areas related to social studies)

सामाजिक अध्ययन विषय के अन्तर्गत वह सभी सामग्री सम्मिलित की जाती है जो मानवीय सम्बन्धों को समझने तथा प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश में मानव को ठीक ढंग से समायोजित करने में सहायता करती है। इसलिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र का ज्ञान होना चाहिये जिससे वह सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के लिए आवश्यक सामग्री का इनसे चयन कर सके। भाषा का ज्ञान अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है तो विज्ञान, चित्रकला तथा गणित भी बहु मुल्य सहयोग प्रदान करते हैं ।

2. तात्कालिक घटनाओं की जानकारी

(Knowledge of current affairs)

सामाजिक अध्ययन विषय के विषय वस्तु में उतनी ही तीव्रता से परिवर्तन होता है जितना कि विश्व में। हमारे बच्चे इन्ही तीव्र परिवर्तनशील विश्व में बड़े हो रहे है। वे विश्व के किसी भी कोने में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों तथा घटित होने वाली घटनाओं के बारे में तत्काल जानना चाहते है। इसलिए इन नयी जानकारियों को बच्चों को पहुँचाने के लिए अध्यापक में भी उसकी जानकारी तथा उसकी जटिलताओं का होना आवश्यक है ।

3. मौलिकता (Originality)

सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को विश्व में घटित होने वाली घटनाओं के संबंध में अपनी धारणाये दूसरों की सुनी सुनायी बातों से नही बनानी चाहिये बल्कि अपना स्वयं का दृटिकोण रखना चाहिये। इसलिए उसे अन्धविश्वास की अपेक्षा जाँच पड़ताल, वैज्ञानिक विधियों, सत्य की जिज्ञासा तथा मौखिक चिन्तन की आदत डालनी चाहिये। इससे वह विभिन्न समस्याओं का मौलिक समाधान (कक्षा के भीतर अथवा बाहर) खोज सकेगा ।

11.4.3 व्यावसायिक गुण (Professional Qualities)

(i) **विषय का ज्ञान (Knowledge of the subject)** – सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को सभी सामाजिक विषयों के आधारभूत नियमों का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। यदि शिक्षक इन नियमों व तथ्यों से अनभिज्ञ है तो वह छात्रों की जिज्ञासाओं को शान्त नहीं कर सकता है ।

(ii) **व्यावसायिक प्रशिक्षण (Professional Training)** – सफल शिक्षा के लिए केवल विषय का ज्ञान होना ही आवश्यक नहीं हैं बल्कि विधार्थियों को उस ज्ञान का प्रभाषशाली अनुभव देने के लिए अपने विषय का प्रशिक्षण सेवाकालीन तथा सेवापूर्व दोनो हो सकता है ।

प्रशिक्षण से उसे सामाजिक अध्ययन के उद्धेश्यों, शिक्षण विधियों, तकनीको शिक्षण सहायक सामग्री, सामाजिक स्रोतो तथा पाठ्य सहभागी क्रियाओं का ज्ञान तथा उनसे संबंधित कौशलों का ज्ञान हो जाता है। इतना ही नही बाल मनोविज्ञान को पढ़कर बालविकास तथा उसकी भावनाओं का भी उसे ज्ञान हो जाता है ।

(iii) सकारात्मक अभिवृत्ति (Positive attitude)

आज के युवा जब अन्य व्यवसाय को प्राप्त करने में असफल हो जाते है तब शिक्षण व्यवसाय में आते है। परन्तु एक सफल अध्यापक वही बन सकता है जो अध्यापक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखता हो। वह इस व्यवसाय में तभी आये जब वह मानवता की सेवा का इच्छुक हो ।

(iv) निरन्तर विकास की लालसा (Continuous desire for improvement)

शिक्षा जगत कभी भी पूर्ण नही हो सकता है बल्कि यह निरन्तर विकास मान है। इसमें नये प्रयोग तथा संशोधन का स्थान सदैव बना रहता है। अत: अध्यापक को भी निरन्तर सुधार के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये। अत: सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को विशेष रूप से शिक्षा पर नवीनतम पुस्तकें तथा पत्र – पत्रिकाये पढ़ने के अतिरिक्त सेमीनारो, गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं में निरन्तर भाग लेते रहना चाहिये। जिससे वे नवीनतम् ज्ञान, सूचनाये तथा घटनाओं को सही पृष्ठभूमि में छात्रों तक पहुँचा सके ।

(v) **प्रचलित घटनाओं का ज्ञान (Kmowledge of current affairs)** – सामाजिक अध्ययन एक तेजी से विकसित होने वाला विषय है इसलिए सामाजिक परिवर्तनों का अध्यापक को ज्ञान होना चाहिए ।

(vi) **शैक्षिक नवाचारों का ज्ञान (knowledge of educational innovations)** – सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों को शैक्षिक नवाचारों का ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षा जगत में होने वाले दिन–प्रतिदिन नए आविष्कारों एवं शोधों के बारे में जानकारी होने पर शिक्षक प्रभावशाली करा सकता है और सामाजिक अध्ययन शिक्षण के स्वरूप को नया रूप प्रदान किया जा सकता है ।

(vii) **मनोविज्ञान का ज्ञान (Knowledge of Psychology)** – सामाजिक अध्ययन शिक्षक को बाल मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञाता होना चाहिए ताकि छात्रों के बारे में शिक्षक पूर्णरूपेण जानकारी प्राप्त कर सके ।

इस प्रकार हम देखते है कि सामाजिक अध्ययन का सफल अध्यापक बनने के लिए अन्य विषयों के अध्यापको की अपेक्षा इन्हें अधिक प्रयास करना पड़ता है क्योकि सामाजिक अध्ययन का विषयवस्तु एवं क्षेत्र काफी विस्तृत है।

11.5 सामाजिक अध्ययन के शिक्षक की समस्यायें एवं समाधान (Problems of Social Studies Teacher and their Solution)

1. पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयों का पृथक – पृथक स्वरूप

(Curriculum is not well integrated in terms of the different social science subjects)

सामाजिक अध्ययन में इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि विषयों से विषय वस्तु ली गई है। परन्तु इन विषयों का स्वरूप पृथक–पृथक विषय का ही है। सामाजिक अध्ययन विषय के उद्धेश्य के अनुरूप नही है। इससे बालको को ज्ञान तो अवश्य मिलता है परन्तु मानव सम्बन्धों को समझने तथा उसी के अनुसार कौशल विकसित करने में सहायता नही मिलती है। पाठ्यक्रम निश्चित है मुल्यांकन प्राविधियां निश्चित है। इसलिए अध्यापक को स्वयं पहल करके उद्धेश्यों के अनुरूप पढ़ाने तथा कौशल विकसित करने के लिए स्वतंत्रता नही मिल पाती है ।

इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है विद्यालयी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित प्रत्येकपाठ के विशिष्ट उद्धेश्य तथा अपेक्षित कौशलों का उल्लेख पाठ के प्रारम्भ में कर दिया जाये। जिससे उन उद्धेश्यों तथा कौशलों के विकास के लिए सामाजिक अध्ययन विषय का अध्यापक स्वयं शिक्षण तथा मूल्यांकन की व्यूह रचना करे ।

2. तात्कालिक घटनाओं को पाठ्यक्रम में स्थान के अवसर नही –

(No opportunities to include current affairs in social studies syllabus) विद्यालयी पाठ्यक्रम पूर्व निश्चित है जबकि समाज को प्रभावित करने वाली घटनाये नित्य प्रति घटित होती रहती है। ये घटनायें अपना प्रभाव भी सामाजिक सम्बन्धों पर दिखलाती है। इनका दूरगामी प्रभाव समाज पर क्या तथा कैसे पड़ेगा यह समझाने की आवश्यकता भी सामाजिक अध्ययन शिक्षक अनुभव भी करता है। परन्तु वह छात्रों को समझा नही सकता क्योंकि पाठ्यक्रम पूर्व निर्धारित है।

इस गम्भीर समस्या के समाधान के लिए पाठ्यक्रम में पर्याप्त नमनीयता रखने की आवश्यकता है जिससे अध्यापक सामाजिक परिवर्तनों तथा घटनाओं को छात्रों तक पहुँचा सके ।

3. सामुदायिक स्त्रोतों को सामाजिक अध्ययन शिक्षण मे प्रयोग करने में कठिनाईयाँ

(Problems in the use of community resources in social studies teaching)

प्रत्येक समुदाय में अनेंक ऐसे स्त्रोत होते है जिनका प्रयोग शैक्षणिक उद्धेश्यों के लिए किया जा सकता है। परन्तु इस क्रिया को व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यक है समुदाय तथा विद्यालय में पूर्ण समन्वय। समन्वय का कार्य अध्यापक करता है जिसमें समय, श्रम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है। तीनो सन्दर्भो में अध्यापक को अतिरिक्त प्रयास करना होता है। परन्तु वह विद्यालयी कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रम को

पूर्ण करने में लगा होता है, उसके पास अतिरिक्त प्रयास के लिए समय, श्रम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति तीनों की कमी रहती है ।

यदि सामाजिक अध्ययन के विद्यालयी पाठ्यक्रमों मे से अनावश्यक पाठ हटाकर सामुदायिक स्त्रोतो के प्रयोग को स्थान दिया जाये तो इस समस्या का समाधान हो सकता है, तथा अध्यापक भी छात्रो के साथ मिलकर सामुदायिक स्त्रोतो को सामाजिक अध्ययन प्रशिक्षण में प्रयोग के लिए अच्छी योजना बना सकता है।

4. साधन सम्पन्न पुस्तकालय का अभाव (Non–availability of a well equipped library)

विद्यालय का आधुकनिक पुस्तकालय सामाजिक अध्ययन शिक्षण का एक महत्व पूर्ण साधन है। शिक्षा का आधुनिक कार्यक्रम बालको के स्वतंत्र चिन्तन तथा निर्णय पर अधिक बल देता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे मानचित्र, चार्ट, पत्र–पत्रिकाये तथा पाठ्यपुस्तको के अतिरिक्त अन्य ज्ञान प्रद पुस्तके पुस्कालय में होने चाहिये। इतना ही नही विद्यालय के समय सारिणी में पुस्तकालय कालांश को भी सम्मिलित करना चाहिये। अध्यापक को भी इतना समय मिलना चाहिये जिससे वह विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का अध्ययन कर सामाजिक अध्ययन के सुत्रों के लिए विषय वस्तु का चयन कर सके। माध्यमिक विद्यालयों में तो लाईब्रेरियन होते है परन्तु प्राथमिक विद्यालयों में इनका अभाव होता है। इसलिए पुस्तकालय का प्रयोग छात्र नही कर पाते है ।

सभी स्तर के विद्यालयों में साधन सम्पन्न पुस्तकालय उपलब्ध हो तथा उनका उपयोग करने के लिए कालांश एवं पुस्तकालय में सामाजिक अध्ययन विषय के अध्यापक मोजूद हो तो विद्यार्थियों को उद्धेश्य पूर्ण शैक्षिक अनुभव प्राप्त करने में अध्यापक सहायता कर सकते है तथा छात्रों में नियमित रूप से अध्ययन करने की आदत विकसित हो सकेगी ।

5. सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला का अभाव –

(Dearth of Social Studies Laboratory)

प्राकृतिक विज्ञानों के लिए तो प्रयोगशाला प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में होना अनिवार्य माना गया है, परन्तु सामाजिक अध्ययन विषय के लिए इसकी अनिवार्यता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। परिणाम स्वरूप सामाजिक अध्ययन विषय का शिक्षण किसी भी कमरे में या खुले प्रांगण में किया जाता है। जहा अध्यापक पाठ्यपुस्तक विधि से सामाजिक अध्ययन करवाते है ।

परन्तु आज सामाजिक अध्ययन विषय के लिए पाठ्यपुस्तके, पुस्तिकाऐं, पत्र–पत्रिकाएं, नक्शे, ग्लोब, चार्ट, प्रोजेक्टर आदि अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध है। इसलिए आज का सामाजिक अध्ययन का शिक्षक इनका उपयोग अपने शिक्षण में करना चाहता है। अत: अच्छे परिणाम के लिए आवश्यक है कि सामाजिक अध्ययन विषय का भी प्राकृतिक विज्ञानों की भांति पृथक प्रयोगशाला हो जहां छात्र क्रिया आधारित अनुभव प्राप्त कर सके तथा आवश्यक कुशलताएं विकसित कर सके ।

6. उचित परिस्थितियों तथा अनुभवो द्वारा शिक्षण सम्मब नहीं

(It is not possible to teach social studies through organized situations and experiences)

आज का अध्यापक सामाजिक अध्ययन विषय पढ़ाने के लिए मात्र पाठ्यपुस्तक विधि का प्रयोग करता है। एक सैद्धान्तिक स्तर का ज्ञान ही दे पाता है। उन्नत आधुनिक शिक्षण विधियों का उपयोग नही कर पाता है, क्योकि विद्यालयी पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत है, नई शिक्षण विधियों के प्रयोग में समय अधिक लगता है परिणाम स्वत: पाठ्यक्रम पूरा नही हो सकेगा। दूसरा कारण नयी विधियों को अपनाने की इच्छा शक्ति की कमी भी अध्यापकों में है, क्योंकि नई शिक्षण विधियों का उपयोग करने के लिए उन्हे स्वयं अधिक श्रम एवं समय व्यय करना पड़ेगा ।

ऐसी स्थिति में यदि पूर्ण पाठ्यक्रम को नई विधियों से नही पढ़ाया जाये तो भी पाठ्यक्रम के कुछ पाठों को अवश्य नइ विधियों से पढ़ाने का प्रयास करना चाहिये।

11.6 सारांश (Summary)

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक छात्रों को केवल पढ़ाता ही नही है बल्कि राष्ट्र को एक सुनागरिक तथा समाज को एक जागरूक एवं कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता भी प्रदान करता है। विद्यार्थियों में सुनागरिक गुणों के विकास एवं जागरूक एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने के लिए सबसे अच्छा तरीका अपने आचरण को प्रदर्शित करना हैं। सामाजिक अध्ययन का अध्यापक यदि एक सामान्य अध्यापक के गुणो तथा विशिष्ट गुणों से युक्त होगा तभी वह एक सफल सामाजिक अध्ययन–अध्यापक का आचरण प्रदर्शित कर सकेगा। इस पाठ में उसे इन्ही गुणो तथा महत्व को स्पष्ट किया गया ।

सामाजिक अध्ययन शिक्षक का महत्व

अ – विषयवस्तु की दृष्टि से

ब – छात्रों की रूचियों, अभिवृत्तियों तथा कौशलो की दृष्टि से

स – छात्रों को योग्य नागरिक एवं नेता बनाने की दृष्टि से

सामाजिक अध्ययन शिक्षक का कार्य

अ – शिक्षा तथा बाल मनोविज्ञान का अध्येता

ब – तात्कालिक घटनाओं तथा सामाजिक विज्ञानों का ज्ञाता

स – अपने विषय के प्रकरणो का चयन तथा व्यवस्थापन

द – विभिन्न समूहों तथा तत्वों का व्याख्याता तथा संयोजक

सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण

सामान्य गुण

1. प्रभावशाली व्यक्तित्व
2. नेतृत्व की क्षमता एवं अनुशानप्रिय
3. आत्म विश्वास की भावना

4. अध्ययन शील
5. नैतिक गुण
6. अभिव्यक्ति क्षमता
7. विनोद प्रियता
8. विश्वबन्दुत्व की भावना
9. अध्यापक के कार्यकारी गुण

अ – पहल करने की प्रवृति

ब – प्रबन्धन एवं निर्देशन की क्षमता

विशिष्ट गुण

1. विद्वता – विषय का गूहन ज्ञान, अन्य विषयों का ज्ञान
2. तात्कालिक घटनाओं की जानकारी
3. मौलिकता
4. व्यावसायिक पृष्ठभूमि – सकारात्मक अभिवृत्ति, निरन्तर विकास की लालसा

समस्यायें एवं समाधान

1. पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयों का पृथक–पृथक स्वरूप
2. तात्कालिक घटनाओं को पाठ्यक्रम में स्थान के अवसर नही
3. सामूदायिक स्त्रोतो को शिक्षण में प्रयोग में कठिनाई
4. साधन सम्पन्न पुस्तकालय का अभाव
5. सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला का अभाव
6. उचित परिस्थितियों तथा अनुभवों द्वारा शिक्षण सम्भव नही

11.7 अभ्यास प्रश्न (Revision Question)

1. सामाजिक अध्ययन–शिक्षक के महत्व एवं कार्यो की विवेचना करे ।
   Discuss the importance and functions of a social studies teacher.
2. "अध्यापक वह धूरी है जिसके गिर्द सारी शिक्षा प्रणाली घूमती है।" इस कथन के सन्दर्भ में सामाजिक अध्ययन अध्यापक के महत्व का विवेचन करें ।
   "Teacher is the pivot around which the whole education system revolves" Discuss the importance of social studies teacher in the light of this statement.
3. सामाजिक अध्ययन शिक्षक में किन गुणों एवं विशेषताओं का होना आवश्यक है? अपने उत्तर को स्पष्ट करने के लिए कारण बताये?
   What are the qualities and characteristics needed in a social studies teacher? To explain your answers give reasons.

4. सामाजिक अध्ययन विषय को पढ़ाने में अध्यापक के सामने आने वाली कठिनाइयां कौन–कौन सी है? स्पष्ट करे ।

   What difficulties are faced by teacher in teaching social studies? Explain)

5. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये :–

(अ) सामाजिक अध्ययन के शिक्षक की सामान्य विशेषताए ।

(ब) सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के विशिष्ट गुण

(स) सामाजिक अध्ययन के अध्यापक की शिक्षण सम्बन्धी समस्याये

(द) सामाजिक अध्ययन शिक्षक के कार्यकारी गुण

Write short notes on the following:–

a) General characteristics of a social studies teacher

b) Special qualities of a social studies teacher.

c) Problems of a teacher in teaching social studies.

d) Executive abilities of a social studies teacher.

11.8 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

1. Allen, Jack(ed): The Teacher of Social Studies, Twenty third year book of the National council for social studies Washington, D.C.: The council, 1952.
2. Bar, A.S.: Characteristic Difference in Teaching performance of and Poor Teachers of Social studies, Bloomington: Public Scholl Publishing Co., 1929
3. Bining, Arther C. and Bining, David H. Teaching the Social Studies in secondary schools (3rd ed.), New York, M.C. Graw Hill, 1952
4. Moffatt, Maurice P.Social Studies Instruction, New York: Prentice Hall, 1950
5. Wesley, E.B.: teaching Social Studies in High Schools, Boston: D.C. Heath and company, 1958.

इकाई–12

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में प्रयुक्त संसाधन : कक्षा–कक्ष प्रयोगशाला संग्रहालय, सामुदायिक वातावरण, पुस्तकालय आदि Resources in social studies teaching : Classroom, Laboratory Museum, Community Environment, Library etc.

इकाई संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 सामाजिक अध्ययन की कक्षा

12.3 सामाजिक अध्ययन की प्रयोगशाला

12.4 सामाजिक अध्ययन संग्रहालय व प्रदर्शनियां

12.5 सामाजिक अध्ययन सामुदायिक वातावरण

12.6 सामाजिक अध्ययन पुस्तकालय

12.6.1 पुस्तकालय का महत्व

12.6.2 पुस्तकालय का संगठन

12.6.3 पुस्तकालय के स्रोत

12.6.4 पुस्तकालय का प्रबन्ध

12.7 अभ्यास प्रश्न

12.8 सारांश

12.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

12.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की समाप्ति पर आप–

1. सामाजिक अध्ययन की कक्षा की विशेषताओं को समझ सकेंगे ।
2. सामाजिक अध्ययन की प्रयोगशाला संयोजन जान सकेंगे ।
3. सामाजिक अध्ययन के संग्रहालय की आवश्यकता को समझ सकेंगे ।
4. सामाजिक अध्ययन में सामुदायिक वातावरण के महत्व को समझ सकेंगे ।
5. सामाजिक अध्ययन में पुस्तकालय के महत्व व उसके प्रबन्धन से परिचित हो सकेंगे।

12.1 परिचय (Introduction)

अध्ययन परिस्थितियों के निर्माण ये कक्षा–कक्षा की महत्ती भूमिका होती है। एक सुसज्जित, शांत, हवादार, संसाधन युक्त अध्ययन कक्ष अध्ययन को सरल और रोचक बनाता है। अत: विद्‌यालय में अध्ययन कक्ष पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इसी प्रकार विभिन्न कला वाणिज्य और विज्ञान के विषयों के लिये प्रयोगशालायें होना आवश्यक है। एक साधन सम्पन्न पुस्तकालय विद्‌यालय को ही सम्पन्न नहीं बनाता है वरन बालकों को भी ज्ञान के नये विस्तार प्रदान करता है। सामाजिक अध्ययन समाज का अध्ययन करता है अत: सामुदायिक वातावरण के निर्माण में विद्‌यालय, शिक्षक व विद्‌यार्थी किस प्रकार योगदान प्रदान कर सकता है यह विद्‌यालय ही तय करता है।

12.2 सामाजिक अध्ययन की कक्षा कैसी होनी चाहिए?

हम यह सब जानते हैं कि विभिन्न विषयों उदाहरण के तौर पर जैसे विज्ञान और शिल्प जिसमें कक्षा में समझाने योग्य यन्त्र और साधन की जरूरत होती है जिसे विद्‌यार्थियों के लिए व्यवस्थित और सुरक्षित किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में भी निम्नलिखित कारणो के लिए सुसज्जित कक्षा की जरूरत होती है। साधन ओर पदार्थ के साथ सुसज्जित एक कक्षा जो सामाजिक विज्ञान का वातावरण बनाने और व्यवस्थित करने में मदद करेगी।

1. **मानचित्र:–** सामाजिक अध्ययन में मानचित्र का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि मानचित्र सामाजिक विज्ञान में उपयोग में आते हैं जैसे सभी देशों का ऐतिहासिक, आर्थिक, भौगोलिक, राजनैतिक और सामाजिक मानचित्र होते हैं ।

2. **चार्ट:–** सामाजिक अध्ययन में चार्ट रंग–बिरंगे और भौगोलिक दशाओं पर आधारित होना चाहिए। कक्षाओं में ऐसे ही चार्ट लगाने चाहिए जो विद्‌यार्थियों ओर शिक्षकों के द्‌वारा ही बनाये गये हो ।

सामाजिक अध्ययन की कक्षा में विभिन्न देशों की तथा विश्व का नक्शा सुन्दर तरह से बनाया जाना चाहिए, जिससे विद्‌यार्थियों के मन में दूसरे देशों की सभ्यता और संस्कृति जानने की उत्कंठा पैदा हो सके। विद्‌यार्थियों को प्रेरित करने के लिए कक्षा को सुन्दर कलाकृतियों और मानचित्रों से सजाना चाहिए, जिससे एक ज्ञान अर्जित करने की प्रेरणा मिल सके ।

आपने देखा होगा कि सामाजिक अध्ययन पढ़ाने में बहुत शिक्षण सामग्री की आवश्यकता होती हैं इसीलिए इनकी कक्षा और कक्षाओं की अपेक्षा बड़ी होनी चाहिए। ऊपरी क्षेत्र 600 वर्ग फिट जो कि 30 विद्‌यार्थियों के लिए पर्याप्त है। कक्षा का क्षेत्र विद्‌यार्थियों की संख्या के अनुकूल होना चाहिए। कक्षा के पीछे का स्थान विद्‌यार्थियों का और आगे का स्थान शिक्षक का होना चाहिए। कक्षा का वायु संचालन और प्रकाश की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए। लगभग 7 फिट की ऊँचाई, फर्श और छत के बीच में हो ।

दीवारों को चॉक– बोर्ड, प्रदर्शन–बोर्ड, मॉडल, मानचित्र लगाने में प्रयोग कर सकते हैं। कक्षा अच्छी तरह रंगी और व्यवस्थित होनी चाहिए और इसका वातावरण आकर्षक और प्रेरणादायी होना चाहिए। साधन उदाहरणीय मानचित्र, मॉडल और प्रोजेक्टर आदि रोजाना लगाना

बहुत कठिन कार्य है तथा अगर इन्हें स्थायी आधार दे दिया जाए तो समय की बचत होगी। महत्वपूर्ण मानचित्र, चार्ट, निर्देश का प्रकाशन शिक्षा को पूर्ण रूप से विश्वस्त, प्रभावशाली, जीवित और रूचिकर बनाते हैं ।

3. **समय ग्राफ:–** सामाजिक अध्ययन में समय ग्राफ क्रम में प्रदर्शित करता है और समय ग्राफ घटना का बढ़ना और राजवंशियों का गिरना, प्रतिद्वन्दी की उन्नति, विचार और संस्कृति, श्रेष्ठ पुरूष और कीर्ति चिन्ह आदि का प्रतीक होता है ।

4. **समय रेखाएं:–** सामाजिक अध्ययन की कक्षा में समय रेखाएं उपरिथत होनी चाहिए। यह रंग बिरंगी होनी चाहिए या हार्ड बोर्ड या कार्ड बोर्ड का बना होना चाहिए। शिक्षण के समय महत्व पूर्ण दिनांक और मनुष्य की चिन्हित पहचान सभी रेखा के साथ होनी चाहिए। इसमें महत्वपूर्ण व्यक्ति की फोटो जिसके बारे में कक्षा में पढ़ाना है, उसे कक्षा में टाँग सकते हैं इससे विद्यार्थी भोजनावकाश के समय में महत्वपूर्ण व्यक्ति के साथ रहकर पहचान बना सकते हैं ।

5. **मॉडल:–** सामाजिक अध्ययन की कक्षा में मॉडल का होना अति आवश्यक है जिसके लिए विद्यार्थियों को स्वयं अपने द्वारा बनाये गये मॉडल को कक्षा में लगाना चाहिये या बाजार से पूर्वनिर्मित मॉडल खरीदकर कक्षा में लगाना चाहिये। यदि मॉडल शिक्षकों के द्वारा बनी हो तो उसकी प्रदर्शिनी भी लगनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ता है ।

6. **चित्र संग्रह:–** सामाजिक अध्ययन की कक्षा में वर्गीकृत चित्र संग्रह मॉडल भी कक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। सामाजिक विज्ञान में चित्र संग्रह विभिन्न विषयों पर आधारित होने चाहिये ।

7. **संग्रहालय:–** (1) सामाजिक अध्ययन में अजाबघर बहुत उपयोगी होता है इसमें प्राचीन सिक्के, ऐतिहासिक स्तम्भ चिन्ह, प्राचीन चित्रकारी, फोटो, प्रतिमा–निर्माण सम्बन्धी कार्य आदि का प्रयोग होता है।

(2) सामाजिक अध्ययन के संग्रहालय में विद्यार्थियों द्वारा किया गया संगठन और सामाजिक विज्ञान की कक्षा में शिक्षक को योग्य प्रदर्शनी करनी चाहिए ।

आपके अनुसार सामाजिक अध्ययन की कक्षा में किस प्रकार का फर्नीचर होना चाहिए?

सामाजिक अध्ययन की कक्षा में कार्य करने के लिए मेज, कुर्सी, शैल्फ, मानचित्र, रेडियों–रैक, अल्मारी, चॉक–बोर्ड, आदि होने चाहिए ।

- मेज छोटी और सममतल होनी चाहिए जिसे सामूहिक कार्यों में आसानी से पुन: सजा सके ।
- सीट की सजावट आरामदायक, स्वस्थ और विद्यार्थियों की कार्य क्षमता को बढ़ाने वाली होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों के किताबों, फोटो आदि को इकट्ठा रखने की सुविधा के लिए फर्नीचर उपस्थित होना चाहिए।
- खानों के साथ मेज होनी चाहिए जो हिलाने योग्य हो ताकि इसे सामान्य शासन और निर्देश के लिये प्रयोग किया जा सके। मेज पर एक शब्द–कोष, सूची–पत्रिका, डिस्क प्लॉटर होना चाहिए ।
- प्रदर्शनी के लिए सिक्कों, स्मारक चिन्ह का संगठन, प्रदर्शन शैल्फ होना चाहिए ।

- एक स्थायी प्रोजेक्टर पर्दे को श्यामपट्ट के ऊपर स्थापित कर सकते हैं जिसे किसी भी समय आसानी से नीचे करके परियोजना कार्य हो सकता है ।
- खिड़कियों पर गाढ़े रंग के पर्दे होने चाहिए जिससे फिल्म का उपयोग फिल्मी पर्दे पर किया जा सके ।
- यह बहुत उपयोगी होगा अगर खूटियों वाली स्थायी चैनल, रेलिंग को पढ़ोते समय मानचित्र, पिक्चर या ग्राफ टांगने के लिए श्यामपट्ट वाली दीवाल के साथ व्यवस्थित कर दी जाये ।
- कक्षा को सजाने के लिए उपयोग में आने वाली सामग्री:—

कक्षा में बुलटिन या प्रदर्शन बोर्ड क्यों होना चाहिए?

1. बुलेटिन बोर्ड एक ऐसा मृदु बोर्ड है जो नमदा कपड़े से ढके होते हैं जिसका उपयोग सामाजिक विज्ञान की कक्षा में अवश्य हाना चाहिए ।
2. इस बोर्ड द्वारा दर्शायी जाने वाली सामग्री को ड्राइंग पिन की सहायता से बोर्ड पर लगाया जाता है।
3. आप नमदा कपड़े का चयन करने में विभिन्न रंगों का प्रयोग कर सकते हैं। पोस्टर, आरेख, छोटे चार्ट, तस्वीरें चित्रों आदि को शिक्षण के दौरान इस बोर्ड की सहायता से आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है।
4. आप शिक्षण के पश्चात अतिरिक्त जानकारी को दर्शाने में भी इस बोर्ड का प्रयोग कर सकते हैं।
5. यदि आपने गैर—परंपरागत ऊर्जा संसाधनों की जानकारी प्रदान की है। तो आप समाचार पत्रों, तस्वीरों आदि द्वारा अतिरिक्त जानकारी को एकत्र कर पूरे सप्ताह तक इस प्रकार बोर्ड पर लगा सकते हैं।
6. किसी भी विषय को पढ़ाने से पहले आप उस विषय से संबंधित जानकारी को ऐसे बोर्ड पर लगा सकते हैं ताकि अध्ययन से पूर्व विद्यार्थी इसे पढ़े और उनमें इसका गहन अध्ययन करने की इच्छा और उत्सुकता जाग्रत हो ।
7. विद्यार्थी अपने द्वारा तैयार सामग्री को प्रदर्शन बोर्ड पर लगा सकते हैं जेसे विद्यार्थियों द्वारा लिखा गया निबंध, कविता या किसी विशिष्ट शीर्षक आदि से जुड़ी तस्वीरों को इस बोर्ड के माध्यम से दर्शाया जा सकता है ।

ऐसा प्रयास करने से सामाजिक विद्वानों के शिक्षक कूप मंडूकता से बच सकेंगे और प्रगतिशील विश्व के बारे में अधुनातन जानकारी प्राप्त करते रहेंगे। विद्यार्थियों को इससे आशातीत लाभ होंगे।

12.3 सामाजिक अध्ययन की प्रयोगशाला

प्राकृतिक विद्वानों यथा भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, जीवशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र आदि में तो विविध प्रकार के यंत्रों पदार्थों आदि से युक्त प्रयोगशालाएं होती हैं। लेकिन सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण के लिए प्राय: भारतीय पाठशालाओं और महाविद्यालयों में प्रयोगशालाओं को स्थापित

करने का विचार अब तक सर्वप्रचलित स्थापित होने लगा हैं। अब ऐसी प्रयोगशालाओं को समाजशास्त्र, भूगोल, सामाजिक अध्ययन विषयों में स्थापित करने की आवश्यकता है। सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले सामाजिक विज्ञानों के शिक्षकों को मिलकर एक ऐसी सामाजिक अध्ययन की प्रयोगशाला बनानी चाहिये जिसमें सभी विषयों से सम्बन्धित एक साधन सम्पन्न सामग्री हो। प्रयोगशाला में निम्न वस्तुओं को रखा जाना चाहिए:–

- ✓ सा0 अ. की प्रयोगशाला में चित्र, फोटोग्राफ / पोस्टर, मानचित्र मॉडल, फिल्में प्रोजेक्टर, स्लादड्स आदि सामग्री होना आवश्यक होता है ।
- ✓ प्रयोगशाला में रेडियों, टेपरिकार्डर व भरे हुए कैसेट होने चाहिए ।
- ✓ प्रयोगशाला में वीडियो रिकार्डर व भरे हुए कैसेट व टेलीविजन भी लगा होना चाहिए ।
- ✓ सा0 अ0 की प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के यन्त्र / शिक्षोपकरण यथा ग्लोब, ऋतु परिवर्तन को बतलाने वाला यंत्र, बांध का मॉडल पैमाने आदि का प्रयोग किया जाता है।
- ✓ प्रयोगशाला में कैमरा का प्रयोग अत्यधिक आवश्यक है ताकि विभिन्न प्रकार के चित्रों को एकत्र करके रख सकते हैं।
- ✓ प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों के लिए पूर्व तैयार सर्वेक्षण यंत्र की जरूरत पड़ती है।
- ✓ विभिन्न प्रकार की मापनी यथा सामाजिक अंत मापनी, अभिवृत्ति मापनी आदि के उपयोग की सुविधा विद्यार्थियों को प्रयोगशाला के द्वारा ही प्राप्त होती है।
- ✓ प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के खाली मानचित्र होने चाहिए जिससे विद्यार्थी उसे भरकर अभ्यास किया करें।
- ✓ प्रयोगशाला में साक्षात्कार करने मे विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री की आवश्यकता होती है।
- ✓ प्रयोगशाला में विभिन्न संस्कृतियों, समाजों, कालों का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुएं आदि का होना अति आवश्यक है।
- ✓ प्रयोगशाला में या उसकी सहायता से की जा सकने वाली विषय सम्बन्धी क्रियाओं के लिए अन्य आवश्यक सामग्रियों का होना आवश्यक है।
- ✓ विद्यार्थियों समाज तथा विभिन्न शिक्षण संस्थाओं, विदेशों दूतावासों तथा सम्पन्न परिवारों से संदर्भ स्थापित किया जा सकता है।
- ✓ प्रयोगशाला की वजह से निःसंदेह विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले सभी सामाजिक अध्ययनों का शिक्षण अधिक प्रभावोत्पादक और रोचक बनेगा तथा विद्यार्थियों में खोज की प्रवृति विकसित होगी।

प्रत्येक विद्यालय में एक सुसज्जित सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका उद्देश्य सा0 अ0 शिक्षण को प्रभावी बनाना एवं विद्यार्थियों की सा0 अ0 के सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों ने समाज में अपनी पहचान बना ली है। विद्यार्थियों में सा0 अ0 दृष्टिकोण, अनुभूति तथा रूचि आदि का विकास करना हमारा प्रमुख कार्य यह भी है कि विद्यार्थी वैज्ञानिक अवधारणाओं एवं उनके उपयोग को अर्थपूर्ण ढंग से ग्रहण कर सके।

प्रयोगशाला का महत्व:–

- ✓ प्रयोगशाला में विद्यार्थी निम्न बातों को उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं के द्वारा सीखते हैं वे उनके मस्तिष्क में स्थाई रूप में जम जाती है।
- ✓ प्रायोगात्मक कार्य के अभाव में छात्र का ज्ञान अपूर्ण और सतही रहता है, प्रयोग करने से यह ज्ञान गहरा हो जाता है।
- ✓ प्रयोगशाला में विद्यार्थी निरीक्षण, आकड़ा–संग्रह एवं विश्लेषण जैसी क्रियाओं और उपकरणों का उचित प्रयोग आदि कार्य सीख जाते हैं।
- ✓ प्रयोगशाला में सामूहिक रूप से कार्य करने से विद्यार्थियों में सामाजिकता, सहयोग की भावना, साधन–सम्पन्नता, आत्म निर्भरता और नेतृत्व आदि गुणों का विकास होता है।

विद्यालय में प्रयोगशाला का स्थान:–

- ✓ प्रयोगशाला शांत स्थान पर स्थित होना चाहिए। इसमें दूसरी कक्षाओं या खेल के मैदानों आदि का शोर–गुल नहीं आना चाहिए।
- ✓ दिन में प्राकृतिक प्रकाश की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। अत: प्रयोगशाला को विद्यालय के एक कोने में भूमि तल पर बनाना उचित रहेगा।

पानी की व्यवस्था:– सा0 वि0 प्रयोगशाला में छत पर एक पानी की टंकी होनी चाहिए ताकि नलों से पानी हर समय मिलता रहे। इससे विद्यार्थियों को असुविधा नहीं होती है।

बिजली की व्यवस्था:– प्रयोगशाला में बिजली का उचित प्रबन्ध होना अति आवश्यक है। उसमें पर्याप्त संख्या में ट्यूब, बल्ब, स्विच बोर्ड और पावर प्लग भी लगे होन चाहिए।

- ✓ बिजली की तारें अच्छी किस्म की हों और ढकी होनी चाहिए। इससे दुर्घटना से बचाव रहेगा।
- ✓ प्रयोगशाला में बिजली की व्यवस्था ठीक प्रकार से होने चाहिए।

प्रयोगशाला में शाला में श्यामपट बनवा देना चाहिए। इसके ऊपर कोई सजावट नहीं बनी होनी चाहिए। यह बहु त उपयोगी साधन है जिस पर हम पाठ या प्रयोग–कार्य के मुख्य अंश व कार्य विधि लिख देते हैं। इस तरह से विद्यालय में प्रयोगशाला का होना अति आवश्यक है जिससे विद्यार्थियों को समझने में आसानी होती है।

12.4 सामाजिक अध्ययन संग्रहालय व प्रदर्शनियॉ

प्रत्येक सामाजिक विज्ञान में– चाहे वह इतिहास हो अथवा भूगोल, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, सामाजिक अध्ययन, अर्थशास्त्र या अन्य, संग्रहालय का आयोजन स्थायी रूप से पाठशाला में एक बड़े कमरे में किया जा सकता है और अवश्य किया जाना चाहिए। शिक्षक अपने प्रयासों सेशाला के साधनों से, विद्यार्थियों की सहायता से तथा विभिन्न स्थलों के भ्रमण, निरीक्षण तथा विभिन्न संस्थाओं व व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करके निस्संदेह निम्नांकित प्रकार की सामग्रियों को एकत्र कर सकते हैं, जिनको भलीभांति एक पाठशालीय संग्रहालय के रूप में सजा कर रखा जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों और स्थानीय जनता के ज्ञान की आशातीत अभिवृद्धि हो सकती है।

संग्रहालय का महत्व:—

- ✓ सा0 अ0 के संग्रहालय में विभिन्न कालों और देशों के सिक्के होने चाहिए ।
- ✓ संग्रहालय में विभिन्न कालों और देशों के डाक टिकट तथा विभिन्न देशों के झण्डें भी होने चाहिए।
- ✓ विभिन्न धर्मों के ग्रन्थ, प्रवर्तकों के चिन्ह, धर्म चिन्ह, पूजनीय स्थलों के चित्र लगाने चाहिए।
- ✓ सा0 अ0 के संग्रहालय में विभिन्न नस्लों के लोगों के चित्र, रेखाचित्र मानचित्र आदि लगे होने चाहिए।
- ✓ इसमें महापुरूषों, सुधारकों, वैज्ञानिकों, युग—प्रवर्तकों के चित्र तथा विभिन्न कालों के हथियार, औजार, यंत्र घरेलू उपकरण, वस्त्र आदि भी होने चाहिए।
- ✓ संग्रहालय में धातुएं और प्राकृतिक पदार्थ, पत्थर, मूर्तियां, कार्टून तथा महापुरूषों के कथन, चित्र च संक्षिप्त जीवन—चार्ट भी होने चाहिए।
- ✓ इसमें विभिन्न प्रकार के अन्न, बीज, पत्ते, दुर्लभ ग्रंथ, ताड़—पत्र लेख विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुऐं और उनकी तसवीरें वर्तमान समस्याओं के चित्र, भविष्य की समस्याओं की झांकी प्रस्तुत करने वाले चित्र भी लगे होने चाहिए।
- ✓ संग्रहालय में स्लाइडें, सामाजिक शिक्षण में काम आने वाले उपकरण यंत्र या साधन सामग्री उपयोग मे लाने चाहिए।
- ✓ सा0 अ0 के संग्रहालय में विभिन्न प्रकार के तथ्यों के रेखाचित्र तथा मुखौटे, गहने, वस्त्र, जूते, टोपियाँ, जन जातीय प्रसाधन वस्तुएं आदि उपयोग में लाई जा सकती है।

इस प्रकार से सम्पन्न संग्रहालय को सभी सामाजिक अध्ययनों के शिक्षण में बहुत उपयोगी पाया जायेगा इनके आयोजन और संगठन में विद्यार्थियों को अधिकाधिक सहायता दी जाये और यथासंभव बाजार से चीजों को खरीदने के बजाय उन्हें शाला में ही बनाया जाये या स्वयं एकत्र करवाया जाये। सा0 अ0 में संग्रहालय का महत्व बहुत है इसमें इसे कलाओं का मन्दिर कहते हैं जहां वास्तविक वस्तुओं का संगठन होता हैं सहायता की जांच के बाद इन वस्तुओं को संग्रहालय में सुसज्जित किया जाता है। इससे विद्यार्थियों को सूचना दी जाती है और वे पढ़ाई ओर मस्ती भी करते हैं। क्योंकि यह अति आवश्यक और महत्वपूर्ण भी है कि हर विद्यालय में एक सामाजिक अध्ययन संग्रहालय हो। वर्तमान काल में विद्यार्थी बहुत प्रयोगशील होते जा रहे हैं वे प्रयोग और वास्तविकता को ज्यादा पसन्द करते हैं इसलिए शिक्षक संग्रहालय की मदद से विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं और विद्यार्थी भी आनन्दपूर्वक पढ़ाई करते हैं। इससे उनमें जानकारी प्राप्त करने का उत्साह उत्पन्न होता है। विद्यार्थियों के लिए यह एक अच्छा साधन होता है ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह एक अच्छा साधन होता है ज्ञान प्राप्त करने के लिए और सा0 अ. के शिक्षण में बहुत सहयोग मिलता है। संग्रहालय में महापुरूषों, सुधारकों, वैज्ञानिकों, युग—प्रवर्तकों के चित्र तथा विभिन्न कालों के हथियार, औजार, यंत्र, घरेलू उपकरण, वस्त्र आदि लगे होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को सरलता से विषय ज्ञान प्राप्त हो सके। इससे विद्यार्थियों को वर्तमान तथा भविष्य की झांकियों के चित्रों के बारे में भी पता चलता है। इसमें विवाहों महत्वपूर्ण आयोजनों आदि के चित्र तथा विभिन्न धर्मों के ग्रंथ, झण्डे, प्रवर्तकों के चिन्ह,

धर्म चिन्ह, पूजनीय स्थलों के चित्र तथा माहपुरूषों के कथन, चित्र व संक्षिप्त जीवन चार्ट को संग्रहालय में लगा सकते हैं जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती हैं। इसमें विभिन्न नस्लों के लोगों के चित्र तथा औजार, यंत्र, घरेलू उपकरण भी लगाते हैं ।

इस प्रकार से संग्रहालय सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में बहुत लाभकारी होता है। इसमें विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को सजाना तथा उनसे ज्ञान प्राप्त होता है। संग्राहलय में विभिन्न कालों और देशों के डाक–टिकट भी लगाये जाते हैं। इस प्रकार विद्यालयों में संग्रहालय होना अत्यधिक आवश्यक है।

12.5 सामाजिक अध्ययन सामुदायिक वातावरण (Social studies community enviroment)

विद्यालय एवं समुदाय शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक साधन है जिन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है विद्यालय की स्थापना समुदाय के परिक्षेत्र में होती है और समुदाय विद्यालय की स्थापना अपने विकास के लिए करता है। इसलिए विद्यालय का सदैव ही यह प्रयास होना चाहिए कि वह समुदाय की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुसार कार्य करें। इसके लिये उसे समुदाय से सम्पर्क बनाये रखना होगा। बालक को सकारात्मक दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का कार्य विद्यालय करता है तो समुदाय का वातावरण भी सकारात्मक गतिविधियों को प्रेरित करेगा। इसलिए कहा जाता है कि विद्यालय समाज का प्रतिबिम्ब होते है। जॉन ड्यूबी ने विद्यालय को एक सामाजिक संस्था स्वीकार करते हुए कहा है कि जिस प्रकार शरीर को कायम रखने हेतु भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार समुदाय के अस्तित्व के लिए शिक्षा आवश्यक होती है और इसके लिए शिक्षा के महत्वपूर्ण साधन के रूप में विद्यालय की आवश्यकता होती है। यह संस्था बालकों को उन सामाजिक क्रियाओं का प्रशिक्षण प्रदान करती है जो वर्तमान सामाजिक जीवन में प्रचलित है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा बालक को समाजोपयोगी नागरिक बनाने में सहयोग करती है।

इस युग में प्रत्येक समुदाय अपना विकास तीव्र गति से करना चाहता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यालय एवं समुदाय के सम्बन्ध प्रगाढ हो तो तथा दोनों एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करें। विद्यालय तथा समुदाय के सम्बन्ध सशक्त होने चाहिए इस तथ्य को स्वीकार करते हुए डा. जे.पी. सैयदन ने कहा है “स्कूल और समुदाय का सहयोग माता–पिता, अध्यापक विद्यार्थी और समुदाय के परस्पर सम्बन्ध से भी अधिक बुनियादी वस्तु है। स्कूल के लक्ष्य और उदेश्य, उसकी शिक्षण विधियां और अनुशासन सभी अन्ततः उस समुदाय के लिये जाते है जिसमें स्कूल स्थित है। यदि दोनों में सजीव और गतिशील सम्बन्ध नहीं है तो शिक्षा निर्जीव और अवास्तविक होगी तथा उसका बच्चों के मन और चरित्र पर कोई प्रभाव नहीं होगा ।

विद्यालय तथा समुदाय के सबंधों को सक्षम बनाने के उपाय (Measures to make school and community relationship more strengthened)

विद्यालय और समुदाय के संबंधों को और अधिक सशक्त बनाने के लिए निम्न तथ्यों को मध्यनजर रखना आवश्यक है–

1. विद्यालय में एक परामर्श समिति गठित की जाये जिसका कार्य शिक्षा संबंधी समस्याओं का समाधान करना है।

2. समुदाय में आयोजित विभिन्न समारोह जैसे मेले, उत्सव आदि में छात्रों को स्वयं सेवक की भूमिका का निर्वाह करने के लिए भेजा जाना चाहिए।

3. विद्यालय में उपलव्ध शेक्षिक सामग्री का उपयोग सामुदायिक शिक्षा हेतु किया जायें।

4. विद्यालय पुस्तकालय का उपयोग समुदाय के व्यक्ति भी कर सके। इसके लिए उपयुक्त समय निर्धारित किया जा सकता है।

5. विद्यालय में आयोजित खेलकूद संबंधी क्रियाओं के आयोजन में निर्णायक के रूप में समुदाय के व्यक्तियों को आमंत्रित किया जा सकता है जिनका इस क्षेत्र में निजी अनुभव है।

6. विद्यालय में उपलब्ध निर्देशन सेवाओं का लाभ समुदाय के सदस्य भी उठा सकें। विद्यालय द्वारा इस प्रकार की व्यवस्थ की जानी चाहिए।

7. विद्यालय में शिक्षक अभिभावक संघ स्थापित किये जाये विद्यालय में विभिन्न आयोजनो में अभिभावकों को आमंत्रित किया जाये। सत्र पर्यन्त एक निश्चित अन्तराल के पश्चात शिक्षक अभिभावक दिवस आयोजित किये जायें जिसमें अभिभावकों को आवश्यक रूप से बुलाया जायें।

8. छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का विशेष ध्यान रखा जाये ताकि उसी के अनुरूप शिक्षण की व्यवस्थ की जाये। यदि किसी छात्र की कोई विशेष समस्या हो तो अभिभावकों के सहयोग से उसका निदान किया जाये।

9. समाज में आयोजित विभिन्न कार्यकमों में विद्यालय का सहयोग लिया जाये जैसे किसी रोग के प्रति जागरूकता के लिए रैली आदि निकालना किसी समस्या के प्रति जन जागृति पैदा करना। इन कारर्यों में विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक समाज का सहयोग कर सकते है।

10. प्रत्येक विद्यालय की एक प्रबन्ध समिति हो जिसमें समुदाय के सदस्य भी हों। यह प्रतिबंध समिति जन सहयोग से विद्यालय की समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी लें। जैसे विद्यालय में स्वच्छ, जल, शौचालय आदि की व्यवस्था समुदाय के सहयोग से की जा सकती है।

इस प्रकार विद्यालय एवं समुदाय को एक दूसरे के समीप लाकर शिक्षण एवं अधिगम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया जा सकता है। वर्तमान में हुए विभिन्न शोध अध्ययन से पता चलता है कि कक्षा कक्ष तथा विद्यालय का सामाजिक वातावरण। छात्रों के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धियों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है।

12.6 सामाजिक अध्ययन पुस्तकालय

सामाजिक अध्ययन पुस्तकालय प्रभावशाली शिक्षण के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के औपचारिक से लेकर गैर–औपचारिक तरीकों तक और शिक्षण–अधिगम के व्याख्यात्मक तरीकों

से लेकर अंत: क्रियात्मक एवं विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण अधिगम तरीकों तक से परिवर्तन हो जाने से आज सामाजिक अध्ययन पुस्तकालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। इसलिए अब सा0 अध्ययन पुस्तकालय अच्छे विद्यालय का एक महत्वपूर्ण घटक हो गया है। पुस्तकालय ऐसी जगह स्थित होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी शोरगुल से प्रभावित न हों सा0 अध्ययन पुस्तकालय एक ऐसा आधार है जिसके द्वारा हम ऐतिहासिक और भौगोलिक गाथाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। पुस्तकालय एक ऐसा साधन है जो ज्ञान के भंडारण और संप्रेषण का माध्यम है और आज के अध्यापक का इसके बिना काम नहीं चल सकता है। पुस्तकालय पुस्तकों का खजाना है और जिसमें पाठ्य पुस्तकें, गैर–साहित्यिक पुस्तकें, विशेष विषयों और रूचियों से संबंधित संदर्भ पुस्तकें और संबंधित पुस्तिकाएँ, कतरनें, चित्र युक्त किट, आरेख तथा ऐसे पोस्टर होने चाहिए जिनपर बच्चों के बड़े या छोटे समूहों के साथ उपयोग करने के लिए उपयुक्त चयनित सूचना को बृहद आकार में प्रस्तुत किया जाता है। पुस्तकालय में स्रोत सामग्री की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए। ताकि विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार पुस्तकें तथा अन्य सामग्री ले सके। जब तक विद्यार्थी पुस्तकों को पढ़ेंगे नहीं या देखेंगे नहीं तब तक उनमें असाधारण व्यवहार और न्याय करने स्वतन्त्र योग्यता नहीं आ पायेगी। इसलिए विद्यालयों में पुस्तकालय का होना अति आवश्यक है।

12.6.1 पुस्तकालय का महत्व (Importance of library)

अग्रलिखित बिन्दुओं के द्वारा पुस्तकालय के महत्व को समझा जा सकता है

1. बालको के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।
2. छात्रों में आत्मानुशासन एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जा सकता है।
3. छात्रों के स्वाध्याय की आदत का विकास किया जा सकता है।
4. छात्रों को पुस्तकों के उचित प्रयोग का प्रशिक्षण मिलता है।
5. पुस्तकालय से छात्रों को आधुनिकतम साहित्य का परिचय प्राप्त होता है।
6. छात्रों का दृष्टिकोण को व्यापक बनाया जा सकता है।
7. छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ती की जा सकती है।
8. पुस्तकालय में छात्र सदैव अध्ययनरनत रहता है अत: वह अप्रत्यक्ष माध्यमों द्वारा जीवन के नये– नये अनुभवों को प्राप्त करना है।
9. छात्रों में मौन–पाठन की आदतों का विकास होता है।
10. पुस्तकालय का प्रयोग छात्रों को समय का पाबंद बना देता है क्योंकि पुस्तकालय की पुस्तकें उसे समय पर लौटानी होती है।

12.6.2 पुस्तकालय का संगठन:

हमारे देश की पाठशालाओं में आमतौर पर पुस्तकालयों की स्थिति बहुत शोचनीय है। उनमें प्राय: पाठ्य पुस्तकें और कुछ कहानी, नाटक, कविता की पुस्तकें होती हैं, लेकिन उनमें सामाजिक अध्ययन के संदर्भ ग्रंथों, प्रामाणिक पुस्तकों, विश्वकोषों आदि का अभाव होता है। उनमें वर्तमान काल की विविध समस्याओं से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं का घोर अभाव रहता है। शिक्षकों को ऐसे पुस्तकालयों से अपने शिक्षण के लिए तैयारी करने में कोई मदद नहीं मिलती।

इससे विपरीत स्थिति हमारे महाविद्यातयो और विश्व विद्यालयों की हैं। उनमें अनेक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ, विश्वकोष प्रामाणिक पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं होती हैं लेकिन उनका कोई उचित उपयोग शिक्षक व विद्यार्थी नहीं करते तथा कई मामलों में यह देखा जाता है कि ऐसी महत्वपूर्ण सामग्री बहुत लापरवाही से कोनों में वर्षों तक पड़ी, फटती, सड़ती रहती है। एक पाठशाला के सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों को मिल कर एक ऐसा महत्वपूर्ण प्रयास करना चाहिए कि वे अपनी पाठशाला में ही एक अलग "सामाजिक अध्ययन पुरतकालय" को बना लें। इसके लिए वे निम्नांकित स्रोतों से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं और इस प्रकार बहुत कम व्यय में उत्तम उपयोगी पुस्तकालय विकसित कर सकते हैं:–

1. यदि प्रधानाध्यापक से नई दिल्ली स्थित सभी विदेशी दूतावासों को पत्र लिखवाए जायें और प्रार्थना की जाये कि वे अपने भौगोलिक सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, आर्थिक विषयों से संबंधित पत्र–पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं निःशुल्क भेजने की क पा करें, तो उनमें से बहुत से दूतावास प्रसन्नतापूर्वक ऐसी बहुत सी उपयोगी सामग्री भेज देगें।
2. केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों को पत्र लिखकर उनके वार्षिक प्रतिवेदन व अन्य निःशुल्क प्रकाशन सुगतमापूर्वक प्राप्त किये जा सकते हैं।
3. "पुस्तक दान" आन्दोलन चलाकर सामाजिक विज्ञानों के शाला शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता से सम्पन्न परिवारों व सभी प्रकार के लोगों व संस्थाओं से बहुत सी पुस्तकें निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।
4. लेखकों और प्रकाशकों–विदेशी प्रकाशकों से प्रार्थना करने पर उनसे बहुत सी पुस्तकें निःशुल्क शाला के विद्यार्थियों के उपयोगार्थ एकत्र की जा सकती है।
5. समाज कल्याण बोर्ड, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, कोपरेटिव सोसाइटी, N.C.E.R.T., N.I.E.P.A., जैसी संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित करके बहुत सी उपयोगी शिक्षण सामग्री निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है।
6. आस पास के विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में विद्यमान संदर्भ ग्रन्थों, विश्वकोषों, सचित्र प्रायोगिक पुस्तकों उन महत्वपूर्ण पृष्ठों को फोटोस्टेट करवाया जा सकता है जो पाठशाला में सामाजिक अध्ययन विधियों के पाठ्यक्रम के प्रयोगों से संबंधित है। उदाहरणार्थ, विश्व की प्राचीन सभ्यता के सचित्र इतिहास से सम्बन्धित कुछ पृष्ठों को प्रामाणिक ग्रंथों से फोटोस्टेट करवाया जा सकता है।
7. पाठशाला के पुस्तकालय में जो पहले से ही विद्यमान सामाजिक विज्ञानों की पुस्तकें है उनको अलग करके सामाजिक विज्ञान पुस्तकालय या कक्ष की स्थापना की जा सकती है।
8. दैनिक पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाले चित्रों, लेखों, प्रमुख खबरों को काट कर विषयवार/प्रयोगवार उनकी फाइलें विद्यार्थियों की सहायता से बनवाई जा सकती है।

12.6.3 सा0अ0 पुस्तकालय के लिए महत्वपूर्ण स्रोत:– पुस्तकें व्यक्ति की मित्र तथा ज्ञान का भंडार होती हैं। ये हमे प्रसन्नता प्रदान करती है और नित नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करती हैं आधुनिक समय में विद्यालयों में उत्तम पुस्तकालय सेवा की उपलब्धता कोई विवादित विषय नहीं है। इसमें पुस्तकों के स्रोत हम सम्मिलित कर सकते हैं–

1. विद्यार्थी की पाठ्य पुस्तकें:– पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की बहुत अच्छी पाठ्य पुस्तकें विभिन्न विषयों की होनी चाहिए।
2. इकाई पुस्तके:– इकाई पुस्तकों के पुस्तकालय में संग्रह से विभिन्न विषयों में सामाजिक अध्ययन अपने देश और इससे सम्बन्धित विभिन्न ज्ञान अर्जन अच्छी तरह से होगा।
3. पुस्तकालय की वस्तुएं:– इसमें मुख्य हैं प्रेरणा–प्रद सामाजिक विषयों पर आधारित विभिन्न प्रकार की पुस्तके जो हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। किसी व्यक्ति का जीवन वृतान्त और ऐतिहासिक क्रिया कलापों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना है तो पुस्तकालय में ऐसे स्रोत उपलब्ध कराने चाहिए।
4. निर्देश वस्तुएं:– पुस्तकालय को निर्देश वस्तुओं के साथ सफाई से अच्छी तरह से सुसज्जित होना चाहिए। सैद्धान्तिक निर्देशित पुस्तकें और असैद्धान्तिक निर्देशित पुस्तकें होनी चाहिए। तथा सा0 अध्ययन में शब्दकोष, एटलस, मानचित्र, चार्ट, पत्रिका आदि पुस्तकों के बारे में ज्ञान होना चाहिए। सामाजिक विषयों पर आधारित चित्रों को भी पुस्तकालय में लगा होना चाहिए।

इस प्रकार पुरतकालय को असैद्धान्तिक स्रोत की वस्तुओं को भी उपयोग में सम्मलित होना चाहिए। इस तरह ओर कई विषयों की पुस्तकों को पुस्तकालय में सम्मलित होना चाहिए।

आज के शिक्षा के बदले हुए स्वरूप में, जहाँ स्वयं शिक्षण पर बल दिया जाता है? जहाँ अध्यापक को एक मार्गदर्शक एवं संसाधक कराने वाला माना जाता है। वहाँ पुस्तकालय का महत्व और अधिक बढ़ गया है। आधुनिक शिक्षा पद्धति छात्रों को स्वयं विभिन्न स्रोतों से ज्ञान–अर्जन के लिए अभिप्रेरित करती हैं पुस्तकालय बौद्धिक जीवन का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए।

12.6.4 सामाजिक विषय के पुस्तकालय का प्रबंधन:– पुस्तकालय के सफल संचालन के लिए हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए।

1. **स्थान:–** पुस्तकालय विद्यालय की आत्मा होती है। अत: इसके जिये स्थान, व्यवस्था तथा साज–सज्जा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पुस्तकालय प्रकाश युक्त एवं हवादार हो। इसका हॉल खुला, स्वच्छ बड़ा व व्यवस्थित होना चाहिए।
2. **साज–सज्जा:–** पुस्तकालय में बैठ कर पढ़ने के लिए पर्याप्त संख्या में आरामदेह कुर्सियों एवं अच्छी समतल मेजें होनी चाहिए। पुस्तकें रखने के लिये पर्याप्त संख्या में बड़ी अलमारियाँ भी आवश्यक हैं। पत्र पत्रिकाओं, नए प्रकाशनों के लिए रेक, सूचना–पट, बुलेटिन बोर्ड और पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए अलग निर्दिष्ट स्थान आदि की व्यवस्था होनी चाहिए ।
3. **पुस्तकों का चयन:–** पुस्तक चयन में नीति निर्धारक सिद्धान्त यह है कि अध्यापकों को अपने विचारों की अपेक्षा विद्यार्थियों की स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक रूचियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अध्यापकों को पुस्तकालय की पुस्तकों का स्वयं उपयोग करने के साथ–साथ विद्यार्थियों को भी अभिप्रेरित करना चाहिए ताकि वे स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करना और पुस्तकालय संसाधनों का सदुपयोग करना जान पाएं।

पुस्तकालय में ऐसी पुस्तकें चुनी जानी चाहिए जिनके लेखक उस विषय के विद्वान हों। पुस्तकों की विषय वस्तु अर्थ पूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक क्रम में होनी चाहिए। विद्यालय में एक समिति हो जो क्रय की जाने वाली पुरतकों का अनुमोदन करें। जिन पुस्तको की मांग अधिक रहती हो, उनकी अधिक प्रतियां खरीद लेनी चाहिए। ताकि उनके लिए छात्रों को अधिक समय तक प्रतिक्षा न करनी पड़े।

4. पुस्तकालय में पुस्तकों का संगठनः– पुस्तकालय में पुस्तकें खुली अलमारियों में रखी जानी चाहियें। इनको विषयानुसार साथ–साथ रखें ताकि ढूँढने में आसानी रहे। खुली अलमारी वाली प्रणाली का एक लाभ यह भी है कि छात्र आसानी से अपनी इच्छानुसार पुस्तक स्वयं लेकर पढ़ सकते हैं कुछ संदर्भ–सामग्री को अलग ही रखना चाहिए ताकि अध्यापकों या विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को शीघ्रता से पूरा किया जा सके।

   पुस्तकालय संबंधी नियम को लिख कर पुस्तकालय में लगा देने चाहिए जिससे पुस्तकालय में अनुशासन बना रहेगा। विद्यार्थियों को पुरतकालय में पुस्तक सूची का प्रयोग करना चाहिए। पुस्तकालय में नई पुरानी सभी प्रकार की पुस्तकों का क्रम सही रूप से चलता रहना चाहिए।

12.7 अभ्यास प्रश्न

1. प्रयोगशाला का महत्व बताइये?
2. सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला की व्यवस्था कैसी होनी चाहिए?
3. एक शिक्षक किस प्रकार विद्यालय एवं समुदाय के संबधों को प्रगाढ कर सकता है?
4. सामाजिक अध्ययन की कक्षा, और कक्षाओं से कैसे भिन्न हो सकती है?
5. कक्षा में बुलेटिन बोर्ड का क्या महत्व है?
6. सामाजिक अध्ययन पुस्तकालय में किस प्रकार की पुस्तकें होनी चाहिए?
7. सामाजिक अध्ययन के पुस्तकालय के संचालन में किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

12.8 सारांश

इस प्रकार सामाजिक अध्ययन की कक्षा, पुस्तकालय, संग्रहालय, प्रदर्शनियाँ एवं प्रयोगशाला आदि वे महत्वपूर्ण संसाधन हैं जिनकी सहायता से सामाजिक अध्ययन को न केवल बोधगम्य अपितु रूचिकर एवं प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। निश्चय ही सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए यह सभी महत्वपूर्ण साधन हैं।

12.9 सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

(1.) विंच, पी0 (1958), द आइडिया ऑफ सोशल सांइस, रूटलेज एण्ड कीगेन पॉल, लंदन।

(2.) योकम, जी0 ऐ0 एण्ड सेमसन, आर0 जी0 (1948), मॉर्डन मेथेड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग, न्यूयार्क, 1948।

(3.) मेहता, डी0 डी0 (2003), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।
(4.) कोचर, एस0 के0 (2003), दि टीचिंग ऑफ शोसल साइन्स, स्टरलिंग पब्लिकेशन न्यु दिल्ली।
(5.) इंडीगर, मरलाव एण्ड भास्कर राव, डी0 (2003), टीचिंग सोशल स्टडीज शक्सेजफुली,, डिसकवरी पब्लिकेशन हाऊस, न्यु दिल्ली।
(6.) भट्ट, बी0 डी0, मॉर्डन मेथेड्स ऑफ टीचिंग : कानसेप्ट एण्ड टेकनीक, कनिश्का पब्लि0।

इकाई–13

सामाजिक अध्ययन शिक्षण मे नवाचार और भविष्य

Innovations: In teaching of social studies and its future

संरचना

13.0 उद्देश्य (Objectives)
13.1 प्रस्तावना (Introduction)
13.2 अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप (Meaning definition and structure)
13.3 नवाचार का महत्व (Importance of Innovation)
13.4 परिवर्तन और नवाचार (Change and innovation)
13.5 आधुनिक युग में (In Modern world)
13.6 सामाजिक विज्ञान शिक्षण मे नवाचार (Innovation in teaching social study)
13.7 सारांश (Summary)
13.8 अभ्यास प्रश्न (Evaluative questions)
13.9 संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

13.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का के अध्ययन के उपरान्त आप–

- शिक्षार्थी नवाचार की आवधारणा को समझ सकेंगें।
- शिक्षार्थी नवाचार के आवश्यकता को समझ सकेगें।
- नवाचार और परिर्वतन में सम्बन्ध स्पष्ट कर सकेगें।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में किन–किन नवाचारों का प्रयोग किया जा सकता है बता सकेंगे।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षा में नवाचारों की क्या उपयोगिता है।

13.1 प्रस्तावना (Introducton)

शिक्षण के क्षेत्र में नित नये परिवर्तन हो रहे है ओर नई नई चुनौतियों शिक्षण में आ रही है। एक शिक्षक को इन सभी नवाचारों से परिचित होना आवश्यक है तभी वह अपने विषय से न्याय कर सकता है। छात्रों को उनसे परिचित करवा सकता है। शिक्षण में आये नवाचारों का उपयोग कर छात्रों को उनके प्रयोग के लिये प्रेरित कर सकता है। किसी भी ज्ञान का अस्तित्व, किसी भी विषय का अस्तित्व तभी बना रह सकता है जब वह उस क्षेत्र में होने वाले नवीन परिवर्तनों से स्वयं को परिवर्तित एवं संवर्धित करता है।

13.2 अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप (Meaning definition and structure)

नवाचार अंग्रेजी भाषा के शब्द "Innovation" का हिन्दी रूपान्तर है। इसका अर्थ नई रीति या विचार का प्रचलन या नव निर्माण है। हिन्दी भाषा का शब्द नवाचार दो पदों के योग से बना है – 'नव' + 'आचार'। नव शब्द का अर्थ नवीन है और आचार शब्द का अर्थ परिर्वतन, आचरण है। अत: नवाचार वही परिर्वतन है,जो स्थापित विधि, परम्परागत वस्तु आदि में नवीनता का समावेश कर सकें। अत: नवाचार का अर्थ हुआ वह परिर्वतन जो नवीनता लायें। 1971 ई0 में यूनेस्को सम्मेलन में नवाचार को स्पष्ट करते हुये कहा गया :– "नवाचार एक नूतन विचार का प्रारम्भ है। यह एक प्रक्रिया या तकनीकी है जिसका विस्तृत उपयोग प्रचलित व्यवहारों एंव तकनीकी के स्थान पर किया जाता है। यह परिर्वतन के लिये परिर्वतन नही बल्कि इसका कियान्वयन और नियन्त्रण परीक्षण एवम् प्रयोगों के आधार पर किया जाता है ।"

प्रत्येक नवाचार छ: चरणों (Steps) से होकर गुजरता है:–\

1. खोज (Invention/Discorvery)
2. परीक्षण (Testing/Examination)
3. मूल्यांकन (Evaluation)
4. विकास (Demvelopment)
5. विस्तार अथवा फैलाव (Exapansion)
6. उपयोग हेतु स्वीकार करना। (To accept use)

इस प्रकार नवाचार नूतन विचारों को खोजने की प्रकृति है और इसके द्वारा लोगों मे नवचेतना आती है।

1. ई–एम रोजर्स के अनुसार 'नवाचार एक ऐसा विचार है, जिसमें व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है। (E.N. Regers, "Innovations is a view/thinking in which individual experiences new ness")
2. **एच0जी0बार्नेट** के अनुसार "कोई विचार, व्यवहार या वस्तु जो नूतन है तथा वर्तमान स्थित प्रारूप से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है, उसे नवाचार कहते है।"
3. **एम0बी0** माइल्स के अनुसार "नवाचार जानबूझ कर किया जाने वाला नूतन एवं विशिष्ट परिवर्तन होता है, जिसे किसी तंत्र के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये अधिक प्रभावी माना जाता है।" (M.B. Mills, Innovation carefully done or accepted change through which objectives of system can be achieved effectively)
4. **एच0एस0 भोना** के अनुसार "नवाचार एक विचार है, एक अभिव्यक्ति है, कौशल युक्त एक यंत्र है या इसमें दो या दो से अधिक ऐसे तथ्य हैं, जिन्हें व्यक्ति ने या संस्कृति ने पहले व्यावहारिक रूप से न अपनाया हो।" (H.S. Bohna, "Innovation is an

aptitude spilled techinique which contains two or more such facts which were not accepted by individual or culture before)

अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि

1. नवाचार एक नवीन विचार है।
   Innovation is new view
2. गुणात्मक दृष्टिकोण से वर्तमान स्थिति की तुलना मे यह श्रेष्ठ होता है ।
   Its is good from quatitative point of view
3. यह जानबूझ कर किया जाने वाला नियोजित प्रयास है।
   It is pre–planned
4. नवाचार में विशिष्ठता का अंश सन्निहित रहता है।
   It has a part of specifity
5. यह वर्तमान परिस्थितयों में सुधार लाने का नया प्रयास है।
   It is a trial to bring Improvement in present situations
6. यह शैक्षिक परिर्वतन के गुणात्मक सुधार के लिये प्रयोग किया जाता है।
   It is used to bring quatitative improvement inchanging education.
7. शिक्षा में नवाचार को गुणात्मक सुधार के लिये प्रयोग किया जाता है।
   Innovation is used in education for qualitative improvement.

13.3 नवाचार का महत्व (Importance of Innovation)

आधुनिकीकरण से उत्पन्न समस्याओं को स्थान में रखकर ही शैक्षिक नवाचारों को अपनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की दृष्ट से भी नवाचारों का अत्याधिक महत्व है। नवाचार शैक्षिक व्यवस्था और कार्यप्रणाली की नवीनता बनाये रखने के लिये आवश्यक है। उनके अभाव में शैक्षिक लक्ष्य और प्रक्रिया में व्यापक अन्तर पड़ेगा। नवाचारों से शिक्षा को दिशा बोध प्राप्त होता है। समाजोययोगी उन्नति और स्तरीय शिक्षा पूरी तरह से नवाचारों पर आश्रित होती है।

लोकत्रांतिक समाजवादी विकासशील भारत के लिये शैक्षिक नवाचारों को अपनाना आवश्यक है सभी को शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने, दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षा और अनवरत् शिक्षा आदि के लिये नवाचारों की सहायता लेनी होगी। नवाचारों को अपनाकर ही हम प्रगति के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर हो सकते है।

कोई भी व्यवस्था यथास्थिति अधिक दिन नही चलती और व्यवस्था से जुड़े लोग ही परिर्वतन की माँग करने लगते हैं। परिवर्तन विकास का सूचक होता है। अत: परिवर्तन हेतु नवाचारों को अपनाना अति आवश्यक होता है।

नवाचार के प्रकार (Type of Innovation)

मुख्य रूप से दो प्रकार है।

सामाजिक अन्तर्क्रिया: (Social Interaction)

जब विभिन्न देशों समाजों या समाज के विभिन्न अंगों, अभिकरणों एवं शिक्षण संस्थाओं के द्वारा किसी नवाचार या नूतन विचार की जानकारी प्राप्त होती है तो उसे सामाजिक अन्तर्क्रिया नवाचार की संज्ञा दी जाती है इस प्रकार का नवाचार विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं की पारस्परिक अन्त: क्रियाओं के फलस्वरूप विकसित होता है ।

समस्या सामाधान (Problem Solving)

पूर्व प्रचालित व्यवस्था में अपेक्षित सुधार या परिर्वतन के लिये अथवा किसी समस्या के समाधान के लिये जब कोई नवीन उपाय या तरीके या नवाचार का प्रयोग किया जाता है उसे समस्या समाधान नवाचार कहा जाता है।

नवाचार मार्ग की बाधायें:– (Problems in Innovation)

किसी भी व्यवस्था में कोई परिवर्तन या सुधार किया जाता है तो उसके मार्ग में अनेक प्रकार की बाधायें आती हैं यह बाधायें इस प्रकार हो सकती हैं।

आदतें:–(Habit)

परिवर्तन के रास्ते में व्यक्ति की आदतें बाधा बन जाती है। वह परिर्वतन को शीघ्र नही अपनाना चाहते हैं। अतः अपेक्षित कार्यो का परिचय कराने से आदतों में परिर्वतन किया जा सकता है।

सन्तुलन:–(Balance/Equilibrium)

व्यक्ति में सन्तुलित रहने की प्रवृत्ति जन्मजात होती है परिर्वतन के पश्चात वह पुन: संतुलित अवस्था में जाने का प्रयास करता है।

प्राथमिकता:–(Priority)

व्यक्ति पर प्राथमिक प्रभावों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी कारण वह नवीन अनुभव को स्वीकार करने में झिझक महसूस करता है ।

अहं भाव:–(Ego)

व्यक्ति का अहं भाव पुरानी मान्यताओं के कारण नवीनता को अपनाने में हिचकिचाता है।

आत्मविश्वास हीनता:–(lack of confidence)

नवीनता को अपनाने में व्यक्ति अपनी क्षमताओं पर विश्वास नही करता है।

असुरक्षा तथा प्रत्यागमन:–(Unprotected and migration)

प्रारम्भ में ही बहुत से व्यक्ति नवाचार को अपनाने में कठिनाइयों के आने पर छोड़ देते हैं।

अज्ञानता :–(lack of Knowledge)

अधिकांश व्यक्ति नवाचारों के बारे में जानकारी के अभाव में तथा अन्य सम्बन्धों के कारण नहीं अपनाते हैं।

असफलता की आशंका:–(Feeling of Failure)

अधिकांशत: लोग भविष्य में वे इसमें सफल होंगे या नहीं इस चिन्ता के कारण नये कार्य करने में प्रयत्नशील नहीं होते हैं।

13.4 परिवर्तन और नवाचार (Change and Innovation)

परिवर्तन का अर्थ:– (Meaning of Change)

परिवर्तन सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सर्वव्यापक प्रक्रिया है। परिवर्तन के कारण ही विश्व में प्रगति विकास एवं विनाश का चक्र गतिमान है। परिवर्तन का अर्थ किसी स्वरूप, संरचना, विचार वस्तु या व्यवस्था में बदलाव से है। परिवर्तन प्रत्येक बदलाव या विचलन को कहा जा सकता है। चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक।

किलपैट्रिक के अनुसार "परिवर्तन विचारधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है।
Kilpatric, ”Change is part or whole change of thought
इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।

परिवर्तन व नवाचार में सम्बन्ध:– (Relation between change and Innovation)

परिवर्तन और नवाचार दोनों घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। दोनों में ही स्थापित परम्परा, प्रणाली, वस्तु या विचार में बदलाव आता है। परिवर्तन एक व्यापक धारणा है, जिसमें अच्छे एवं बुरे दोनों प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित है। जबकि नवाचार सदैव अच्छा, सकारात्मक, सुधारात्मक एवं रचनात्मक होता है और जिसके फलस्वरूप शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार आता है। अत: स्पष्ट है कि परिवर्तन और नवाचार घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हुए हुए एक नहीं है।

समानताएं:–(Similarity)

1. नवाचार और परिवर्तन दोनों में वर्तमान व्यवस्था, विचार या प्रणाली में परिवर्तन या बदलाव आता है।
2. नवाचार और परिवर्तन दोनों से शिक्षा के सभी अंग समान रूप से प्रभावित होते है।

असमानताएं:–(Dissimilarity or Difference)

1. नवाचार सुनियोजित, सुविचारित एवं सचेतन ढंग से किया जाता है, जबकि परिवर्तन स्वत: परिस्थितिवश भी हो सकता है।
2. नवाचार सदैव श्रेष्ठता की ओर ले जाता है या सुधारात्मक होता है, जबकि परिवर्तन अच्छा या बुरा, सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है।
3. प्रत्येक नवाचार परिवर्तन के अन्तर्गत आयेगा, किन्तु प्रत्येक परिवर्तन नवाचार हो यह आवश्यक नहीं है।

13.5 आधुनिक युग में प्रयुक्त किये जाने वाले नवाचार (Innovation in modern world)

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। अत: शिक्षा के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर होने के लिये नवाचारों का प्रयोग किया जाना अत्यधिक आवश्यक है। नित्य नये नवाचार समाज में आते जा रहे हैं। अत: आज नवाचारों का प्रयोग आवश्यक है। आधुनिक युग में प्रयुक्त किये जाने वाले विभिन्न नवाचार इस प्रकार है:–

1. बहुमाध्यम उपागम (Multimedia approach)
2. दूरस्थ शिक्षा (Distance education)

3. दल शिक्षण (Team teaching)
4. क्षेत्र पर्यटन (Area Tourism)
5. विचार गोष्ठी प्रविधि (Pannel discussion Method)
6. सम्मेलन प्रविधि (Conference/Senvinar teachnique)
7. कार्यशाला प्रविधि (Laboratory technique)
8. सामूहिक वाद–विवाद प्रविधि (Group discussion technique)
9. अनुकरणीय शिक्षण (Following teaching)
10. अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed learning)
11. संगणक सहायक अभिक्रम
12. पुनर्बलन शिक्षण (Feed back teaching)
13. संशोधनात्मक पृष्ठ पोषण (Ammended feed back)
14. उद्दीपक नियंत्रण (Stimulus control)
15. इन्टरनेट (Internet)
16. क्रियात्मक विधि (Activity method)

प्रगति का स्व मूल्यांकन :–

अब तक आपने क्या सीखा इसका मूल्यांकन निम्न प्रश्नों का उत्तर देकर आप स्वयं कीजिये :–

निम्न प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दें :–

1. नवाचार की एक परिभाषा दीजिये ?
2. नवाचार के प्रकारों को बताइये ?
3. नवाचार के मार्ग की बाधायें बताइये ?
4. नवाचार का अर्थ बताते हुए उसे परिभाषित कीजिये तथा नवाचार और परिवर्तन के मध्य सम्बन्ध बताइये ?

13.6 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में नवाचार

"सिखाना एक कला है और पद्धतियां इस कला के औजार हैं। जिनके पास औजारों के उपयोग का ठीक ज्ञान होता है वह शिक्षक धीरे–धीरे ही क्यों न हो, सिखाने की कला में कुशल हो जाता है, किन्तु जिसने कोई तैयारी ही नहीं की है वह कैसे सिखा सकता है" – गिजु भाई

विधि वह साधन है जिसके द्वारा अध्यापक किसी भी प्रकार की विषय–वस्तु का ज्ञान शिक्षार्थी को देता है। अध्यापक अपने शिक्षण–कार्य को सम्पन्न करने के लिये जो कदम उठाता है, वही विधि है। अध्ययन– अध्यापन प्रक्रिया में विषय–वस्तु के साथ–साथ शिक्षण विधियों का भी महत्व अधिक है क्योकि यदि शिक्षण कार्य करते समय सही विधि नहीं अपनायी जाती है तो शिक्षार्थी ठीक प्रकार से नहीं सीख सकता है। आधुनिक युग में नित्य नयी शिक्षण विधियों को शिक्षण में प्रयुक्त किया जा रहा है। अत: ऐसे कई नवाचार भी आधुनिक युग में प्रयुक्त किया

जा रहा है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण मे प्रयुक्त किये जाने वाले नवाचार के अन्तर्गत निम्नलिखित को प्रयुक्त किया जाता है:

1. निरीक्षण विधि (Supervision Method)
2. वाद–विवाद विधि (Discussion Method)
3. प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)
4. योजना विधि (Planning Method)
5. समस्या समाधान विधि (Problem Solution Method)
6. इकाई विधि (Limit Method)
7. स्रोत विधि (Source Method)
8. समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि (Socialized Recitation Method)
9. आगमन विधि (Inductive Method)
10. निगमन विधि (Deductive Method)
11. तुलनात्मक विधि (Comparative Method)
12. प्रादेशिक विधि (Regional Method)
13. भ्रमण विधि (Excursion Method)
14. प्रश्नोत्तर विधि (Question–Answer Method)
15. कहानी कथन विधि (Story telling Method)
16. डाल्टन विधि (Datlton Method)
17. क्रियात्मक विधि (Activity Method)
18. संकेन्द्रीय विधि (Concentric Method)
19. दूरस्थ शिक्षा पद्धति (Distance eduction Method)
20. दल शिक्षण (Team Teaching)
21. अनुकरणीय शिक्षण (Following Teaching)
22. अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed Instruction)
23. संगणक सहायक अभिक्रम
24. पुनर्बलन शिक्षण (Teaching Informent)
25. संशोधनात्मक पृष्ठ पोषण (Ammended feed back)
26. उद्दीपक नियंत्रण (Stimulus control)
27. बहु माध्यम उपागम (Multi Media approach)
28. इन्टरनेट (Internet)
29. पर्सनलाइज्ड सिस्टम ऑफ इन्स्ट्रक्शन (Personalised system at instruction)
30. सीडी रोम (C.D. Rom)
31. नाटकीय विधि (Dramatic Method)

13.6.1 निरीक्षण

यह विधि सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत भूगोल शिक्षण में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें बालक किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति को देखकर ही उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है। यह 'देखकर सीखना' नामक सिद्धान्त पर आधारित है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में यह सभी स्तरों पर काम में लाया जा सकता है। छोटी कक्षाओं में इस नवाचार का प्रयोग गृह प्रदेश के भूगोल से शुरू किया जा सकता है। तथा स्तरानुसार इसका क्षेत्र भी बढ़ता जाता है। इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों, पृथ्वी की वाह्य शक्तियों ज्वार–भाटा, वन, मिट्टी, खनिज, उद्योग–धन्धे, विभिन्न प्रकार की फसलें, यातायात एवं संदेश वाहन के साधन, विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों आदि को पढ़ाने में किया जा सकता है।

इसके लिये जिस स्थान पर बालकों को ले जाना है, उस स्थान को अध्यापक स्वयं पूर्व में ही देख ले तथा उसके बारे में योजना बना लेनी चाहिये।

इसके माध्यम से बालकों को दिया गया ज्ञान स्थायी होता है। बालक वास्तविक स्थिति से ज्ञान प्राप्त करता है। छात्र में सीखने की जिज्ञासा एवं उत्सुकता बनी रहती है तथा छात्रों में कल्पना शक्ति एवं तुलनात्मक शक्ति का विकास भी होता है।

13.6.2 वाद–विवाद :–

यह मुख्यत: क्रियाशीलता के सिद्धान्त का पालन करती है। इसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही मिलजुल कर किसी विषय अथवा प्रश्न पर विचार–विमर्श करते हैं तथा आम सहमति द्वारा किसी निर्णय पर पहुंचने का प्रयास करते हैं। जेम्स एम.ली के अनुसार– "वाद–विवाद एक शैक्षणिक सामूहिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी सहयोग पूर्ण ढंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं।"

इसके अन्तर्गत निम्न सोपान आते हैं :–

- समस्या की प्रस्तुति।
- समस्या तथा समाधान के स्रोतों से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों द्वारा वाद–विवाद से पूर्व की जाने वाली तैयारी।
- वाद विवाद का संचालन।
- वाद विवाद के बाद का कार्य।
- मूल्यांकन।

इसके माध्यम से छात्रों की सक्रिय क्रियाशीलता बनी रहती है। इसके द्वारा विश्लेषण, संश्लेषण, तुलना करना, तर्क शक्ति आदि क्षमताओं का विकास होता है। इससे छात्रों में मिलजुल कर कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इसके द्वारा छात्रों में सामूहिक निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है।

13.6.3 प्रयोगात्मक विधि :–

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अन्तर्गत भूगोल में यह विधि बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें शिक्षक छात्रों का मार्गदर्शक होता है। शिक्षक केवल योजना एवं अन्य सामग्री के बारे में ही निर्देश देता है, बाकी कार्य छात्र स्वयं करते हैं। इसमें छात्र पूर्ण रूप से क्रियाशील रहते हैं। इसके माध्यम से छात्र आंख–कान दोनों ही इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। इसके द्वारा छात्र प्रयोग कर

किसी निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास करते हैं, अतः खोज करने की भावना का विकास होता है। छात्रों की अध्यापक पर से निर्भरता कम होती है।

13.6.4 योजना विधि :–

इसके जन्मदाता जान डीवी को माना गया है। इसमें योजना शब्द महत्वपूर्ण है, जिसका अर्थ डब्ल्यू.एच. किलपैट्रिक के अनुसार इस प्रकार है "योजना एक उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे मन लगाकर सामाजिक वातावरण में पूरा किया जाता है।" इसमें किसी समस्या या उद्देश्य को लेकर छात्र स्वयं योजना बनाते हैं और स्वयं ही पूरा करते हैं। अध्यापक इसमें केवल मार्गदर्शक का कार्य करता है तथा वह कक्षा को छोटे–छोटे कई समूहों में बांट देता है एवं प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार कोई भी प्रोजेक्ट लेने को स्वतंत्र होता है।

इसके अन्तर्गत निम्न सोपान आते हैं :–

- योजना का चुनाव
- योजना का नियोजन
- योजना का कार्यान्वयन
- योजना का मूल्यांकन

इसके माध्यम से छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है। इससे बालकों में रटने की प्रवृत्ति को भी कम करती है। छात्रों में नेतृत्व की क्षमता का विकास होता है। इसके माध्यम से मानचित्र प्रक्षेप, गृह प्रदेश का भूगोल, यातायात के साधन, कृषि, फसलें, भारत एवं उसके राज्य, अपवाह तन्त्र, वन विभिन्न प्रकार के मानचित्र एवं रेखाचित्रों का निर्माण, मॉडल्स बनाना, मिट्टी एवं खनिजों के नमूने एकत्र करना आदि से सम्बन्धित कार्य आसानी से किये जा सकते हैं।

13.6.5 समस्या समाधान विधि :

इसके अन्तर्गत किसी समस्या का चुनाव करके उसके समाधान को खोजने का प्रयास करते हैं। इसमें अध्यापक केवल मार्गदर्शक का ही कार्य करता है, जबकि शिक्षार्थी किसी समस्या पर विचार कर समाधान करने की तरफ अग्रसर होता है। सी.वी.गुड– "समस्या समाधान शिक्षण की वह विधि है जिसमें ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों की उत्पत्ति करके शिक्षा दी जाये, जिनका समाधान आवश्यक हो। यह एक ऐसी विशिष्ट विधि है, जिसमें किसी मुख्य समस्या का समाधान तत्सम्बन्धी अनेक समस्याओं के सामूहिक समाधान द्वारा हो सके।"

इसके अन्तर्गत शिक्षार्थियों के सामने ऐसी परिस्थितियों से निबटने के लिये मुख्य समस्याओं का चुनाव करते हैं तथा अपने अनुभवों के आधार पर सामूहिक रूप से समाधान करते हैं। उदाहरणार्थ:– 'राजस्थान का सामाजिक अध्ययन' के अन्तर्गत कई समस्यायें रखी जा सकती हैं, जैसे– राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के आर्थिक दृष्टि से पिछड़े होने के क्या कारण हैं तथा पिछड़ापन कैसे दूर किया जा सकता है? इसी प्रकार से जनसंख्या की समस्या, प्रदूषण की समस्या, मिट्टी के अपरदन की समस्या, संसाधनों के दुरूपयोग की समस्या, ऊर्जा के घटते स्रोतों की समस्या, ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या आदि।

इसके अन्तर्गत निम्न सोपान सम्मिलित हैं:–

- समस्या का चयन
- समस्या समाधान के लिये परियोजना
- सामग्री का आयोजन
- परिकल्पनाओं का चयन
- सामग्री एवं तथ्यों का विश्लेशण कर निष्कर्ष निकालना
- स्थायी निष्कर्ष एवं उसका प्रयोग

इसके माध्यम से शिक्षार्थी में परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता का विकास होता है तथा उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा खोज करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

13.6.6 इकाई विधि :–

यह वर्तमान समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण विधि मानी जाती है। इसमें विशय–वस्तु को आवश्यकतानुसार कई इकाइयों में बांट लिया जाता है और उन इकाइयों के अनुसार ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास किया जाता है। इसमें कई दिन से कई सप्ताह तक की योजना बनानी पड़ती है।

डा0एच0सी0)मॉरीशन के अनुसार इसको अपनाने के लिये निम्नलिखित सोपान है:–

- अनुसंधान
- प्रस्तुतीकरण
- क्रियान्विति
- संगठन
- कथन

13.6.7 समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि :–

इसमें सभी विद्यार्थी सामूहिक रूप से किसी कार्यक्रम या विषय सामग्री का निर्धारण करते है। वे अपने विचार प्रकट करने में स्वतंन्त्र होते है। इसमें पाठ योजना को कई भागों में बाँट कर कक्षा में उतने ही समूह बनाकर प्रत्येक समूह का अलग–अलग नेता चुना जाता है। समूह के सदस्य प्रश्न पूछते है तथा निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। कार्य समाप्ति के बाद सभी समूह पुन: एक साथ मिलकर बैठते है और प्रत्येक समूह का नेता क्रमश: सम्पूर्ण कक्षा के सामने अपने समूह द्वारा निकाले गये निष्कर्षो को रखता है। किसी प्रकार की अस्पश्टता रहने पर अध्यापक अपनी तरफ से स्थिति स्पष्ट कर सकता है।

13.6.8 आगमन विधि :–

इसमें छात्र विशिष्ट से सामान्य की ओर अग्रसर होते है। छात्र के सामने सर्वप्रथम कई उदाहरण रखे जाते हैं और फिर वह इन उदाहरणों के आधार पर कोई निष्कर्ष निकालता है। **उदाहरणार्थ** :–यदि छात्रों को थार मरूरथल में स्थित विभिन्न जिलो की वार्षिक वर्षा के बारे में जायें तो छात्र इस निष्कर्ष पर पहुँचेगे कि रेगिस्तान में बहुत कम वर्षा होती है।

13.6.9 निगमन विधि :–

यह आगमन के विपरीत है क्यों कि इसमें पहले कोई सिद्धान्त या नियम रखा जाता है फिर विभिन्न उदाहरणों से उसकी पुष्टि की जाती है। इस विधि में सामान्य से विशिष्ट की ओर चलते है।

13.6.10 तुलनात्मक विधि:–

इसमें नात से अज्ञात की ओर जाते हैं अर्थात् भूगोल का ज्ञान ग्रह–प्रदेश भूगोल के आधार पर किया जाता है। इसमें तुलना के द्वारा एक वाहक के प्रभाव को दूसरे कारक पर आसानी से समझाया जा सकता है।

13.6.11 प्रादेशिक विधि :–

इसका प्रयोग सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अनर्तगत भूगोल में किया जाता है। इस विधि में संसार को समान भौगोलिक कारकों धरातल, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक बनस्पति एंव मानवीय तथा सामाजिक आर्थिक क्रियाओं आदि के आधार पर बाँट लिया जाता है। इसी प्रकार से महाद्वीप राश्ट्र राज्य को भी बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है। इसमें प्राक तिक प्रदेश की अध्ययन निम्नांकित भीर्शकों में किया जा सकता है।

स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक बनस्पति

पशु खनिज मानवीय एवं आर्थिक क्रियायें।

13.612 भ्रमण विधि :–

इसके माध्यम से छात्र वास्तविक स्थिति से ज्ञान प्राप्त होता है। वह भ्रमण करके ज्ञान प्राप्त करता है। **फेयर ग्रीव** के अनुसार –भूगोल विषय का अधिकांश भाग मस्तिष्क की अपेक्षा पैरों द्वारा सीखा जाता है।

इसके द्वारा विद्यार्थी स्वंय प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते है तथा उसमें आपसी सहयोग एंव मिलजुल कर रहने की प्रवृत्ति की प्रोत्साहन देती है।

13.6.13 डाल्टन विधि :–

इसके अन्र्तगत पूरे वर्ष के पाठ्यक्रम को आवश्यकतानुसार कई भागों में बाँट दिया जाता है। और उसे छात्र को साप्ताहिक, मासिक या मासिक रूप से करने को दे दिया जाता है। छात्रों को एक निश्चित समय पर कार्य पूरा करना होता है। छात्र कब व कितना कार्य करता है यह पूर्णत: छात्र पर ही निर्भर करती है। अध्यापक केवल छात्र का मार्गदर्शन करता है तथा स्थिति अवधि पर कार्य देखता है। यदि कार्य पूरा कर लिया गया है तो आगे कार्य करने को दिया जाता है।

13.6.14 कहानी कथन :–

इसके अन्र्तगत सामाजिक विषयों की विषयवस्तु का छात्रों को कहानियों के माध्यम से दिया जाता है इसके लिये अध्यापक को कहानी कहने एवं बनाने की कला में निपुण होना चाहिये।

सामाजिक अध्ययन के अन्र्तगत भूगोल में प्राथमिक स्तर पर पशुओं, विभिन्न स्थानों पर रहने वाले व्यक्तियों, बालकों, एस्किमों, वास्कोडिगामा, जलयान का अविष्कार, प्राकृतिक शक्तियां सूर्य चाँद आदि से सम्बन्धित कहानियाँ बनाकर सम्बन्धित ज्ञान दिया जा सकता है।

13.6.15 क्रियात्मक विधि :–

इसके अन्तर्गत बालक स्वयं कार्य करता है और ज्ञान प्राप्त करता है। इसमें छात्र सदैव क्रियाशील रहता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के मानचित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि का

निर्माण कराया जा सकता है तथा जलवायु सम्बन्धी कार्य एवं अन्य भौगोलिक यन्त्रों की कार्य विधि आदि का ज्ञान इस विधि द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

13.8.16 संकेन्द्रीय विधि :–

इसके अन्तर्गत छात्र को पहले अपने गृह प्रदेश का ज्ञान दिया जाता है और फिर क्रमशः वह ज्ञान विस्तृत होता हुआ विश्व स्तर तक पहुंच जाता है। उदाहरणार्थ– यदि दुग्ध व्यवसाय के विषय में ज्ञान प्रदान करना है तो उसे प्रारम्भ में उसके घर के आस पास के क्षेत्र में होने वाले दुग्ध व्यवसाय की जानकारी देते है। इसके बाद तहसील, जिला, राज्य एवं देश के दुग्ध व्यवसाय को समझाते हैं और अन्त में विश्व के दुग्ध व्यवसाय पर आते हैं।

13.6.17 दल शिक्षण :–

इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक शिक्षक किसी एक विद्यार्थी समूह के लिये पाठों का आयोजन, प्रस्तुतीकरण एवं मूल्यांकन करते हैं।

13.6.18 अनुकरणीय शिक्षण :–

कृत्रिम परिस्थितियों में कुछ विशेष व्यवहार आरोपित करना ही अनुकरणीय शिक्षण है। इसके अन्तर्गत छोटे–छोटे प्रकरण लेकर शिक्षण अभ्यास किया जाता है तथा अन्य छात्र शिक्षक बनकर उस प्रकरण पर चर्चा करते हैं।

13.6.19 कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन :–

इसके अन्तर्गत एक ही समय में अनेक छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिये यह एक सुपर मशीन की भांति कार्य करता है। इसमें कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक छात्र के प्रत्युत्तरों का रिकार्ड रखा जाता है। इसके द्वारा केवल एक उत्तर ही नहीं वरन पहले के उत्तरों की श्रृंखला भी प्रस्तुत की जा सकती है। इसके द्वारा उत्तर देने में लगा समय व प्रत्युत्तरों की सत्यता का लेखा–जोखा रखना भी सम्भव है। गलत उत्तर के समय कम्प्यूटर सही उत्तर के लिये संकेत भी देता है।

13.6.20 पुनर्बलन शिक्षण :–

इसके अन्तर्गत छात्रों को कार्य करने पर पुनर्बल के रूप में प्रेरणा दी जाती है। प्रेरणा मिलते ही क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जब व्यक्ति को प्रेरणा के रूप में पुरस्कार मिलता है तो वह उस कार्य को फिर करता है अर्थात पुरस्कार मिलता है तो वह उस कार्य को फिर करता है अर्थात पुरस्कार प्रेरणा से उसकी विशिष्ट अनुक्रिया प्रबल हो जाती है। अगर अनुक्रिया के लिये प्रेरणा न मिले तो उसे फिर से करने की इच्छा दुर्बल पड़ जाती है। इसके दो प्रकार हैं – धनात्मक, ऋणात्मक। धनात्मक पुनर्बल अपेक्षित अनुक्रियाओं के करने पर प्रदान किया जाता है। जबकि ऋणात्मक पुनर्बल अनैच्छिक व्यवहारों या अनुक्रियाओं के होने पर दिया जाता है।

13.6.21 संशोधनात्मक पृष्ठ पोषण :–

यह एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा व्यवहार को नियन्त्रित किया जाता है, व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है।

13.6.22 उद्दीपक नियन्त्रण :–

यह एक ऐसी युक्ति है जो छात्र के व्यवहार को नियंत्रित करती है। जैसे–पंचतंत्र की कहानियों में प्रत्येक कहानी के बाद एक उदाहरण और एक प्रश्न दिया है जिसका उत्तर अगली

कहानी पढ़ने से मिलता है। अब अगली कहानी के अन्त में एक और नया प्रश्न सामने आ जाता है। इस प्रश्न का उत्तर उससे अगली कहानी को पढ़ने के बाद मिलता है। यह प्रश्न छात्रों को जिज्ञासु बना देते हैं और जिज्ञासा पूरी कहानियां पढ़ने के बाद ही शान्त होती है।

13.6.23 बहु माध्यम उपागम :–

बहु माध्यम उपागम से तात्पर्य है प्रकरण स्पष्ट करने के लिये शिक्षण सामग्री को विविध रूपों प्रयोग करना। दूसरे शब्दों में सम्प्रेषण माध्यम को अनुदेशन की विधि प्रविधियों के साथ प्रयुक्त करना ही बहु माध्यम उपागम है।

दीपिका बी शाह (1988) के अनुसार, "एक बहु माध्यम का तात्पर्य एक से अधिक माध्यम से है जो एक सम्प्रेषण में क्रमश: या साथ–साथ प्रयोग किये जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयोग किये जाते हैं। अत: विभिन्न माध्यमों को अलग प्रयोग न करके उनको एकीकृत रूप में प्रयोग किया जाना चाहिये।"

इसमें सर्वप्रथम अन्तिम व्यवहारों का निर्धारण व परिभाषीकरण किया जाता है। उसके बाद पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण नीतियों की व्यवस्था करके शिक्षण नीति, विधि तकनीकियों का विविध विधाओं के साथ प्रयोग करे फिर मूल्यांकन करे तथा अन्त में निदान के अनुसार छात्रों को सुधारात्मक अनुदेशन तथा पृष्ठपोषण प्रदान किया जाता है।

13.6.24 व्यक्तिगत अनुदेशन प्रणाली :–

यह ऐसी प्रणाली है जिसमें अनुदेशन के वैयक्तिकरण पर अत्यधिक बल दिया जाता है और अनुदेशन को छात्रों की योग्यता, रूचि और आवश्यकता के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जाता है।

इस प्रणाली में पाठ्यक्रमकी सामग्री को अनेक इकाइयों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें छात्र लगभग एक सप्ताह में भली–भांति समझ लेते हैं। विषय पर निपुणता के बाद उन्हें 20–25 मिनट का एक उपलब्धि परीक्षण दिया जाता है, जिसकी जांच लगभग 5 मिनट में हो जाती है। यहां पर प्रयुक्त होने वाली अधिगम सामग्री में एक सबकी समान पाठ्य–पुस्तक तथा एक स्टडी गाईड़ होती है। स्टडी गाईड़ में यूनिट की प्रस्तावना, व्यवहारात्मक, उद्देश्य, प्रक्रिया, पाठ्य–वस्तु पूरक तथा परीक्षण प्रश्न निहित होते हैं। प्रत्येक यूनिट के लिये चार समान किन्तु विभिन्न प्रकार के रेडीनेस टेस्ट होते हैं। प्रारम्भ में कोर्स नीति की व्याख्या की जाती है। फिर प्रत्येक छात्र को यूनिट की स्टडी गाईड वितरित की जाती है जिससे वे अपना अध्ययन प्रारम्भ कर सकें।

13.6.25 इन्टरनेट :–

यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें कम्प्यूटर्स के नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है जिससे कि लोगों को विभिन्न प्रकार की सूचनायें प्राप्त होती हैं। इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के डाक्यूमेण्ट्स, वैज्ञानिक आंकड़े, रूचि, सूची एवं विभिन्न विषयों में सूचनायें उपलब्ध होती है। ये सूचनायें विश्व के किसी भी कोने से प्राप्त की जा सकती है।

13.6.26 नाटकीय विधि :–

इतिहास के लिये यह युक्ति अत्यधिक उत्तम मानी जाती है। इसमें पाठ्य वस्तु का विशेष खण्ड जो पढ़ाया जा चुका हो और उसके लिये स्रोत भी उपलब्ध हो तथा महान पुरुष का

व्यक्तित्व प्रभावशाली हो तब नाटक की व्यवस्था की जाये। इसमें छात्रों को भाग लेना चाहिये। इसके लिये शिक्षक योजना को तैयार करता है। ऐतिहासिक पात्रों को मौलिक वस्त्रों में प्रस्तुत करना चाहिये। नाटकीय विधि में चार सोपानों का अनुसरण किया जाता है :–

- योजना तैयार करना
- नाटक की तैयारी
- क्रियान्वयन प्रारूप बनाना तथा
- मूल्यांकन करना।

नाटक की योजना तैयार करना शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है परन्तु छात्रों का सहयोग अवश्य लिया जाय। स्थल की तैयारी छात्रों को शिक्षक के निर्देशन में करनी होती है। क्रियान्वयन के समय यह ध्यान रखा जाता है कि नाटक में स्वाभाविकता हो।

अतः उपयुक्त नवाचारों के विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन सभी नवाचारों के द्वारा सामाजिक विज्ञान का शिक्षण को नवीन बनाया जा सकता है। इससे छात्रों में जिज्ञासा व सीखने के प्रति उत्सुकता बढ़ती है। इन नवाचारों के प्रयोग से छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है तथा उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास किया जा सकता है। इनके प्रयोग के माध्यम से बालक में स्वाध्ययन, व अच्छे कार्यों को करने की आदत का विकास करते हुये उनकी कल्पनाशक्ति तुलनात्मक शक्ति का भी विकास किया जा सकता है। इन नवाचारों का प्रयोग शिक्षण में करके बालक में उत्तरदायित्व की भावना, परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता का विकास, तर्क शक्ति तथा मिल जुल कर रहने की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

अतः यह कह सकते हैं कि आधुनिक युग में सामाजिक विज्ञान शिक्षण में यह नवाचार अत्यधिक उपयोगी है।

13.7 अभ्यास प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त किये जाने वाले नवाचारों के नाम बताइये।
2. समस्या समाधान विधि का संक्षिप्त विवरण दीजिये।
3. निगमन व आगमन विधि में क्या अंतर है?
4. बहुमाध्यम उपागम को परिभाषित कीजिये।
5. नवाचार की अवधारणा को स्पष्ट करते हुये उसकी आवश्यकता व महत्व बताइये।
6. सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त किये जाने वाले नवाचारों का नाम बताइये तथा किन्हीं पांच नवाचारों का सविस्तार वर्णन करिये।

13.8 सारांश

इस प्रकार हम पाते हैं कि सामाजिक विज्ञान भी आधुनिक युग के साथ नित नवीन परिवर्तन को आत्मसात करता रहा है। नवाचारों के प्रति अनेक बाधाओं के बावजूद सामाजिक अध्ययन में उन्हें स्थान दिया गया। बहुमाध्यम उपागम, दूरस्थ शिक्षा, अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्यूटर व इंटरनेट जैसे नवाचारों को आज काफी महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाना इस बात

का द्योतक है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण में न केवल नवाचारों को स्थान मिल रहा है अपितु उसका भविष्य उज्ज्वल है।

13.9 संदर्भ ग्रन्थ

1. भार्मा, आर.ए. (2004); सामाजिक विज्ञान शिक्षण; सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
2. कुल श्रेष्ठ, एस.पी., शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार; विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. मिश्रा, आर.एम. (1996); शिक्षण तकनीकी; आलोक प्रकाशन, लखन
4. शर्मा, आर.के.; वशि ठ, मधु, सामाजिक विज्ञान शिक्षण;
5. राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
6. शुक्ल, रमाशंकर; डागर, बी.एस., शुक्ल, अनिल (1992–93) "शिक्षण एवं अधिगम के आधारभूत तत्व", शिक्षक प्रकाशन, कोटा

ISBN - 13/978-81-8496-299-4